

ॐ

स्वामी शरण कृत

वैदिक शब्दकोश

वैदिक शब्दों - पदों का व्याकरणसम्मत भाषार्थ,
संज्ञा, विशेषण, क्रिया शब्दों का धातुज अर्थ



पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02, पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

ईमेल - paliwalprakashanvedicsahitya@gmail.com

वेबसाईट - vedayan.simplesite.com

संस्करण : प्रथम, बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख, 2074 वि., 5119 युगाब्द (ई. 2017)

सर्वाधिकार : स्वामी शरण

मूल्य : नौ सौ रुपये

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः,
सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म ॥

पुस्तक : वैदिक शब्दकोश
लेखक : स्वामी शरण
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
संस्करण : प्रथम 2019
सहयोग राशि : रु. 900/—
प्रकाशक : पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02, पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005
ईमेल - paliwalprakashanvedicsahitya@gmail.com
वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

मुद्रक : पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02, पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005
ईमेल - paliwalprakashanvedicsahitya@gmail.com
वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

SHABDAKOSH
BY SWAMI SHARAN
मूल्य नौ सौ रुपये मात्र

ॐ

विषय सूची

निवेदन	04
वैदिक शब्दकोश	
अ,	05
आ,	65
इ,	83
ई,	89
ऋ,	90
उ,	93
ऊ,	105
ए,	107
ऐ,	111
ओ,	111
औ	112
क,	113
ख,	125
ग,	126
घ,	137
च,	139
छ,	145
ज,	146
ण	155
त,	155
द,	167
ध,	182
न,	189
प,	197
फ	230
ब,	230
भ,	237
म,	246
य,	263
र,	272
ल,	279
व,	279
श,	313
ष,	325
स,	326
ह,	348

निवेदन

वैदिक साहित्य तथा देववाणी वैदिक संस्कृत भाषा में रुचि रखने वाले विद्याप्रेमी सज्जनों की सेवा में यह कोश प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता तथा आत्मसन्तोष की अनुभूति हो रही है। हमारे लिए संस्कृत भाषा-व्याकरण के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वेद का स्वाध्याय ही है। वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य तथा भारतीय धर्म - संस्कृति का मूल स्रोत है। वेद ही परमात्मा का शब्द-शरीर तथा प्रत्यक्ष रूप है। वेद का पाठ तथा स्वाध्याय करना हमारा परम धर्म है। हमारी मान्यता है कि वेद भगवान् ही हमारे गुरु हैं। हमारी मान्यताएँ, चिन्तन तथा आचार-विचार वेद के अनुकूल होना चाहिए। इसके लिए वैदिक पदों (शब्दों) का अर्थ जानना आवश्यक है। वैदिक शब्दकोश उपलब्ध न होना इस दिशा में बहुत बड़ा अभाव था। जो संस्कृत शब्दकोश उपलब्ध हैं, उनमें स्पष्ट कहा गया है कि उसमें वैदिक शब्दों को स्थान नहीं दिया जा सका है। प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश इस अभाव की पूर्ति करने का विनम्र प्रयास है। सभी वैदिक विद्वान् इस बात पर सहमत हैं कि वैदिक संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया शब्द धातुज हैं। शेष सर्वनाम, संख्या, अव्यय, निपात, उपसर्ग आदि के अर्थ निश्चित ही होते हैं। इस शब्दकोश में इस बात का पूर्णतः पालन किया गया है। इस शब्दकोश में चारो वेदों के सभी शब्द या पद आ गये हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। भविष्य में बृहद् वैदिक शब्दकोश में चारो वेदों के सभी शब्दों को सम्मिलित करने की योजना है। इस शब्दकोश के आगामी संस्करणों में शब्दों या पदों की संख्या निरन्तर बढ़ाते हुए इसे पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा। हम स्वीकार करते हैं कि इस शब्दकोश में अभी संशोधन-परिष्कार की आवश्यकता है। आगामी संस्करणों में हम यथासम्भव इसका प्रयास करेंगे।

इस कोश में वैदिक संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया पदों के साथ ही उपसर्ग, अव्यय-निपात, संख्या तथा सर्वनाम पदों का भी संकलन किया गया है। भविष्य में हमारे द्वारा प्रस्तुत पञ्चाङ्ग धात्वादि कोश की सम्पूर्ण सामग्री भी इस वैदिक शब्दकोश में समाहित कर इसे सम्पूर्ण करने का विचार है। इस प्रकार का वैदिक शब्दकोश प्रथमतः प्रस्तुत किया जा रहा है, अतः इसके विषय में परिचय प्राप्त कर लेना उपयोगी होगा। इस कोश का मुख्य उद्देश्य जन सामान्य को सरलता से वैदिक संस्कृत भाषा से परिचित कराना है। अतः इसमें व्यावहारिकता तथा सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है। परम्परागत शास्त्रीय संस्कृत व्याकरण से अपरिचित सज्जन भी इसका लाभ उठा सकें, इसका ध्यान रखते हुए इसमें कुछ नूतन दृष्टिकोण अपनाया गया है। अनन्ताः वै वेदाः की उक्ति के अनुसार स्पष्ट है कि वैदिक शब्दों का अर्थ-गाम्भीर्य तथा विस्तार अनन्त है। इसका अर्थ है कि वैदिक शब्दों तथा पदों के अर्थ अनन्त हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इतना समझ सकते हैं कि वैदिक शब्द अनेकार्थी होते हैं। इससे छोटे से शब्द तथा मन्त्र में बहुत कुछ कह दिया गया है। इस तथ्य को गागर में सागर की उक्ति ही व्यक्त कर सकती है। अनेक अर्थों में उपयुक्त अर्थों का चयन तो अध्येता के विवेक की ही अपेक्षा रखता है। शब्दकोश इसमें एक सीमा तक ही सहायता कर सकता है। हम इस मर्यादा को स्वीकार करते हैं।

इस वैदिक शब्दकोश की रचना प्रक्रिया भी इसकी सरलता तथा इस व्यावहारिक स्वरूप को स्पष्ट करती है। वेद के अध्ययन में छात्रों की सरलता के लिए वैदिक शब्दों तथा धातुओं का संकलन करना प्रारम्भ किया गया था। पर्याप्त मन्थन के पश्चात् कोश को इस रूप में प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया। इस कोश से वेद तो क्या, संस्कृत भाषा से भी अपरिचित छात्रों का भय दूर हुआ और उत्साहपूर्वक वेद के स्वाध्याय में प्रवेश सम्भव हो सका। अतः इसकी व्यावहारिक उपयोगिता तो स्पष्ट हो ही चुकी है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस वैदिक शब्दकोश के साथ ही सरल वैदिक व्याकरण तथा वैदिक धात्वादि कोश भी प्रस्तुत किया गया है। अन्ततः वैदिक शब्दकोश में चारो वेदों में आये सभी पदों को स्थान मिल जाना चाहिए। यह हमारा संकल्प है। यह कार्य सुदीर्घ प्रयास की अपेक्षा रखता है।

अब तक उपलब्ध संस्कृत शब्दकोशों में वैदिक शब्द नहीं दिये गये हैं तथा वैदिक शब्दकोश उपलब्ध नहीं था। हमारे सरल वैदिक व्याकरण, वैदिक धात्वादि कोश तथा वैदिक शब्दकोश की सहायता से साधारण छात्र भी वैदिक तथा लौकिक संस्कृत शब्दों का अर्थ सरलता से समझ सकते हैं।

वेद के अध्ययन में यह बात दृढ़ता से स्वीकृत है कि वेद के सभी संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया शब्द धातुज हैं। अतः धातु-ज्ञान के बिना वैदिक शब्दों का अर्थ नहीं किया जा सकता है। सामान्यतः यह तथ्य लौकिक शब्दों के लिए भी सत्य है। पाणिनीय धातुपाठ में 1970 धातुएं हैं तथा पाणिनि से पूर्ववर्ती काशकृत्स्न के धातुपाठ में धातुओं की संख्या इससे बहुत अधिक है। प्रमुख वेदभाष्यकारों ने वेदमन्त्रों का अर्थ करते हुए कुछ ऐसी धातुओं का भी निर्देश किया है जो सामान्यतः धातुकोश में उल्लिखित नहीं हैं। हमने इस कोश में उन सभी धातुओं को समाहित करने का प्रयास किया है जो हमें कहीं भी उपलब्ध हो गयीं हैं। इससे यह कोश बहुत उपयोगी तथा व्यापक बन गया है।

परम्परागत धातुपाठ में अनुबन्ध आदि के साथ धातुओं का उल्लेख किया जाता है। प्रयोग काल में उनका रूप भिन्न हो जाता है। परम्परागत व्याकरण शास्त्र में अध्ययन काल तथा प्रयोग काल में धातुओं के पृथक् रूप माने जाते हैं। जन-सामान्य को प्रायोगिक रूप की ही आवश्यकता होती है। इस धातुकोश में धातुओं के अध्ययनकाल के शास्त्रीय स्वरूप के स्थान पर प्रायोगिक स्वरूप को प्रमुखता प्रदान की गयी है। इसमें यथासम्भव सभी धातुओं को प्रायोगिक स्वरूप में स्थान देने का प्रयास किया गया है। प्रयोग काल में कुछ धातुओं के विविध रूप प्रचलित हैं जिन्हें शास्त्रीय दृष्टि से एक धातु माना गया है, जैसे गम् तथा गच्छ। हमने सरलता तथा सुविधा के लिए उन रूपों को पृथक् धातु के रूप में स्थान दिया है। इससे छात्रों को शब्दों तथा पदों में निहित धातुओं को समझने में बहुत सुविधा हुई है।

संस्कृत शब्दों को मूलतः तीन भागों में विभाजित किया जाता रहा है - नाम, धातु, निपात। नाम में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों को सम्मिलित किया जाता है। निपात में वे शब्द होते हैं जिनमें नामिक या क्रिया (आख्यातिक) विभक्ति नहीं जुड़ती है। सामान्यतः उनको अव्यय भी कह सकते हैं। निपात में विशिष्ट शाब्दिक अर्थ न रखने वाले ऐसे शब्द भी

हैं जो पाद-पूरणार्थ या विशेष बल देने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। स्वाभाविक रूप से इनमें विभक्तियाँ नहीं जुड़ती है, अर्थात् इनके रूप नहीं चलते हैं। इसी अर्थ में ये अव्यय हैं। इसी रूप में उपसर्ग को भी हम अव्यय या निपात वर्ग में रख सकते हैं। वेद में उपसर्ग, अव्यय, निपात में भेद नहीं है। कह सकते हैं कि वेद के कुछ अव्यय शब्दों ही लौकिक संस्कृत में उपसर्ग के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। संख्या तथा सर्वनाम शब्द संस्कृत वाक्यों में विशेषण के रूप में प्रयोग होते हैं तथा उनकी विभक्तियाँ अथवा रूप अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इनकी संख्या सीमित होने तथा शब्द-रूप बनाने के स्थान पर शब्दार्थ सीखना सरल प्रतीत होने के कारण हमने संख्यावाची पदों तथा सर्वनाम पदों को भी अव्यय के समान स्वतन्त्र रूप में इस कोश में स्थान दे दिया है। ऐसा केवल व्यावहारिकता तथा सरलता की दृष्टि से किया गया है। यह प्रयोग भी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

धातु शब्द का मूल अर्थ है वह शब्दांश जो शब्दों या पदों के मूल अर्थ को धारण करता है, अथवा शब्द या पद जिसको अर्थवत्ता अथवा सार्थकता के लिए धारण करते हैं। इससे स्पष्ट है कि धातु को जानकर ही शब्दों या पदों का अर्थ जाना जा सकता है। इस मूल भावना को ध्यान में रखकर ही उपसर्ग, निपात-अव्यय, संख्या, सर्वनाम को भी इस कोश में स्थान दिया गया है। इस प्रकार यह धात्वादि कोश एक प्रकार से सम्पूर्ण कोश बन जाता है। इस कोश की सहायता से सभी शब्दों-पदों का अर्थ जानना सरल हो जाता है। इसके अतिरिक्त केवल विभक्तियों तथा प्रत्ययों की जानकारी शेष रह जाती है। प्रत्ययों का कोश भी संकलित किया जा सके तो उपयोगी रहेगा। हम मानते हैं कि वास्तव में सम्पूर्ण शब्दकोश बनाना तो असम्भव है।

इस कोश में शब्दों का क्रम वर्णमाला के अनुसार रखा गया है। वर्णमाला में अक्षरों को उच्चारण स्थान के अनुसार ही रखा जाता है। यही वैदिक संस्कृत भाषा तथा वर्णमाला की विशेषता तथा वैज्ञानिकता है। उच्चारण स्थान के अनुसार वर्णक्रम कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य के रूप में होना चाहिए। इस प्रकार स्वरों का क्रम अ, इ, ऋ, लृ, उ रहेगा। ऋ, लृ स्वरों का प्रयोग न्यून होने के कारण सामान्यतः विद्यार्थी अ, इ, उ का क्रम बोलते हैं। इसी प्रकार संयुक्त

अक्षरों के विषय में भी कठिनाई होती है। त्, क्ष, ज्ञ, श्र आदि अनेक संयुक्ताक्षरों का शुद्ध उच्चारण न जानने के कारण विद्यार्थी शब्दों को कोश में खोज नहीं पाते हैं। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए ही हम विषय-सूची में वर्णक्रम सूची दे रहे हैं। सामान्यतः कोश में इसकी आवश्यकता नहीं मानी जाती है। इसके साथ ही हम वर्णमाला भी दे रहे हैं। उसमें संयुक्ताक्षरों की स्थिति भी स्पष्ट हो जायेगी। इसे सरल वैदिक व्याकरण पुस्तक से लिया गया है।

अनुस्वार का प्रयोग सामान्यतः पञ्चमाक्षरों (ङ, ज्, ण, न, म्) के स्थान पर विकल्प रूप में किया जाता है। इस कोश में शब्दों को पञ्चमाक्षरों के अनुसार क्रम से ही खोजना चाहिए। य, र, ल, व, श, ष, स, ह वर्णों से पूर्व उनके उच्चारण स्थान वाले पञ्चमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग मिलता है। अनुस्वार तथा विसर्ग स्वर के पश्चात् ही आते हैं। अतः माना जाना चाहिए कि शब्दों के क्रम में इनकी उपस्थिति से कोई अन्तर नहीं पड़ता है, अर्थात् किसी स्वर के पश्चात् व्यञ्जन के क्रम से शब्द आते रहते हैं। इनको उस स्वर के पश्चात् वाले व्यञ्जन का क्रम पूर्ण होने पर अन्त में स्थान दिया गया है। उदाहरण के लिए अंह को अह के पश्चात् देखा जाना चाहिए तथा अतः को अत के पश्चात्।

वैदिक भाषा और संस्कृत की संरचना में सूक्ष्म अन्तर मिलता है। वेद में उपसर्ग और धातुएँ संस्कृत से अधिक हैं। विभक्तियों में बहुलता है तथा विकल्प भी स्वीकार्य हैं। वैदिक संस्कृत विश्व की प्राचीनतम, सर्वाधिक समृद्ध सशक्त तथा वैज्ञानिक भाषा है। विश्व का प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान तथा संस्कृति की धरोहर संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। विश्व का प्राचीनतम साहित्य वेद भारतीय संस्कृति का मूल आधार तथा संस्कृत भाषा की अनुपम देन है। अतः मानवता के विकास के प्राचीनतम सोपान को सुरक्षित रखने के लिए वैदिक संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। यह सर्वमान्य है कि वैदिक भाषा प्राचीनतम है। उसके व्याकरण सम्बन्धी नियमों में सरलता है, अतः वह सीखने तथा प्रयोग करने में सरल है। उसमें भाषा सौन्दर्य के लिए विविधतापूर्ण प्रयोग भी हैं।

प्राचीनतम साहित्य वेद की भाषा ही शुद्ध देववाणी है।

व्यापक नियमों के अनुकूल होते हुए भी अनेक वैदिक प्रयोगों को प्रचलन से बाहर कर दिया गया। इसे उचित नहीं माना जा सकता है। उचित यही है कि उपयोगी वैदिक प्रयोगों को त्याज्य न समझें, सम्मान सहित प्रयोग किया जाये। वैदिक प्रयोगों की उपेक्षा करना संस्कृत को अशुद्ध बनाना है। वैदिक भाषा में परिवर्तन से बने रूप को शुद्ध देववाणी नहीं कहा जा सकता है। भारोपीय या आर्यभाषा परिवार की भाषाओं का मूल वैदिक संस्कृत ही है। अतः इसे भारत से यूरोप - अमेरिका तक प्रचलित सभी प्रमुख भाषाओं का मूल रूप माना जाता है। शब्दावली तथा व्याकरण संरचना की समानता के कारण आधुनिक भाषा विज्ञान में इन सभी भाषाओं को एक भाषा परिवार की मान्यता प्राप्त है।

व्याकरण के अन्तर्गत किसी भाषा की शब्द-रचना तथा वाक्य रचना में प्रयुक्त सामान्य प्रवृत्तियों तथा नियमों को निरूपित किया जाता है। व्याकरण का एकमात्र उद्देश्य भाषा सीखना है। इसका लक्ष्य भाषा को एकरूपता तथा वस्तुनिष्ठता प्रदान कर नियमबद्ध तथा सरल बनाना है, उसे जटिल तथा दुरुह बनाना नहीं।

भाषा विज्ञान को व्याकरणों का व्याकरण कहा जाता है। व्याकरण में बताया जाता है कि भाषा में शब्द तथा वाक्य रचना के नियम क्या हैं। भाषा विज्ञान में यह जानने का प्रयास किया जाता है कि भाषा में शब्द तथा वाक्य रचना का वह रूप कैसे विकसित हुआ। व्याकरण यह बता देता है कि वेद में शब्द प्रयोग के नियम क्या थे और बाद में लौकिक संस्कृत में शब्दों के प्रयोग किस रूप में होने लगे। भाषा विज्ञान यह जानने का प्रयास करता है कि वेद में जो नियम थे, उनमें परिवर्तन कैसे हुआ।

वेद तथा संस्कृत भाषा के तटस्थ सर्वेक्षण तथा व्याकरण के स्वतन्त्र विश्लेषण से सरल वैदिक व्याकरण प्रणाली का विकास करने में सफलता मिली है। संस्कृत भाषा सीखने में शब्दरूप तथा धातु रूप रटना कठिन समस्या रही है। प्रस्तुत पद्धति इस समस्या का सुगम समाधान खोजने का विनम्र प्रयास है। इस प्रणाली में शब्द रूप तथा धातु रूप नहीं रटना पड़ता है तथा सूत्रों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इनके स्थान पर नामिक एवम् आख्यातिक विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग सीखना सरल है।

सरल संस्कृत व्याकरण में तीन मुख्य सिद्धान्त अपनाये गये हैं, 1. मूल नियम, 2. व्यापक प्रयोग 3. विकल्प। परम्परागत व्याकरण के मूल नियमों को पूर्ण महत्व देते हुए सबसे पहले सिखाया गया है। जहां मूल नियम के स्थान पर अपवाद को अपनाने की परम्परा है, वहां उनके स्थान पर व्यापक प्रयोग वाले नियमों को अपनाया गया है। ऐसे व्यापक प्रयोग वाले नियमों को सर्वत्र अपनाने की परम्परा को वरीयता दी गयी है तथा अपवादों को विकल्प के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है। इसका अर्थ है कि मूल नियम तथा व्यापक प्रयोग वाले सार्व नियमों के प्रयोग को महत्व प्रदान किया गया है तथा अपवादों को विकल्प के रूप में बाद में सिखाने की नीति अपनायी गयी है।

कुछ उपसर्ग और अव्ययों में त्य आदि प्रत्यय जुड़कर नामिक शब्द बन जाते हैं। फिर उनमें नामिक विभक्ति लग जाती है। महर्षि पाणिनि ने एक सूत्र में इस नियम का उल्लेख किया है। इस प्रकार नि उपसर्ग में त्य प्रत्यय जुड़कर नित्य शब्द बना। जिसका बहुवचन नित्यासः बना। इस शब्द का अर्थ नि उपसर्ग के अर्थ से लिया जायेगा। अतः नित्यासः शब्द का अर्थ निरन्तर बने रहना ही है।

उपसर्ग तथा अन्य अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नामिक शब्द बनते हैं। ऐसे अव्ययज अथवा निपातज शब्द संज्ञा और विशेषण बन जाते हैं परन्तु उन अव्यय अथवा निपात शब्दों से क्रियाएँ नहीं बनती हैं। अर्थात् उनमें आख्यातिक अथवा क्रिया विभक्तियाँ नहीं जुड़ती हैं। इस प्रकार नामिक अर्थात् संज्ञा तथा विशेषण शब्द दो प्रकार के हो जाते हैं - धातुज तथा अधातुज अथवा अव्ययज या निपातज। कुछ शब्द ध्वनि के अनुसार होते हैं, जिनकी कोई धातु नहीं होती है। उन्हें ध्वन्यानुसारी शब्द कहते हैं। जैसे - चिश्चा।

जिन शब्दों के क्रिया रूप मिल जाते हैं, उनकी धातु स्वीकार्य मानी जाती है, भले ही किसी धातुकोश में वह धातु हो अथवा नहीं। (सिच्यते - सिच - यजु. 19/15)। हिंसा के भाव वाली धातुओं में गति का भाव निहित होता है तथा गत्यर्थक धातुओं में जानना, पाना का भाव निहित होता है। वेद को श्रुति भी कहते हैं। प्राचीनकाल में गुरु से सुनकर ही शिष्य ज्ञान प्राप्त करते थे अतः वेद में श्रु-श्रवण धातु का अर्थ जानना, विद्वान् होना भी स्वाभाविक रूप से

माना जाना चाहिए। श्रवस्यवः आदि शब्द विद्वान्, सुनाने वाले, सुनने वाले के लिए प्रयोग किये गये हैं।

धातु अथवा शब्द के प्रथम स्वर से पूर्व अ लगता है तथा सन्धि हो जाती है। इसे परम्परागत व्याकरण में सन्धि प्रकरण में गुण कहा गया है। इस प्रकार अ जुड़ने को प्रत्यय भी माना जाता है। यदि पहले से अ, आ है तो दोनों मिलकर दीर्घ आ हो जायेंगे, इसी प्रकार इ होने पर ए, तथा उ होने पर ओ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए रम् से राम, कम् से काम शब्द बनते हैं। इक प्रत्यय लगने पर भी ऐसा होता है। वेद में इक प्रत्यय जुड़ने पर वैदिक शब्द बनेगा। वैदिक शब्द का अर्थ है - वेद से उत्पन्न, वेद से सम्बन्धित, वेद से युक्त। यह प्रत्यय स्वार्थ अर्थात् स्वयम् के अर्थ में भी लगता है। इसका अर्थ है कि कम तथा काम शब्द के अर्थ समान होंगे।

लोकभाषा में पञ्चमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ँ) का प्रयोग अधिक होने लगा है। यह अनुचित है। इससे उच्चारण अशुद्ध होता है तथा अर्थ भी अस्पष्ट हो सकता है। हमने अनुस्वार (ँ) के स्थान पर क से म तक पञ्चमाक्षर का प्रयोग करने का प्रयास किया है। य, र, ल, व, श, ष, स के पहले आने वाले अनुस्वार (ँ) को तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य स्थान के अनुसार शब्द क्रम में रखा गया है। इसी प्रकार ह से पहले आने वाला अनुस्वार (ँ) स्वाभाविक रूप से ङ के स्थान पर है। ङ के स्थान पर अनुस्वार (ँ) को स्वीकार किया गया है। इससे सभी को सरलता होती है। विसर्ग (ः) का उच्चारण स् (सूक्ष्म) अथवा ह् (सूक्ष्म) के रूप में है। अतः इसको शब्दकोश में इसी क्रम में स्थान दिया गया है।

इस प्रयास से वेद तथा देववाणी संस्कृत भाषा से जन-सामान्य को परिचित कराने में सहायता मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। इसमें न्यूनतायें सम्भव हैं, परन्तु एक दिशा तो मिल ही गयी है। दोषदर्शन की तुलना में श्रेष्ठतर प्रयास करना सदैव सम्मान्य तथा अनुकरणीय रहा है। इस शैली में अधिक उत्तम तथा परिष्कृत कार्य किये जा सकते हैं। भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा-अपेक्षा करना स्वाभाविक है। आशा है कि हमारे सहयोगी इस कार्य को पूर्ण करेंगे। शेष जीवन काल में हमसे जो कुछ बन पड़ेगा, सेवा करने

का प्रयास करते रहेंगे।

हमने चारो वेदों के सरल पाठ में मन्त्रों का सन्धियों से मुक्त पाठ प्रस्तुत किया है। इसका अर्थ है कि पदान्त में अन्य पद की सन्धि नहीं होती है। सरल पाठ में क्रिया विभक्ति अथवा नामिक विभक्ति के पश्चात् कोई शब्द या पद सन्धि के द्वारा नहीं मिलाया जाता है। इसी प्रकार अव्यय आदि शब्दों में जहाँ विभक्ति का लोप होता है, उनके अन्त में भी किसी पद या शब्द या शब्दांश की सन्धि नहीं होती है। इस प्रकार सरल पाठ में सभी पद पृथक् तथा स्पष्ट होते हैं। वेद मन्त्रों का सरल पाठ जनसाधारण के लिए, विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए वेद पाठ तथा अर्थ समझने की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस शब्दकोश में सरल पाठ के अनुसार पदों का संकलन किया गया है। इस प्रकार हमने पदार्थ या शब्दार्थ करने में तटस्थता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा प्रामाणिकता का ध्यान रखने का पूर्ण प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई भूल-चूक रह गयी होगी तो विद्वानों के मार्गदर्शन के अनुसार भविष्य में संशोधन-परिष्कार किया जा सकता है।

पदार्थ में मुख्यतः धातुज शब्दों में धातु स्पष्ट करना आवश्यक माना गया है। अन्य पदों सर्वनाम, अव्यय, संख्या, उपसर्ग आदि के अर्थ को लेकर कोई मतभेद नहीं है। संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाएं धातुज हैं। उनमें धातु स्पष्ट कर देने से वास्तविक शाब्दिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। कुछ धातुएं अनेकार्थी भी होती हैं। मन्त्र में जिस अर्थ की उपयोगिता हो, उसे ग्रहण कर सकते हैं। धातु के एक से अधिक अर्थों के अनुसार भी यदि मन्त्र का अर्थ हो सकता है तो श्लेष के रूप में स्वीकार्य है। इसमें विचारधारा को लेकर कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए। हमें वेद के विचारों को महत्व देना चाहिए, वेदमन्त्रों का अर्थ अपने विचार के अनुसार करने का दुराग्रह उचित नहीं है। वेदमन्त्रों का सरल स्वाभाविक शाब्दिक अर्थ सभी अध्येता सहज रूप से जानें तथा उसका चिन्तन-मनन कर स्वयम् अपने विवेक के अनुसार विचार विकसित करें। इसके पश्चात् भावार्थ तथा व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक के अनुसार स्वतन्त्र रूप से कर सकता है।

अब तक विद्वानों ने जो भी प्रयास किये, उससे ही वेद के अध्ययन को दिशा मिली तथा हम इस प्रकार निष्पक्ष

प्रामाणिक वेदार्थ करने का प्रयास कर पा रहे हैं। वैदिक शब्दकोश बन जाने से सामान्य अध्येताओं को भी वेद के अध्ययन में सरलता होगी तथा भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा - अपेक्षा करना स्वाभाविक है।

स्वामी शरण

लाजपत नगर, कानपुर

ॐ

वैदिक शब्दकोश

अ

अ = नहीं (उपसर्ग)।

अ = भूतकालिक क्रिया (उपसर्ग)

अक् = प्रगतिशील, कुटिल (अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना)।

अकरम् = किया, कर्महीन को, न करने वाले को (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकरोत् = किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकर्म = कर्म रहित, अकरणीय, न करने योग्य (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकल्पयन् = कल्पना की, विचार किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, मिश्रित करना, चित्रित करना, रंगना, शक्तिमान होना, समर्थ होना, बनाना, रचना)।

अकवारिम् = अकवारि को, प्रगति चाहने वाले को (अ = नहीं, उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, कु-कव - कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, वृ-वर् - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ = वरण करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, सेवा करना, परिचर्या करना, चुनना, छाँटना, रंगना, नियमित करना, हटाना, ढकना, घेरना)।

अकायम् = जानने वाला, गमनशील, काया रहित, अज्ञेय (अ = नहीं, उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, कि-कय् - जानना, समझना)।

अकारिषम् = किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकितवम् = अकितव को, रोग निवारण को, गतिशील को (अ = नहीं, उपसर्ग, कित् - निवास करना, रोग

निवारण करना, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

अकृणोः = किया, अकर्म, कर्महीन का (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकृणोत् = किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकृण्वत् = किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अकृष्टपच्याः = अकृष्ट को पचाने वाला, अकृषिपाचन, अकृष्ट-पचनीय (अ = नहीं, उपसर्ग, कृष - खींचना, आकर्षण करना, कृषि करना, जोतना, हल चलाना, रेखा करना, पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

अकृष्टुपच्याः = अकृष्ट को पचाने वाला, अकृषिपाचन, अकृष्ट-पचनीय (अ = नहीं, उपसर्ग, कृष - खींचना, आकर्षण करना, कृषि करना, जोतना, हल चलाना, रेखा करना, पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

अकृष्णः = जो कृष्ण न हो, कृष्ण से हीन (अ = नहीं, उपसर्ग, कृष - खींचना, आकर्षण करना, कृषि करना, जोतना, हल चलाना, रेखा करना)।

अकूपारस्य = गतिशीलता से पार जाने वाला, शब्द-हीनता से पार जाने वाला, अशक्त न होने वाला, न छिपने वाला (अकू-पारस्य, अ-कूपारस्य, अ-कू-पारस्य, अ = नहीं, उपसर्ग, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, कु - शब्द करना, कुप् - क्रोध करना, कूप - अशक्त करना, छिपना, पा - पालन करना, रक्षण करना, पार् - पूर्ण करना, कार्य समाप्त करना)।

अकेतवे = अकेतु के लिए, निवास-हीन के लिए, रोग निवारण न करने वाले के लिए (अ = नहीं, उपसर्ग, कित् - निवास करना, रोग निवारण करना, अक् - जाना, वक्रगति करना)।

अक्तम् = कुटिलता, गति, प्रगतिशील को (अ = नहीं, उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

अक्तुभिः = अक्तुओं द्वारा, कुटिलता द्वारा, गति द्वारा

(अ = नहीं, उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

अक्तून् = अक्तुओं को, कुटिलताओं को, गतियों को (अ = नहीं, उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

अक्तोः = अक्तु का, कुटिलता का, गति का (अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

अक्तौ = कुटिलता, गति में (अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

अक्रत = किया, नहीं किया हुआ (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अक्रन् = किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)।

अक्रन्दः = पुकारा, क्रन्दन किया, क्रन्दन-हीन, क्रन्दन से मुक्त, क्रन्दन न होने वाला, क्रन्दन न करने वाला (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रन्द - पुकारना, जोर से बुलाना, रोना, घबराना, दुःखी होना, निरन्तर होना, बुलाना, पुकारना)।

अक्रन्दत् = पुकारा, क्रन्दन किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रन्द - पुकारना, जोर से बुलाना, रोना, घबराना, दुःखी होना, निरन्तर होना)।

अक्रमणम् = अक्रमण को, क्रमण न होने को, क्रमण न करने वाले को (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अक्रमीत् = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अक्रमुः = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अक्रयीद् = क्रय किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

अक्रंस्त = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अक्रान् = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अक्रामत् = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की, बढ़ गयी (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अक्ष = खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षणः = खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षन् = देखते हैं, देखते हुए, खेल, क्रीडा, एकत्रीकरण, व्यापक करते हुए (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षभिः = अक्षों द्वारा, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक द्वारा (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षम् = अक्ष को, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक को (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षर = अक्षर, अक्षरणीय, खेल, क्रीडा, व्याप्त, व्यापक (अ = नहीं, उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना। क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षरत् = क्षरित हुआ (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना। क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षरन् = क्षरित हुए (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना। क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षर-पङ्क्तिः (अक्षर-पंक्तिः) = अक्षरों की पंक्ति (अ = नहीं, उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना। क्षर - संचलन होना,

टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना, पच्-पड़क् - व्यक्त करना, प्रकाशित करना, व्यवहार करना)।

अक्षरम् = अक्षर, अक्षरणीय, खेल, क्रीडा, व्याप्त को (अ = नहीं, उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना। क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षराजाय = अक्षराज के लिए, व्याप्त प्रकाश के लिए (अ = नहीं, उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

अक्षराणाम् = अक्षरों का, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापकों का (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, अ - नहीं, क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षराणि = अक्षर, अक्षरों, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, अ - नहीं, क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षरे = अक्षर में, क्षरणरहित में, अविनाशी में (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना। अ = नहीं, उपसर्ग, क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

अक्षाः = अक्ष, समूह, व्यापक (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षाय = अक्ष के लिए, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक के लिए (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अक्षितम् = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)।

अक्षित्यै = अक्षिति, व्याप्त, अविनाशी के लिए, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक के लिए (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)।

अक्षिपत् = अक्षि-पत्, व्यापक ऐश्वर्यवान् (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना,

अ - नहीं, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना, पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

अक्षिभिः = अक्षि-भिः, अ-क्षि-भिः, अक्षियों द्वारा, व्यापक, व्याप्त, अविनाशी, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापकों द्वारा (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, अ - नहीं, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)।

अक्षिभुवः = अक्षि-भुवः, अक्षि होने वाला, व्यापक, व्याप्त, अविनाशी, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक होने वाला (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, अ - नहीं, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना, भू - होना)।

अक्षीयमाणाः = अक्षीय होता हुआ (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, अ = नहीं, उपसर्ग, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)।

अक्षुत् = गया, वितण्डा किया, जाता है, वितण्डा करता है (अक्षु - जाना, वितण्डा करना)।

अक्षेण = अक्ष द्वारा, अक्ष के साथ, खेल, क्रीडा, दृष्टि द्वारा (अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)।

अक्षणः = अक्ष का, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक का (अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)।

अक्ष्योः = अक्ष का, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक का (अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)।

अखनन् = दुःख दिया, खनन किया, खोदा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, खन - दुःख देना, खनन करना)।

अख्यत् = प्रसिद्ध किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ख्या - प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना)।

अख्यत = प्रसिद्ध हुआ, प्रख्यात हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ख्या - प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना)।

अख्यन् = प्रसिद्ध किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ख्या - प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना)।

अख्ये = प्रसिद्ध किया, प्रख्यात किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ख्या - प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना)।

अगच्छन्त = गये (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गच्छ - जाना)।

अगृष्णन् = गर्भ हुआ, सिंचन, प्राप्त किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृह - गृम्-गर्भ - अन्तःवास करना, ग्रहण लेना, लेना, स्वीकार करना)।

अगृष्णात् = गर्भ हुआ, सिंचन, प्राप्त किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृह - गृम्-गर्भ - अन्तःवास करना, ग्रहण लेना, लेना, स्वीकार करना)।

अगृष्णन् = गर्भ हुआ, सिंचन, प्राप्त किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)।

अगुः = गया, अगतिशील (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

अगो = गया, अगतिशील (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

अगोह्य = अहिंसनीय, अनावरणीय, न छिपाने योग्य, अगम्य (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गुह - गति करना, छिपाना, वस्त्रादि से ढांकना, हिंसा करना)।

अग्न = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, विद्वान्, अग्रणी (अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, टेढ़ा जाना, आगे जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नय = ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, अग्निगण, विद्वान्, अग्निर्यौ (अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, भ्रमण करना, घूमना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नयः = अग्निगण, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्, अग्निर्यौ (अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, भ्रमण करना, घूमना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नये = अग्नि के लिए, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नयो = अग्निगण, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्, अग्निर्यौ (अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, भ्रमण करना, घूमना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्ना = अग्नि में, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् में (अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, भ्रमण करना, घूमना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्निः - अग्निः = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नि-जिह्वा = अग्रणी जिह्वा वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)।

अग्नि-दग्धा = अग्नि-दग्ध (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, दह् - दहन करना, दग्ध करना, जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)।

अग्निना = अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नि-नुन्नानाम् = अग्नि-प्रेरितों का (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, नुद - भेजना, प्रेरणा करना, कहना, जाना)।

अग्नि-नेत्राः = अग्निवत् नेत्र वाले, अग्रणी नेत्र वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, नी - ले जाना, प्राप्त होना, पाना, पहुँचना)।

अग्नि-नेत्रेभ्यः = अग्निवत् नेत्र वाले, अग्रणी नेत्र वाले लोगों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, नी - ले जाना, प्राप्त होना, पाना, पहुँचना)।

घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम = जाना, जानना, पाना)।

अग्र-जिह्वम् = अग्रणी जिह्वा वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)।

अग्रभम् = गर्भ हुआ, ग्रहण किया, अग्रभ को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृह - गृभ्-गर्भ - अन्तःवास करना, ग्रहण लेना, लेना, स्वीकार करना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्रम् - अग्रम् = अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्रवः - अग्रवः = अग्रणी, आने वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्रियः - अग्रियः = अग्रणी, आने वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, ग्रहण करना)।

अग्रियो - अग्रियो = अग्रणी, आने वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना,

ग्रहण करना)।

अग्र्रेगाः - अग्रेगाः = आगे जाने वाले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, गम - जाना)।

अग्रेगुवः - अग्रेगुवः = अग्रगामी, अग्रभाषी (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, ग्रहण करना, गु - शब्द करना, गम् - जाना)।

अग्रेगुवो - अग्रेगुवो = अग्रगामी, अग्रभाषी (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, ग्रहण करना, गु - शब्द करना, गम् - जाना)।

अग्रेगो - अग्रेगो = अग्रगामी, अग्रभाषी (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, ग्रहण करना, गु - शब्द करना, गम - जाना)।

अग्रेपुवः - अग्रेपुवः = आगे बढ़कर पावन बनाने वाले
(अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना,
ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पू - पवित्र करना,
पावन करना)।

अग्नेपुवो - अग्रपुवो = आगे बढ़कर पावन बनाने वाले
(अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना,
ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पू - पवित्र करना,
पावन करना)।

अग्रेण = अग्र द्वारा, आगे द्वारा (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्रेणी = अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्नेवधाय = आगे, पहले वध के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, वध-हन् = मारना)।

अग्र्याय - अग्र्याय = अग्र-योग्य के लिए, अग्रता के योग्य के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अघत् = पाप किया, पापी (अघ - पाप करना, अपराध करना)।

अघत्तम् - अघत्तम् = पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना)।

अघम् = पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना)।

अघशंस = पाप का प्रशंसक, पापी, अपराधी (अघ - पाप करना, अपराध करना, गिरना, शंस - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

अघशंसहा = अघशंस का हनन करने वाला, पापियों का संहारक (अघ - पाप करना, अपराध करना, गिरना, शंस - स्तुति करना, प्रशंसा करना, हन् - मारना)।

अघशंसो = पाप का प्रशंसक, पापी, अपराधी (अघ - पाप करना, अपराध करना, गिरना, शंस - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

अघहारः = अघ का हरण करने वाला, अघ को ले जाने वाला, पाप का हरण करने वाला (अघ - पाप करना, अपराध करना, ह - हरण करना, ले जाना)।

अघा = पापी, अपराधी (अघ = पाप, अपराध करना)।

अघायतः = पापी, अपराधी (अघ = पाप, अपराध करना)।

अघायवः = पापी, अपराधी (अघ = पाप, अपराध करना)।

अघायवो = पापी, अपराधी (अघ = पाप, अपराध करना)।

अघायोः = पापी, अपराधी का (अघ = पाप, अपराध करना)।

अघोरा = अघोर, अहिसक, पापी, अपराधी (अ - नहीं, घूर् - भय होना, भयंकर होना, भीषण शब्द करना, घूर - हिंसा करना, जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, घोर - चतुराई से चलना, अघ = पाप, अपराध करना)।

अघोरेण = अघोर द्वारा, अहिसक द्वारा, पापी, अपराधी द्वारा (अ - नहीं, घूर् - भय होना, भयंकर होना, भीषण शब्द करना, घूर - हिंसा करना, जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, घोर - चतुराई से चलना, अघ = पाप, अपराध करना)।

अघ्न्याः - अघ्न्या = अहिसक, अहिसनीय (घ्न, हन् = हिंसा करना)।

अघ्न्यानाम् - अघ्न्यानाम् = अहिसकों, अहिसनीयों का (घ्न, हन् = हिंसा करना)।

अघ्न्याया = अहिसक, अहिसनीय, अहिंसा द्वारा (घ्न, हन् = हिंसा करना)।

अघ्न्ये = अहिसक, अहिसनीय में (घ्न, हन् = हिंसा करना)।

अङ्क - अंक = गणना, अंक, गोद (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

अङ्कम् - अंकम् = गणना, अंक, गोद को (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

अङ्काः - अंकाः = गणना, अंक, गोद (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

अङ्काङ्कम् - अंकाङ्कम् = गणना, अंक, गोद (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

अङ्कासि - अंकासि = गणना करते हो, अंकन करते हो (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

अङ्कुपम् - अंकुपम् = गणना, अंक का पालन-रक्षण करने वाले (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना, पा - पालन करना)।

अङ्कुशम् = अंकुश को (अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

अङ्क्ताम् - अंक्ताम् = अंकन करो, अपनाओ (अंक = गिनना, अपनाना, गोद में लेना)।

अङ्क्ते = अंकन करता है, अपनाता है (अंक = गिनना, अपनाना, गोद में लेना)।

अङ्ग - अंग = अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अङ्ग = अङ्ग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गधि-अङ्गधि = विद्वान्, प्रगतिशील को धारण करने

वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गम् - अंगम् = अंग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गात् - अंगात् = अंग से, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले से (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गानि - अंगानि = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरः - अंगिरः = विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरसः - अंगिरसः = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरसाम् - अंगिरसाम् = अंगिरस् गणों का, विद्वान्, प्रगतिशीलों का (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरसो - अंगिरसो = अंगिरस, विद्वान्, प्रगतिशील (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरस्तम् - अङ्गिरस्तम् = अत्यन्त विद्वान्, प्रगतिशील (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरस्वत् = अंगिरा के समान, अंगों में व्याप्त के समान, विद्वान्, प्रगतिशील के समान (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरस्वते - अंगिरस्वते = अंगिरस्वान् के लिए, विद्वान्, प्रगतिशील के लिए (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरा - अंगिरा = अङ्गिरा, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरो = अङ्गिरा, प्रगतिशील (अंग् = अंग होना,

अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरोभ्यः = अङ्गिरा, प्रगतिशील के लिए (अङ्ग् = अङ्ग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गुलयः - अङ्गुलयः = अङ्गुलियाँ, प्रगतिशील, विद्वान् (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गुलीः = अङ्गुली, प्रगतिशील, विद्वान् (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गे = अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गेन = अंग, प्रगतिशील, विद्वान् द्वारा (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गेषु = अंगों में, प्रगतिशीलों, विद्वानों में (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गैः = अंगों, विद्वान्, गतिशील, पाने वालों द्वारा (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गोषिणम् = अङ्गोषी को, जानने योग्य को, अङ्गों को (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिध = विद्वान्, प्रगतिशील को धारण करने वाला (अङ्ग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गारिः - अङ्गारिः = अङ्गारि, गति-नाशक, अवरोध-नाशक (अङ्ग् - गति करना, आरम्भ करना, शीघ्रता करना, अवरोध होना, निन्दा करना, ऋ-अर् - गति करना, हिंसा करना)।

अङ्गारे - अङ्गारे = अङ्गार में, शीघ्रता में, गति-नाशक, अवरोध-नाशक में (अङ्ग् - गति करना, आरम्भ करना, शीघ्रता करना, अवरोध होना, निन्दा करना, ऋ-अर् - गति करना, हिंसा करना)।

अङ्गारिणा - अङ्गारिणा = अङ्गारि द्वारा, शीघ्रता द्वारा, अवरोधों, निन्दकों द्वारा (अङ्ग् - गति करना, आरम्भ करना, शीघ्रता करना, अवरोध होना, निन्दा करना)।

अचरन् = आचरण किया, विचरण किया, न चलता हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चर् = जाना, खाना, आचरण करना)।

अचायिषम् = पूजा, सुना। पूजन करता हूँ, श्रवण करता हूँ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चाय - पूजा करना, सम्मान करना, सुनना, जानना, समझना)।

अचारिषम् = आचरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चर् = जाना, खाना, आचरण करना)।

अचिक्रदत् - अचिक्रदत् = किया, पल्लवित हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चिकृ - गति करना, पल्लवित होना, कृ - करना)।

अचिक्रदद् - अचिक्रदद् = किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चिकृ - गति करना, पल्लवित होना)।

अचितिम् = अचिति को (अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चि - चयन करना, चुनना, चित् - चेतन होना, सम्यक् जानना, चिन्तन करना, विचार करना, सन्देह करना, स्मरण करना)।

अचित्तीः = अचित्ती, अचेतन (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चित् - चेतन होना, सम्यक् जानना, चिन्तन करना, विचार करना, सन्देह करना, स्मरण करना)।

अचिष्टुः = अचिष्टु, आदर करना, जाना (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना, चि - चयन करना, चुनना)।

अचित्तात् = अचित्त से (अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चित् - चेतन होना, सम्यक् जानना, चिन्तन करना, विचार करना, सन्देह करना, स्मरण करना)।

अचुच्यवुः = स्नान किया, गया, मथा (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चुच-चुच्य = अर्क निकालना, स्नान करना, मथना, काटना)।

अचेतः = अचेत, अचेतन (अ = नहीं, उपसर्ग, चित् - चेतन होना)।

अचोदसो = अप्रेरित, प्रेरणा न करने वाला (चुद् - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)।

अच्छ = अच्छा, निर्मल करो (अच्छ - अच्छा होना, निर्मल करना)।

अच्छवत् = अच्छा, निर्मल के समान (अच्छ - अच्छा होना, निर्मल करना, वत् - के समान, प्रत्यय)।

अच्छवद् = अच्छा, निर्मल बोलने वाला, सुभाषी (अच्छ - अच्छा होना, निर्मल करना, वद् - बोलना, कहना)।

अच्छा = अच्छा, श्रेष्ठ, सुन्दर, स्वच्छ (अच्छ - अच्छा होना, निर्मल करना)।

अच्छावदामसि, अच्छ-आवदामसि = अच्छा बोलते हैं, निर्मल बोलते हैं (अच्छ - अच्छा होना, निर्मल करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वद् - बोलना, कहना)।

अच्छिद्रस्य - अच्छिद्रस्य = छिद्र-हीन का, दोषरहित का, निर्मल का (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्र - छेद करना)।

अच्छिद्रा - अच्छिद्रा = छिद्र-हीन, दोषरहित, निर्मल (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्र - छेद करना)।

अच्छिद्राः - अच्छिद्राः = छिद्र-हीन, दोषरहित, निर्मल (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्र - छेद करना)।

अच्छिद्रे = छिद्र-हीन, दोषरहित, निर्मल में (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्र - छेद करना)।

अच्छिद्रेण - अच्छिद्रेण = छिद्र-हीन द्वारा, दोषरहित द्वारा, निर्मल द्वारा (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, छिद्र - छेद करना)।

अच्छिन्नपत्राः-अच्छिन्न-पत्राः = छिद्र-हीन पत्र वाले, (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्-छिन् - छेदना, काटना, टुकड़े करना)।

अच्छिन्नम् - अच्छिन्नम् = अछिन्न, छिद्र-हीन, अखण्ड (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्-छिन् - छेदना, काटना, टुकड़े करना)।

अच्छिन्नस्य = अछिन्न का, छिद्र-हीन का, अखण्ड का (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्-छिन् - छेदना, काटना, टुकड़े करना)।

अच्छेतः = अछिन्न, छिद्र-हीन, अखण्ड, निर्मल (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्-छिन् - छेदना, काटना, टुकड़े करना, अच्छ - अच्छा होना, निर्मल करना, श्रेष्ठ होना, अच्छा होना)।

अच्य = अच्य, आदरणीय, गमनीय, याचनीय, मांगने योग्य (अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना)।

अच्युत् - अच्युत् = अच्युत, अपतित (अ = नहीं, उपसर्ग, च्यु - गिरना, भटकना, जाना)।

अच्युतः = अच्युत, अपतित (अ = नहीं, उपसर्ग, च्यु - गिरना, भटकना, जाना)।

अच्युतम् = अच्युत को, अपतित को (अ = नहीं, उपसर्ग, च्यु - गिरना, भटकना, जाना)।

अच्युतकषित्तमः-अच्युतक्षित्तमः = अपतितों में अतिशय निवास करने वाले (अ = नहीं, उपसर्ग, च्यु - गिरना, भटकना, जाना)।

अच्युतानाम् = अच्युतों का, अपतितों का, अपतितों के मध्य (अ = नहीं, उपसर्ग, च्यु - गिरना, भटकना, जाना)।

अछिद्रेण - अछिद्रेण = अछिद्र द्वारा, छिद्र-हीन द्वारा (अ = नहीं, उपसर्ग, छिद्-छिन् - छेदना, काटना, टुकड़े करना)।

अज = अज, अजन्मा, प्रगतिशील (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजः = अज, अजन्मा (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजगन् = गतिशील हुआ, प्रगति की, संघर्ष किया, प्राप्त किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

अजगरः = अजगर, अग्राही, निगलने वाला, गतिहीन, गतिज्ञानी, विद्वान्, (अ - नहीं, जग् - जाना, लेना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, गृ - सींचना, घर्षण करना, समझना, जानना, गति होना, बहिर्गमन होना, खाना, निगलना)।

अजनत् = उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् = उत्पन्न करना)।

अजनयः = उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् = उत्पन्न करना)।

अजनयत् = उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया

उपसर्ग, जन् = उत्पन्न करना)।

अजनयन् = उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् = उत्पन्न करना)।

अजनि = अजन में, उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अज- जाना, गति करना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जन - उत्पन्न करना)।

अजनिष्ट = गतिमान, उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अज- जाना, गति करना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जन - उत्पन्न करना)।

अजनिष्ट = गतिमान में निष्ठायुक्त, प्रगतिशील में निष्ठायुक्त (अज- जाना, गति करना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जन - उत्पन्न करना)।

अजपालम् = अजपाल को (अज-पाल, अ-जपाल, अज् - जाना, स्थापना करना, अ - नहीं, पाल् - पालन करना, जप् - जपना, मन्द गति होना)।

अजयः = जय-हीन, जय न होना, जिसे जय न किया जा सके (अ = नहीं, जि-जय - जीतना, जय होना)।

अजयत् = जय किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जि-जय - जीतना, जय होना)।

अजयन् = जय किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जि-जय - जीतना, जय होना)।

अजयन्त = जय किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जि-जय - जीतना, जय होना)।

अजर = जरा-हीन (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरः = जरा-हीन (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरन्तीम् = जरा-हीन रहते हुए को (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरम् = जरा-हीन को (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरस्य = जरा-हीन का (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजराः = अनेक जरा-हीन (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरासः = अनेक जरा-हीन (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरासो = अनेक जरा-हीन (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरे = अजर में, जरा-हीन में (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजरौ = अजर, जरा-हीन (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

अजस्य = प्रगतिशील का, अजन्मा का (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, अ - नहीं, जन् - जन्म होना)।

अजस्रः - अजस्रः = अजस्र, सतत, निरन्तर (सर्वनाम)।

अजस्रम् - अजस्रम् = अजस्र, सतत, निरन्तर को (सर्वनाम)।

अजस्रया-अजस्रया = अजस्र, सतत, निरन्तर द्वारा (सर्वनाम)।

अजस्रेण - अजस्रेण = अजस्र, सतत, निरन्तर द्वारा (सर्वनाम)।

अजहात् = परित्याग किया (जहा-हा - छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना)।

अजा = प्रगतिशील, प्रक्षेपित, अजन्मा (अ - नहीं, जन् - जन्म होना, अज = जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजातान् = प्रगतिशीलों को, प्रक्षेपितों को, नहीं उत्पन्न हुआओं को, अजन्माओं को (अ - नहीं, जन् - जन्म होना, अज = जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजानन् = जाना (अ - भूतकालिक उपसर्ग, अ - नहीं, ज्ञा-जा - जानना, समझना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना, अज = जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजानाम् = प्रगतिशीलों का, प्रक्षेपितों का, अजन्मा का (अ - नहीं, जन् - जन्म होना, अज = जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजानि = प्रगतिशील, प्रक्षेपित, उत्पन्न किया (अ - नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - जन्म होना, अज = जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजामिम् = अजामी को, न खाने वाले को (जम -

खाना, भक्षण करना)।

अजायत = उत्पन्न हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - उत्पन्न होना)।

अजायथाः = उत्पन्न हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - उत्पन्न होना)।

अजायन्त = जन्में, उत्पन्न हुए, उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् = उत्पन्न होना या करना)।

अजायमानः = उत्पन्न नहीं होने वाला, जन्म नहीं लेने वाला (अ - नहीं, जन् - उत्पन्न होना)।

अजायमानो = उत्पन्न नहीं होने वाला, जन्म नहीं लेने वाला (अ - नहीं, जन् - उत्पन्न होना)।

अजावयः = प्रगतिशील वय, प्रगतिशील अवय या रक्षक, प्रक्षेपित अवय या रक्षक, उत्पन्न नहीं होने वाला वय, जन्म नहीं लेने वाला वय, अजन्मा का वय या रचना (अजा-वयः, अज - अवयः, अ = नहीं, अज् - स्थापन, गमन, प्रक्षेपण करना, अव् - रक्षा करना, अ - नहीं, जन् - उत्पन्न होना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना)।

अजिनसन्धम् = अजिनसन्ध को, प्रगतिशील सन्ध को, प्रक्षेपित सन्ध को, (अज् - जाना, स्थापना, दौड़ाना, फेंकना, सन् - सेवा करना, योग्य होना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

अजिरम् = गतिमान, जरा रहित, अहिंसक को (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना, जिरि - हिंसा करना)।

अजिरशोचिषः = कभी जीर्ण न होने वाली पवित्रता, प्रगतिशील-पवित्रता वाले (अ+जिर+शोचिषः, अ - नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना, अज् - जाना, स्थापना, दौड़ाना, फेंकना, शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना)।

अजिराय = अजिर के लिए, गतिमान, जरा रहित, अहिंसक के लिए (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना, जिरि - हिंसा करना)।

अजीगः = गतिमान्, वेग से जाने वाला (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजीगमम् = गतिमान् को, वेग से जाने वाले को (अज

- जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजीजनः = जन्म लिया, उत्पन्न हुआ, गतिमान्, वेग से जाने वाला (जन - जन्म होना, जन्म देना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजीजनत् = प्रगतिशीलता को उत्पन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन - जन्म होना, जन्म देना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अजीजपत = प्रगतिशीलता, प्रक्षेपित्, जप किया, मन्द गति किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जप - मन्द गति होना)।

अजुरम् = अजुर को, गतिशील को, अगति, अकम्पित, अमिश्रित, अविभाजित को (अ - नहीं, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जु - गति करना, जाना, भागना, दौड़ाना)।

अजुषन्त = विचार किया, चिन्तन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जुष् = विचार करना, सेवा करना)।

अजो = गतिमान, अजन्मा (अ = नहीं, अज - जाना, गति करना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जन - उत्पन्न करना)।

अज्ञात्-यक्ष्मात् = अज्ञात-यक्ष्म से (अ - नहीं, ज्ञा - जानना, यक्ष - पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

अज्ञाता = अज्ञानी (अ = नहीं, ज्ञा = जानना)।

अज्म = प्रगति (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अज्मम् = प्रगतिशील को, प्रगति को, वेग से जाने वाले को (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अज्यताम् = वेग से जाये (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अज्यते = प्रगति करते हैं, जाते हैं (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अज्यसे = प्रगति करते हैं, जाते हैं, वेग से जाने के लिए (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अज्यस्य = प्रगतिशील का, शीघ्र-गमन-योग्य का (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अज्राणाम् - अज्राणाम् = प्रगतिशीलों का, शीघ्र-

गामी, वेगवानों का (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

अञ्च = मान, पूजा, शोभा (अञ्च-अञ्च - झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना)।

अञ्जते = स्वच्छ किया जाता है, प्रकाश किया जाता है (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जन् = स्वच्छता, प्रकाश (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जन्तु = जाओ, स्वच्छ करो, प्रकाश करो (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जसा = प्रगति द्वारा, स्वच्छता द्वारा, प्रकाश द्वारा (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जाते = जाते हैं, स्वच्छता, प्रकाश करते हैं (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जानाः = प्रगति, स्वच्छता, प्रकाश करने वाले (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जानो = प्रगति, स्वच्छता, प्रकाश करने वाले (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जि - अञ्जि = प्रगतिशील, स्वच्छ, प्रकाशमान (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जिभिः - अञ्जिभिः = प्रगतिशील, स्वच्छ, प्रकाशमानों द्वारा (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जिम् - अञ्जिम् = अञ्जि को, प्रगतिशील, स्वच्छ, प्रकाशमान को (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)।

अञ्जिरः - अञ्जिरः = स्वच्छता, प्रगति, प्रकाश करने वाले (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अञ्जिसक्थः = अञ्जि-सक्थ, परिपक्व प्रकाशित (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना। सक्त - भूना, पकाना, पीसना)।

अणवः = प्राणवान्, सूक्ष्म, शब्दकर्ता, अरक्षक, अस्तोता, स्तुति न करने वाले, अरक्षक (अन्-अण् - प्राण होना, सूक्ष्म होना, शब्द करना, अ - नहीं, नु - स्तुति करना, अन् - नहीं, अण् - रक्षा करना,)।

अण्वम् = प्राणवान्, सूक्ष्म, शब्दकर्ता को (अन्-अण् -

प्राण होना, सूक्ष्म होना, शब्द करना)।

अण्वानि = प्राणवान्, सूक्ष्म, शब्दकर्ता (अन्-अण् - प्राण होना, सूक्ष्म होना, शब्द करना)।

अण्वीभिः = अण्वियों द्वारा, प्राणवानों द्वारा, शब्दकर्ता द्वारा (अण् - अन - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना)।

अण्व्या = प्राणवान्, सूक्ष्म, शब्दकर्ता (अन्-अण् - प्राण होना, सूक्ष्म होना, शब्द करना)।

अतः = इसलिए (अव्यय)।

अतथा = प्रगतिशील, निरन्तर गतिशील (अत् - चलना, निरन्तर चलना)।

अतन्द्राः = अतन्द्र, तन्द्रा रहित, प्रगतिशील (अ-तन्द्राः, अतम्+द्रा, अ - नहीं, तन्द् - आलस्य होना, तन्द्रा होना, अत - चलना, निरन्तर चलना, द्रा - भाग जाना, लज्जित होना, निन्दा करना, दोष लगाना, उड़ जाना)।

अतन्द्रो = अतन्द्र, तन्द्रा रहित, प्रगतिशील (अ-तन्द्राः, अतम्+द्रा, अ - नहीं, तन्द् - आलस्य होना, तन्द्रा होना, अत - चलना, निरन्तर चलना, द्रा - भाग जाना, लज्जित होना, निन्दा करना, दोष लगाना, उड़ जाना)।

अतन्वत = विस्तृत किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तन् - विस्तार करना)।

अतप्त-तनूः = अतप्त तन वाले (अ = नहीं, तप् - ऐश्वर्य होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, दाह होना, जलाना, तृषा होना, तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)

अतमेरुः - अतमेरुः = इच्छा रहित, निष्काम (अ = नहीं, तम् = इच्छा करना)।

अतष्ट = निरन्तर गतिशील (अत - चलना, निरन्तर चलना)।

अतसम् = निरन्तर गतिशील, अम्लान, अस्थापित, अक्षिप्त को, स्थापित किया, प्रक्षेप किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अत - चलना, निरन्तर चलना, तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना)।

अतसंयत् = स्थापित किया, प्रक्षेप किया (अत - चलना, निरन्तर चलना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना)।

अति = अतिक्रम (अत - चलना, निरन्तर चलना)।

अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)।

अति-अरिच्यत् = अतिशय एकत्र किया, मिलाया, विस्तार किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, अति - अधिक, रिच् - एकत्र करना, जोड़ना, फैलाना, अलग करना)

अति-एति = अतिक्रमण कर जाता है, अतिशय गति करता है, अतिक्रम कर जाता है (अति-ऐति, अति - अधिक, इ = जाना, जानना)।

अति-कृशम् = अतिकृश को (अति - बहुत, कृश् - सूक्ष्म होना, कृश होना, दुबला होना)।

अति-कृष्णम् = अतिकृष्ण को (अति - बहुत, कृष् - खींचना, आकर्षण होना)।

अति-कुल्वम् = अतिकुल्व को, अतिशय आवरण, गणना को (अति - बहुत, कुल् - आवरण करना, गणना करना, बन्धुता होना)।

अतिकुरुष्टाय - अतिकुष्टाय = अतिकुष्ट के लिए, अतिशय पुकारने, रोने वाले के लिए (अति - अधिक, बहुत, कृश - पुकारना, रोना)।

अति-छन्दसम् = अतिछन्द को (अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय), छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना)।

अति-छन्दसे = अतिछन्द के लिए (अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय), छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना)।

अति-छन्दा = अतिछन्द, अधिक छन्द (अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय), छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना)।

अतिथिः - अतिथिः = सतत गतिशील, अतिथि (अत् - सतत गमन करना)।

अतिथिम् - अतिथिम् = सतत गतिशील, अतिथि को (अत् = सतत गमन करना, निरन्तर चलना, जाना, सदैव जाते रहना)।

अतिथेः - अतिथेः = अतिथि का (अत् = सतत गमन करना, निरन्तर चलना)।

अतिदीर्घम् - अतिदीर्घम् = अतिदीर्घ को (अति - बहुत, दीर्घ - बड़ा होना)।

अतिदुरुतः - अति-द्रुतः = अतिशय वेगवान् (अति - अधिक, बहुत, द्रु - जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

अतिपिप्रति = अत्यधिक पूर्ण करता है (अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय), पृ - पूर्ण करना, भरना)।

अतिरन् = पूर्ण किया, पार किया, सतत गतिशील किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तीर - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

अतिरम् = पूर्ण किया, पार किया, सतत गतिशील किया, अतिर को (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तीर - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

अतिरुक्भ्याम् - अतिरुक्भ्याम् = अतिशय रुग्ण के लिए, अति हिंसक के लिए (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), रुज् - रोग होना, कष्ट होना, हिंसा करना)।

अतिरुक्भ्याम् = अतिशय रुग्ण के लिए, अति हिंसक के लिए (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), रुज् - रोग होना, कष्ट होना, हिंसा करना)।

अति-रोहति = अत्यन्त चढ़ता है, अत्यन्त बढ़ता है (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), रुह् - जन्म होना, बढ़ना, चढ़ना)।

अति-लोमशम् = अतिलोमश को (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), लोम् - रोम होना, रोयेंदार होना)।

अतिव्याधी = अधिक व्याधि वाला, अधिक विशेष अध्ययनशील, अतिहिंसक (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), वि - विशेष, अधि-इ - अध्ययन करना, व्यध - ताड़ना करना, पीड़ा करना, छेदना, हिंसा करना)।

अति-शुक्लम् = अतिशुक्ल को (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), शुक्ल - त्याग करना, रचना करना)।

अति-षितम् = अत्यधिक बंधा हुआ (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

अतिष्कद्वरीम्-अतिष्कद्वरीम् = अतिष्कद्वरी को (अति - अतिशय, स्कन्द - चलना, जाना, जानना, सूखना,

स्खद् - जीतना, रक्षा करना)।

अतिष्ठत् - अतिष्ठत् = ठहरा, स्थित हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तिष् - ठहरना, स्थित होना)।

अति-सर्पति = अधिक सरकता है, चलता है (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), सर्प - जाना, सरकना, गति करना)।

अति-स्थूलम् = अतिस्थूल को (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), स्थूल - पुष्ट होना, स्थूल होना, मोटा होना)।

अतिस्रुतः - अतिस्रुतः = अति स्रवित (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

अतिहाय = बहुत पूजा, सेवा, शब्द, त्याग करने वाला (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), हय - जाना, पूजा करना, सेवा करना, शब्द करना, हा - त्याग करना, जाना)।

अतिहरस्वम् - अतिहरस्वम् = अतिहरस्व को, अतिशय शब्दकर्ता को, अत्यल्प को (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), हस् - अल्प होना, छोटा होना, शब्द करना)।

अतीतृपन्त = अतीतृप करते हुए (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), तृप् - तृप्त होना, तृप्त करना)।

अतीतृपाम् = अतीतृप करने वाले को (अति - अधिक, बहुत, अत्यन्त (अव्यय), तृप् - तृप्त होना, तृप्त करना)।

अतीत्वरीम् = अतीत्वरी को, अतिशय त्वरित को (अति - अधिक, बहुत, अत्यन्त (अव्यय), त्वरा - तीव्र गति होना, द्रुत चलना)।

अतीरिच्यत् (अति - अरिच्यत्) = अतिशय एकत्र किया, मिलाया, विस्तार किया (अति - अधिक, बहुत, अत्यन्त (अव्यय), रिच् - एकत्र करना, जोड़ना, फैलाना, अलग करना)।

अतीहि = अतिशय जानें, प्राप्त करें, गमन करें (अत् = जाना, सतत गति करना, अति - अधिक, बहुत, अत्यन्त (अव्यय), इ = जाना, जानना, पाना)।

अतो = इससे (अव्यय)।

अत्कम् = सतत गमन वाले को (अत् = जाना, सतत गति करना)।

अत्के = सतत गमन वाले में (अत् = जाना, सतत गति

करना)।

अतृत्वे - अतृत्वे = अतिशय गमनशील के लिए, जानने वाले के लिए (अत् = जाना, सतत गति करना, जानना, पाना)।

अत्ता = खाओ (अद् - खाना)।

अत्ति-अत्ति = खाता है (अद् - खाना)।

अत्तु - अत्तु = खाये (अद् - खाना)।

अत्तत = सतत गतिशील, विस्तार किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तन्-तनु = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, अत् = जाना, सतत गति करना)।

अत्यः = सतत गमनीय (अत् = सतत गति होना)।

अत्यक्रमीत् = अत्यधिक वृद्धि की, रक्षा की, बढ़ गयी (अति-अक्रमीत्, अति - अधिक, बहुत, अत्यन्त (अव्यय), अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

अत्यम् = सतत गमनीय को (अत् = सतत गति होना, इ = जाना, जानना, पाना)।

अत्यविः = अत्यन्त रक्षक (अति - बहुत, अतिशय, उपसर्ग, अव्यय, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अत्यविम् = अत्यन्त रक्षक को (अति - बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय), अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अत्या = सतत गमनीय (अत् = सतत गति होना)।

अत्याः = सतत गमनीय (अत् = सतत गति होना)।

अत्येति = अतिशय गति करता है, अतिक्रम कर जाता है (अति-ऐति, अति - अधिक, बहुत, अत्यन्त (अव्यय), इ = जाना, जानना, पाना)।

अत्यो = अत्य, सतत गमनीय (अत् - निरन्तर चलना, सतत गमन करना)।

अत्र - अत्र = यहाँ (अव्यय)।

अत्रिणम् - अत्रिणम् = सतत गमनशील को, जानने वाले को (अत् = सतत गति होना, जानना, पाना)।

अथ = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)।

अथर्व = अविचलित, अहिंसक! (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथर्वणः - अथर्वणः = अविचलित-अहिंसक का (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथर्वभ्यः - अथर्वभ्यः = अविचलित-अहिंसकों के लिए (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथर्वभ्यो = अथर्वों के लिए, अविचलित-अहिंसकों के लिए (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथर्वा-अथर्वा = अविचलित-अहिंसक! (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथर्वाणः-अथर्वाणः = अविचलित-अहिंसक! (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथर्व्युम् = अथर्व्यु को, अहिंसनीय को (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - जाना, अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथा = अथ (अव्यय)।

अथो = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर (अव्यय)।

अदः = खाने वाला (अद् - खाना)।

अददृहन्त = दृढ़ किया, बढ़ाया (दृह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

अददेताम् = प्रदान करे (दा - देना, सौंपना)।

अदधात् = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना)।

अदधुः = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना)।

अदन्ति = खाते हैं (अद् - खाना)।

अदन्तु = खायें (अद् - खाना)।

अदब्धः = अनिन्दक, अहिंसक (अ - नहीं (उपसर्ग), दम् = निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना)।

अदब्धस्य = अनिन्दक, अहिंसक का (अ - नहीं (उपसर्ग), दम् - निन्दा करना, आज्ञा करना)।

अदब्ध-व्रत-प्रमतिः = अनिन्दक, अहिंसक व्रत मति वाला (अ - नहीं (उपसर्ग), दम् - निन्दा करना, आज्ञा करना)।

अदध्यायो = अनिन्दक, अहिंसक (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ = निन्दा करना, आज्ञा देना)।

अदध्यासः = अनिन्दक, अहिंसक (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ = निन्दा करना, आज्ञा देना)।

अदध्यासो = अनिन्दक, अहिंसक (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ = निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना)।

अदध्वेन = अनिन्दक, अहिंसक द्वारा (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ = निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना)।

अदध्वेभिः = अनिन्दकों, अहिंसकों द्वारा (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ = निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना)।

अदम् = खाने वाले को (अद् - खाना)।

अदयो = अदय, अदानी, अपालक, खाने वाले (अ - नहीं (उपसर्ग), दय् = दया करना, दान करना, पालन करना, अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)।

अदर्दः = विदीर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृ-चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना, दृ - दुःख देना, मार डालना)।

अदर्शि = देखा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृश्-पश्य -देखना)।

अदाः = अदानी, दे दिया ((अ - नहीं (उपसर्ग), अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दा - देना)।

अदात् = दिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दा - देना, सौंपना)।

अदाभ्यः = अनिन्दकों, अहिंसकों के लिए, अदानियों के लिए, नहीं खाने वालों के लिए (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ - निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना, दा - देना, अद् - खाना)।

अदाभ्यम् = अनिन्दकों, अहिंसकों के लिए, अदानियों के लिए (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ - निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना, दा - देना)।

अदाभ्यासो = अनिन्दक, अहिंसक, अदानी (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ - निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना, दा - देना)।

अदित = अक्षय, अविनाशी, खाया हुआ (अ - नहीं

(उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)।

अदितये = अक्षय, अविनाशी के लिए अ - नहीं (उपसर्ग), दी = नष्ट होना, अद् = खाना)।

अदितिः = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)।

अदितिम् = अक्षय, अविनाशी को (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)।

अदिते - अदिते = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)।

अदितेः = अक्षय, अविनाशी का (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)।

अदित्याः = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), दी = नष्ट होना)।

अदित्यै = अक्षय, अविनाशी के लिए (अ - नहीं (उपसर्ग), दी = नष्ट होना, ह्रास होना)।

अदित्सन्तम् = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)।

अदिद्युतत् - अदिद्युतत् = प्रकाशमान हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, द्युत् = प्रकाश होना)।

अदीदेः = दिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दा = देना)।

अदीदेत् = दान करे (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दा = देना)।

अदीनाः = अदीन, नष्ट न होने वाला, अविनाशी, खाने वाला, खिलाने वाला (अ - नहीं (उपसर्ग), दी = नष्ट होना, अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)।

अदीमहि = खाते हैं, नष्ट नहीं करते हैं (अ - नहीं (उपसर्ग), दी = नष्ट होना, अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)।

अदृश्यमानः = अदृश्यमान (अ - नहीं (उपसर्ग), दृश्-पश्य -देखना)।

अदृश्रन् = देखा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृश्-पश्य -देखना)।

अदृहन्त = दृढ़ किया, बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया

उपसर्ग, दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

अदृही: = दृढ़ किया, बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

अदृहीत् = दृढ़ किया, बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

अदु: = खाया (अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)।

अदुग्धा: = अदुग्ध, अदोहित, अदुहित, दुग्धहीन (अ - नहीं (उपसर्ग), दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

अदुच्छुन: = अहिंसक (अ - नहीं (उपसर्ग), दु-दुन - दुःख देना, दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना)।

अदुहत् = दुहा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

अदेव = अदेव (अ - नहीं (उपसर्ग), दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

अदेवम् = अदेव को (अ - नहीं (उपसर्ग), दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

अदेवयुम् = अदेवयुक्त को (अ - नहीं (उपसर्ग), दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गुँथना, निन्दा करना, दोष लगाना, अपमान करना)।

अद्धा-अद्धा = सत्य ही, निश्चय ही (अव्यय, निपात्)।

अद्धि-अद्धि = खाओ, भोग करो, आत्मसात् करो, ग्रहण करो (अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)।

अद्धुः - अद्धुः = खाओ (अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)।

अद्भिः - अद्भिः = अदों द्वारा (अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)।

अद्भुत् = अद्भुत, आश्चर्यजनक (अव्यय)।

अद्भुतः = अद्भुत, आश्चर्यजनक (अव्यय)।

अद्भुतः = खाद्य (अद् = खाना, आत्मसात् करना, अ - नहीं, दा - देना)।

अद्भुतम् = अद्भुत, खाद्य (अद् = खाना, आत्मसात् करना, अ - नहीं, दा - देना)।

अद्भ्यः = अदों के लिए, खाद्य पदार्थों के लिए (अद् = खाना, आत्मसात् करना)।

अदिम् = खाता हूँ (अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)।

अद्य-अद्य = आज (अव्यय)।

अद्यत् = खाता है, खाया (अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)।

अद्या = आज (अव्यय)।

अद्यथा = आज के अनुसार, खाद्य जैसा (अद्य = आज (अव्यय)।

अद्या = खाद्य, आज (अद्य = आज (अव्यय), अद् = खाना, आत्मसात् करना)।

अद्यूत्ये - अद्यूत्ये = अद्यूत्य में (अ - नहीं (उपसर्ग), द्यु = आगे जाना, प्रकाश होना)।

अद्यौत - अद्यौत = प्रकाश किया (द्यु = आगे जाना, द्युत् - प्रकाश होना)।

अद्रयः = आदर किया, अहिंसक (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्रि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्रिः - अद्रिः = अद्रि, अहिंसक, भोजन, खाने, ग्रहण करने वाला (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्रि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्रिजाः - अद्रिजाः = अद्रि से उत्पन्न (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्रि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्रिदुग्धः = अद्रिदुग्ध, अहिंसक दोहन करने वाला (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)।

करना, नष्ट करना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्विबुधन्म् - अद्विबुधन्म् = अद्वि का बोध या ज्ञान, अद्वि, अहिंसक, भोजन, खाने, ग्रहण करने वाले का बोध या ज्ञान (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्विभिः = अद्वियों द्वारा, अद्वियों के साथ, अहिंसक, भोजन, खाने, ग्रहण करने वालों के साथ (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्विम् - अद्विम् = अद्वि को, अविदारणीय, अहिंसनीय, भोजन, खाने, ग्रहण करने वाले को (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्विः - अद्विः = अद्वि, अहिंसक, भोजन, खाने, ग्रहण करने वाला (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्विसंहतम् = अद्वि-संहत को, हिंसक का हनन करने वाले को (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)। सम् - सम्यक् (उपसर्ग)। हन् - मारना)।

अद्विहः - अद्विहः = अद्विही (अ - नहीं (उपसर्ग), द्विह - द्रोह करना)।

अद्विहम् = अद्विही को, द्रोह-हीन को (अ - नहीं (उपसर्ग), द्विह - द्रोह करना)।

अद्विहा = अद्विही, द्रोह-हीन (अ - नहीं (उपसर्ग), द्विह - द्रोह करना)।

अद्विहवाणा = अद्विही, द्रोह-हीन (अ - नहीं (उपसर्ग), द्विह - द्रोह करना)।

अद्विः - अद्विः = अद्वि का (अद् - खाना, ग्रहण

करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, अ - नहीं (उपसर्ग), दृ-द्वि-द्री - आदर करना, दृ - हिंसा करना, चीरना, तोड़ना, टुकड़े करना)।

अद्वि = अद्वि में, अहिंसक में, भोजन, खाने, ग्रहण करने में (अद् - खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना, अ - नहीं (उपसर्ग), दृ - हिंसा करना, आदर करना, सत्कार करना)।

अद्वेषे - अद्वेषे = अद्वेष में (अ - नहीं (उपसर्ग), द्विष - द्वेष करना)।

अध - अधा = अध, अब, इसके अनन्तर (अव्यय)।

अध = नीचे (अव्यय)।

अधः = नीचे (अव्यय)।

अधकण्ठेन = अधकण्ठ से (अध = नीचे (अव्यय), कण्ठ - शब्द करना, दुःखी होना, रोकना, स्मरण करना)।

अधत्त = धारण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धा = धारण करना)।

अधत्थाः = धारण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धा = धारण करना)।

अधन्विषुः = प्राप्त किया, गये (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धन्व - जाना, स्थानान्तर करना, जानना, पाना)।

अधमत् - अधमत् = शब्द किया, प्रकाश किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धम् - शब्द करना, प्रकाश करना, आग को फूंकना, तीव्र करना)।

अधमम् = अधम को, शब्दकर्ता को, प्रकाशकर्ता को, (अधम - निम्न (सर्वनाम)। अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धम् - शब्द करना, प्रकाश करना, आग को फूंकना, तीव्र करना)।

अधयत् = धारण किया, पोषण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधर-कण्ठेन = अधरकण्ठ द्वारा (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना। कण्ठ - शब्द करना, दुःखी होना, रोकना, स्मरण करना)।

अधरम् = अधर को, जय को, धारण न करने को (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ -

नहीं, धृ - धारण करना)।

अधराक् = दक्षिण दिशा (अव्यय)।

अधराक् = अधर, जय, धारण न करने वाला (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)।

अधराचीः = अधर, जय, धारण न करने वाला (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)।

अधराचो = अधरगामी, अधोगामी, जय, धारण न करने वाला (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना। अच - जाना, चलना, आदर करना, मांगना)।

अधरान् = अधरों को, जय को, धारण न करने को (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)।

अधरेण = अधर, जय, अधारण द्वारा (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)।

अधरमाय - अधर्माय = अधर्म के लिए (अ - नहीं, धृ - धारण करना)।

अधरथात् = निम्न स्थान, निम्न स्थिति (अधः = नीचे, अव्यय, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

अधरस्पदम् = अधरस्पद को, निम्न पद को (अधः = नीचे, अव्यय, अधः - अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, पद - चलना)।

अधःस्वित् = नीचे, निम्न (अधः = नीचे, अव्यय)।

अधा = अथ, अब, इसके अनन्तर (अव्यय)।

अधात् = निम्न, नीचा (अव्यय)।

अधात् = धारण किया (अधः = नीचे, अव्यय, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधातम् = धारण किया (अधः = नीचे, अव्यय, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधाताम् = धारण किया (अधः = नीचे, अव्यय। धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधायि = धारण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधारयत् = धारण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधारयन् = धारण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)।

अधि-ऐरयन्त = प्राप्त होते हैं, अधिगत किया (अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार, इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर = जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

अधि-कल्पिनम् - अधिकल्पिनम् = अधिकल्पी को (अधि - अधिक, कल्प - समर्थ होना)।

अधिक्षियन्ति - अधि-क्षियन्ति = अधिवास करते हैं, निवास करते हैं (अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार, क्षि - चलना, निवास करना)।

अधित = आधारित, धारण किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अधिपतयः = अधिपति गण (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपतये = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपति = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपतिः = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपतिना = अधिपति द्वारा (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपत्नी = अधिपत्नी (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपत्नीम् = अधिपत्नी को (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

अधिपाः = अधिपालक, अधिरक्षक (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पा - रक्षा-पालन करना)।

अधिम् = अधि को, आधारक को, अयुक्त को (अ - नहीं,

धि = धारण करना, युक्त होना)।

अधिराजम् = अधिराज को (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, राज - चमकना, शोभित होना)।

अधिवक्ता = अधिवक्ता (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

अधिषवणे = अधिषवण में, अधिसवन में, अधिसवन करने में (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

अधिष्ठाता = अधिष्ठान, उच्च स्थान वाला (अधि = अधिक, उच्च, पूर्णतः, स्था-तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

अधिष्ठानम् = अधिष्ठान, उच्च स्थान (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, स्था-तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

अधिसवने = अधिसवन में, अधिसवन करने में (अधि - अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

अधीयन्त = अधियमन किया, धारण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धी - धारण करना, अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, यम् - यमन करना, नियमन करना, नियन्त्रण करना)।

अधीवासम् = अधिवास को (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, वस् - वसना, वास करना, निवास करना, वस्त्र धारण करना)।

अधृष्टम् = अधृष्ट को, विजय, गर्व किया (अ - नहीं, अ - भूतकालिक उपसर्ग, धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

अधुः = गति, गमन, मार्ग (अधु - चलना, विचरण करना)।

अधुक्षत = प्रदीप्त किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग,

धुक्ष - प्रदीप्त करना, जलाना, जीना, श्रान्त होना या थक जाना)।

अधुक्षन् = प्रदीप्त किये (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धुक्ष - प्रदीप्त करना, जलाना, जीना, श्रान्त होना, थकना)।

अधूनुत = कम्पित किया, क्षोभित किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धून - कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

अधूनुतम् = कम्पित किया, क्षोभित किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धून - कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

अधूषत = शोभित हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धूष् = शोभित होना)

अधो = नीचे (अधः = नीचे, अव्यय)।

अधोरामः = अधोराम, नीचे रमने वाला (अधः = नीचे रम् - रमना, रमण करना, रम जाना)।

अधोरामौ = अधोराम, नीचे रमने वाला युगल (अधः = नीचे रम् - रमना, रमण करना, रम जाना)।

अध्यक्षाय - अध्यक्षाय = अध्यक्ष के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, अक्ष = खेलना, देखना, व्याप्त होना)।

अध्यतिष्ठत् (अधि-अतिष्ठत्) = अधिष्ठित हुआ, उच्च स्थिति को प्राप्त हुआ (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्था-तिष्ठ = ठहरना, स्थित होना)।

अध्यालोह-कर्णः = अध्यालोह के समान कर्ण वाला (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः। आ - समन्तात्, सम्यक् - उपसर्ग। लुह-लोह = लोहित होना, लोहित वर्ण का होना)।

अध्येति = अध्ययन करता है (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, ए = जाना, जानना, पाना, अधि + ए = अध्ययन करना)।

अध्यैरयन्त = प्राप्त होते हैं, अधि गमन करता है, अधिगमन किया (अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार, इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-ईर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर = जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

अधिगुः = जिस वाणी, गति को कोई धारण न कर

सके (अ+धि+गुः, अ = नहीं, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

अधिगो = जिस वाणी, गति को कोई धारण न कर सके (अ+धि+गुः, अ = नहीं, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

अध्वनः = मार्ग (अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वनाम् = मार्गों का (अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वने = मार्ग के लिए, मार्ग में (अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वपते = मार्गपालक (अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वम् = मार्ग को (अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वर = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, वर्णन करना)।

अध्वरकृतम् = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय द्वारा किया हुआ (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वरम् = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय को (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वरस्य = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय का (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वरा = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, वर्णन करना)।

अध्वराणाम् = अध्वरों का, अहिंसकों का, अवर्णनीयों का (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वराय = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय के लिए (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, झुकाना, वर्णन करना)।

अध्वरे = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय में (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, वर्णन करना)।

अध्वरेषु = अध्वरों में, अहिंसकों में, अवर्णनीयों में (अ

- नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, झुकाना, वर्णन करना)।

अध्वरो = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वर्यवः - अध्वर्यवः = अध्वर्यु गण, अहिंसक, अवर्णनीय लोग (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वर्यवम् = अध्वर्यु गण को, अहिंसक, अवर्णनीय लोगों को (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वर्युभिः - अध्वर्युभिः = अध्वर्यु गण, अहिंसकों, अवर्णनीय लोगों द्वारा (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, झुकाना, वर्णन करना)।

अध्वर्यू - अध्वर्यू = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वर्यो - अध्वर्यो = अध्वर्यु, अहिंसनीय (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वर्य्योः - अध्वर्य्योः = अध्वर, अहिंसक का (अ - नहीं, धृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वसु - अध्वसु = अकम्पनों में, मार्गों में (अ - नहीं, धू = कम्पन करना, अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वा = अकम्पित, प्रगतिशील (अ - नहीं, धू = कम्पन करना, अधु = चलना, विचरण करना)।

अध्वानम् = अकम्पन को, मार्ग को (अ - नहीं, धू = कम्पन करना, अधु = चलना, विचरण करना)।

अन् = नहीं (उपसर्ग)।

अन = प्राणवान् (अन - प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

अनक्तु - अनक्तु = प्रकाशित करे, प्राणवान् बनाये (अनक् = जाना, स्वच्छ करना, विख्यात करना, चमकना, प्रकाशित होना, तैलमर्दन करना, अभ्यञ्जन करना, संवारना, सजाना)।

अनग्नि-स्वाताः - अनग्नि-स्वाताः = अग्नि-स्वात से हीन, अग्नि-हीन स्वाद वाले (अन्-अग्नि-स्वाताः, अन् - नहीं, अग् = गति करना, घूमना, टेढ़ा जाना, आगे जाना, लेना, ग्रहण करना, स्वद्-स्वाद - स्वाद लेना)।

अनड्वान् = अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)।

अनड्वाहः = अनड्वाह, अपतनशील, पतित न होने वाले को वहन करने वाला, अव्यापक को वहन करने वाला, उद्यम-प्रयास न करने वाले को वहन करने वाला, अधिकार में न लेने वाले को वहन करने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना, वह - वहन करना, ले जाना)।

अनड्वाहम् = अनड्वाह को, अपतनशील, पतित न होने वाले को वहन करने वाले को, अव्यापक को, उद्यम-प्रयास न करने वाले को, अधिकार में न लेने वाले को (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना, वह - वहन करना, ले जाना)।

अनन्तः = अनन्त, अन्तहीन, प्राणवान् (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, अन् - नहीं, अन्त - अन्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)।

अनन्तम् = अनन्त, अन्तहीन, प्राणवान् को (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, अन् - नहीं, अन्त - अन्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)।

अनन्ताय - अनन्ताय = अनन्त, अन्तहीन, प्राणवान् के लिए (अन् = स्पन्दन करना, हलचल करना, अन् - नहीं, अन्त - अन्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)।

अनपच्युतम् = व्यक्त न करने वाले को (अन् - नहीं, अप - नीचे, दूर, च्युत् = सींचना, भिगोना, बहना, च्यु = तैरना, चलना, गिरना, भटकना)।

अनपच्युता = व्यक्त न करने वाले (अन् - नहीं, अप - नीचे, दूर, च्युत् = सींचना, भिगोना, बहना, च्यु = तैरना,

चलना, गिरना, भटकना)।

अनपच्युतो = व्यक्त न करने वाले (अन् - नहीं, अप - नीचे, दूर, च्युत् = सींचना, भिगोना, बहना, च्यु = तैरना, चलना, गिरना, भटकना)।

अनपव्ययन्तः = अनपव्ययमान, अनपव्ययी, अपव्यय न करने वाले (अन् - नहीं, अप - दूर, व्यय - खर्च करना, व्यय करना, आच्छादन करना, ढकना, सिलना)।

अनपस्फुरन्तम् = अनस्फुरणशील, स्फुरण न करने वाला (अन् - नहीं, स्फुर् - हिलना, स्फुरित होना, जाना, फैलना, सूझना)।

अनपस्फुरन्तीम् = अनन्यगामिनी, अविचल (अन् - नहीं, अप - नीचे, दूर, स्फुर् - चलना, स्फुरण होना)।

अनपेता = अपालित (अन् - नहीं, अप - पालन करना)।

अनभिद्रुहा = अद्वेषी, अहिंसक (अन् - नहीं, अभि = सभी ओर, द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)।

अनभिशस्ता = अहिंसक, अप्रशंसक (अन् - नहीं, अभि = सभी ओर, शस् - हिंसा करना, अभि-शस् - विनती करना, गिड़गिड़ाना)।

अनभिशस्ति - अनभिशस्ति = अहिंसक (अन् - नहीं, अभि = सभी ओर, शस् - हिंसा करना, अभि-शस् - विनती करना, गिड़गिड़ाना)।

अनभिशस्तेन्यम् = अहिंसायोग्य को (अन् - नहीं, अभि = सभी ओर, शस् - हिंसा करना, अभि-शस् - विनती करना, गिड़गिड़ाना)।

अनमन्त = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)।

अनमित्त्रम् - अनमित्त्रम् = अमित्त्रहीन को (अन् - नहीं, अ - नहीं, मिद् - स्नेह करना)।

अनमीवः = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)।

अनमीवस्य = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द का (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना,

शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)।

अनमीवा = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)।

अनमीवाः = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)।

अनमीवान् = अनमीवों को, निरोगियों, रोगमुक्तों को (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)।

अनयन् = नहीं ले जाते हुए, प्राणवान् करते हुए, न जानते हुए, न जाते हुए, न पाते हुए (अ-नयन्, अन्-अयन्, अ - नहीं, नी-नय - ले जाना, अन् - जीना, समर्थ होना, जाना, अन् - नहीं, इ-अय् - जाना, जानना, पाना)।

अनया = इस द्वारा (सर्वनाम, स्त्रीलिंग)।

अनर्वा - अनर्वा = अहिसक (अन् - नहीं, अर्व - हिंसा करना)।

अनर्वाणम् = अहिसक को (अन् - नहीं, अर्व - हिंसा करना)।

अनवद्यम् - अनवद्यम् = अवद्य नहीं, कथनीय (अन् - नहीं, अ - नहीं, वद् - बोलना, कहना)।

अनवह्वरम् = अकुटिल, अनाच्छादित को (अन् - नहीं, अव - नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), ह्वृ - वक्र होना, टेढ़ा होना, बांका होना, निवास करना, आच्छादन करना)।

अनश्रू - अनश्रू = अश्रुहीन (अन् - नहीं, अ - नहीं, अश - व्याप्त होना, पहुँचना, पाना, संग्रह करना, नश - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

अनागसः = अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अनागसम् = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अनागसो = अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अनागा = अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अनागाः = अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)।

अनातताय = तानने, विस्तार नहीं करने वाले के लिए (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना)।

अनातुरम् = अनातुर को, आतुरताहीन को, अशीघ्रकारी को (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, सम्यक्, तुर - त्वरा करना, शीघ्रता करना)।

अनाधृष्टम् - अनाधृष्टम् = अविजित, निरभिमानी (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना)।

अनाधृष्टा = अनाधृष्टा, निरभिमानी, अजेय (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना)।

अनाधृष्टाभिः = अनाधृष्टियों, निरभिमानियों, अजेयों द्वारा (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना)।

अनाधृष्यः = अनाधृष्य, निरभिमानी, अजेय (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना, स्वयम् को बड़ा समझना)।

अनाधृष्यम् = अनाधृष्य, निरभिमानी, अजेय (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना)।

अनाधृष्याः = अनाधृष्य, निरभिमानी, अजेय (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना, स्वयम् को बड़ा समझना)।

अनाधृष्याय = अनाधृष्य, अजेय के लिए, अधीर न होने वाले, गर्व न करने वाले के लिए (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना, स्वयम् को बड़ा समझना)।

अनाधृष्यौ = अनाधृष्य, निरभिमानी, अजेय (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना, स्वयम् को बड़ा समझना)।

अनानतस्य = अनानत का, अनमित, अनमनशील का (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

अनामयत् = निरोगी, रोगमुक्त हुआ (अन्-आ-अमयत्, अन्-आ-मयत्, अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना, मय् - गति करना, जाना, जानना, पाना, कठिन कार्य करना)।

अनाविद्धया = अनाविद्ध द्वारा (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना)।

अनिपद्यमान - अनिपद्यमान = अप्रगतिशील, गतिहीन (अ - नहीं, नि = निश्चित, निरन्तर, पद - चलना)।

अनिपद्यमानम् - अनिपद्यमानम् = अप्रगतिशील को, अगतिशील को (अ - नहीं, नि = निरन्तर, पद - चलना, पत् - उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना)।

अनिभृष्टम् = अभृष्ट को, अपतित को (अ - नहीं, नि = निश्चित, निरन्तर, भृश् - गिरना, पतन होना)।

अनिमानो = अनिश्चित, अनन्त, अमापनीय, प्राणवान् (अनि+मानः, अ+नि+मानः, अ = नहीं, नि = निश्चित, निरन्तर, मान - मान करना, पूजा करना, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा करना, शोध करना, सत्कार करना, मनाना, तोलना, तुलना करना, मापना, अन - प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

अनिमिषः = अनिमिष, चेतनाभिसिंचक, प्राणवान् (अनि+मिष, अ-निमिष, अन - चेतन होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना। अ = नहीं, नि = निश्चित, निरन्तर, मिष् - सींचना, प्रोक्षण करना, विवाद करना, स्पर्धा करना, होड़ लगाना, कलह करना, नि-मिष् - आँख बन्द करना)।

अनिमिषेण = अनिमिष, चेतनाभिसिंचक, प्राणवान् द्वारा (अनि+मिष, अ-निमिष, अन - चेतन होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना। अ = नहीं, नि = निश्चित, निरन्तर, मिष् - सींचना, प्रोक्षण करना, विवाद करना, स्पर्धा करना, होड़ लगाना, कलह करना, नि-मिष् - आँख बन्द करना)।

अनिमेषम् = अनिमेष को, चेतनाभिसिंचक को, प्राणवान् को (अनि+मिष, अ-निमिष, अन - चेतन होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना। अ = नहीं, नि = निश्चित, निरन्तर, मिष् - सींचना, प्रोक्षण करना, विवाद करना, स्पर्धा करना, होड़ लगाना, कलह करना, नि-मिष् - आँख बन्द करना)।

अनिराः = अनिरा, प्राणवान्, जो ईर्ष्यालु न हो (अन् = नहीं, इर् = ईर्ष्या करना, अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना)।

अनिराम् = अनिरा को, प्राणवान्, जो ईर्ष्यालु न हो, उसको (अन् = नहीं, इर् = ईर्ष्या करना, अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना)।

अनिलम् = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना)।

अनिशितसर्गा = अविचारित सृजन करने वाला, छोड़ने वाला (अ - नहीं, निश् = विचार करना, मनन करना, सृज् - छोड़ना, त्याग करना, उत्पन्न करना, रचना करना)।

अनिशिता = अविचारित, विचार से परे (अ - नहीं, निश् = विचार करना, मनन करना)।

अनिशितो = अविचारित, विचार से परे (अ - नहीं, निश् = विचार करना, मनन करना)।

अनिष्कृतम् = अनिष्कृत, अनिष्कासित को (अ - नहीं, निः - विना, बाहर, निश्चित (अव्यय), कृ - करना)।

अनिष्टतः = अविचारित, अनिष्ट से, अनिच्छा से (अ - नहीं, इष् - इच्छा करना, जाना, निरन्तर देखना, निश् = विचार करना, मनन करना)।

अनिष्टतः = अविचारित, विचार से परे (अ - नहीं, निश् = विचार करना, मनन करना)।

अनीक = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल

करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

अनीकम् = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण को (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

अनीकवते = स्पन्दनशील, चेतन, प्राणवान् के लिए (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

अनीके = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण में (अन् = प्राण होना, जीवन होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, समर्थ होना, जाना)।

अनीकेन = अनीक द्वारा, स्पन्दनशील, चेतना, प्राण द्वारा (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

अनीकैः = स्पन्दनशीलों द्वारा, चेतना, प्राण द्वारा (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

अनीडः = वासहीन, गृहहीन (अ - नहीं, निड - निवास करना)।

अनृक्षरा - अनृक्षरा = अहिंसक (अन् - नहीं, ऋक्ष - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देने का यत्न करना)।

अनृणः = गतिहीन, न ले जाने वाला (अन्-ऋणः, अ-नृणः, अन् - नहीं, ऋ - जाना, चलना, जाना, पाना, नृ - ले जाना)।

अनृतम् = अनृत को, ऋतहीन को (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)।

अनृतात् = अनृत से (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)।

अनृते = अनृत में (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)।

अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)।

अनुकामः = कामना के पीछे, कामना के अनुसार, अनुकूल कामना (कामना करना, कम - चाहना, इच्छा करना)।

अनुकामकृत् = कामना के अनुकूल करने वाला, अनुकूल कामना करने वाला (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग),

कम - चाहना, इच्छा करना, कृ - करना)।

अनुकाशेन = प्रकाश के अनुकूल द्वारा, अनुकूल प्रकाश द्वारा (अनु - पीछे, काश् - चमकना, प्रकाश करना)।

अनुक्षतारम् - अनुक्षतारम् = असिञ्चक को, स्वच्छ-दृढ न करने वाले को, अनुकूल रक्षक को (अन्-उक्षतारम्, अन् - नहीं, उक्ष् - सींचना, दृढ़ करना, स्वच्छ करना, सहन करना, अनु - अनुकूल, क्षत्-क्षद् - ढकना, मारना, रक्षा करना)।

अनुक्षत्तारम् = अनुकूल रक्षक को (अनु - अनुकूल, क्षत्-क्षद् - ढकना, मारना, रक्षा करना)।

अनुघुष्य = अनुघोष के योग्य (अनु - पीछे, अनुकूल, घुष् - घोष करना, शब्द करना, प्रकाश करना)।

अनुचरम् = अनुचर को (अनु - पीछे, चर् - चलना)।

अनूजहिरे = अनुहिंसा की (अनु = पश्चात्, पीछे, जह - हिंसा करना, चलना, फैलना)।

अनुज्जेषम् = अनुसेवी को (अनु - पीछे, अनुकूल, जिष् - सेवा करना, प्रोक्षण करना, सींचना)।

अनुत्तः = अनुदार (अन् - नहीं, उत् = ऊपर, उच्च (उपसर्ग), उद् - उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उद् - उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, कष्ट होना)।

अनुत्तमन्युम् = अनुदार विचार को (अन्+उत्त+मन्यु, अन् - नहीं, उत् = ऊपर, उच्च (उपसर्ग), उद् - उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उद् - उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, कष्ट होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

अनुत्तमम् - अनुत्तमम् = अश्रेष्ठ को (अन् - नहीं, उत् = ऊपर, उच्च (उपसर्ग), उत्तम - श्रेष्ठ)।

अनुदिश्य = अनुदेश करके (अनु - पीछे, अनुकूल, दिश् = दिखाना, समझाना, देना)।

अनुदृश्य = अनुकूल दृश्य, देखकर (अनु - पीछे, अनुकूल, दृश् - देखना)।

अनुपत् = पीछे चलने वाला, अनुगामी (अनु - पीछे, अनुकूल, पद् - चलना)।

अनुपदे = अनुगामी में, अनुचर में (अनु - पीछे, अनुकूल,

पद् - चलना)।

अनुपश्यतः = अनुकूल दृष्टि युक्त (अनु - पीछे, दृश् - पश् = देखना)।

अनुपश्यति = अनुकूल देखता है (अनु - पीछे, दृश् - पश् = देखना)।

अनुपूर्वम् - अनुपूर्वम् = अनुपूर्व को, अनुकूल पूर्ण करने वाले को, अनुकूल वास को (अनु - पीछे, पूर्व = पहले, सर्वनाम। पूर्व - पूर्ण करना, भरना, रहना, निवास करना)।

अनुप्राणन्तु - अनुप्राणन्तु = अनुप्राणित करें, प्राणवान् करें (अनु - अनुकूल, पश्चात्, पीछे, प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन् - जीवन होना, प्राण होना, चेतन होना)।

अनुप्राणिहि - अनुप्राणिहि = अनुप्राणित करो, प्राणवान् करो (अनु - अनुकूल, पश्चात्, पीछे, प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन् - जीवन होना, प्राण होना, चेतन होना)।

अनुप्रेत - अनुप्रेत = अनुगमन करें, अनुगामी बने (अनु - अनुकूल, पश्चात्, प्र - प्रकृष्ट, इ - जाना, जानना, पाना)।

अनुमत = अनुमत, अनुकूल मन, अनुकूल विचार (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - विचार करना, जानना, समझना)।

अनुमता = अनुमता, अनुकूल मन, अनुकूल विचार युक्त (अनु - अनुकूल, पश्चात्, प्र - अधिक, प्रकृष्ट, मन् - विचार करना, जानना, समझना)।

अनुमतिः = अनुमति, अनुकूल मन, अनुकूल विचार (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - मनन करना, विचार करना)।

अनुमते = हे अनुमते, हे अनुकूल मन, अनुकूल विचार युक्त (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - मनन करना, विचार करना)।

अनुमत्या = अनुमति द्वारा, अनुकूल मन, अनुकूल विचार द्वारा (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - मनन करना, विचार करना)।

अनुमत्यै = अनुमति के लिए, अनुकूल मन, अनुकूल विचार के लिए (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - मनन करना, विचार करना)।

अनुमदन्ति - अनु-मदन्ति = अनुकूल आनन्दित करते हैं (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मद् - आनन्द होना, आनन्द करना)।

अनुमाद्यः = अनुकूल आनन्दप्रद, अनुकूल आनन्द योग्य (अनु = अनुकूल, पश्चात्, मद् - आनन्द होना, आनन्द करना)।

अनुमाद्यस्य = अनुकूल आनन्दप्रद, अनुकूल आनन्द योग्य का (अनु = अनुकूल, पश्चात्, मद् - आनन्द होना, आनन्द करना)।

अनुम्लोचन्ती = अनुगमन करती हुई (अनु = अनुकूल, पश्चात्, म्लुच् - जाना, जानना, पाना)।

अनुया = जीवन द्वारा, प्राण द्वारा, चेतना द्वारा, अनुगमन (अन् = जीवन होना, प्राण होना, चेतना होना, अनु = अनुकूल, पश्चात्, या - जाना, जानना, पाना)।

अनुयाजान् = अनुयाजों को (अनु = अनुकूल, पश्चात्, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

अनुरुधम् - अनुरुधम् = अनुरुध को (अनु = अनुकूल, पश्चात्, रुध् - बढ़ना, रोकना, चाहना, कृपालु होना)।

अनुरूपः - अनुरूपः = अनुरूप, अनुकूल रूप (अनु = पश्चात्, पीछे, रूप- रूप होना, रूप बनाना)।

अनुवर्त्मानः - अनुवर्त्तमानः = अनुवर्त्तमान, अनुकूल वर्त्तमान (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वृत् - वर्त्तमान होना)।

अनुवाक्याः = अनुवाक्य, अनुकूल वाणी (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वच् - बोलना, समझाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

अनुवाक्याभिः = अनुवाक्यों द्वारा, अनुकूल वाणी द्वारा (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वच् - बोलना, समझाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

अनुवीक्षस्व - अनुवीक्षस्व = अनुवीक्षण करो (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वि - विशेष, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अनुव्यायन् = अनुगमन करती हुई (अनु = पश्चात्, पीछे, वि- विशेष, आ - समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, अय् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना, जानना, पाना)।

अनुशंसिषो = अनुशंसा, स्तुति, प्रशंसा, इच्छा करने वाला (अनु = अनुकूल, पश्चात्, शंस् = इच्छा करना,

स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

अनुष्टुप् = अनुस्तुति (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनुष्टुभ = अनुस्तुति (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनुष्टुभम् = अनुस्तुति को (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनुष्टुभा = अनुस्तुति (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनुष्टुभे = अनुष्टुभ के लिए, अनुस्तुति के लिए (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनुष्टुवन्ति = अनुकूल स्तुति करते हैं (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनुष्वधम् = अनुस्वध को, अनुकूल स्वाद को, अनुकूल स्वधारणा को (अनु = पश्चात्, पीछे, स्वद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना, स्व - अपना, धा - धारण करना)।

अनुसंयन्तु = अनुकूल भलीभाँति उद्धार करें, अनुकूल सम्यक् संयमित करें (अनु = अनुकूल, पश्चात्, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यन् - उद्धार करना, उद्धारण करना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, यम् - स्वाधीन रखना, पोषण करना, नाश करना)।

अनुसृष्टान् = अनुसृष्टों को, अनुसृष्टितों को (अनु = अनुकूल, पश्चात्, सृज् - उत्पन्न करना, सृजन करना, रचना करना, त्याग करना)।

अनुस्तुप् = अनुस्तुति (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्तु - स्तुति करना)।

अनूकाशेन = अनुकाश द्वारा, अनुकूल प्रकाश द्वारा (अनु = अनुकूल, पश्चात्, काश् - प्रकाश करना, चमकना)।

अनूची = अनूची, अनुसम्बन्ध, अनुसंगठन, अनुवाची (अनु = अनुकूल, पश्चात्, उच - सम्बन्ध होना, एकत्र होना, वद्-वच्-ऊच् - कहना, बोलना)।

अनूचीना = अनूचीना, अनुसम्बन्ध, अनुसंगठन, अनुवाची (अनु = अनुकूल, पश्चात्, उच - सम्बन्ध होना, एकत्र होना, वद्-वच्-ऊच् - कहना, बोलना)।

अनूच्ये = अनूच्य, अनुसम्बन्धित, अनुसंगठन, अनुवाची (अ - नहीं, अनु - पीछे, उच - सम्बन्ध होना, एकत्र होना, वद्-वच्-ऊच् - कहना, बोलना)।

अनूधा = अनूधा (अनु = अनुकूल, पश्चात्, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

अनूनवर्चाः - अनूवर्चाः = अनुवर्चस् वाला, अनुकूल प्रकाश युक्त (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वर्च - चमकना, प्रकाश करना)।

अनूपे = अनूप में, अनुपालक में, प्राणवान् में, चेतना-रक्षक में (अनु = अनुकूल, पश्चात्, अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, पा - रक्षा करना, पालन करना)।

अन्तः = बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम)

अन्तमः = प्राणवान्, बन्धन, हिंसा, प्रगति (अन् = प्राण होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

अन्तमस्य = अन्तम का, प्राणवान् का, बन्धन, हिंसा, प्रगति का (अन् = प्राण होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

अन्तमा = प्राणवान्, बन्धन, हिंसा, प्रगति (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

अन्तमानाम् = अन्तमों का, प्राणवानों का, बन्धन, हिंसा, प्रगति का (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

अन्तमे = प्राणवान् में, बन्धन, हिंसा, प्रगति में (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

अन्तर = अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय)।

अन्तरः = प्राणवान्, अन्तर, भीतर (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय)।

अन्तरम् = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय)।

अन्तरस्य = अन्तर का, भीतर का, प्राणवान् का (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय)।

अन्तरा = प्राणवान्, अन्तर, भीतर (अन् = प्राण होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तः - बीच में, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय)।

अन्तरिक्षम् - अन्तरिक्षम् = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अन्तरिक्षसत् - अन्तरिक्षसत् = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना, सद् - बैठना, चलना)।

अन्तरिक्षसद् - अन्तरिक्षसद् = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी में चलने वाला, स्थित (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना, सद् - बैठना, चलना)।

अन्तरिक्षसदम् - अन्तरिक्षसदम् = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी में चलने वाले को, स्थित को (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना, सद् - बैठना, चलना)।

अन्तरिक्षस्य - अन्तरिक्षस्य = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी का (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अन्तरिक्षात् - अन्तरिक्षात् = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी से (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अन्तरिक्षाय - अन्तरिक्षाय = अन्तरिक्ष के लिए (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अन्तरिक्षे - अन्तरिक्षे = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अन्तरिक्षेण - अन्तरिक्षेण = अन्तरिक्ष द्वारा (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

अन्तरियन्तः = अन्तःयमन करने वाले, प्राणों का बन्धन, नियमन करने वाले (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, यम् - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

अन्तर्दावे = अन्तर्दाव में, अन्तः-दानशील, अन्तः-प्रगतिशील में (अन्तः - बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम),

दु-दव् - जाना, सुगन्ध लेना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

अन्तर्यामः - अन्तर्यामः = अन्तर्यामी (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, यम् - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

अन्तर्यामात् - अन्तर्यामात् = अन्तर्याम से (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, यम् - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

अन्तर्यामे - अन्तर्यामे = अन्तर्याम में (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, यम् - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

अन्तर्वतीः = प्राणवान्, भीतर धारण करने वाली, प्राप्तवती, विदुषी (अन्तः = बीच में, भीतर, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

अन्तर्विभा - अन्तर्विभा = अन्तः प्रकाश (अन्तः = बीच में, भीतर, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, वि - विशेष, भा - प्रकाश करना)।

अन्तश्श्लेषः = अन्तः श्लेष, आलिंगन, सहनशीलता, सामर्थ्य (अन्तः = बीच में, भीतर, श्लेष - आलिंगन करना, जलाना, सहना)।

अन्तसः = अन्तः का, अन्तस् का (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राण होना, चेतन होना)।

अन्ताः = अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)।

अन्ताय = अन्त के लिए (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राण होना, चेतन होना)।

अन्ति = निकट (अव्यय, सर्वनाम)।

अन्ति-अन्ति = अन्त करने वाला, श्वास लेता है, जीवित रहता है (अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

अन्तिकात् = निकट से, समीप से (अव्यय, सर्वनाम)।

अन्तिके - अन्तिके = समीप, निकट (अव्यय, सर्वनाम)।

अन्तिमित्रः = अन्तिमित्र (अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)।

अन्तेभ्यः = अन्तों के लिए, अन्तों से (अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, चेतन होना)।

अन्तौ = अन्त (अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

अन्त्याय = अन्त्य के लिए (अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

अन्ध = आँख मूँदे हुए, अन्धा (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धः = आँख मूँदे हुए, अन्धा (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धन्तमः = अत्यन्त अन्ध, घोर अन्धकार (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धम् = अन्धकार को (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धसः = अन्धकार से (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धसा = अन्धकार द्वारा (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धसो = अन्धकार, अन्धस् से (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धाहीन् = अन्ध-अहियों को, व्यापक अन्धकार वालों को (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना,

आँखें मूंदना, अह = विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना)।

अन्धेन = अन्धकार, अन्धस् द्वारा (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, आँखें मूंदना)।

अन्धो = अन्धकार, अन्धस्, अन्न, प्राण-धारण (अन्ध - अन्धा होना, अन्धकार होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्नः = अन्न, प्राण, भोजन (अन् = प्राण होना, अद् = खाना)।

अन्नपते = हे अन्नपते (अन् = प्राणवान् होना, अद् = खाना, पत् - ऐश्वर्यवान् होना, श्रीमान् होना, शक्तिमान् होना, उड़ना)।

अन्नम् - अन्नम् = अन्न को (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्नस्य - अन्नस्य = अन्न का (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्ना = अन्न (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्नात् - अन्नात् = अन्न से (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्नादम् - अन्नादम् = अन्न को खाने, देने वाले को (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना, दा - देना)।

अन्नाद्याय - अन्नाद्याय = अन्नाद्य के लिए, खाद्यान्न के लिए (अन्न + अद्याय, अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्नानाम् = अन्नों का (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्नेषु - अन्नेषु = अन्नों में (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्नैः - अन्नैः = अन्नों द्वारा (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्य = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)।

अन्यः = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)।

अन्यकृतेभ्यः = अन्यकृत के लिए (अन्य = कोई और, इतर, कृ = करना)।

अन्यकेषाम् = अन्यो के, इतर किन के (अन्य = कोई

और, इतर, अन्य (सर्वनाम), केषाम् = किन सब के (सर्वनाम))।

अन्यत् = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यतः = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यथा = अन्य प्रकार से (सर्वनाम)।

अन्यद् = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यम् = अन्य, कोई और, इतर को (सर्वनाम)।

अन्यवापो = अन्यवाप, अन्य वपन, अन्य बोने वाला (अन्य = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम))। वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना, अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना)।

अन्यव्रतस्य - अन्यव्रतस्य = अन्यव्रत का (अन्य = कोई और, इतर, वृ - वरण करना, रुचना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

अन्यस्याः = अन्य का, इतर का (सर्वनाम)।

अन्यस्याम् - अन्यस्याम् = अन्य, इतर में (सर्वनाम)।

अन्या = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यान्या = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यादृङ् = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यादृङ् = इतर दृष्टि युक्त (अन्य, इतर, (सर्वनाम), दृक्ष्-दृश् -देखना)।

अन्यान् = अन्यों को (सर्वनाम)।

अन्यानि = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्याम् = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्ये = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्येन = अन्य द्वारा (सर्वनाम)।

अन्येषु = अन्यों में (सर्वनाम)।

अन्वन्ति - अन्वन्ति = अनुप्राणित करती है (अनु = अनुकूल, पश्चात्, पीछे, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

अन्वविन्दो = प्राप्त होता है (अनु = अनुकूल, पश्चात्, पीछे, विद्-विन्द - प्राप्त करना, सम्पादित करना)।

अन्वाततान = अनुविस्तार किया (अनु = अनुकूल, पश्चात्, पीछे। आ - समन्तात्, सम्यक्। तन् - विस्तार करना, वितान करना, तानना)।

अन्वातांसीत् = अनुशृंगार किया (अनु = पश्चात्, पीछे। आ - समन्तात्, सम्यक्। तन् - विस्तार करना, वितान करना, तानना, तंस- सजाना, अलंकृत करना, शृंगार करना)।

अन्वारभामहे = आरम्भ करते हैं (अनु = पश्चात्, पीछे। आ - समन्तात्, पूर्णतः। रभ् - कार्य का उपक्रम करना, प्रसन्न होना)।

अन्वित्या - अन्वित्या = अनुगमन द्वारा (अनु = पश्चात्, पीछे, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

अन्वीयतुः = अनुगमन करे (अनु - पीछे, ई - चलना, जाना)।

अन्वेतवै = अनुगमन करने के लिए (अनु = पश्चात्, पीछे, ई - जाना, जानना, पाना)।

अन्वेति = अनुगमन करती है (अनु = पश्चात्, पीछे, ई - जाना, जानना, पाना)।

अन्वेमि = जाता हूँ, प्राप्त होता हूँ, अनुगमन करता हूँ (अनु = पश्चात्, ई - जाना, जानना, पाना)।

अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)।

अपः = पालन करने वाला, पालक, रक्षक (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपकामम् = अपकाम को, निम्न कामना को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), कम् = कामना करना, चाहना, इच्छा करना। कामम् = कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय)।

अपगल्भम् = अपगल्भ को, निम्न ज्ञान को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, गल्भ - प्रगल्भ होना, जाना, ज्ञान होना, धैर्य-चातुर्य-साहस होना)।

अपगल्भाय = अपगल्भ के लिए, निम्न ज्ञान के लिए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, गल्भ - प्रगल्भ होना, जाना, ज्ञान होना, धैर्य-चातुर्य-साहस होना)।

अपघ्नन् = अपहनन करते हुए, मारते-पीटते हुए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, हन् - मारना)।

अपघ्नन्तो = हिंसक, मारने वाले (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, हन् - मारना)।

अपचितिः = अपचिति, अपचयन, अपचेतना (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, चि - चुनना, चयन करना, चित् - चेतन होना, ज्ञान होना)।

अपचितिम् = अपचिति, अपचयन, अपचेतना को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, चित् - चेतन होना, ज्ञान होना)।

अपजङ्घनत् = अपहनन किया, हिंसा की, मार दिया, गये (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), जङ्घ - गति करना, जाना, जानना, पाना, हन्-घ्न - हिंसा करना)।

अपतस्थुषो = अपस्थित (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), तस् - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना)।

अपत्यम् = अपत्य, पाल्य, पालनीय को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। अप् - जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अपत्यानि = अपत्य, पाल्य, पालनीय (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपत्याय = अपत्य, पाल्य, पालनीय के लिए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपद्महि - अपद्महि = नहीं चलते हैं, पालन करते हैं (अप् - जाना, जानना, पाना, पालन करना। पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

अपद्रागृहस्य = अगम्य दानी गृह का (अप् - पालन करना, जाना, जानना, पाना, पद - चलना, स्थानान्तर करना, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

अपबाधमानः = अपबाधित करने वाला, अपबाधित करता हुआ (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, बाध - बाधा होना, रोकना, दुःख देना, दुःख होना)।

अपमृष्टः - अपमृष्टः = अपसिञ्चक, असत्य को दूर करने वाले, असत्य से दूर रहने वाले (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = निम्न, दूर, मृष् - सहन करना, प्रोक्षण करना, सिंचन करना, क्षमा करना, असत्य बोलना, हर्ष होना, हँसना)।

अपरजाय = अपर जन्य के लिए, निम्न रज के लिए (अपर - अन्य, जन् - उत्पन्न होना। अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, रज - रंगना, रज होना)।

अपरम् = अपर, अन्य (सर्वनाम)।

अपराजितम् = अप-राजित को, अ-पराजित को, पराजित न हुए को, निम्न प्रकाशयुक्त को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, परा - अन्य, जि - जीतना, जय होना, अप = दूर, नीचे, अपकार, राज् - प्रकाश होना, चमकना)।

अपराजिता = अप-राजित, अ-पराजित, निम्न प्रकाशयुक्त (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, परा - अन्य, जि - जीतना, जय होना, अप = दूर, नीचे, अपकार, राज - प्रकाश होना, चमकना)।

अपरितासः = अरक्षक, अप्रतिष्ठित (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, परि - सब ओर, तस = रक्षा करना, स्थापित करना, कुम्हलाना)।

अपरो = अन्य (सर्वनाम)।

अपर्णः - अपर्णः = अपर्ण, पर्णहीन (अ - नहीं, पर्ण = हरा करना, हरा होना)।

अपवक्ता = अपवाचन करने वाला, अपवचन कहने वाला (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

अपवाती = अपगति, पालनकर्ता को, निम्न सुख वाला (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, अप = पालन करना, वात - गति करना, सुखी होना, आनन्द करना)।

अपव्रतेन - अपव्रतेन = अपव्रत द्वारा, पालन-रक्षण के व्रत द्वारा (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना,

जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, अप = पालन करना, वृ - वरण करना)।

अपश्चात् = दूर (अव्यय)।

अपश्यत् = देखा (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृश्-पश् = देखना)।

अपश्यम् = देखा (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृश्-पश् = देखना)।

अपश्रयः = अपश्रय हुआ (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

अपश्रितम् = अपश्रित को, अपसेवित को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

अप-श्वानम् = निम्नगामी, अधोगामी को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), श्व-श्व - जाना, भागना, दौड़ना)

अपसः = पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपसो = पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपस्यः = पालनीय, पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपस्युभिः = पाल्यों, पालनीयों, पालनकर्ताओं द्वारा (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपस्युव = पाल्य, पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपस्युवः = पाल्य, पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपहतम् = मारे गये, प्राप्त हुए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, हन् = जाना, जानना, पाना, मारना)।

अपहता = मारे गये, प्राप्त हुए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, हन् = जाना, जानना, पाना, मारना)।

अपहताः = मारे गये, प्राप्त हुए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, हन् = जाना, जानना, पाना, मारना)।

अपहंसि = मारते हो (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार, हन् = जाना, जानना, पाना, मारना)।

अपा = पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपाक् = पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपाकः = पालनकर्ता (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपाचितो = दूर, अप्रकाशित, अपरिपक्व, अजीर्ण (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। चि - चयन करना, ढूँढना, एकत्र करना। पच - व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना, पच - पकाना)।

अपाजन् = अपगति, दूर गति करते हुए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), अज - जाना, गति करना, हांकना, दौड़ना, फेंकना)।

अपात् = पदहीन, ऐश्वर्य हीन, रक्षा की (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पद् - चलना, भूषित होना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना)।

अपाताम् = पान किया, पिया, रक्षा करें (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पा-पिब = पीना, पाशन करना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

अपादम् = पदहीन, ऐश्वर्यहीन, रक्षाहीन (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, पद् - चलना, भूषित होना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, उड़ना)।

अपानः = अपान, पालक, रक्षक, पान न करने वाला (अ - नहीं। अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। पा-पान - पीना, पान करना)।

अपानती = अपान, पालक, रक्षक, पान न करने वाला (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपानदा = पालन-रक्षण देने वाले (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, रक्षा करना)।

अपानपाः = अपान रक्षक, पालन-रक्षण करने वाले का रक्षक, पान न करने वाले का रक्षक (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, रक्षा करना)।

अपानपात् = अपान रक्षक, पालक का रक्षक, पान न करने वाले का रक्षक (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, रक्षा करना)।

अपानम् = अपान को, पालक, रक्षक, पान न करने वाले को (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, रक्षा करना)।

अपानाय = अपान के लिए, पालक, रक्षक, पान न करने वाले के लिए (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, रक्षा करना)।

अपानायत = अपान गति, अपान-प्राप्ति (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अय - जाना, जानना, पाना)।

अपानेन = अपान द्वारा (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपान्नापातम् = अपों के रक्षण, पालन को (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, अप = रक्षा करना, पालन करना)।

अपाप = पाप-हीन (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, पाप् = पाप होना, पाप करना, अपराध करना)।

अपापकाशिनी = अपापकाशिनी, निष्पाप को प्रकाशित करने वाली (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, पाप् = पाप होना, पाप करना, कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, चलना)।

अपापविद्धम् = पाप-हीन, पाप से विधा हुआ नहीं (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, पाप् = पाप् होना, पाप करना, विध्-विद्ध - विधना, विधा होना, बद्ध होना, विधान करना, वेधना, वेध करना)।

अपाप् = अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपामार्ग - अपामार्ग = अपामार्ग (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप - दूर। मार्ग - ढूँढ़ना, शुद्ध करना)।

अपामजः = रक्षक को पुकारने वाला, अपा को प्रेरणा देने वाले (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। मज - ध्वनि करना, कामातुर ध्वनि करना, अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना)।

अपावः = पालक-रक्षक (अप - पालन करना, रक्षा करना, पू - पवित्र करना, पवित्र होना, पा = पालन करना, रक्षा करना)।

अपावधीः = दूर नष्ट करो (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप-दूर, वध्-हन् = मारना)।

अपि = भी, निकट (अव्यय)।

अपिकक्षे - अपिकक्षे = निकट कक्ष में (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अपि = निकट, कक्ष - धारण करना, घर्षण करना)।

अपिकक्षेभिः = अपिकक्षों द्वारा, निकट धारण, घर्षण द्वारा (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अपि = निकट, कक्ष - धारण करना, घर्षण करना)।

अपिजाय = निकट उत्पन्न के लिए (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अपि = निकट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

अपिधाना = अपिधान, निकट धारण करने वाले (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अपि - निकट, धा - धारण करना)।

अपिप्रयम् - अपिप्रयम् = निकट पूर्ण करने वाले को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अपि = निकट, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

अपिबः = पिया, पान किया (अ - नहीं, पी-पिब् = पीना, पान करना)।

अपिबत् = पिया, पान किया (अ - नहीं, पी-पिब् = पीना, पान करना)।

अपियन्तम् = न पीने वाले, निकट जाने वाले, निकट नियन्त्रण करने वाले (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अ - नहीं, पी-पिब् = पीना, पान करना, यम् - नाश करना, रोकना, नियन्त्रण रखना)।

अपिशत् = कहा, बोला (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पिश् = बोलना, कहना)।

अपिहितम् = आच्छादित, अनाच्छादित, हितकारी (अपि - निकट, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पिहि - आच्छादन करना, हि - जाना, पाना, प्रेरणा करना, अपि-हि = आच्छादित करना, अन्तर्हित होना, ढकना)।

अपीप्यन् = पुष्ट किया, पोषण करते थे (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

अपीच्यम् = पालन-योग्य, पीने योग्य, जानने योग्य, गमनीय (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ - नहीं, अप - पालन करना, पि - जाना, स्थानान्तर करना, पी-पिब् = पीना, पान करना)।

अपीच्याम् = पालन योग्य, पीने योग्य, जानने योग्य, गमनीय को (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ - नहीं, अप - पालन करना, पि - जाना, स्थानान्तर करना, पी-पिब् = पीना, पान करना)।

अपीतम् = पिया, पान किया, नहीं पिये हुए को (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ - नहीं, पी-पिब् = पीना, पान करना)।

अपृक्षमहि = स्पर्श किया, संयोग किया, संघर्ष किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पृच - स्पर्श करना, छूना, संघर्ष करना, संयोग करना)।

अपृणत् = भरण किया, पूर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

अपृणात् = नहीं भरने से, भरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ - नहीं, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

अपुः = प्रगतिशील, विद्वान् (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)।

अपुष्पाः = पुष्प-हीन (अ = नहीं, पुष्प - विकसित

होना, विकास करना, गति करना)।

अपूपम् = पालक-रक्षक, अपवित्र (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, अ = नहीं, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

अपूपवन्तम् = पालक-रक्षक, अपवित्र (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, अ = नहीं, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

अपूर्वम् - **अपूर्वम्** = अपूर्व, जो पहले नहीं हुआ अर्थात् विशिष्ट या विलक्षण (अ - नहीं, पूर्व - पहले)।

अपूर्व्य = अपूर्व, जो पहले नहीं हुआ अर्थात् विशिष्ट या विलक्षण (अ - नहीं, पूर्व - पहले)।

अपूर्व्या = अपूर्व, जो पहले नहीं हुआ अर्थात् विशिष्ट या विलक्षण (अ - नहीं, पूर्व - पहले)।

अपेशसे = पालको के ईश के लिए (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, ईश - ऐश्वर्य होना, अधिकार होना, अ - नहीं, पिश् = जाना, लगना, अंग होना, अंश होना, भाग करना, टुकड़े करना, प्रकाश करना)।

अपो = पालन करने वाला (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अपोदकः = अपोदक, अप-उदक (अप - दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), अप - जाना, जानना, पाना, पालन करना, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् - उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द - गीला करना, आर्द्र होना, कष्ट होना)।

अपोर्णुते = अपाच्छादन करता है (अप+ऊर्णुते, अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

अप्तुः = पालन करने वाला (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्तुरम् = पालक को (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्तूर्यम् = अप्तूर्य को, शीघ्रगामी को (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

अप्नवानः - **अप्नवानः** = पालक, रक्षक (अप =

जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अपनवानवत् = अपनवानव, पालन-रक्षण करने वाली, वाणी बोलने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अपनवानो = अपनवान, पालन-रक्षण करने वाली वाणी बोलने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अपनस्वतीम् - अपनस्वतीम् = पालन-रक्षण युक्त को (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्रतिधृष्टशवसम् - अप्रतिधृष्टशवसम् = अप्रतिधृष्ट, गति वाले को, अपराजित गति वाले को (अ - नहीं, प्रति - प्रतिकार, समान, समकक्ष, धृष्ट- जीतना, पराभव करना, घबरा जाना, शव - जाना, जानना, पाना)।

अप्रतिधृष्याय - अप्रतिधृष्याय = अप्रतिधृष्य के लिए, अपराजेय के लिए (अ - नहीं, प्रति - प्रतिकार, समान, समकक्ष, धृष्ट- जीतना, पराभव करना, घबरा जाना)।

अप्रतिपदम् - अप्रतिपदम् = अप्रतिपद को, अतुल्यपद वाले को (अ - नहीं, प्रति - प्रतिकार, समान, समकक्ष, पद - जाना, जानना, पाना)।

अप्रतिष्कृतः = अप्रतिष्कृत, प्रतिकूल शब्द हीन (अ - नहीं, प्रति - प्रतिकार, समान, समकक्ष, कु - शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौरे के समान शब्द करना)।

अप्रतीनि = अप्रति, अप्रतिम प्रगति (अ - नहीं, प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, प्रतिकार, समान, समकक्ष (उपसर्ग, अव्यय)। इ - जाना, जानना, पाना, इन् - प्रकाश करना)।

अप्रथयः = अप्रसिद्ध, प्रसिद्ध न करने वाले (प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

अप्रथेताम् - अप्रथेताम् = प्रसिद्ध किया, प्रसिद्ध न करें, न फैलायें (प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

अप्रमादम् - अप्रमादम् = प्रमादरहित (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मद् = तृप्त करना, हर्षित होना)।

अप्रयातम् = अप्रयात को, प्रयाण न किये हुए को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, या - जाना, जानना, पाना)।

अप्रयावम् = अप्रयाव को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यव - उपसंहार करना, विराम देना, समाप्त करना। यु - मिलाना,

अलग करना, बाँधना, घृणा करना)।

अपरयुच्छन् - अपरयुच्छन् = अप्रमाद करते हुए, प्रमाद न करते हुए (अ - नहीं, युच्छ् = प्रमाद करना, असावधान होना)।

अप्रहणम् = अप्रहार, अहिंसक, प्रहार न करने वाले (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, हन् - मारना)।

अप्राः - अप्राः = पूर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, प्रा = पूर्ण होना, पूर्ण करना व्याप्त होना)।

अप्रा = पालन करता है, पूर्ण किया, भरण किया, व्याप्त हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अप् - पालन करना, प्रा - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना)।

अप्रात् = पूर्ण किया है, भरण किया है, व्याप्त हुआ है (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, प्रा - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना)।

अप्रायि - अप्रायि = पूर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, प्रा = पूर्ण होना, पूर्ण करना व्याप्त होना)।

अप्रायुभिः = अपूर्णों, अतृप्तों, अप्रगतिशीलों द्वारा (अ - नहीं, प्रा = पूर्ण होना, पूर्ण करना, व्याप्त होना, प्राय - तृप्त करना, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), इ-अय् = जाना, जानना, पाना)।

अप्रायुवः - अप्रायुवः = पूर्ण किया (प्रा = पूर्ण होना, पूर्ण करना व्याप्त होना। यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, घृणा करना)।

अप्रोषिवान् = अपूर्ण, असौम्य (अ - नहीं, प्रुष = सौम्य होना, स्निग्ध होना, चिकना होना, प्रोक्षण करना, सींचना, पूर्ण करना, भरना)।

अप्ये = पालन करने वालों में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्सः = पालन-रक्षण करने वाले (अप - जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्सरसः = अप्स का रस, पालन करने वालों का रस (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना)।

अप्सरसाम् = अप्स के रसों का, पालन रक्षण करने वालों के रसों का (अप = जाना, जानना, पाना, पालन

करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना, सृ - गति करना, सरकना, जाना, जानना, पाना)।

अप्सरसौ = अप्स के रस्, पालन रक्षण करने वालों की गति में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना, सृ - गति करना, सरकना, जाना, जानना, पाना)।

अप्साम् = अपः का, पालन करने वालों में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्सु = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अप्सुकषितः-अप्सु-क्षितः = पालन-रक्षण में निवास करने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना, क्षि-क्षय - निवास करना)।

अप्सुकषितो-अप्सु-क्षितो = पालन-रक्षण में निवास करने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना, क्षि-क्षय - निवास करना)।

अप्सुजाः = पालन-रक्षण में उत्पन्न (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना, जन् - जन्म लेना, उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

अप्सुजित् = अप्सु को जीतने वाला, अप्सु के लिए विजेता (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

अप्सुवाहः = पालन-रक्षण को वहन करने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना, वह - वहन करना, ले जाना)।

अप्सुषदे = पालन-रक्षण में स्थित (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना। षद्-सद् - चलना, बैठना)।

अप्सुसदम् = पालन-रक्षण में उत्पन्न (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रक्षण करना। षद्-सद् - चलना, बैठना)।

अप्सो = पालन-रक्षण में (अप - जाना, जानना, पाना, पालन करना, प्सा - भक्षण करना, संरक्षण करना)।

अफला = फल-हीन (अ- नहीं, फल् - फलित होना, उत्पन्न करना, सफल करना, जाना, जानना, पाना, तोड़ना,

चीरना, विभाग करना)।

अफलाः = फल-हीन (अ- नहीं, फल = फलित होना, उत्पन्न करना, सफल करना, जाना, जानना, पाना, तोड़ना, चीरना, विभाग करना)।

अवधन् = बाँधा (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

अबल = बलहीन (अ - नहीं, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

अबलान् = अबलों को, बलहीनों को (अ - नहीं, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

अविभ्युषः = निर्भय (अ - नहीं, भी - डरना)।

अवोधि = बोध हुआ (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, बुध - बोध होना, जानना, समझना)।

अब्जा = पालन-रक्षण में उत्पन्न (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अब्जाः = पालन-रक्षण में उत्पन्न (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अब्दो = पालन-रक्षण देने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अब्दः = पालन-रक्षण देने वाले (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अब्रवम् = बोले (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वद् - बोलना)।

अब्रवीत् = बोला (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ब्रू - कहना, बोलना)।

अब्रहमता-अब्रहमता = अब्रहमत्व, ब्रहमता-हीन, ब्रहमता-मुक्त, बड़ा न होने के विचार वाला (अ - नहीं, बृह = बढ़ना)।

अब्राहमणाः - अब्राहमणाः = अब्रहमत्व, ब्रहमता-हीन, ब्रहमता-मुक्त, बड़ा न होने के विचार वाला (अ - नहीं, बृह = बढ़ना)।

अब्रुवन् - अब्रुवन् = बोले (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वद् - बोलना)।

अभः = प्रकाश-हीन, नहीं चमकने वाला, प्रकाशित हुआ, प्रकाश किया (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भा = चमकना, प्रकाश होना)।

अभक्त = अभक्त, असेवित, अदानी (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

अभजन्त = भजा, भजन किया, सेवा की, दान किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भज् - भजना, भजन करना, सेवा करना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना)।

अभयम् = अभय, भय-हीन, भय-मुक्त (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना)।

अभयसनि = भय-मुक्त सेवा, दान, सत्कार करना (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना, सन् - सेवा करना, दान करना, सत्कार करना)।

अभयानि = अभय, भय-हीन, भय-मुक्त (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना)।

अभरत् = भरा, भरण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरण करना, भरना)।

अभरन् = भरा, भरण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरण करना, भरना)।

अभवः - अभवः = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

अभवत् - अभवत् = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

अभवतम् = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

अभवन् = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

अभाः = प्रकाश-हीन, नहीं चमकने वाला, प्रकाशित हुआ, प्रकाश किया (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भा = चमकना, प्रकाश होना)।

अभार्ष्टाम् - अभार्ष्टाम् = अभ्रष्ट, अपतित (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृश् = भ्रष्ट होना, पतित होना)।

अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)।

अभिकल्पमाना = अभिकल्प करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, कल्प = कल्पना करना, विचार करना, रचना करना)।

अभिकल्पमानाः = अभिकल्प करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, कल्प = कल्पना करना, विचार करना, रचना करना)।

अभिक्रन्दन् = पुकारता हुआ (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

अभिक्रोशकम् - अभिक्रोशकम् = अभिमुख, सर्वथा, अभिक्रोश करने वाले को, अभिक्रोशक को (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, क्रुश् - रोना, पुकारना, शब्द करना)।

अभिक्षरन्ति = अभिक्षरण करते हैं (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

अभिगरः = अभिसिंचन करने वाला, जानने, समझने वाला (अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, गृ - सींचना, समझना, जानना)।

अभिगूरतम् - अभिगूरतम् = शब्द करने वाला, मनन करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, जानना)।

अभिगूर्तिः = अभिगूर्ति, उद्योगी, प्रमुख उपदेशक, प्रमुख प्रयत्नकर्ता (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

अभिघ्नते - अभिघ्नते = हनन करता है, मारता है (अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, हन्-घ्न - हिंसा करना, मारना)।

अभिचक्षे - अभिचक्षे = अभिमुख, सर्वथा, अनुमोदन

करने वाला, कहने वाला (अभि = सभी ओर, सर्वथा, चक्षु - अनुमोदन करना, कहना, देखना)।

अभिचक्ष्यम् = अभिमुख देखने योग्य को, अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, कहने वाले को (अभि = सभी ओर, सर्वथा, चक्षु - अनुमोदन करना, कहना, देखना)।

अभिजिता = अभिमुख विजयी, विजेता (अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, जि - जय करना, जीतना)।

अभिज्ञु = अभिज्ञान रखने वाला (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), ज्ञा-जान - जानना, समझना)।

अभितः = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)।

अभितो = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)।

अभित्यम् = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)।

अभित्या = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)।

अभित्यै = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)।

अभिदा = अभिदाता, सभी ओर, सर्वथा देने वाला (अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दा - देने वाला)।

अभिदासतः = सर्वथा दान करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दास् - देना, दान करना)।

अभिदासति = सर्वथा दान करता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दास् - देना, दान करना)।

अभिदुद्रोह-अभिदुद्रोह = सर्वथा द्रोह, द्वेष, हिंसा की (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दुह - द्रोह करना, द्वेष करना, हिंसा करना)।

अभिधा = सभी ओर, सर्वथा, धारण करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, धा - धारण करना)।

अभिधाः = सभी ओर, सर्वथा, धारण करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, धा - धारण

करना)।

अभिधीतः = सभी ओर, सर्वथा धारण किया (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, धी - धारण करना)।

अभिनत् = सर्वथा, नत, विनत, विनम्र (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, नम् - नमना, नमन करना)।

अभिपित्वे = सभी ओर, सर्वथा पान कर (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, पी - पीना, पान करना)।

अभिप्रश्ननम् = अभिप्रश्नकर्ता को, सभी ओर, सर्वथा, प्रश्न करने वाले को, अभिप्रश्नन को (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। पृश्-पृच्छ = पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना)।

अभिप्रियम् - अभिप्रियम् = सभी ओर, सर्वथा प्रिय को (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, प्री - प्रिय होना, प्रीति करना)।

अभि-भञ्जतीनाम् = सभी ओर, प्रभञ्जन करने वालों का (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भञ्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, भञ्जन करना, नष्ट करना)।

अभिभूवे = अभिभू के लिए, सभी ओर, सर्वथा होने वाले के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भू - होना)।

अभिभूः = सभी ओर, सर्वथा होने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भू - होना)।

अभिभूतरम् = अभिभूत को (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभिभूति = सर्वथा अस्तित्ववान् (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भू - होना)।

अभिमा = सर्वथा मान वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना)।

अभिमातये = अभिमान के लिए, अभिमापन के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा =

मान करना, मापना)।

अभिमातिघ्ने – अभिमातिघ्ने = अभिमातिघ्न, अभिमान-हन्ता, अभिमान का हनन करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना, तिघ - मार डालना, दुःख देना)।

अभिमातिजित् = अभिमान को जीतने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना, जि - जीतना, जय होना)।

अभिमातिषाहः = अभिमान को सहन करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना, सह - सहन करना, समर्थ होना, तृप्त होना)।

अभिमातिहा = अभिमान नष्ट करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना, हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना)।

अभिमातीः = सर्वथा मानयुक्त (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना)।

अभिमानः = सर्वथा मानयुक्त (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना)।

अभिमृशे = सभी ओर, सर्वथा देखते हैं, विचार करते हैं, स्पर्श करते हैं (अभि = अभिमुख, सभी ओर, सर्वथा, मृश् - देखना, छूना, विचार करना)।

अभियुजः = अभियुक्त, संयुक्त, वियुक्त करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

अभिरक्षति – अभिरक्षति = सभी ओर, सर्वथा रक्षा करता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, रक्ष = रक्षण करना, पालन करना)।

अभिरक्षन्ति – अभिरक्षन्ति = सभी ओर, सर्वथा रक्षा करते हैं (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, रक्ष = रक्षण करना, पालन करना)।

अभिरक्षमाणाः = सभी ओर से रक्षा करते हुए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, रक्ष = रक्षण करना, पालन करना)।

अभिवर्षतु - अभिवर्षतु = सभी ओर, सर्वथा वर्षा करे

(अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृष = वर्षा करना, पालन करना)।

अभिविख्येषम् = कहें, विख्यात करें, सभी ओर कहें (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वि - विशेष, ख्या = कहना)।

अभिवीरः = सभी ओर, सर्वथा वीर (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वीर = वीर होना, वीरता दिखाना, पराक्रम करना)।

अभिशस्तये = सर्वथा हिंसा, विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना)।

अभिशस्तेः = सर्वथा हिंसा, विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले का (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना)।

अभिशस्तिपा – अभिशस्तिपा = हिंसा से रक्षा करने वाला, सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा से रक्षा करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना, पा - रक्षा करना, पालन करना)।

अभिशस्तिपावा = हिंसा से रक्षा करने वाला, सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा से रक्षा करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना, पा - रक्षा करना)।

अभिशस्तिम् - अभिशस्तिम् = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले को (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना)।

अभिशस्तीः = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष्

= हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना)।

अभिशस्त्यै = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शप् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस = चाहना, स्तुति करना)।

अभिश्चरियम् - अभिश्चरियम् = अभिष्ट्री को (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, श्री - सेवा करना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

अभिश्चिषः = अभिश्चिष, अभिसेवा, आश्रय, समृद्धि (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, श्री - सेवा करना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

अभिश्चरीः - अभिश्चरीः = अभिष्ट्री (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, श्री - सेवा करना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

अभिषेक्तारम् - अभिषेक्तारम् = अभिषेक करने वाले को (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, सीक् - सींचना, अभिषेक करना, विचार करना)।

अभिष्टकृत् = सर्वथा इष्ट करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभिष्टये = सर्वथा इष्ट करने वाले के लिए, अभीष्ट के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभिष्टिः - अभिष्टिः = सर्वथा इष्ट, इच्छा, चाह (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभिष्टिभिः - अभिष्टिभिः = सर्वथा इष्ट, अभीष्टियों द्वारा (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभिष्टुतः = अभिस्तुत, अभिस्तुत्य (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)।

अभिष्टुतो = अभिस्तुत, अभिस्तुत्य (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा

करना)।

अभिष्टवम् = अभिस्तुत, सर्वथा स्तुत (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभिष्टितः - अभिष्टितः = अभिस्थित, सर्वथा, सभी ओर स्थित (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभिष्ठाक = उपसेवित किया (भिष्ठाज् - उपसेवा करना, नौकरी करना, सेवा करना)।

अभिसत्त्वा = सर्वथा सत्य (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, सत् = होना, अस्तित्व होना, सत्य होना)।

अभिसर्त्तारम् - अभिसर्तारम् = सर्वथा गतिशील, सभी ओर गतिशील, सर्वत्र जाने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, स्तु = सरकना, गति करना, जाना, जानना, पाना)।

अभिसंविवेशः (अभि-सम्-विवेश) = सर्वथा सन्मुखता से सम्यक् प्रवेश करो (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)।

अभिसंविशन्तु (अभि-सम्-विशन्तु) = सर्वथा सन्मुखता से सम्यक् प्रवेश करो (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)।

अभिस्वरे = अभिस्वर में (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), स्तु-स्वर् = शब्द करना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

अभी = भलीभाँति, अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (अव्यय)।

अभीके = निकट (अव्यय)।

अभीत्य = निडर होकर (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना)।

अभीत्वरीः = सर्वथा सन्मुखता से त्वरा, शीघ्रता करने वाला (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, त्वर् - शीघ्रता करना, शीघ्र जाना)।

अभीरुणम् - अभीरुणम् = सर्वथा सन्मुखता से गति, शब्द, प्रेरणा करने वाला (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इर् - ईर्ष्या करना, ईर् - गति, कम्पन, प्रेरणा करना, रु - शब्द, गति, हिंसा करना)।

अभीवर्त्ततः - अभीवर्तः = सर्वथा सन्मुखता से वर्तमान (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

अभीशूनाम् = सर्वथा ऐश्वर्य, शासन, सर्वथा मुक्त का (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, ईश - ऐश्वर्य होना, शासन होना, अधिकार होना, शून - मुक्त होना, रिक्त होना, शून्य होना)।

अभीशुभिः - अभीशुभिः = शासन-शक्ति, अधिकार द्वारा (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, ईश - ऐश्वर्य होना, शासन होना, अधिकार होना)।

अभीषत् = भयभीत हुआ, डराया (भी - डरना, घबराना)।

अभीष्टये = सर्वथा इष्ट के लिए, अभीष्ट के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् = इच्छा करना, चाहना)।

अभीहि = सभी ओर प्रगतिशील (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इ = जाना, जानना, पाना)।

अभृत्यै = अभृत्य के लिए (अ = नहीं, भृ = पूर्ण करना, भरण, पोषण, धारण करना)।

अभुञ्जतः = अभोजी, अपालक, अरक्षक, पालन-रक्षण किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

अभुम् = अभु को, हो गया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभुवः = हो गया, न होने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभुवत् = हो गया, हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया

उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूः = अभू, हो गया, हुआ, न होने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूत् = हो गया, हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूताम् = हो गया, हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूत्यै = अभूत्य के लिए (अ = नहीं, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूम् = अभू को, हो गया, हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूव = हो गया, हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अभूषन् = भूषित किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भूष् - भूषित करना, भूषित होना, शोभित होना, शोभित करना)।

अभ्यक्रमीत् = अभिक्रमण किया (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

अभ्यचक्षत = सर्वथा स्पष्ट कहा, देखा (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

अभ्यञ्जते = सर्वथा स्वच्छ किया जाता है, सर्वथा प्रकाश किया जाता है (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

अभ्यनूषत = अनुताप किया (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, अनु = पश्चात्, पीछे, उष-ऊष - ताप देना, जलाना, हिंसा करना, रोग होना)।

अभ्यर्चाम = सभी ओर, सर्वथा स्तुति करो, प्रशंसा करो (अभि = अभिमुख, सभी ओर, सर्वथा, ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

अभ्यर्ष = अन्तर्दर्शन, अन्तर्गमन (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, ऋष् - जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अभ्यर्षन् = अन्तर्दर्शन करते हुए (अभि - अभिमुख, सभी ओर, सर्वथा, ऋष् - जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)

अभ्यवहिरयमाणः - अभ्यवहिरयमाणः = सभी ओर, सर्वथा लज्जा करता हुआ (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, अव - निम्न, नीचे, हि-ही = लज्जित होना)।

अभ्यावर्तिन् - अभ्यावर्तिन् = सभी ओर, सर्वथा वर्तमान (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, आ - समन्तात्, पूर्णतः, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

अभ्यावृतः = सभी ओर, सर्वथा वर्तमान (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), आ - समन्तात्, पूर्णतः (उपसर्ग), वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

अभ्युत् = सभी ओर, सर्वथा उच्च (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), उत् = उच्च (उपसर्ग)।

अभ्युपावहरामि = निकट ले जाता हूँ (अभि = अभिमुख,

विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), उप = समीप, निकट, अव - नीचे, निम्न, ह - हरण करना, ले जाना)।

अभ्येति = जाता है, प्राप्त होता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)।

अभ्रात् = भरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना)।

अभ्राय = भरण किया, भरणहीन के लिए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना)।

अभ्रिः - अभ्रिः = भरा, पूर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना)।

अभ्रिम् - अभ्रिम् = अभ्रि को, पूर्ण को (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना)।

अभ्रेव = मेघ के समान (अभ्रा+इव, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अभ्र - जाना, मेघ की गति, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))।

अमः = सेवाभावी, विद्वान् (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना)।

अमतिः = सेवाभावी, विद्वान्, विचारहीन (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मन् - मानना, समझना, विचार करना)।

अमतिम् = सेवाभावी विद्वान्, विचारहीन को (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मन् - मानना, समझना, विचार करना)।

अमत्रेभिः = अमत्रों द्वारा, विद्वानों द्वारा, सेवियों द्वारा (अम् = गति, शब्द, सेवा करना)।

अमत्सुः = तृप्त किया, हर्षित किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, अम् - जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना)।

अमदन् = आनन्दित हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मद् = आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

अमन्दिषुः = आनन्दित, प्रकाशित, तुष्ट किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मन्द् - आनन्द करना, स्तुति

करना, तुष्ट करना, प्रकाशित होना, चमकना, प्रकाश करना, उन्मत्त होना, विनाश करना)।

अमन्थत् = मथा, मन्थन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मथ् मथना, मन्थन करना)।

अमन्महि = मानते हैं (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मन् - मानना, समझना, विचार करना)।

अमन्वत = सेवाभावी, विद्वान् (अम् - जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना)।

अमर्त्य - अमर्त्य = अमर्त्य, अमर, मरणहीन (अ = नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमर्त्यः = अमर्त्य, अमर, मरणहीन (अ = नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमर्त्यम् - अमर्त्यम् = अमर्त्य, अमर, मरणहीन को (अ = नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमर्त्याः - अमर्त्याः = अमर्त्य, अमर, मरणहीन (अ = नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमवान् = सेवाभावी, विद्वान् (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना)।

अमंसाताम् = विचारित किया, मान्य किया, चलें (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम - जाना, शब्द करना, बोलना, सेवा करना, खाना, मन - विचार करना, मनन करना, मान्य करना)।

अमंस्त = विचारित किया, मान्य किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम् = गति, शब्द, सेवा करना)।

अमा = अतुल्य, वाणी (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमाकिः = अतुल्य, वाणी (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमाकिनः = अतुल्य वाणी युक्त (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमात् = माना, मान किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमात्यम् = अमात्य को (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमात्यो - अमात्यो = अमात्य ने (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमादिषुः = आनन्दित हुए, तृप्त हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, तृप्त करना, समाधान करना)।

अमावास्ये = हे अमावास्य! अमा में वासयोग्य (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, वस् = रहना, निवास करना)।

अमिः = अतुल्य, वाणी (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमितम् = अमित को, अतुल्य, वाणी को (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)।

अमिता = अमित, अतुल्य, वाणी (अ - नहीं, अम् - गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना)।

अमितौजाः = अमित-ओज वाले, अतुल्य बलवान्, अमित प्रकाशवान् (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना, तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल, दान, निवास, प्रकाश करना)।

अमितरः - अमित्रः = अमित्र, अस्नेही (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)।

अमित्रम् = अमित्र, अस्नेही को (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)।

अमित्रसेनाम् = अमित्र-सेना को, अस्नेही-सेना को (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना, सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

अमित्रस्य = अमित्र का, अस्नेही का (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)।

अमित्रहा = अमित्र का हनन करने वाला (अ - नहीं, मिद् - प्रीति करना, स्नेह करना, हा, हन् - मार डालना, हिंसा करना)।

अमित्रियम् = अमित्र, अस्नेही को (अ = नहीं, मिद् =

प्रीति करना, स्नेह करना)।

अमित्त्रान् - अमित्रान् = अमित्रों को, अस्नेही जनों को (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)।

अमिनः = शब्द, गति, सेवा युक्त (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना)।

अमिनात् = प्रगति, शब्द, सेवा की, अमिन से, सेवाभावी से (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग। अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना)।

अमिमीत = निर्माण किया, मान किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, मा - मापना, मान करना)।

अमी = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)।

अमीति = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)।

अमीमदन्त = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, मद् = आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

अमीमदन्त = वाणी से आनन्द प्रदान करें (अम = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, मद् = आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

अमीवचातनः = शब्द, गति, सेवा युक्त, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ + मा, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, वच् - बोलना, कहना)।

अमीवहा = गति, शब्द, विद्या, सेवा के वाहक (अम = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, वह = वहन

करना, ले जाना, मा - मापना, मान करना)।

अमीवाः = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, मान करना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)।

अमीवाम् - अमीवाम् = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक को (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)।

अमीषाम् = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक इच्छाओं का (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)।

अमृक्तः = अमार्जित, अमार्जनीय (अ - नहीं, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

अमृतः = अमृत, अमर, मृत्यु से परे (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमृतत्वम् = अमरता को (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतत्वस्य = अमृतत्व का (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतत्वाय = अमृतत्व के लिए, अमरता के लिए (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतत्वेन = अमृतत्व द्वारा (अ - नहीं, मृ - मरना)

अमृतम् = न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)।

अमृतस्य = अमृत, अविनाशी का (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृता = अमृता, मृत्युहीन (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृताः = अमृता, मृत्युहीन (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतात् = अमृत से (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतान् = अमृतों को (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतानि = अमृतों को (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृताम् = अमृतों को (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृताय = अमृत के लिए (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतासः = अमृतगण (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृते = अमृत में, अमरता में (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमृतेन = अमृत द्वारा (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

अमृतेषु = अमृतों में (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृत्यवो = अमर, अमृतयोग्य, अमरणशील (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतत्वम् = अमरता को (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतत्वस्य = अमृतत्व का (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृद्धाः = अमृद्ध, असम्पीडित, अनाद्र (अ - नहीं, मृध् - सम्पीडित करना, दबाना, आद्र करना)।

अमुच्यत = त्याग किया (अ - नहीं, मुच् - घर्षण करना, मोचन करना, त्यागना, ऐश्वर्य होना, प्रसन्न होना)।

अमुञ्चः = मुक्त किया, मोचित किया, त्याग किया, अत्यागी (अ - नहीं, मुञ्च् - घर्षण करना, मोचन करना, त्यागना, ऐश्वर्य होना, प्रसन्न होना)।

अमुञ्चथाः = मुक्त किया, मोचित किया, त्याग किया (अ - नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मुञ्च् - घर्षण करना, मोचन करना, त्यागना, ऐश्वर्य होना, प्रसन्न होना)।

अमुतः = इससे (सर्वनाम)।

अमुत्र = यहाँ (सर्वनाम)।

अमुत्रभूयात् - अमुत्रभूयात् = अमुत्र हो जाये, प्रगतिशील, शब्द-सेवा-वाणीयुक्त हो (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

अमुना = इससे (सर्वनाम)।

अमुम् = इसको (सर्वनाम)।

अमुष्मिन् = इसमें (सर्वनाम)।

अमुष्मै = इसके लिए (सर्वनाम)।

अमुष्य = यह, इसका (सर्वनाम)।

अमुष्य = अचोर्य, चोरी योग्य नहीं (मुष् - चोरी करना)।

अमुष्यै = इसके लिए (सर्वनाम)।

अमूः = यह (सर्वनाम)।

अमूम् = इसको (सर्वनाम)।

अमेनि = शब्द करो, सेवा करो, मान किया, रक्षा की (अम् = शब्द करना, बोलना, सेवा करना, खाना, जाना, जानना, पाना, रोग होना। अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग। अ - नहीं। मा = मापना, नापना, तौलना। मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना। मी - हिंसा करना, मारना)।

अमेव = अम के समान, सेवाभावी विद्वान् के समान (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना, इव - समान)।

अमेष्टम् = सेवाभावी विद्वान् की इच्छा वाला (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना, इष् - चाहना, इच्छा करना)।

अमोचि = मोचित किया, छोड़ा, प्रसन्नता दी (अ - भूतकालिक उपसर्ग, मुच - बोलना, कहना, पीसना, ठगना, मुच - छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना)।

अम्ब = सेवाभावी विद्वान् (अम्ब = जाना, जानना, शब्द करना, मर्दन करना)।

अम्बालिके = सेवाभावी विद्वान् (अम्ब = जाना, जानना, शब्द करना, मर्दन करना)।

अम्बिकया - अम्बिकया = उपदेश द्वारा, वाणी द्वारा (अम्ब = शब्द करना, जाना, जानना)।

अम्बिके - अम्बिके = सेवाभावी विद्वान् (अम्ब = जाना, जानना, शब्द करना, मर्दन करना)।

अम्बे = सेवाभावी विद्वान् (अम्ब = जाना, जानना, शब्द करना, मर्दन करना)।

अम्भः = करुणाशील विद्वान् (अम्भ = द्रवित होना, शब्द करना, आह्वान करना)।

अम्भृणौ = करुणाशील विद्वान् (अम्भ = द्रवित होना, शब्द करना, आह्वान करना)।

अयः = प्रगतिशील, विद्वान् (अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयक्षम् - अयक्षम् = प्रगतिशील, विद्वान् अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम्

- क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)।

अयक्ष्मम् - अयक्ष्मम् = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान्, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष् - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम् - क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)।

अयक्ष्मा - अयक्ष्मा = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान्, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष् - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम् - क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)।

अयक्ष्माः - अयक्ष्माः = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान्, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष् - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम् - क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)।

अयक्ष्माय - अयक्ष्माय = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान् के लिए, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाले के लिए, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष् - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम् - क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)।

अयक्ष्यव - अयक्ष्यव = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान्, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष् - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम् - क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)।

अयच्छत् = दिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, यच्छ - देना, दान करना)।

अयजन्त = यजन किया, यजन करते हैं (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, यज् - देव-पूजन, संगतिकरण, दान करना)।

अयजमानम् = यजन न करने वाले को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, यज् - देव-पूजन, संगतिकरण, दान करना)।

अयत् = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा करते हुए

(अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयताम् = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार हो (अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयते = प्रगति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा करता है (अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयन् = प्रगतिशील, गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा किया (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयनम् = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयनाय = अयन के लिए, गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा के लिए (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयनी = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा युक्त (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयने = अयन में, गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा में (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयन्तः = गति, ज्ञान, प्राप्ति (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयम् = यह (सर्वनाम)।

अयमतस्य = गति, ज्ञान, विचारशील का, यमन न किये जाने वाले का (अ - नहीं, यम् - नाश करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, अय् = जाना, जानना, पाना, मन् - मानना, विचार करना)।

अयवा = गतिशील, विद्वान् (अय् = जाना, जानना, पाना, अ - नहीं, यु - मिलाना, अलग करना)।

अयवानाम् = गतिशील, विद्वान् का (अय् = जाना, जानना, पाना, अ - नहीं, यु - मिलाना, अलग करना)।

अयवोभिः = गतिशील, विद्वान् द्वारा (अय् = जाना, जानना, पाना, अ - नहीं, यु - मिलाना, अलग करना)।

अयःशया = गतिशीलता, विद्या में विश्राम पाने वाला, अयःशायी (अय - जाना, जानना, पाना, शी - शयन

करना)।

अयस्तापम् = अयःताप को, गतिशीलता, विद्या के लिए तप करने वाला, विद्या से तप्त, विद्या के ऐश्वर्य वाला (अय - जाना, जानना, पाना, तप - तप्त होना, तप्त करना, ऐश्वर्य होना)।

अयस्मयम् = अयःमय को, गतिशीलता, विद्या युक्त को (अय - जाना, जानना, पाना, मय - जाना, जानना, पाना, कठिन कार्य करना)।

अया = इससे, इसके द्वारा (सर्वनाम)।

अया = गति, प्रेरणा द्वारा (अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयाङ् = गति, प्रेरणा (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् = जाना, जानना, पाना, या = जाना, जानना, पाना)।

अयाट् - अयाट् = लाये (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् = जाना, जानना, पाना, या = जाना, जानना, पाना)।

अयान् = प्राप्त करते हैं (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् = जाना, जानना, पाना, या = जाना, जानना, पाना)।

अयामः = यामहीन, नियमनहीन, जाते हैं (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् = जाना, जानना, पाना, या - जाना, जानना, पाना)।

अयामि = प्राप्त करता हूँ (अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयावि = प्राप्त करता हूँ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् = जाना, जानना, पाना, या - जाना, जानना, पाना)।

अयाषिम् = प्रयत्न किया, प्राप्त करता हूँ, प्राप्त होऊँ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् - जाना, चलना, जानना, पाना, यस् - प्रयास करना, यत्न करना)।

अयासः = प्रयासहीन, प्रगतिशील (अ = नहीं, या - जाना, जानना, पाना, अय् = जाना, जानना, यस् - प्रयास करना, यत्न करना)।

अयासिषम् - अयासिषम् = प्रयत्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, या - जानना, जानना, पाना,

यस् - प्रयास करना, यत्न करना)।

अयासिषुः = प्रयत्न करते हैं, प्राप्त होते हैं (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, या - जानना, जानना, पाना, यस् - प्रयास करना, यत्न करना)।

अयासिष्टाम् = प्रयत्न किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, या - जानना, जानना, पाना, यस् - प्रयास करना, यत्न करना)।

अयासीत् = प्रयत्न करता हुआ, प्राप्त होता हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, या - जानना, जानना, पाना, यस् - प्रयास करना, यत्न करना)।

अयासुः = प्राप्त होते हैं (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयिः = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान (अ - नहीं, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयुक्त = अयुक्त, जो युक्त न हो (अ = नहीं, युज् - योग करना, युक्त करना, जोड़ना)।

अयुक्तासः = अयुक्त, जो युक्त न हो (अ = नहीं, युज् - योग करना, युक्त करना, जोड़ना)।

अयुक्भिः - अयुक्भिः = अयोग द्वारा, अयोजन द्वारा (अ = नहीं, युज् - योग करना, संयम करना, स्थिर करना, तपस्या करना, मन को रोकना, मन को वश में करना, युक्त करना, जोड़ना)।

अयुक्षत = युक्त किया, सम्बन्धित किया (अ = नहीं, अ - भूतकालिक उपसर्ग, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, सम्बन्धित करना, युज् - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

अयुज्जन् = अयुक्त, जो युक्त न हो (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, युज्-युज्ज - योग करना, संयम करना, स्थिर करना, तपस्या करना, मन को रोकना, मन को वश में करना, युक्त करना, जोड़ना)।

अयुध्यः = युद्ध के अयोग्य (अ = नहीं, युध् - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना)।

अयुतम् = अयुत को, प्रगतिशील को, अयोजित को (अ = नहीं, अय् = जाना, जानना, पाना, युत् - बोलना, शब्द करना, चमकना, प्रकाश करना)।

अयुद्ध = युद्धहीन (अ = नहीं, युध - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

अयेभ्यः = गति, ज्ञान, प्राप्ति के लिए (अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयो = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान (अ - नहीं, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अयोगूम् = अयोगु को, योग-हीन को, विद्वान्, गतिमय को (अ = नहीं, युज् - योग करना, संयम करना, स्थिर करना, तपस्या करना, मन को रोकना, मन को वश में करना, युक्त करना, जोड़ना)।

अयोजि = योग किया, संयुक्त किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

अयोध्येन = अयोध्य द्वारा (अ - नहीं, युध् - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

अयोभिः = प्रगतिशील, प्राप्ति, ज्ञान द्वारा (अ - नहीं, अय् = जाना, जानना, पाना)।

अरक्षत् = रक्षा की, पालन किया (अ - नहीं, रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

अरक्षसा = अरक्ष द्वारा, अरक्षक द्वारा, अरक्षित द्वारा (अ - नहीं, रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

अरडकृतम् = गति करने वाले को (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, कृ = करना)।

अरङ्गमाय = विद्या, गति, शब्द को जानने, पाने के लिए (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

अरणः = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरणवानः = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरणवानो = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-

अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरणाय = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त के लिए (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरणो = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरण्यम् = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त को (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरण्यानाम् = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त जनों का (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरण्याय = अरण्य के लिए, प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त के लिए (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरण्ये = अरण्य में, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त में (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरण्येषु = अरण्यों में, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त में (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)।

अरतिः = प्रगति, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरतिम् = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व

दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरत्नी = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रत्नहीन, रतिहीन, प्राप्त होने वाले (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरथेभ्यः = अरथों के लिए, रथहीन के लिए, गतिहीन के लिए (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरपः = प्राप्त का रक्षक-पालक, गति-व्यवस्था का रक्षक (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रप - स्पष्ट बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

अरम् = पर्याप्त (अव्यय)।

अरम् = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, अ = नहीं, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरम्-कृताः = प्रगतिशील, विद्वान् द्वारा किया हुआ (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, कृ = करना)।

अरम्णाः = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरुम् - अरुम् = विनाशकारी को (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, अर् = काटना, नष्ट करना)।

अरुषः = विनाशकारी (अर् = आरे से काटना, नष्ट

करना)।

अररो = विनाशकारी (अर् = काटना, नष्ट करना)।

अरवन्तम् = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, शब्द न करने वाले, (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, अ = नहीं, रव - जाना, प्रकाश करना, रु - शब्द करना, गति करना, बोलना, क्रोध करना)।

अरवाङ् = सम्मुख (अव्यय)।

अरसान् = अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

अराः = अरों ने, अरों को, प्रगतिशील, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अदानी, दान न देने वाले, अहिंसक (अ - नहीं, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रा - दान करना, देना)।

अरागतम् = अदानी, अज्ञानी, अगतिशील (अ - नहीं, रा = देना, गम् - जाना, रज् - रंगना, रग - शंका, भय, स्वाद, रुचि, गति करना, जाना, जानना, पाना)।

अरातयः = अदानी (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातये = अदानी के लिए (अ - नहीं, रा - देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातयो = अदानी (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातिम् = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातीः = अदानी (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातीयतः = अदानी (अ - नहीं, रा = देना। रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातीयात् = अदानी (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)।

अरातेः = अदानी के लिए (रा = देना)।

अराद्ध्या = अराध्य के लिए (अ - नहीं, राध् - सिद्ध करना, पूरा करना, बढ़ना)।

अराद्ध्यै = अराध्य के लिए (अ - नहीं, राध् - सिद्ध करना, पूरा करना, बढ़ना)।

अराधसम् = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, दान से रहित को (अ - नहीं, रध् - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध् - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

अराधसो = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, दान से हीन (अ - नहीं, रध् - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध् - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

अराधि - अराधि = पूरा किया, समर्थ हुए (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रध् - राध् - सिद्ध करना, पूरा करना, बढ़ना)।

अराय = अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अराव्यः = अदानी, अप्रगतिशील, शब्द न करने वाले, हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, रा - देना, रव - जाना, प्रकाश करना, रु - शब्द करना, ध्वनि करना, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अरिः = हिंसक, गतिशील, व्यापक (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अरिच्यत् = रेचन किया, अलग किया, एकत्र किया, हिंसा की, हिंसा न करने वाले, गतिशील, व्यापक (रिच् - रेचन करना, अलग करना, एकत्र करना। ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अरिणन् = शब्द किया, चूर्ण किया, हिंसा, गति, व्यापकता, निःशब्दता (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व

दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रिण - शब्द करना, चूर्ण होना, अल्प होना)।

अरिणन = हिंसा, गति, व्यापकता, निःशब्दता (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रिण - शब्द करना, चूर्ण होना, अल्प होना)।

अरित्रा - अरित्रा = हिंसकों से बचाने वाले (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, त्रा-त्रै - रक्षा करना, बचाना)।

अरित्राम् - अरित्राम् = हिंसकों से बचाने वाले को (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, त्रा-त्रै - रक्षा करना, बचाना)।

अरिष्टः = अहिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्टतातये = अहिंसक, गतिशील, व्यापक का विस्तार करने वाले, अरिष्टता का चुम्बन करने वाले (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, तन् - विस्तार करना, तय - चुम्बन करना)।

अरिष्टनेमिः = अहिंसक, गतिशील, व्यापक को जानने, प्राप्त करने वाले (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, नी - जाना, जानना, पाना, प्राप्त करना, पहुँचना)।

अरिष्टम् = निर्मल, अहिंसक, अत्यन्त हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्ट्यै = निर्मल, अहिंसक, अत्यन्त हिंसक, गतिशील, व्यापक के लिए (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्टा = हिंसामुक्त, अहिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना,

हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्टेभिः = अहिंसकों, गतिशीलों, व्यापकों द्वारा (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्ट्या = अहिंसक, गतिशील, व्यापक द्वारा (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्ट्यै - अरिष्ट्यै = अहिंसक के लिए, गतिशील, व्यापक के लिए (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरिष्यन्तो = अहिंसा करते हुए, हिंसा न करते हुए (अ - नहीं, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुण - अरुण = प्रगतिशील, व्यापक (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुणः = प्रगतिशील, व्यापक (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुणप्सुः = प्रगतिशील, व्यापक (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुण-बभ्रुः = अरुण-बभ्रु, अरुण-पोषक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना, भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

अरुणा = हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुणान् - अरुणान् = अरुणों को, प्रगतिशीलों, व्यापकों को (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति

करना)।

अरुणाय - अरुणाय = अरुण के लिए, प्रगतिशील, व्यापक के लिए (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुणीः - अरुणीः = प्रगतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुणीनाम् - अरुणीनाम् = प्रगतिशीलों, व्यापकों का (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुणीभिः = गतिशील, व्यापकों द्वारा (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अ - नहीं, रु - शब्द करना, गति करना)।

अरुधत् = बढ़ा, चाहा, रुका हुआ (रुध - बढ़ना, गर्व करना, चाहना, रोकना, कृपालु होना, दया करना, अनुमोदन देना, शोक करना, रोना)।

अरुषः - अरुषः = प्रगतिशील, व्यापक, अहिंसक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुषम् = प्रगतिशील, व्यापक, अहिंसक, रोष-रहित (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुषस्तूपो - अरुषस्तूपो = क्रोधहीनों, अहिंसकों को एकत्र करने वाला, अहिंसकों-स्तुतियों का पालक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, स्तु - स्तुति करना, स्तुप - राशि करना, ढेर करना, एकत्र करना)।

अरुषा = अहिंसक अथवा रोष-रहित, प्रगतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुषीः = अहिंसक अथवा रोष-रहित, हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुषीभिः = प्रगतिशीलों, व्यापकों, अहिंसकों, रोष-रहितों द्वारा (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुषो = अहिंसक अथवा रोष-रहित, हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अरुहत्-अरुहत् = आरोहण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुह् - आरोहण कररना, चढ़ना, बढ़ना)।

अरुहद् = आरोहण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुह् - आरोहण कररना, चढ़ना, बढ़ना)।

अरुहम् = आरोहण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुह् - आरोहण कररना, चढ़ना, बढ़ना)।

अरुरुचत- अरुरुचत = प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित हुआ (रुच् - चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरे = तिरस्कारपूर्वक सम्बोधन (अव्यय)।

अरे = गति के लिए (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, ऋ = जाना, पाना, मिलाना)।

अरेणवः = गमनीय, रेणु-हीन, हिंसा, गति, व्यापकता (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, ऋ = जाना, पाना, मिलाना, अ - नहीं, रिण - शब्द करना, चूर्ण होना, अल्प होना)।

अरेणुभिः = गमनीय, रेणु-हीन, हिंसा, गति, व्यापकता द्वारा (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, ऋ = जाना, पाना, मिलाना, अ - नहीं, रिण - शब्द करना, चूर्ण होना, अल्प होना)।

अरेपसौ = अगमनीय, अगति, निःशब्द (अ - नहीं, रेप - जाना, शब्द करना)।

अरोचत = रुचा, प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित हुआ

(अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुच् - रुचना, चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरोचथा = रुचा, प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित हुआ, प्रकाश हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुच् - रुचना, चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरोचथाः = रुचा, प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित हुआ, प्रकाश हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुच् - रुचना, चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरोचयः = अरुचि, प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुच् - रुचना, चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरोचयत् = रुचा, प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित हुआ, प्रकाश हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुच् - रुचना, चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरोचिष्ट - अरोचिष्ट = रुचा, प्रसन्न, उत्साहित, प्रकाशित हुआ, प्रकाश हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुच् - रुचना, चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, रुचना, प्रीति होना, उत्साह होना)।

अरोहत् = चढ़े, बढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

अर्कः - अर्कः = अर्क, प्रशंसा, स्तुति (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्कम् - अर्कम् = अर्क, स्तोता, प्रशंसक को (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्कस्य = अर्क का, स्तोता का, प्रशंसक का (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्काः = अर्क, प्रशंसा, स्तुति (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्कशोकैः - अर्कशोकैः = अर्कशोकों द्वारा, प्रकाश, स्तुति, पवित्रता द्वारा (अर्क - स्तुति करना, प्रकाश करना,

शुच् - पवित्र करना)।

अर्किणः = स्तुति करने वाले (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्केभिः = स्तुतियों द्वारा (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्कैः - अर्कैः = स्तुतियों द्वारा (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्च = पूजते हैं, पूजा (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चतः = पूजा, सम्मान, सेवा करने वाले (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चत = अर्चना करो, सम्मान करो, सेवा करो (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चति = अर्चना करता है, सम्मान करता है, सेवा करता है (अर्च - पूजा करना, मान करना)।

अर्चतो = अर्चना, सम्मान, सेवा करने वाले (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चद्धूमासो = अर्चित कम्पन करने वाले, कम्पितों की अर्चना करने वाले (अर्च - पूजा करना, मान करना, धू - कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

अर्चन्ति - अर्चन्ति = अर्चना करते हैं, सम्मान करते हैं, सेवा करते हैं (अर्च - पूजा करना, मान करना)।

अर्चन्तु = अर्चना करें (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चन्तो - अर्चन्तो = अर्चना करने वाले (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चयः - अर्चयः = अर्चना करने वाले (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चयो = अर्चना करने वाले (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चा = अर्चना (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चाम् - अर्चाम् = अर्चना को (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चामि - अर्चामि = अर्चना करता हूँ, पूजता हूँ (अर्च

- पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चिः - अर्चिः = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चिभिः - अर्चिभिः = अर्चना, पूजा, सेवा, मान द्वारा (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चिवत् = अर्चनायुक्त, सेवावान्, मानयुक्त (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चिषा - अर्चिषा = अर्चना, पूजा, सेवा, मान द्वारा (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चिषि - अर्चिषि = अर्चना, पूजा, सेवा, मान में (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्चिषे - अर्चिषे = अर्चनीय के लिए (अर्च - पूजा करना, सेवा करना)।

अर्जुनः - अर्जुनः = लाभ, प्राप्ति (अर्ज - लाभ करना, प्राप्त करना, पाना)।

अर्जुनम् = लाभ, प्राप्ति को (अर्ज - लाभ करना, प्राप्त करना, पाना)।

अर्णः = अर्ण, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्णम् - अर्णम् = अर्ण को, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक को (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्णवः - अर्णवः = अर्णव, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्णवान् = अर्णव, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्णवाय - अर्णवाय = अर्णव के लिए, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक के लिए (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्णवे - अर्णवे = अर्णव में, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक में (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्णसा = अर्ण, प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक द्वारा (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

अर्तनम् - अर्तनम् = अर्तन को, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक को (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अर्थ - अर्थ = अर्थ, याचना, चाह (अर्थ - मांगना, याचना करना, चाहना)।

अर्थः - अर्थः = अर्थ, याचना, चाह (अर्थ - मांगना, याचना करना, चाहना)।

अर्थम् - अर्थम् = अर्थ, याचना, चाह को (अर्थ - मांगना, याचना करना, चाहना)।

अर्थान् - अर्थान् = अर्थों को, याचना, चाह को (अर्थ - मांगना, याचना करना, चाहना)।

अर्थेतः - अर्थेतः = अर्थ, याचना, चाह से (अर्थ - मांगना, याचना करना, चाहना)।

अर्दय = मार दो, अर्दित करो (अर्द - मारना, बध करना)।

अर्दयत् - अर्दयत् = मार दिया, अर्दित किया (अर्द - मारना, बध करना)।

अर्द्ध = आधा (अर्ध - आधा, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्द्धम् = आधे को (अर्ध - आधा, अर्द - मारना, बध

करना)।

अर्द्धयुः - अर्द्धयुः = अर्द्धयु, आधायुक्त (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्द्धमासानाम् = अर्द्धमासों का (अर्ध - आधा, अर्द - मारना, बध करना, मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

अर्धः = आधा (अर्ध - आधा)।

अर्धमासेभ्यः = अर्धमासों के लिए (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

अर्धयन्तु - अर्धयन्तु = आधा करें (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्धे = आधे में, अर्ध में (अर्ध - आधा)।

अर्ध्य - अर्ध्य = अर्ध्य (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्ध्यन्तः - अर्ध्यन्तः = अर्ध भाग करने वाले (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्ध्यन्तो = अर्ध भाग करने वाले (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्ध्वानम् - अर्ध्वानम् = अर्ध्व (अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

अर्पितः - अर्पितः = अर्पित (अर्प - अर्पण करना, देना)।

अर्पितम् - अर्पितम् = अर्पित को (अर्प - अर्पण करना, देना)।

अर्पितानि - अर्पितानि = अर्पित (अर्प - अर्पण करना, देना)।

अर्बुदम् - अर्बुदम् = अर्बुद को (अर्ब - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना)।

अर्भकम् - अर्भकम् = अर्भक को (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

स्वामी शरण

पाना, पहुँचना, हिंसा करना)।

अर्शत् - अर्शत् = अन्तर्यामी, विद्यमान (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्शस = अन्तर्यामी, विद्यमान (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्शसः - अर्शसः = अन्तर्यामी, विद्यमान (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्ष = अन्तर्गमन, अन्तर्दर्शन (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षत् - अर्षत् = अन्तर्यामी, विद्यमान (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षति = अन्तर्गमन करता है, अन्तर्दर्शन करता है, ऋषित्व प्राप्त करता है (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षन् = अन्तर्यामी, विद्यमान, प्राप्त होता हुआ (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षन्ति-अर्षन्ति = अन्तर्गमन करते हैं, अन्तर्दर्शन करते हैं, ऋषित्व प्राप्त करते हैं (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षन्तु = अन्तर्गमन करें, अन्तर्दर्शन करें, ऋषित्व प्राप्त करें (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षसि = अन्तर्गमन करते हो, अन्तर्दर्शन करते हो (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्षा = अन्तर्यामी, विद्यमान (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अर्हतः - अर्हतः = अर्हत्, पूज्य, योग्य (अर्ह = पूजा करना, पूज्य होना, योग्य होना)।

अर्हते = अर्हत् के लिए, पूज्य, योग्य के लिए (अर्ह = पूजा करना, पूज्य होना, योग्य होना)।

अर्हथः = अर्हत्, पूज्य, योग्य (अर्ह = पूजा करना, पूज्य होना, योग्य होना)।

अर्हात् - अर्हात् = अर्हत् से, पूज्य से, योग्य से (अर्ह = पूजा करना, पूज्य होना, योग्य होना)।

अलजः = विद्या-सामर्थ्य से उत्पन्न, अपमान न करने वाला (अल् - समापन होना, पर्याप्त होना, शब्द करना, ध्वनि करना, सहन करना, समर्थ होना, भूषित करना, निवारण करना, लज = लज्जित होना, मुंह छिपाना। लज - भूँजना, तलना, भूना, अपमान करना, धिक्कारना। लज - प्रकाश होना, प्रकट होना, स्पष्ट होना, लज - ढांकना, छिपाना, दूर करना, लज = चमकना, बोलना)।

अलर्षि = विद्या-सामर्थ्य वाला (अल् = समापन होना, पर्याप्त होना, शब्द करना, ध्वनि करना, सहन करना, समर्थ होना, भूषित करना, निवारण करना)।

अलर्षिरातिम् = अलर्षि-राति को, विद्या-सामर्थ्य-अनुदान को (अल् = समापन होना, पर्याप्त होना, शब्द करना, ध्वनि करना, सहन करना, समर्थ होना, भूषित करना, निवारण करना, रा - देना, मिल जाना)।

अल्गाभ्याम् = अल्गों के लिए (अल् = समापन होना, पर्याप्त होना, शब्द करना, ध्वनि करना, सहन करना, समर्थ होना, भूषित करना, निवारण करना)।

अल्प = थोड़ा, न्यून (अव्यय)।

अल्पाञ्जिः = अल्प-प्रकाश वाला (अल्प = थोड़ा, न्यून, अव्यय। अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)।

अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)।

अव = रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवऋत्यै = अवऋत्य के लिए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अवकया = रक्षक द्वारा (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवकाम् = रक्षक को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् =

अवतत्य = अवपालन कर, अवरक्षण कर, अवविस्तार कर, अनुपालक, अनुरक्षक, अनुविस्तारक (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, (उपसर्ग), अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, तन् = विस्तार करना)।

अवतम् = रक्षित, रक्षा करने वाले (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवता = रक्षित, रक्षा करने वाले (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवतात् = रक्षा करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवतानाम् = रक्षितों का (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवताम् = रक्षा करे (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवतु = रक्षा करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवते = अवत के लिए, रक्षा के लिए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवतोकाम् = अवतोक को (अव-तोकाम्, अवत ओकाम्, अव - नीचे, निम्न, दूर, प्राप्त, अव् - रक्षा करना, तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, ओ - शब्द करना, आह्वान करना)।

अवत्वम् = रक्षा को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवदन् = बोले (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वद् - बोलना, कहना)।

अवदन्त = बोले (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वद् - बोलना, कहना)।

अवद्यम् = न कहने योग्य, अकथनीय, अनिर्वचनीय (अ = नहीं, वद् - बोलना, कहना)।

अवद्यात् - अवद्यात् = न बोलने योग्य से (अ = नहीं, वद् - बोलना, कहना)।

अवधावति = नीचे दौड़ता है (अव = नीचे, दूर, प्राप्त,

अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धाव् - दौड़ना, भागना)।

अवधिष्म = अवध्वनि, निम्न ध्वनि (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धिष् - शब्द करना, ध्वनि करना)।

अवधीः = वध किया, वध न करने वाले (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धी - धारण करना, आधार होना, उपेक्षा करना, अनादर करना, वध-हन् - वध करना, मारना, हिंसा करना, गति करना, जाना, जानना, पाना)।

अवधीत् = वध किया, मार दिया, नष्ट कर दिया (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, वध-हन् - हिंसा करना। अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धी - धारण करना, आधार होना, उपेक्षा करना, अनादर करना)।

अवधीम् = वध न करने वाले को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धी - धारण करना, आधार होना, उपेक्षा करना, अनादर करना, वध-हन् - वध करना, मारना, हिंसा करना, गति करना, जाना, जानना, पाना)।

अवधूतम् = अवधूत को, अवकम्पित को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धू = कम्पन करना)।

अवधूता = अवधूत, अवकम्पित (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धू = कम्पन करना)।

अवधूताः = अवधूत, अवकम्पित (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, धू = कम्पन करना)।

अवध्यम् = अवध्य, अहिंसनीय, न मारने योग्य को (अ - नहीं, वध् - हन् - वध करना, मारना, हिंसा करना, गति करना, जाना, जानना, पाना)।

अवन्ति - अवन्ति = रक्षा करते हैं (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवन्तु = प्रकाशित करें, रक्षा करें (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवपतन्ती: = अवपतनशील (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

अवपद: = निम्नगामी, रक्षक का पद, प्रभुपद (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, पद - जाना)।

अवपदो = निम्नगामी, रक्षक का पद, प्रभुपद (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, पद - जाना)।

अव-पश्यामि = नीचे देखता हूँ, प्रभुपद को देखता हूँ (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, पश्य-दृश् - देखना)।

अवभृथ = अवभृत, पूर्ण (अव = नीचे, दूर, प्राप्त। भृ - पूर्ण करना, भरण, पोषण, धारण करना)।

अवभृथम् = अवभरण को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, भृ - भरण करने वाले)।

अवभृथाय = अवभृथ के लिए, अवभरण करने वाले के लिए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, भृ - भरण करने वाले)।

अवभेदिने = अवभेदी के लिए, अवभेदन करने वाले के लिए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, भिद् - भेदना, भाग करना, चीरना, तोड़ना, हिंसा करना)।

अवमम् = प्रकाशित को, रक्षा को (अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवमा = अवमान, प्रकाश का मान, रक्षक का मान (अव - निम्न (उपसर्ग), मा - मानना, मापन करना, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवमार्जनानि - अवमार्जनानि = अवमार्जन (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, मृज् - स्वच्छ करना, शुद्ध करना, पवित्र करना)।

अवमीत् = अवमान किया, वमन किया (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, मा-मी - मापना, मान करना, शब्द करना, वम - वमन करना)।

अवमो = प्रकाशित करें, रक्षा करें (अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवयजनम् = अवयजन को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

अवया: = संरक्षण (अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवर: = अवर, अवरणीय, रक्षक (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरस्पराय = अवर की सेवा, प्रीति, पालन के लिए (अवर - नीचे, अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

अवरान् = अवरों को, अवरणीयों को, रक्षकों को (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरे = अवर में, अवरणीय में, रक्षक में (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरेभ्यः = अवरों के लिए, अवरणीयों के लिए, रक्षकों के लिए (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरैः = अवरों द्वारा, रक्षकों द्वारा, अवरणीय लोगों द्वारा (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरोकिणः = अवरोकी, प्रकाशमान्, प्रकाश करने

वाले (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, रु - शब्द करना, जाना, जानना, पाना, क्रोध करना, हिंसा करना, रुच् - प्रकाशित होना, चमकाना, रुचना, चाहना)।

अवर्तत - अवर्तत = वर्तमान हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृत् = वर्तना, वर्तमान होना)।

अवर्तिम् = अवर्ति को, अहिंसक को, अवरणीय को, अवर्तमान को (अ = नहीं, वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

अवर्तयः - अवर्त्यः = न वर्तने योग्य (अ - नहीं, वृत् = वर्तना, वर्तमान होना)।

अवर्द्धताम् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्द्धन् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्द्धयत् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्द्धयन् - अवर्द्धयन् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्धत = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्धताम् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्धन् - अवर्धन् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्धयत् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्धयन् = बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृद्ध - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवर्षाय - अवर्षाय = अवर्षण योग्य के लिए (अ = नहीं, वृष्-वर्ष = सींचना, वर्षा होना, बरसना, गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

अववर्षते = अववर्षा होती है, अववर्षक के लिए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृष्-वर्ष = सींचना, वर्षा होना, बरसना, गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

अवलिप्ताः = अवलिप्त (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, लिप् - लेपन करना, लिप्त होना, बढ़ाना, अधिक करना)।

अववृत्त्यात् = अववृत्त्य से (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

अववृत्त्रन् - अववृत्त्रन् = अववृत्त्रों को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

अवसः = रक्षा करने वाले (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना, अ - नहीं, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

अवसम् - अवसम् = रक्षा को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना, अ - नहीं, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

अवसर्जनाय - अवसर्जनाय = अवसर्जन के लिए, परित्याग के लिए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना)।

अवसर्पति - अवसर्पति = चलता है, सरकता है (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सर्प् - चलना, सरकना)।

स्वामी शरण

करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना, रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

अवस्रन् = अवगति, अवप्रवाह, पालन-रक्षण की गति, प्रवाह (अव - नीचे, दूर, प्राप्त, अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

अवस्वन्याय = रक्षक के लिए (अव-स्वन्याय, अवस्यु-अन्याय, अ - नहीं, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

अवस्वरत् = कहा, कहता है (अ - नहीं, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, स्वर = शब्द करना, कहना)।

अवहः = वहन किया, वहन न करने वाले (अ - नहीं, अ- भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वह = वहन करना, ले जाना)।

अवा = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवाः = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

अवाच्यै = अवाच्य के लिए, अकथनीय के लिए (अ - नहीं, वच् = बोलना, कहना)।

अवाट् = रक्षक, वाहक (अ - नहीं, अ- भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना, वा - वहना, चलना, वह - वहन करना)।

अवातः = रक्षित, वात-हीन, सुखहीन, गतिहीन (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना, वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)।

अवान्तर-दिशाभ्यः = अवान्तर-दिशाओं के लिए

(अवान्तर - इतर, अन्य, विभिन्न, दिश्-दिक् - निरूपण करना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

अवायि = रक्षक, रक्षा करें (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)।

अवाराय = रक्षा, पालन के लिए (अ - नहीं, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृ-वर् - वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, वृ - निवारण करना, हटाना, आच्छादन करना, ढकना, घेरना)।

अवार्यक्रतुम् = अवार्य-कृत, रक्षा-कृत, पालन-कर्ता के लिए (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृ-वर् - वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, वृ - निवारण करना, हटाना, आच्छादन करना, ढकना, घेरना, कृ = करना)।

अवार्याः - अवार्याः = अवार्य, रक्षा, पालन (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृ-वर् - वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, वृ - निवारण करना, हटाना, आच्छादन करना, ढकना, घेरना)।

अवार्याणि - अवार्याणि = अवार्य, रक्षा, पालन (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृ-वर् - वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, वृ - निवारण करना, हटाना, आच्छादन करना, ढकना, घेरना)।

अवार्याय - अवार्याय = अवार्य रक्षा, पालन के लिए (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वृ-वर् - वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, वृ - निवारण करना, हटाना, आच्छादन करना, ढकना, घेरना)।

अवावशन्त = रक्षण की कामना, प्रकाश की कामना (अव+आ+वशन्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना, वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

अवांसि = रक्षक (अ - नहीं, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)।

अवासृजो = अवसर्जन करो (अव+असृजः, अव+आसृजः, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना)।

अवासुरे = रक्षा में, ऐश्वर्य में, प्रकाश में (अ - नहीं, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सु - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, सुर् - ऐश्वर्य होना, प्रकाश होना, अस् - गति करना, प्रकाश करना, ग्रहण करना, फेंकना)।

अवाहन = वहन किया, अवाहित करते हुए, हनन करने वाला (अ+वह, अव+आ+हन्, अ - नहीं, अव - नीचे, दूर, प्राप्त, अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, आ - समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), वह - वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, हन् - मारना)।

अविः = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अविचालिः = रक्षा में चलने वाले, विचलित न होने वाले (अ - नहीं, वि - विशेष, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, चल - चलना, जाना, जानना, पाना)।

अविचृत्यम् = अविचृत्य, प्रकाशमान को, (अ - नहीं, वि - विशेष, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, विच - व्याजीकरण करना, व्यापना, ठगना, जाना, जानना, पाना, अलग होना, अलग करना, चृत् - प्रकाशित करना, बांधना, गूँथना, हिंसा करना)।

अविजाताम् = उत्पन्न करे, रक्षक से उत्पन्न (अ - नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वि - विशेष, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

अविज्ञाता - अविज्ञाता = रक्षाविद्, रक्षा विशेषज्ञ, विशेष न जानने वाले, अविद्वान् (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, ज्ञा - जानना, समझना)।

अविज्ञाताः - अविज्ञाताः = रक्षाविद्, रक्षा विशेषज्ञ, विशेष न जानने वाले, अविद्वान् (अ - नहीं, अव् = रक्षा

करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, ज्ञा - जानना, समझना)।

अविता = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना)।

अवितारम् = रक्षक को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना)।

अवित्तरासत् - अवित्तरासत् = अदानी शब्दकर्ता (अ - नहीं, वित् - देना, दान करना, रास् - शब्द करना)।

अवित्सि - अवित्सि = जाना, अज्ञानी में (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविद् = रक्षाविद्, रक्षा विशेषज्ञ, विशेष न जानने वाले, अविद्वान् (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, ज्ञा - जानना, समझना)।

अविदन् = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविदम् = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविदाम् = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविद्यया - अविद्यया = अविद्या द्वारा (अ = नहीं, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविद्याम् - अविद्याम् = अविद्या को (अ = नहीं, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविद्यायाः - अविद्यायाः = अविद्या का (अ = नहीं, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविद्रियाभिः – अविद्रियाभिः = अविद्रिय, अखण्ड, रक्षा को विदीर्ण करने वालों द्वारा (अ - नहीं, वि = विशेष, दृ - विदीर्ण करना, खण्डित करना, अक् = रक्षा करना)।

अविद्वान् = अज्ञानी (अ = नहीं, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविन्दः = प्राप्त किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, विन्द-विद् = लाभ होना, प्राप्त करना, पाना, सम्पादित करना)।

अविन्दन् = प्राप्त किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विन्द-विद् = लाभ होना, प्राप्त करना, पाना, सम्पादित करना)।

अविपालम् = अविपाल को, रक्षक का पालन करने वाले को (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, पा - पालन करना)।

अविभिः = रक्षकों द्वारा (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अविम् = अवि को, रक्षक को (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अविरः = रक्षक (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अविशस्ता = अविशस्त, रक्षक (अ - नहीं, वि - विशेष, अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना। शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस् = चाहना, स्तुति करना)।

अविषत् = व्याप्त हुआ, प्रोक्षण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विष - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, विष - सींचना, प्रोक्षण करना, विष-विविष - व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

अविषम् = विष रहित, विषहीन, व्याप्त हुआ, प्रोक्षण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विष - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, विष - सींचना, प्रोक्षण करना, विष-विविष - व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

अविष्यन् = रक्षा करते हुए, विष रहित, विषहीन (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक् = रक्षा करना,

पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, विष - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, विष - सींचना, प्रोक्षण करना, विष-विविष - व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

अविष्यवो = संहारक, रक्षकों को अलग करने वाले, रक्षकों के संहारक (अ+वि+ष्यवः, अविः+यवः, अवि+ष्यवः, अ = नहीं, वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना, यु = मिलाना, अलग करना)।

अविहनुतम् - अविहरुतम् = रक्षकों को हरने वाले को, विहार न करने वाले को (अ - नहीं, वि - विशेष, अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

अवी = अगित, अव्याप्त, रक्षक (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना)।

अवीः = अगति, अव्याप्त, रक्षक (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना)।

अवीनाम् = व्याप्तों का, रक्षकों का (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना)।

अवीरहणौ = वीरों को नहीं मारने वाले, अ-वीरों को मारने वाले (अ- नहीं, अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वीर - वीर होना, वीरता दिखाना, पराक्रम करना, हन - मार डालना)।

अवीरहा = वीरों को नहीं मारने वाले, अ-वीरों को मारने वाले (अ- नहीं, अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वीर - वीर होना, वीरता दिखाना, पराक्रम करना, हन - मार डालना)।

अवीवशत् = वश में किया, इच्छा की, प्रकाश किया (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वश् - इच्छा करना, चाहना, प्रकाश करना, चमकना)।

अवीवृध = व्यापकता, रक्षा से वर्धित, बढ़ा हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक् = रक्षा करना,

पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना। वृध् - बढ़ना)।

अवीवृधत् = व्यापकता, रक्षा से वर्धित, बढ़ा हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना, वृध् - बढ़ना)।

अवीवृधन् = व्यापकता, रक्षा से वर्धित, बढ़ा हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना, वृध् - बढ़ना)।

अवीवृधन्त = व्यापकता, रक्षा से वर्धित हुआ, बढ़ा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना, वृध् - बढ़ना)।

अवृकाः = अवृक, अहिंसक (अ = नहीं, वृक् = वरण करना, लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

अवृकाय = अहिंसकों के लिए, अवृकों के लिए (अ- नहीं, वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

अवृक्तिम् = अहिंसक, अस्वीकार्य, त्याग को (अ - नहीं, वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच - हिंसा करना)।

अवृणीत = वरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ = वरण करना)।

अवृणीतायम् = वरण किया, अवृणीत (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ = वरण करना)।

अवृणीध्वम् - अवृणीध्वम् = वरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ = वरण करना)।

अवृणीमहि = वरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ = वरण करना)।

अवृणोत् = वरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ = वरण करना)।

अवृतम् = अवृत को, अनाच्छादन को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

अवृधन् = बढ़ाया, नहीं बढ़ते हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृध् - बढ़ना, बढ़ाना)।

अवे = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवेत्वा = रक्षण, नहीं जानकर (अ = नहीं, विद् - जानना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवेन्ता = रक्षक, अवेन (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, अ-वेन्ता, अ = नहीं, वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)।

अवेपयः = रक्षक, विद्वान् (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, पय - जाना, जानना, पाना, रक्षा करना, पी - पीना)।

अवेष्टाः = रक्षक, विद्वान्, अव्याप्त (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, विष - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, विष - सींचना, प्रोक्षण करना, विष-विविष - व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

अवो = रक्षक, विद्वान् (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवोभिः = रक्षण द्वारा, रक्षा-साधनों से (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवोचत् = बोले (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वच्-वद् - बोलना)।

अवोचाम् = बोले (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वच्-वद् - बोलना)।

अव्यत = पालन करता है, व्याप्त होता है, रक्षा करता है (अव्य - बाँधना, पालन करना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, व्याप्त होना, प्रकाश करना)।

अव्यथमाना = निर्भय, दुःख-हीन (अ = नहीं, व्यथ् = डरना, दुःखी होना)।

अव्यथामानाम् = निर्भय, दुःख-हीन को (अ = नहीं, व्यथ् = डरना, दुःखी होना)।

अव्यथायै = निर्भय, दुःख-हीन के लिए (अ = नहीं,

व्यथ् = डरना, दुःखी होना)।

अव्यथी = निर्भय, दुःख-हीन (अ = नहीं, व्यथ् = डरना, दुःखी होना)।

अव्यनत् = प्राण रहित, असमर्थ, अविद्वान् (अ = नहीं, वि - विशेष, अन् = जीना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अव्यम् = बन्धन, पालन, रक्षणीय को, (अव्य - बाँधना, पालन करना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अव्ययम् = अव्यय, आच्छादन, बन्धन, पालन को (अ = नहीं, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना, अव्य - बाँधना, पालन करना)।

अव्यया = अव्यय, आच्छादन, पालनीय द्वारा, रक्षणीय द्वारा, बन्धन द्वारा (अ = नहीं, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना, अव्य - बाँधना, पालन करना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अव्यये = अव्यय में (अ = नहीं, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)।

अव्यसः = पालनीय, रक्षणीय, पालक, रक्षक, अव्यापक (अव्यस्, अ-वी-असः, अ-वि-असः, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, अव्य - बाँधना, पालन करना, अ = नहीं, वि - विशेष, वी- जाना, व्यापना, व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना)।

अव्या = पालनीय, रक्षणीय, बन्धन (अव्य - बाँधना, पालन करना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अव्ये = पालनीय, रक्षणीय, बन्धन में (अव्य - बाँधना, पालन करना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरणम् - अव्रणम् = व्रणहीन (अ- नहीं, व्रण - क्षत करना, घाव करना)।

अव्रतम् = अव्रत को, अव्रती को (अ = नहीं, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित

करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

अंशः = अंश, विभाग, साथ (अंश- विभाग करना, बाँटना, साथ होना)।

अशकम् = असह, असमर्थ, सह सका, समर्थ हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, शक - सहना, सहन करना, समर्थ होना)।

अशत्रुः = शत्रुहीन (अ = नहीं, शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

अशनानशने = खाने वाले और न खाने वाले (अशन- अन्-अशन्, अश् - खाना, अन् - नहीं)।

अशनिम् = अशनि को, खाने वाले को, व्याप्त होने वाले को (अ = नहीं, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)।

अशन्ताम् = खाने वाले को, व्याप्त होने वाले को (अ - नहीं, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)।

अशमिष्टाः = अशान्त (अ - नहीं, शम् - शान्त होना, शमन करना)।

अशय = व्याप्त हो, भोजन करो (अ - नहीं, शम् - शान्त होना, शमन करना, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, फैलना, फैलाना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अशविनोः = खाने वाले, व्याप्त होने वाले (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अंशवो = अंशु, विभाग, साथी (अंश- विभाग करना, बाँटना, साथ होना)।

अशस्ति-अशस्ति = भोजन, व्यापकता, अहिंसा, गति, ज्ञान (अ - नहीं, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, शस् -

हिंसा करना, मारना, दुःख देना, काटना, शंस-शस् - स्तुति, प्रशंसा करना)।

अशस्तिहा = अशस्तिनाशक, अशस्ति का हनन करने वाले, अशस्ति-अहिंसक को गति, ज्ञान देने वाले (अ - नहीं, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, शस् - हिंसा करना, मारना, दुःख देना, काटना, शंस-शस् - स्तुति, प्रशंसा करना, हा - गति करना, त्याग करना, हन् - हिंसा करना, मारना)।

अशानक्षि - **अशानक्षि** = व्यापक के निकट जाने वाले (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, नक्ष - जाना, आना)।

अशाम्यन् = अशान्त, अशाम्य, व्याप्त होने वाले (अ - नहीं, शम् - शान्त होना, शमन करना, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अंशाय = अंश के लिए (अंश- विभाग करना, बाँटना, साथ होना)।

अशिमिदाय = अशिमिद के लिए (अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञा, पोता, प्रीति करना, प्यार करना)।

अशिवा = अशिव, व्यापक (अ - नहीं, शिव् = कल्याण करना, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अशिवासो = अशिव, व्यापक (अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अ - नहीं, शिव् = कल्याण करना)।

अशिश्रयुः = व्याप्त, परिपक्व किया (अश् = भोजन

करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अ - नहीं, श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

अशिश्रियत् = व्याप्त, परिपक्व किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

अशिश्वितत् = श्वेत किया, शुभ्र किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना)।

अशीतम = परम व्यापक (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अशीतिः = अस्सी (संख्या)।

अशीतिः = अशीति, अशयन्, व्याप्त, व्यापक (अ - नहीं, शी - शयन करना, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अशीभ्यः = व्यापक के लिए (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अ = नहीं, शी - शयन करना)।

अशीमहि = व्याप्त होते हैं, भोजन करते हैं (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अशीय = व्यापक हों, प्राप्त करो, अशन करो, भोजन करो (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अशीर्षाणो = शीर्ष-हीन, अशीर्ष (अ = नहीं, शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

- जागरण करना, जागना, जागरण होना)।

अश्ववत् = अश्व, तीव्र गति, व्यापक के समान (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्ववित् = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक को जानने वाले (अश् = व्यापक होना, चलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, विद् - जानना)।

अश्वसनि: = अश्वसेवा, तीव्र गति युक्त, व्यापक सेवा
(अश् = व्यापक होना, व्यास होना, फैलना, फैलाना, व्यापना,
पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना,
तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, सन् - सेवा करना, पूजा
करना, सत्कार करना, दान करना, योग्य होना)।

अश्वसा = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वसादम् - अश्वसादम् = अश्वसाद को, अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक गति को (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, साद - चलना, बैठना, सुखन, चढ़ाई करना)।

अश्वसाम् = अश्वों का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का
(अश् = व्यापक होना, व्यास होना, फैलना, फैलाना, व्यापना,
पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना,
तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वसूनृते = अश्व, तीव्र गति युक्त, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)।

अश्वस्य = अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वावत् = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचाना,

अश्विनौ - अश्विनौ = अश्विन युगल, तीव्र गति युक्त,
व्यापक (अश = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना,

व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)।

अश्वेभिः = अश्वों द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापकों द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वेभ्यः = अश्वों के लिए, तीव्र गति युक्त, व्यापकों के लिए (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्विभ्याम् = अश्वीयुगल द्वारा, अश्वीयुगल के लिए, अश्वीयुगल से, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वेन = अश्व द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वेषु = अश्वों में, तीव्र गति युक्त, व्यापकों में (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वैः = अश्वों द्वारा, अश्वों के साथ, तीव्र गति युक्त, व्यापक के साथ (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वो = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अषाढम् = असहनीय, दीप्तिमान् (अ - नहीं, सह-सहन करना, अस् - फेंकना, उड़ाना, अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)।

अषाढा = असहनीय, दीप्तिमान् (अ - नहीं, सह-सहन करना, अस् - फेंकना, उड़ाना, अष् - ग्रहण करना, जाना,

जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)।

अषाम् = दीप्तिमान् को (अ - नहीं, अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)।

अष्ट = आठ (संख्या)।

अष्ट = व्याप्त, दीप्तिमान् (अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अष्टधा - अष्टधा = आठ प्रकार से (संख्या)।

अष्टभिः = आठ द्वारा (संख्या)

अष्टभ्यः = आठ के लिए, आठ से (संख्या)

अष्टमी - अष्टमी = आठवीं (संख्या)।

अष्टमे - अष्टमे = आठवें में (संख्या)।

अष्टसु = आठ में (संख्या)

अष्टाकपालः = आठ कपाल वाले (अष्ट - आठ, संख्या, कम्प = कम्पन करना, चलना, सहना)।

अष्टाक्षरेण - अष्टाक्षरेण = आठ अक्षरों द्वारा (अष्ट - आठ, संख्या, अ - नहीं, क्षर् - क्षरण होना, टपकना, गिरना)।

अष्टाचत्वारिंशः = अड़तालीस, आठ और चालीस (संख्या)।

अष्टाचत्वारिंशत् = अड़तालीस (अष्ट - आठ, चत्वारिंशत् - चालीस, संख्या)।

अष्टादशः = अठारह, आठ और दस (संख्या)।

अष्टानाम् = आठ का (संख्या)

अष्टापदीम् = आठ पद युक्त को (अष्ट - आठ, संख्या, पद् - चलना)।

अष्टाभिः = आठ द्वारा (संख्या)

अष्टाभ्यः = आठ के लिए, आठ से (संख्या)

अष्टाविंशतिः = अट्ठाईस (संख्या)।

अष्टासु = आठ में (संख्या)

अष्टु = दीप्तिमान्, ग्राही, गतिशील, विद्वान् (अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)।

अष्टौ = आठ, दीप्तिमान्, ग्राही, गतिशील, विद्वान् (अष्ट - आठ, (संख्या), अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)।

अष्टौ = आठ (संख्या)

असका = प्रकाशिका (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असकौ = प्रकाशक द्वय (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असजातो = असहजन्मा, असम्बन्धी (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन-उत्पन्न होना, जन्म होना)।

असत् = हो जाये (अस् = होना)।

असत् = असत्य (अ = नहीं, सत् = होना, सत्य होना)।

असतः = असत् से, प्रकाशक से (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असथ = हुए, हैं, प्रकाशक (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असदः = बैठे, स्थित हुए, गये (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

असदत् = बैठे, स्थित हुए, गये (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

असदन् = बैठे, स्थित हुए, गये (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

असन् = हुआ, हो जाओ (अस् - होना)।

असनेम्यः = अदानी के लिए, प्रकाशकों के लिए (अ = नहीं, सन् - दान करना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असन्दितः = अप्रदत्त, जो भलीभाँति दिया नहीं गया, अखण्ड, अक्षय, अविनाशी (अ = नहीं, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दा - देना, काटना, तोड़ना, दी - क्षय होना, ह्रास होना, झरना, नष्ट होना)।

असन्दिनम् = असन्दिन को, सम्यक् अदान को, अखण्ड,

अक्षय, अविनाशी को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दा - देना, काटना, तोड़ना, दी - क्षय होना, ह्रास होना, झरना, नष्ट होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

असपत्नम् = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक को (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

असपत्नाः = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक, जो सपत्न नहीं हो (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

असपत्नो = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक, जो सपत्न नहीं हो (अ - नहीं, स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, पतन होना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

असपर्यन् - असपर्यन् = सेवा की, पूजन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सपर - पूजा करना, सेवा करना)।

असबन्धुः = अस का बन्धु, जो सबन्धु न हो (अस-बन्धु, अ-स-बन्धु, अ - नहीं, स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, बन्ध - बांधना)।

असम् = अस को, प्रकाश को, गति को, प्रक्षेप को (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अंसम् = अंस को, साथी को, बाँटने वाले को, विभाजक को (अंस - विभाग करना, बाँटना, साथ होना)।

असमभ्यम् = असमान के लिए, समान नहीं रहने वाले के लिए (अ - नहीं, सम = न घबराना, एक समान रहना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना,

फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असमरथः = प्रकाशमान रथवाला, असमान रथ वाला (अ - नहीं, सम = न घबराना, एक समान रहना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, रम् = रमना, रमण करना)।

असमानो = असमान, जो समान नहीं हो, अस-मान, असयुक्त (अ - नहीं, सम = न घबराना, एक समान रहना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असम्भवात् = सम्यक् रूप से न होने से, प्रकाश होने से (अ - नहीं, सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असम्भूतिम् = सम्यक् रूप से उत्पन्न नहीं हुए को, प्रकाश होने को (अ - नहीं, सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असरत् = गया, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

असरो = गतिहीन, अगतिशील, गया, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

असर्जि = सृजन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असवे = उत्पन्न किया, प्रकाश के लिए, असु के लिए, प्रकाशकों के लिए (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

असश्चतो = स्थिर, अज्ञानी, अप्राप्त (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सश्च् = पाना, जानना, जाना)।

असश्चुषी = स्थिर, अज्ञानी, अप्राप्त (अ = नहीं, अ =

भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सश्च् = पाना, जानना, जाना)।

असह्यौ = असह्य, असहनीय, असक्षम, असमर्थ, अतृप्त, असन्तुष्ट (अ - नहीं, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

असाद = स्थापित किया (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

असादयन्त = स्थापित किया (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

अंसाभ्याम् = अंसों के लिए, साथी के लिए, बाँटने वाले के लिए, विभाजक के लिए (अंस् - विभाग करना, बाँटना, साथ होना)।

असावि = ऐश्वर्यमय हुआ, उत्पन्न किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

असावीत = ऐश्वर्यमय हुआ, उत्पन्न किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

असि = हो (अस् - होना)।

असिक्नीः = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, अस् - प्रक्षेपण करना, फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, सिक्-सिङ्क्-सिज-सिज्ज - अस्पष्ट शब्द करना)।

असिक्नीम् = प्रकाश, प्रक्षेपण, प्रगति को (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, अस् - प्रक्षेपण करना, फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, सिक्-सिङ्क्-सिज-सिज्ज - अस्पष्ट शब्द करना)।

असि-जिह्वः = बन्धित जिह्वा वाला, असि-तुल्य जिह्वा वाला, असि के समान वाणी वाला (अ = नहीं, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना, बन्धन होना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, जिह् = जाना, जानना, पाना)।

असिञ्चन् = सिञ्चन किया, सिञ्चन नहीं करने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सिञ्च् = सिञ्चन करना, सींचना, प्रोक्षण करना, छींटा मारना)।

असितः = अबन्धित, प्रकाशित (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)।

असितग्रीवः - असितग्रीवः = अबन्धित ग्रीवा वाला, असित ग्रीवा वाला (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)।

असितम् = अबन्धित, प्रकाशित (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)।

असिदीष्व = असि द्वारा क्षय करो (अ - नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना, दी - क्षय होना, झरना, नष्ट होना)।

असिना = असि द्वारा (अ - नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)।

असिमत् = असियुक्त (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)।

असिमद्भ्यो = असियुक्त के लिए (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)।

असिवधः = असि द्वारा वध करने वाला (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना, वध-हन् मारना, मार डालना, हिंसा करना)।

असिष्यदत् = सिञ्चन किया (स्यन्द - टपकना, झरना,

चूना, सींचना, छींटा देना, जाना)।

असिहोता = असि का दान करने वाला (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना, दी - क्षय होना, झरना, नष्ट होना)।

असीदत् = संचरण किया, प्रतिष्ठित हुए, बैठे (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

असीषदन् = संचरण किया, प्रतिष्ठित हुए, बैठे (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

असृक्षत = संचरित किया, गया, जाना, पाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृक्ष् - जाना, चलना, जानना, प्राप्त करना, पाना)।

असृक्षमहि - असृक्षमहि = संचरण किया, गये, जाना, पाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृक्ष् - जाना, चलना, जानना, प्राप्त करना, पाना)।

असृग्रन् = सृजित किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असृग्रम् = सृजित किया, सृजन किया, असृजनशील को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असृजो = सृजन किया, असृजनशील (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असृज्यन्त = सृजन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असृज्येत = सृजन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असृज्येताम् = सृजन करे (अ = भूतकालिक क्रिया

लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)।

अस्थू = फेंकने वाले, अस्थिर, अस्थि (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)।

अस्थूरि = फेंकने वाले, न ठहरने वाले, अस्थि, अस्तित्व का आधार (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)।

अस्ना = स्नायु रहित, नस नाड़ी से हीन, प्रकाश (अ = नहीं, स्नु - झरना, टपकना, बहना, स्ना = स्नान करना, शुद्ध होना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अस्नाविरम् = स्नायु रहित, नस नाड़ी से हीन, प्रकाशमान (स्नु - झरना, टपकना, बहना, स्ना = स्नान करना, शुद्ध होना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अस्निन् - अस्निन् = स्नायु रहित, नस नाड़ी से हीन, प्रकाशमान (स्नु - झरना, टपकना, बहना, स्ना = स्नान करना, शुद्ध होना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अस्पष्ट = स्पष्ट किया, स्पर्श किया, अस्पष्ट (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्पश् - अवरोध करना, रोकना, प्रसिद्ध करना, एकत्र करना, गुम्फित करना, स्पर्श करना, छूना, स्पश - लेना, संयोग करना, जोड़ना)।

अस्पृक्षः - अस्पृक्षः = प्रीति, सेवा, पालन किया, प्रीति, सेवा, पालन न करने वाले (अ = नहीं, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, पालन करना, चलना)।

अस्पृक्षत् - अस्पृक्षत् = प्रीति, सेवा, पालन किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, पालन करना, चलना)।

अस्मत् = हमसे (सर्वनाम)।

अस्मद् = मैं, हम (सर्वनाम)।

अस्मद्-द्र्यक् = हमारी दृष्टि (अस्मद् = मैं, हम, दृश् - देखना)।

अस्मभ्यम् = हमारे लिए (सर्वनाम)।

अस्मभ्याम् = हम दोनों के लिए (सर्वनाम)।

अस्मयुः = हमारा (सर्वनाम)।

अस्मयुम् = हम दोनों को (सर्वनाम)।

अस्मा = इस (सर्वनाम)।

अस्माकम् = हमारा (सर्वनाम)।

अस्मात् = इससे, इस (सर्वनाम)।

अस्मान् = हमें, हमको (सर्वनाम)।

अस्मासु = हम सब में (सर्वनाम)।

अस्मि - अस्मि = हूँ (सर्वनाम)।

अस्मिन् - अस्मिन् = इस, इसमें (सर्वनाम)।

अस्मे = हमारा, हममें, हमारे लिए (सर्वनाम)।

अस्मै = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)।

अस्य = इसका (सर्वनाम)।

अस्यत = स्थित हुआ, प्रकाशित हुआ, फेका (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अस्यताम् = स्थित हो, प्रकाशित करो, फेकों (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अस्याः = इसका (सर्वनाम)।

अस्याम् = इसमें (सर्वनाम)।

अस्यै = इसके लिए (सर्वनाम)।

असरत् - अस्रत् = गतिमान हुआ, जाना (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ - जाना, जाना, पाना, सरकना)।

असरवन्तीम् - अस्रवन्तीम् = अविचल, नहीं सरकने वाला (अ = नहीं, सृ - जाना, जाना, पाना, सरकना)।

अस्रिधम् - अस्त्रिधम् = अविचल को धारण करने वाला (अ = नहीं, सृ - जाना, जाना, पाना, सरकना, धा - धारण करना)।

असूरीवयः - असूरीवयः = अविचल को धारण करने वाला (अ = नहीं, सू - जाना, जाना, पाना, सरकना, वय - बुनना, रचना)।

असूरेधता - असूरेधता = अविचल को धारण करने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सू - जाना, जाना, पाना, सरकना)।

अस्वप्नजौ - अस्वप्नजौ = अस्वप्न (न सोने) से उत्पन्न (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्वप् - सोना, निद्रा लेना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

अस्वरन् = शब्द किया, शब्द नहीं करते हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्वर = शब्द करना)।

अस्वापयन् = सुलाया, नहीं सुलाते हुए (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्वप - सोना, निद्रा लेना)।

अह = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहः = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहतत् = व्याप्त, व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहतौ = व्याप्त, व्यापक, हनन किया, मार दिया, हिंसा की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, हन् - मारना, हिंसा करना)।

अहन् = व्याप्त, व्यापक (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहन्ताम् = व्यापक हों, व्यापक करें, हनन करें, अहिंसकों का (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, हन् - मारना, हिंसा करना)।

अहन्त्यै = व्यापकों, अहिंसकों के लिए (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, हन् - मारना, हिंसा करना)।

अहभिः = व्यापकों द्वारा (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहम् = मैं (सर्वनाम)।

अहरहः (अहः-अहः) = व्यापक, दिनोदिन (अह =

फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहयः = व्यापक, दिनोदिन, अप्रगतिशील (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, हय - चलना, कूदना, नृत्य करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, सेवा करना)।

अहरदिवाभिः - अहरदिवाभिः = व्यापक दिवों द्वारा (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहर्पतये = अहर्पति के लिए (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

अहर्विदः = व्यापक विद्वान् (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, विद् - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा कर कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

अंहसः = प्रकाशमान (अंह = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)।

अंहसस्पतये = प्रकाशमानों के पति के लिए, पालक-रक्षक के लिए (अंह = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

अहस्तम् = प्रकाशमान को (अंह = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना)।

अंहाः = प्रकाशमान (अंह = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना)।

अहानि = दिन, व्यापक, विस्तृत (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना)।

अहार्षम् - अहार्षम् = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले (अह-ऋषम्, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ऋष - अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि होना, जाना, पाना, जानना)।

अहावि = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहिः = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहिम् = व्यापक को (अह = फैलना, विस्तृत होना,

व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहिंसन् = हिंसा की, हिंसा नहीं करते हुए (हिंस - हिंसा करना, मारना, बध करना)।

अहिंसन्तम् = हिंसा नहीं करने वाले को (हिंस - हिंसा करना, मारना, बध करना)।

अहि-हृत्ये = अहि की हत्या में (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, हन्- वध करना, मारना)।

अहीन् = अनेक अहि को, अगतिशील, अविद्वानों को, वृद्धिहीनों को, व्यापकों को (अ - नहीं, हि - जाना, जानना, पाना, बढ़ना, भेजना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहृषत = प्रसन्न किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हृष - प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना)।

अहुत = व्यापक, अनाहुत, अदत्त (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहुति = व्यापकता, अनाहुति, अदान (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहुतेभ्यः = अहुत के लिए, अदानी के लिए, अनाहुत के लिए (अ - नहीं, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु- हवे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

अंहुभेद्याः - अंहुभेद्या = प्रकाशभेद्य, प्रकाश द्वारा भेदनयोग्य (अंह = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, भिद् - भेदना, भेद करना, भाग करना, चीरना, तोड़ना)।

अहूमहि = आह्वान किया, पुकारा, व्याप्त करो (अ - नहीं, अ - भूतकालिक उपसर्ग, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहेडन् = अनादर न करते हुए (अ - नहीं, हेड् - जाना, चलना, डरना, लपेटना, घेरना, तिरस्कार करना)।

अहेडमानः = तिरस्कार नहीं करता हुआ (अ - नहीं, हेड् - घेरना, चलना, डरना, अपमान करना)।

अहेडमानो = तिरस्कार नहीं करता हुआ (अ - नहीं, हेड् - घेरना, चलना, डरना, अपमान करना)।

अंहोः - अंहोः = प्रकाशमान, शब्दकर्ता, कुटिल (अंह = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)।

अहोभिः - अहोभिः = व्यापकता द्वारा (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहोभ्यः = व्यापकता के लिए (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अंहोमुचः = विद्या, प्रकाश को कहने, देने वाले (अंह = जाना, जानना, चमकना, प्रकाशित होना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना, मुच् = बोलना, कहना)।

अहोरात्रयोः - अहोरात्रयोः = दिन रात (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, रा - देना, लेना, मिलना)।

अहोरात्राः - अहोरात्राः = दिन रात (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, रा - देना, लेना, मिलना)।

अहोरात्राणि - अहोरात्राणि = दिन रात (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, रा - देना, लेना, मिलना)।

अहोरात्रे - अहोरात्रे = दिन रात (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, रा - देना, लेना, मिलना)।

अहोरात्रेभ्यः = अहोरात्रों के लिए, दिन रात के लिए (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, रा - देना, लेना, मिलना)।

अहनः = व्यापक, व्याप्त, दिन (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहना = व्यापक, व्याप्त द्वारा (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहनाम् - अहनाम् = व्यापकों का, व्याप्त होने के समय अर्थात् दिनों का (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहनुतम् = व्यापक को (अह = फैलना, विस्तृत होना,

व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहनुता = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहने = व्यापक, दिन (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहनो = व्यापक, दिन (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहरयः = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अहरुतम् = व्यापक (अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अह्वा = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, द्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अह्वे = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, द्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अह्वेताम् = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, द्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

अह्वयेथाम् = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, द्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

आ

आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)।

आ-अगन् (आगन्) = आ गये, प्राप्त हुए (आ-अगन्, आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, गम् - जाना, आ + गम् = आना)।

आ-अगात् (आगात्) = आ गया (आ-अगात्, आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, गम् - जाना, आ + गम् = आना)।

आ इतम् (एतम्) = आओ, आगत, आया हुआ (आ इतम्, आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, इ = जाना, जानना पाना)।

आ-इयात् (एयात्) = आये, प्राप्त करे (इ = जाना, जानना पाना)।

आ इहि (एहि) = आइये (आ-इ - आना, इ - जाना)।

आ ईम् (एम्) = अब (अव्यय)।

आ ऋत्यै = सम्यक् ऋत्य के लिए (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, सम्यक्, ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना)।

आकरामहै = प्राप्त करते हैं (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), कृ - करना)।

आकृष्णेन = आकर्षण से (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कृष् = आकर्षण करना, खींचना)।

आ-कृतात् = वाणी से, शब्द से (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कृ - शब्द करना)।

आ-कूतिम् = आ-कूति को, वाणी को, शब्द को (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)।

आ-कूत्यै - आकूत्यै = सम्यक् वाणी के लिए, शब्द के लिए (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)।

आक्रन्दयते - आक्रन्दयते = आक्रन्दन करता है (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, क्रन्द - पुकारना, रोना, आह्लाद होना, सन्तोष होना, दुःखी होना)।

आक्रमः - आ-क्रमः = आ-क्रम, सम्यक् गति, रक्षण (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

आ-क्रमणम् = आ-क्रमण को, सम्यक् गति, रक्षण को (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

आक्रमाय - आक्रमाय = आ-क्रम के लिए, सम्यक् गति, रक्षण के लिए (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

आक्रम्य - आक्रम्य = आ-क्रम कर, सम्यक् गति, रक्षण करके (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

आक्रयाया = आक्रय के लिए (क्री-खरीदना, विनिमय करना, जीतना)।

आक्रयायै - आक्रयायै = आक्रय के लिए (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, क्री - खरीदना, विनिमय करना,

जीतना)।

आक्षिप्तः = सम्यक् व्याप्त हों (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)

आखण्डल = हे खण्डनकर्ता! (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, खण्ड - टुकड़े करना, विभाग करना, खण्डित करना, मथना, बिलोना, कूटना)।

आखरेष्ठो - आखरेष्ठो = आखर में स्थित, प्रकाश में स्थित (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, खृ - जाना, जानना, पाना, प्रकाश करना, स्थ - स्थित होना)।

आखिदते = खेद होता है (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, खिद् = खेद होना, त्रास देना, दुःख देना, सताना, भय दिखाना)।

आखुः = सम्यक् वाणी (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, खु = शब्द करना)।

आखून् = सम्यक् वाणियों को (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, खु = शब्द करना)।

आगः = कुटिलता, आदान (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, अग् - जाना, जानना, पाना, कुटिल गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आगच्छात् = आये (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम्-गच्छ - आना)।

आगतः = आये (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगतम् = आये हुए (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आ-गतिः = आ-गमन (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगते = आगत में, आने में (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगत्य = आकर (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगन्ता = आये हुए (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगन्म = आये (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगमत् = आया (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आगमन् = आये हुए (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आ-गमिष्ठाः = आये हुए (गम् = जाना, आ-गम् = आना)।

आगात् = आये (आ - सम्यक्, गम् - जाना, आ-गम् - आना)।

आंगिः = विद्वान् (अंग् = गति करना, जाना, जानना, पाना)।

आग्नावैष्णवा = आग्नेय वैष्णव गण (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, विष-विविष - व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)

आग्ना-वैष्णवाः = आग्नेय वैष्णव गण (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, विष-विविष - व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

आग्नी = आग्नेय, अग्नि सम्बन्धी, अग्नि से उत्पन्न (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्नीध्रम् - आग्नीध्रम् = आग्नीध्र, ऊर्ध्वगति को धारण करने को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, धृ = धारण करना)।

आग्नीध्रात् - आग्नीध्रात् = आग्नीध्र से, ऊर्ध्वगति को धारण करने से (अग् = ऊर्ध्वगति करना, धृ = धारण करना)।

आग्नीध्रे - आग्नीध्रे = आग्नीध्र, ऊर्ध्वगति को धारण करने में (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्नि-मारुताः - आग्नि-मारुताः = आग्नेय-मारुत,

अग्नि तथा मरुत् सम्बन्धी, अग्नि तथा मरुत् से उत्पन्न (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, मृ - मरना)।

आग्नेयः = आग्नेय, अग्नि सम्बन्धी, अग्नि से उत्पन्न (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्नेयाः = आग्नेय, अग्नि सम्बन्धी, अग्नि से उत्पन्न (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्नेयी = आग्नेय, अग्नि सम्बन्धी, अग्नि से उत्पन्न (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्नेयो = आग्नेय, अग्नि सम्बन्धी, अग्नि से उत्पन्न (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्रभी - आग्रभी = आग्रही, आग्राही, आगर्भित (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, ग्रभ-ग्रह - लेना, ग्रहण करना)।

आ-ग्रयणः - आ-ग्रयणः = आसिञ्चक (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, गृ - सींचना, समझना, जानना, शब्द करना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

आग्रयणात् - आ-ग्रयणात् = आसिञ्चन करें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, गृ - सींचना, समझना, जानना, शब्द करना)।

आ-घोषतम् = घोषित करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, घुष - घोषित करना)।

आङ्गिः = प्रगतिशील, विद्वान् (अङ्ग् = चलना, समीप जाना, जानना, पाना, अंकुरित होना, अंग-अवयव होना)।

आङ्गिरसः = प्रगतिशील, विद्वान् (अङ्ग् = चलना, समीप जाना, जानना, पाना, अंकुरित होना, अंग-अवयव

होना)।

आङ्गिरसि = प्रगतिशील, विद्वान् (अङ्ग् = चलना, समीप जाना, जानना, पाना, अंकुरित होना, अंग-अवयव होना)।

आङ्गूषम् - आङ्गूषम् = समीपगामी, अंगभूत, वाणी वाले, प्रगतिशील, विद्वान् को (अङ्ग् = चलना, समीप जाना, जानना, पाना, अंकुरित होना, अंग-अवयव होना)।

आङ्गूषैः - आङ्गूषैः = समीपगामी, अंगभूत, वाणी वालों द्वारा (अङ्ग् = चलना, समीप जाना, जानना, पाना, अंकुरित होना, अंग-अवयव होना)।

आङ्गूष्यम् - आङ्गूष्यम् = समीपगामी, अंगभूत, शब्द करना (अङ्ग् = चलना, समीप जाना, जानना, पाना, अंकुरित होना, अंग-अवयव होना)।

आचक्रे - आचक्रे = किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, कृ - करना)।

आ-चरन्ती = आचरण करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, चर् - चलना, विचरण करना, आ-चर् - आचरण करना)।

आच्छत = स्वच्छ किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अच्छ - सत्य होना, निर्मल होना, स्वच्छ होना, स्वच्छ करना)।

आच्यावयसि = आदरणीय प्रगतिशील विद्वान् में (अच् - चलना, जाना, आदर करना, मांगना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना)।

आच्येत्या = आच्येति द्वारा, प्रगति द्वारा (अच् - चलना, जाना, आदर करना, मांगना)।

आ-जगन्थ = आये (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जग् - जाना, गति करना, लेना, ग्रहण करना, आ-जग् - आना)।

आजग्म = आये (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जग् - जाना, गति करना, लेना, ग्रहण करना, आ-जग् - आना)।

आजत् = आता है (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आगम, अज् = जानना, जाना, पहुँचना, स्थापित करना, फेंकना, आ-अज - आना)।

आजति = आता है (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आगम, अज् = जानना, जाना, पहुँचना, स्थापित करना, फेंकना, आ-अज - आना)।

आजमीडासो = प्रगतिशील विद्वान्, प्रगतिशील सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आगम, अज् = जानना, जाना, पहुँचना, स्थापित करना, फेंकना, आ-अज - आना, मिह - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

आजयः = विजय (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना)।

आजातम् = समुत्पन्न किया, उत्पन्न हुआ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जन् - उत्पन्न होना)।

आजानम् - आजानम् = अच्छे प्रकार जानने वाले को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जन् - उत्पन्न होना, ज्ञा-जा - जानना)।

आजानेषु - आजानेषु = उत्पत्तियों में, अच्छे प्रकार जानने वालों में (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जन् - उत्पन्न होना, ज्ञा-जा - जानना)।

आजिघर्मि = सम्यक् प्रकाशित होता हूँ, सम्यक् गति, ज्ञान, स्थापन (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जिघृ - टपकना, क्षरित होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

आजिम् = सम्यक् गति, ज्ञान, स्थापन को, विजयों को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना)।

आजिषु = विजयों में (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना)।

आजुहवत् = दानी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जुहु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आजुहवानः = दानी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जुहु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आजुहवानम् = दानी को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जुहु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आजुहवानस्य = दानी का (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जुहु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आजुहवाना = दानी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जुहु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आजुहव्यानः = दानी, दान-योग्य (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जुहु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आजौ = प्रगति में (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जु - जाना, जल्दी जाना, भागना)।

आज्यपाः = आज्य के रक्षक, सम्यक् गति, ज्ञान को पीने, पालन-रक्षण करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या-वृद्ध होना, पा - पीना, पालन-रक्षण करना)।

आज्यपानाम् = आज्य का पान, पालन, रक्षण करने वालों का, सम्यक् गति, ज्ञान को पीने, पालन-रक्षण करने वालों का (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या-वृद्ध होना, पा - पीना, पालन-रक्षण करना)।

आज्यम् = आज्य को, सम्यक् गति, ज्ञान को पीने, पालन-रक्षण करने वाले को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या-वृद्ध होना)।

आज्यस्य = आज्य का, सम्यक् गति, ज्ञान का (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या - वृद्ध होना)।

आज्याय = आज्य के लिए, सम्यक् गति, ज्ञान के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या-वृद्ध होना)।

आज्येन = विद्या द्वारा, आज्य द्वारा, सम्यक् गति, ज्ञान द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या-वृद्ध होना)।

आञ्जनीकारीम् = आञ्जनीकारी, प्रशंसकों को, चमकने वाले को (अञ्ज् - बोलना, जाना, चमकना, स्वच्छ करना, प्रशंसा करना, विख्यात करना, सजाना, कृ - करना)।

आडम्बराघातम् = आडम्बर पर आघात करने वाले को (डम्ब् - मर्दन करना, अधिक खाना, घात - मारना, हिंसा करना)।

आण्डाभ्याम् = आण्डद्वय के लिए (अण्ड् - चलना, जाना, आच्छादन करना)।

आण्डौ = आण्डद्वय (अण्ड् - चलना, जाना, आच्छादन करना)।

आण्याभ्याम् = आण्यद्वय द्वारा, आण्यद्वय के लिए, आण्यद्वय से (अण् - जीवन होना, श्वास लेना, सूक्ष्म होना, बलवान् होना)।

आत् = भी, अथ, अब, इसके अनन्तर (अव्यय)।

आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग)।

आत् = चिरन्तन, नित्य (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)।

आततन्थ = विस्तार किया, आश्रय दिया, वाणी दी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)।

आततः = विस्तार किया, आश्रय दिया, वाणी दी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना, आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)।

आततम् = विस्तार किया, आश्रय दिया, वाणी दी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)।

आततायिन = विस्तार, आश्रय, वाणी देने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)।

आततायिने = विस्तार, आश्रय, वाणी देने के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना, तय - जाना, संरक्षण करना, चुम्बन करना)।

आतनत् = विस्तार किया, आश्रय दिया, वाणी दी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)।

आतन्वानेभ्यः = विस्तार, आश्रय, वाणी देने वाले के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)।

आतन्वन्ति - **आतन्वन्ति** = विस्तार करते हैं, आश्रय, वाणी देते हैं (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)।

आतपति = सम्यक् तपता है (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तप् - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना तृषा होना)।

आतप्याय = आतप्य के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तप् - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना तृषा होना)।

आतस्थिवांसा = आतस्थिवान्, रक्षक, स्थापित (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तस् - स्थापित करना, रक्षा करना, भोजना)।

आतिः = सतत गतिशीलता, भोजन-पोषण (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अत् - निरन्तर गति करना, खाना)।

आतिथ्यम् = आतिथ्य, अतिथि-सत्कार (अत् = सतत गमन करना, निरन्तर चलना)।

आतिथ्यरूपम्-आतिथ्य-रूप = आतिथ्य-रूप, अतिथि-सत्कार रूप (अत् = सतत गमन करना, निरन्तर चलना, रूप - रूप बनाना, आकार बनाना, रचना करना, रूप - जागना, विकल होना, भ्रान्त होना)।

आतिष्ठन्तम् = सुप्रतिष्ठित (आ - भलीभाँति, तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

आतेज = सम्यक् तेज (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, तेज् - पालन करना, रक्षा करना, तेज होना, चमकना, तिज्-तेज् - प्रभाव होना, चमकाना, तीक्ष्ण करना)।

आतैः = चिरन्तन, नित्य, सतत गतिशीलता, भोजन-पोषण द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अत् - निरन्तर गति करना, खाना, आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना)।

आत्मनि = आत्मा में (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना,

आथर्वण = अविचलित-अहिंसक (अ - नहीं, थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

आददे = दे दिया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दा - देना)।

आदधर्षत् - आ-दधर्षत् = विजयी हुआ, गर्वित हुआ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, धृष् - जीतना, पराभव करना, घबराना, गर्व करना, चतुर होना)।

आदधातु = सम्यक् धारण करे (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दध्-धा - धारण करना, पालन करना)।

आदधुः = सम्यक् धारण करते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दध् - धारण करना, पालन करना)।

आदधे = सम्यक् धारण करता हूँ, ग्रहण करता हूँ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, आ-दध् - ग्रहण करना, लेना)।

आदम् = खाने वालों के लिए, देने वाले के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अद् - खाना, नष्ट करना, दा - देना, आ-दा - आदान करना)।

आदाय = आदान के लिए, लेने के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अद् - खाना, नष्ट करना, दा - देना, आ-दा - आदान करना)।

आदाशुषे = सम्यक् दानी के लिए, आदान के लिए, लेने के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दाश् - देना, हिंसा करना, आ-दा - आदान करना)।

आदितये = अदिति के लिए, अक्षय-अविनाशी के लिए (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदितेभ्यः = आदितों के लिए, अक्षय-अविनाशी के लिए (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदितेभ्यो = अक्षय-अविनाशी, आदित्यों के लिए (अ - नहीं, दी - नष्ट होना)।

आदित्य = आदित्य, अदिति, अक्षय-अविनाशी (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यः = आदित्य, अदिति, अक्षय-अविनाशी (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यम् = आदित्य को, अदिति, अक्षय-अविनाशी को (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यवते = आदित्यवान् के लिए, अक्षय-अविनाशी के लिए (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यवनिः = आदित्यवनि, आदित्यों की सेवा, अक्षय-अविनाशी की सेवा, अदिति से उत्पन्न की सेवा (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना)।

आदित्यवर्णम् - आदित्य-वर्णम् = आदित्य वर्ण वाले, अदिति, अक्षय-अविनाशी वर्ण वाले (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना, वर्ण - वर्णन करना, विस्तृत करना, प्रशंसा करना, प्रकाशित होना)।

आदित्या = अदिति, अक्षय-अविनाशी, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्याः = अदिति, अक्षय-अविनाशी, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यान् - आदित्यान् = आदित्यों को, अक्षय-अविनाशी को (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यानाम् = आदित्यों का, अदिति, अक्षय-अविनाशी का (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यासः = आदित्यगण, अदिति, अक्षय-अविनाशी (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्यासो = आदित्यगण, अदिति, अक्षय-अविनाशी (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्ये = आदित्य में, अदिति, अक्षय-अविनाशी में (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)।

आदित्येभिः = आदित्यों द्वारा, अदिति-अक्षय-अविनाशी

द्वारा (अ - नहीं, दी = क्षय होना, नष्ट होना, अद् = खाना)।

आदित्येभ्यः = आदित्यगण द्वारा, अदिति-अक्षय-अविनाशी द्वारा (अ - नहीं, दी = क्षय होना, नष्ट होना, अद् = खाना)।

आदित्यैः - आदित्यैः = आदित्यगण द्वारा, अदिति-अक्षय-अविनाशी द्वारा (अ - नहीं, दी = क्षय होना, नष्ट होना, अद् = खाना)।

आदिनवदर्शम् - आदि-नव-दर्शम् = आदिनवदर्श को (आदि - प्रारम्भ, नव - नवीन, दर्श - देखना)।

आदिशः = आदि के अनुरूप, सम्यक् दिशाये (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आदि - प्रारम्भ, दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

आदिशम् = आदिश को, सम्यक् दिखाने वाले को, (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), आदि - प्रारम्भ, दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

आदृत्या = समादर द्वारा, सम्यक् सत्कार द्वारा (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), दृ - आदर करना, सत्कार करना)।

आद्याम् = आदि में (सर्वनाम)।

आद्याम् = आद्या को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अद् - खाना, द्यु - अभिगमन करना, सम्मुख जाना, द्युत् - चमकना, प्रकाश होना, द्यै - तिरस्कार करना)।

आधत्त = धारण किया (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धा = धारण करना)।

आधवनीयः = सम्यक् गति, ज्ञान, शासन योग्य (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धव् = धारण करना)।

आधाय = धारण कर (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धा = धारण करना)।

आधिपत्य = आधिपत्य (अधि = अधिकार (उपसर्ग), पत् = ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, जाना, जाना, उड़ना, गिरना, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धि = धारण करना)।

आधिपत्यम् = आधिपत्य को (अधि = अधिकार (उपसर्ग), पत् = ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, जाना, जाना, उड़ना, गिरना, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धि = धारण करना)।

आधिपत्याय = आधिपत्य के लिए (अधि = अधिकार (उपसर्ग), पत् = ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, जाना, जाना, उड़ना, गिरना, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धि = धारण करना)।

आधिपत्ये = आधिपत्य में (अधि = अधिकार (उपसर्ग), पत् = ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, जाना, जाना, उड़ना, गिरना, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धि = धारण करना)।

आधीतम् = आधीत, सम्यक् धारण किये हुए को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

आधीताय = आधीत के लिए, पूर्णतः युक्त के लिए, पूर्णतः धारण के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

आधीतेन = आधीत द्वारा, सम्यक् धारण किये हुए द्वारा (आ = सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

आधृष्टा = आधृष्ट, अभिमानी (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना, स्वयम् को बड़ा समझना)।

आध्यक्षाय - आध्यक्ष्याय = आध्यक्ष के लिए, अध्यक्षों के स्वत्व के लिए (अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, अक्ष = खेलना, देखना, व्याप्त होना)।

आध्यम् = सम्यक् ध्यान करने योग्य (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धी - धारण करना, ध्यै - ध्यान करना, विचार करना, चिन्तन करना)।

आध्रः - आध्रः = तृप्त करने वाले, धारण करने वाले (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धृ - धारण करना, ध्रै - तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

आध्वम् = संचरण करने वाले, कम्पन करने वाले (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अधु - चलना,

संचरण करना, धु-धू - कम्पन करना)।

आध्वर्ययवम् - आध्वर्य-यवम् = तृप्त करने वाले, धारण करने वाले (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), ध्व - वक्र करना, वर्णन करना, हिंसा करना, यु - मिलाना, अलग करना)।

आनजे = सम्यक् लज्जा में, प्राप्त होते हैं (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नज् - लज्जा करना, नज्ज् - गति करना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, विस्मरण करना, नाश होना)।

आनज्ज = सम्यक् गति, ज्ञान, हिंसा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, नज्ज् - गति करना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, विस्मरण करना, नाश होना)।

आनट् = सम्यक् चेतन-प्राणवान्, आनर्तन (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना, नट् - नाट्य करना, नृत्य करना, गिरना, बहना, झरना, दिखाना, धीरे-धीरे सरकना)।

आनतिः = सम्यक् नमन, चेतन-प्राणवान्, (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना, नम् - नमना, नमन करना)।

आनन्द-नन्दौ = सम्यक् आनन्द की प्रसन्नता (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नन्द् - आनन्द पाना, प्रसन्न होना, समृद्ध होना, वृद्धि होना)।

आनन्दाय = आनन्द के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नन्द - आनन्द पाना, प्रसन्न होना, समृद्ध होना, वृद्धि होना)।

आनयत् = सम्यक् जाना, संरक्षण करना (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

आनवम् = सम्यक् चेतन-प्राणवान् को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना)।

आनवे = सम्यक् चेतन-प्राणवान् के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना)।

आनशानाः = सम्यक् चेतना को तीक्ष्ण करते हुए, सम्यक् जीवन-दान करते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्,

पूर्णतः, अन्- चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, शान - तीक्ष्ण करना, पैना करना, धार रखना, शण - दान करना, जाना, जानना, शब्द करना)।

आनशे = प्राणवान् होता है, नष्ट होता है (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन्- चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, नश - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

आनाः = सम्यक् चेतना, सम्यक् जीवन (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

आनिः = सम्यक् चेतना, सम्यक् जीवन (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)।

आनिर्हतेभ्यः = आनिर्हते के लिए, हिंसितों के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), निः - विना, बाहर, निश्चित। अन् - चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, हन् - मारना)।

आनीयमाने = आनीयमान में (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना)।

आनृचुः = स्तुति करते हैं (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

आनुषक् = निरन्तर (अव्यय)।

आनुषक् = सम्यक् प्रशंसक, सम्यक् चेतना, सम्यक् जीवन का सिञ्चक (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना, अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना, अनु - पीछे, सच् - सींचना, सेवा करना, अच्छी तरह जानना)।

आनुष्टभाभ्याम् = अनुस्थापन के लिए (अनु - पीछे, स्तम्-स्तम्भ - स्थापित करना, रोकना)।

आनुष्टुभम् = अनुष्टुप् को, अनुस्तुत को (अनु - पीछे, स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

आनुष्टुभेन = अनुष्टुप् द्वारा (अनु - पीछे, स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

आनेता = लाने वाला (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नी = ले जाना)।

आन्तः = सम्यक् चेतन-प्राणवान्, अन्त करने वाला (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना, अन्त - अन्त करना, हिंसा करना, बाँधना, पाना)।

आन्तरिक्षः = अन्तरिक्ष या आकाश सम्बन्धी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

आन्तरिक्षः - आन्तरिक्षम् = अन्तरिक्ष या आकाश सम्बन्धी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

आन्तरिक्ष्या = अन्तरिक्ष या आकाश सम्बन्धी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)।

आन्तासः = सम्यक् चेतन, प्राणवान्, अन्त करने वाले, आन्तगण (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अन् - चेतन होना, चेतन करना, प्राण होना, अन्त - अन्त करना, हिंसा करना, बाँधना, पाना)।

आन्त्याय = आन्त्य के लिए, सम्यक् चेतन, प्राणवान्, अन्त करने वाले के लिए (अन्त - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

आन्त्यायनाय = आन्त्य के अयन के लिए (अन्त - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना, अय् - जाना, चलना, जानना, पाना, ध्वनि करना)।

आन्त्राणि - आन्त्राणि = जीवन (अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

आन्त्रैः - आन्त्रैः = जीवन (अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

आन्दम् = बन्धन को, बन्धनकारी को (अदि-अन्द् - बाँधना, बन्धन करना)।

आप = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपः = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप -

पालन करना)।

आपत = सम्यक् ऐश्वर्य, व्याप्त, व्यापक हो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

आपतये = ऐश्वर्य, व्याप्त, व्यापक के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

आपनीफणत् = सम्यक् स्तुति को जाना, व्यापक को जाना (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना, पन - स्तुति करना, फण - जाना, जानना, पाना, चलना, तेजोहीन करना)।

आपपन = प्राप्त किया, पालन किया (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), पन - स्तुति करना)।

आपपरिवान् - आपप्रिवान् = व्याप्त, व्यापक का पालन, पूर्ण करने वाले (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना, पृ - पालन करना, पूर्ण करना)।

आपये = सम्यक् रक्षण के लिए, व्याप्त, व्यापक के लिए, पालन, पूर्ण करने वाले के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना, पय् - गति करना, रक्षा करना)।

आपस्य = आप, व्याप्त, व्यापक का (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपात्रम् = सम्यक् रक्षा को, आपात्र को, व्याप्त, व्यापक का पालन, पूर्ण करने वाले को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), पा - पालन करना, रक्षा करना)।

आपाम् = आप, व्याप्त, व्यापक का पालन, पूर्ण करने वाले को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

आपाम = प्राप्त करें (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना,

जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

आपि: = प्राप्त किया, पालन किया (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपित्वे = पालन, रक्षण करने के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), पि = जाना, जानना, पाना)।

आपिपेष् = चूर्ण किया (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), पिष् = चूर्ण करना, पीसना)।

आपिम् = पालक को, प्राप्त को (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपिरे = प्राप्त, व्याप्त हुए (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपीन् = प्राप्तों को, पालन करने वालों को (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपृच्छ्यम् = प्रश्न करने योग्य, पूछने योग्य (पृश् - पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

आपृण = पूर्ण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, पृ = पूर्ण करना, तृप्त करना)।

आपूतः = पवित्र (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

आपे = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपो = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आप्तम् = आप, व्याप्त, व्यापक को (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आप्नुवन् = पा सके (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)।

आप्नोति = व्याप्त, व्यापक होता है (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप -

पालन करना)।

आप्यः = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आप्यते = आप, व्याप्त, व्यापक होता है (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आप्यन्ते = आप, व्याप्त, व्यापक होते हैं (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आप्यम् = आप, व्याप्त, व्यापक को (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आप्यायताम् = बढ़ें, प्राप्त करें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, प्याय - बढ़ना, बड़ा होना, फूलना)।

आप्यायध्वम् = बढ़ें, प्राप्त करें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, प्याय - बढ़ना, बड़ा होना, फूलना)।

आप्यायमानः = बढ़ते हुए, प्राप्त करते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, प्याय - बढ़ना, बड़ा होना, फूलना)।

आप्रयातु - आप्रयातु = सम्यक् रूप से प्रयाण करें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, या - जाना)।

आप्रीः - आप्रीः = सम्यक् रूप से पूर्ण करें, प्रिय करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, प्रा - पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, भरना, प्री - प्रीति करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना)।

आप्रीतपाः - आप्रीतपाः = आप्रीत का पालन करने वाले, आप्री का तप करने वाले, सम्यक् प्रीत करने वाले, सम्यक् तप करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, प्री - प्रीति करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

आप्रीभिः - आप्रीभिः = प्रिय द्वारा, सम्यक् रूप से

प्रिय करने वाले द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, प्रा - पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, भरना, प्री - प्रीति करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना)।

आ-बबन्ध = सम्यक् रूप से बाँध लिया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, बध्-बन्ध - बाँधना)।

आ-बभूव = हो गया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भू - होना)।

आ-भजन्तीः = भजन, सेवा करते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भज् - सेवा करना)।

आभयिन् = भयभीत होने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भी - भय होना, डर होना, डराना)।

आ-भर = भरण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना)।

आ-भरन्त = भरण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना)।

आ-भासि = प्रकाशित करते हो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भास - चमकना, प्रकाशित होना)।

आभिः = इनसे, इनके द्वारा, इनके साथ (सर्वनाम)।

आभृतः = परिपूर्ण है (आ - समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना, पूर्ण करना)।

आभृतम् = परिपूर्ण है (आ - समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना, पूर्ण करना)।

आभुः = हो गया, हो गया (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), भू - होना)।

आभुवत् = हो गया, होता हुआ (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

आभ्यः - आभ्यः = उससे (सर्वनाम)।

आम् = हाँ (अव्यय)।

आम = वाणी, सेवा (अम् - शब्द करना, सेवा करना, जाना, खाना, भूँखा होना, रोगी होना)।

आममत् = वाणी दी, शब्द किया, सेवा की (मन् - विचार करना, मनन करना, जानना, समझना)।

आमयति = आता है, शब्द करता है, सेवा करता है,

भूँखा, रोगी होता है (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), मय् - गति करना, जाना। अम् - शब्द करना, सेवा करना, जाना, खाना, भूँखा होना, रोगी होना)।

आमस्य = आम का, सेवा का, वाणी का (अम् - शब्द करना, सेवा करना, जाना, खाना, भूँखा होना, रोगी होना)।

आमादम् = आमाद = आम को देने वाले, खाने वाले, वाणी-शब्द देने वाले (अम् - शब्द करना, सेवा करना, जाना, खाना, भूँखा होना, रोगी होना, अद् = खाना)।

आमिक्षा - आमिक्षा = आम-सेवी, आम का स्वाद लेने वाले (अम् - शब्द करना, सेवा करना, जाना, खाना, भूँखा होना, रोगी होना)।

आमिनन् = प्रक्षेपण करते हुए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना)।

आमिनाने = मान करते हुए, स्थापना करते हुए (आ - समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मा-मि - नापना, तौलना, समाना)।

आमुरीम् = घेरने वाले, लपेटने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः (उपसर्ग), मुर - घेरना, लपेटना)।

आमुष्य = प्रगतिशील, सेवाशील का, चुरा कर (अमुष्य = इस के (सर्वनाम), आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः (उपसर्ग), मुष् - चुराना, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना)।

आमो = वाणी, सेवा (अम् - शब्द करना, सेवा करना, जाना, खाना, भूँखा होना, रोगी होना)।

आयच्छद् = प्रदान करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, यच्छ् = देना)।

आयच्छद्भ्यो = प्रदान करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, यच्छ् = देना)।

आयच्छस्व - आयच्छस्व = प्रदान करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, यच्छ् = देना)।

आयतने = आयतन में (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। अय - गति करना, चलना, जाना। आय - शब्द करना, शासन करना। यत - यत्न

करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना। तन् - विस्तार करना)।

आयतम् = आयत को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। अय - गति करना, चलना, जाना। आय - शब्द करना, शासन करना, यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

आयतया = आयत के लिए (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। अय - गति करना, चलना, जाना। आय - शब्द करना, शासन करना, यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

आयती = आयती, शब्दकर्ता (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। अय - गति करना, चलना, जाना। आय - शब्द करना, शासन करना, यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

आयतीम् = प्राप्तकर्ता को, शासक को, शब्दकर्ता को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। अय - गति करना, चलना, जाना। आय - शब्द करना, शासन करना। यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

आयन् = प्राप्त किया, प्राप्त करने वाले, शासक करने वाले, शब्द करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय-ई - जाना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आयनाय = आयन के लिए, प्राप्तकर्ता के लिए, शब्दकर्ता के लिए, शासक के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, अय-ई - जाना)।

आयन्तम् = आते हुए, आने वाले को, शब्दकर्ता, उपदेशक को, शासक को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय-ई - जाना, आ-ई, अय = आना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आयन्ति - आयन्ति = आते हैं, प्राप्त करते हैं, शासन करते हैं, शब्द करते हैं (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय-ई - जाना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आयम् = यह (सर्वनाम)।

आयम् = आते हुए, आने वाले को, शब्दकर्ता, उपदेशक को, शासक को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, अय-ई - जाना)।

आयवः = आयु, उपसंहार, मिश्रित, पृथक्, प्राप्त, शासन, शब्द करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, यव - समाप्त करना, उपसंहार करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आयवे = आयु के लिए, उपसंहार करने, मिश्रित करने, पृथक् पृथक् करने, शासन करने के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, यव - समाप्त करना, उपसंहार करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आयातम् = आयात को, आते हुए, आने वाले को, शब्दकर्ता, उपदेशक को, शासक को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आ-या - आना, या - जाना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आयासाय = आयास के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, यस - यत्न करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

आयुः = आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)।

आयुक्षाताम् = युक्त किया, सम्बन्धित किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

आयुधम् = आयुध को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, धा - धारण करना)।

आयुधा = आयुध (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, धा - धारण करना)।

आयुधानि = आयुध (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, धा - धारण करना)।

करना)।

आरण्यम् = आरण्य को, सम्यक् गमनीय, वचनीय को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अ - नहीं, रण् - शब्द करना, चलना, युद्ध करना)।

आरण्याः = आरण्य, सम्यक् गमनीय, वचनीय (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अ - नहीं, रण् - शब्द करना, चलना, युद्ध करना)।

आरत् = सम्यक् वचन (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आरपन्ती = सम्यक् वचन, स्तुति (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रप् - स्पष्ट बोलना, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना, पन् - स्तुति करना)।

आरभामहे = आनन्द करते हैं, आरम्भ करते हैं (आ-रभ् - आरम्भ करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

आरभे = आनन्द करते हैं, आरम्भ करते हैं (आ-रभ् - आरम्भ करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

आरम्भणम् = आनन्द, आरम्भ (आ-रभ् - आरम्भ करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

आरभ्य = आरम्भ करके (आ-रभ् - आरम्भ करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

आरम् = सम्यक् गति, ज्ञान, प्राप्ति को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रम् - रमना। अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आराजन्यः = सम्यक् राजन्य, प्रकाशमान (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, राज् - चमकना, शोभित होना, प्रकाश होना, प्रकाश करना)।

आरात् = दूर से, समीप (अव्यय)।

आरात्तात् = दूर, समीप (अव्यय)।

आरुचे - **आरुचे** = सम्यक् रुचि के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुच् - रुचना, प्रकाश होना, प्रकाश करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, उत्साह करना)।

आरुजन्तुभिः = आरोग्यकारी द्वारा, कठिनाइयों द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुज् - रोग होना, कष्ट होना, हिंसा करना)।

आरुजः = आरोग्यकारी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुज - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना, आ-रुज - आरोग्य होना)।

आरुजन्तः = आरोग्यकारी, रोगहीन करते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुज - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना, आ-रुज - आरोग्य होना)।

आरुजे - **आरुजे** = आरोग्यकारी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुज - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना, आ-रुज - आरोग्य होना)।

आरुहः = बढ़ने वाले, चढ़ने वाले, बढ़ें, चढ़ें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, बड़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

आरे = दूर (अव्यय)।

आरे = गति, ज्ञान (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रि = जाना, जानना, पाना, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आरैक् = आरेचक (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रिच - एकत्र करना, जोड़ना, बांधना, अलग-अलग करना, फैलाना, रेचन करना)।

आरोह = ऊपर चढ़ो, चढ़ना, बढ़ना (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुह् = ऊपर चढ़ना, बढ़ना)।

आर्क्षे = ऋक्ष, हिंसक, प्रकाशकर्ता के लिए (ऋक्ष - काटना, हिंसा करना, प्रकाश करना)।

आर्जीकेषु = आर्जीकों में, स्थानों में, सामर्थ्यवानों में, उपार्जन करने वालों में (ऋज् - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, अर्जितकमाना)।

आर्तवेभ्यः - **आर्तवेभ्यः** = सम्यक् वचन, वाणी, गति,

ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आर्षेय - आर्षेय = ऋषि सम्बन्धी, ऋषिकृत (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

आर्षेयम् = ऋषिकृत को (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

आलभते = सम्यक् प्राप्त करते हैं (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, लभ् - प्राप्त होना, पाना, मिलना)।

आवः = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आवच्यतः = सम्यक् बोलने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वच - बोलना)।

आवतम् = रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आवथुः = रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आवद = कहें, रक्षण देने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वद् = बोलना, कहना, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, दा - देना, दान करना)।

आवदतम् = कहनें, रक्षण देने वाले को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, दा - देना, दान करना, वद् = बोलना, कहना)।

आवदानि = सम्यक् वाणी, रक्षण दाता (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, दा - देना, दान करना, वच् = बोलना, कहना)।

आवदामसि = बोलते हैं (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वद् - बोलना, कहना)।

आवन् = रक्षा की (अ - भूतकालिक उपसर्ग, अच् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आवपनम = सम्यक् वपन, रक्षण-स्तुति को (आ -

आरत्यै – आर्त्यै = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आर्द्र - आर्द्र = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति के लिए (अर्द्र - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, मांगना, याचना करना, हिंसा करना)।

आर्यस्य = आर्य का, सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति का (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आर्या = आर्य, सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति करने वाला (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आर्यो = आर्य, सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति करने वाला (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः; अर - ऋ - गति,

सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वप् = बोना, बुनना, उत्पन्न करना)।

आवयाः = सम्यक् वाणी, रक्षण दाता (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वप् - जाना, उड़ना, वी - जाना, व्याप्त होना, इच्छा करना)।

आवराण्या = समन्तात् वरण करने योग्य (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

आवर्ते = वर्तमान हो, व्यवहार करो, वरण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वृत् = होना, रहना, व्यवहार करना, वर्तना, वर्तमान होना, सेवा करना, वरण करना, आवरण करना, हिंसा करना, चमकना, बोलना)।

आवर्त्य = वर्तमान हो, व्यवहार करो, वरण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वृत् = होना, रहना, व्यवहार करना, वर्तना, वर्तमान होना, सेवा करना, वरण करना, आवरण करना, हिंसा करना, चमकना, बोलना)।

आवर्त्य - आवर्त्य = वर्तमान, व्यवहार्य, वरणीय (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वृत् = होना, रहना, व्यवहार करना, वर्तना, वर्तमान होना, सेवा करना, वरण करना, आवरण करना, हिंसा करना, चमकना, बोलना)।

आवृत्त्यात् = वर्तमान हो, व्यवहार करो, वरण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वृत् = होना, रहना, व्यवहार करना, वर्तना, वर्तमान होना, सेवा करना, वरण करना, आवरण करना, हिंसा करना, चमकना, बोलना)।

आवह = वहन करो, ले जाओ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वह = ले जाना, वहन करना)।

आवहात् = वहन किया, ले गये (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वह = ले जाना, वहन करना)।

आवाणः = रक्षक (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आविः = सम्मुख, प्रत्यक्ष, अनावृत्त (उपसर्ग)।

आविः = रक्षक (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आविः-अकृणोत् = आविष्कार किया (आविः = सम्मुख, प्रत्यक्ष, अनावृत्त (उपसर्ग)। कृ - करना, आविः-कृ - आविष्कार करना)।

आविक्षुः - आविक्षुः = जान लिया, पा लिया, प्राप्त किया, शब्द किया (आविः - उपसर्ग, क्षु - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना)।

आवित्तः - आवित्तः = दान किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वित् = देना, दान करना)।

आवित्ता - आवित्ता = दानी, दान किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वित् = देना, दान करना)।

आवित्ते - आवित्ते = दान किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वित् = देना, दान करना)।

आवित्तौ - आवित्तौ = दान किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वित् = देना, दान करना)।

आविथ = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो (अक् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आविवासतः = वास करते हैं (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, वस् - बसना, रहना, निवास करना)।

आविवासति = वास करता है (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, वस् - बसना, रहना, निवास करना)।

आविवासन् = सम्यक् वसते हुए (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, वस् = रहना, निवास करना)।

आविवेश = प्रवेश किया (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आविश = प्रवेश करो (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आविशत् = प्रवेश करता है, फैल जाता है (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आविशत = प्रवेश करो, फैल जाओ (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आविशन् = प्रवेश करते हुए, प्रवेश करने वाले (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आविशन्ती = प्रवेश करते हुए, प्रवेश करने वाले (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आविषुः = व्याप्त, व्यापक, पृथक् (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, विष - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, व्याप्त होना)।

आविष्कृणोति = आविष्कार करता है, अनावृत्त करता है (आविः = सम्मुख, प्रत्यक्ष, अनावृत्त (उपसर्ग), कृ = करना)।

आविष्कृण्वन् = आविष्कार करने वाला, अनावृत्त करते हुए (आविः = सम्मुख, प्रत्यक्ष, अनावृत्त (उपसर्ग), कृ = करना)।

आविसतः = विशेष रूप से रहते हैं (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, सत् - होना, सत्य होना)।

आवीत् = सम्यक् रक्षण किया, व्याप्त हुआ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी - जाना, व्याप्त होना, इच्छा करना)।

आवृणानः = वरण करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृ - वरण करना)।

आवृणीमहे = वरण करते हैं, स्वीकार करते हैं (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)।

अवृणोत् = वरण किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृ - वरण करना)।

आवृत = आवृत (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृत् = रहना, होना, वर्ताव करना, वरण करना, चमकना, बोलना)।

आवृतः = आवृत (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृ - वरण करना, वृत् = रहना, होना, वर्ताव करना, वरण करना, चमकना, बोलना)।

आवृतम् - आवृतम् = प्रकाश आदि को, आवृत को

(आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृ - वरण करना, वृत् = रहना, होना, वर्ताव करना, वरण करना, चमकना, बोलना)।

आवृषायध्वम् = पराक्रम करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृष् = पराक्रम करना, वर्षा करना)।

आवृषायिषत = पराक्रम किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृष् = पराक्रमी होना, पराक्रम करना, विशिष्ट होना)।

आवेशा = आवेश, प्रवेशी (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, विश् = प्रवेश करना, फैलना)।

आव्याधिनीः = व्याधिकारी (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, व्यध् - दुःख देना, ताडना करना, पीटना, पीड़ा करना, छेदना)।

आव्याधिनीनाम् = व्याधिकारियों का (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, व्यध् - दुःख देना, ताडना करना, पीटना, पीड़ा करना, छेदना)।

आव्याधिनीभ्यः = व्याधिकारियों के लिए (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, व्यध् - दुःख देना, ताडना करना, पीटना, पीड़ा करना, छेदना)।

आश = आश, व्यापक (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

आशत = व्याप्त हो, अशन करो, भोजन करो (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

आशवः = आशुकारी, तीव्रगामी (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अश् = तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, शब् - जाना, जानना, पाना, विकार होना)।

आशवो = आशुकारी, तीव्रगामी (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अश् = तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना,

पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना,
शव - जाना, जानना, पाना, विकार होना)।

आशास्ते = आशा, इच्छा करता है (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)।

स्वामी शरण

आसदत् = बैठता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना, आसद् = आना)।

आ-सदन्तु = आगमन हो, आयें (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना, आसद् = आना)।

आसदम् = सम्यक् बैठने को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना, आसद् = आना)।

आसदे = बैठे, प्राप्त हो (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसद्य - आसद्य = आसीन होकर, आकर (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना, सद् = जाना, आसद् = आना)।

आसन् = बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन = बैठने का साधन, स्थान (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसनि = बैठने के साधन में, आसन में, स्थान में (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन्दी = बैठने का साधन, स्थान (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन्दीत्या = बैठने का साधन, स्थान (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन्द्याम् - आसन्द्याम् = आसन्दी पर, बैठने का साधन, स्थान पर (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन्नः - आसन्नः = बैठे हुए (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन्ना - आसन्ना = बैठे हुए (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसन्नम् - आसन्नम् = बैठे हुए (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसभिः = बैठने का साधनों, स्थानों द्वारा, विद्यमानों द्वारा (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसवम् = आसव को, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

आसवमित्या = आसव को, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

आसात् = समीप, दूर (अव्यय)।

आसात् = आओ, बैठो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सद् = जाना, आ-सद् - आना, साद् = स्थापित करना)।

आसादः = सम्यक् स्थापित हुआ (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, साद् = स्थापित करना)।

आ-सादय = स्थापित करो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, साद् = स्थापित करना)।

आसाम् = इनका (सर्वनाम)।

आसाम् = आसीन हुए, बैठे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

स्वामी शरण

आशोषण के लिए (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, स्कन्द = चलना, जाना, जानना, पाना, सूखना, सुखाना)।

आस्त = बैठे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आस्तरणम् = आस्तरण, आसन (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, स्तृ - आच्छादन करना, पूर्ण करना)।

आस्ताम् = बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आस्तृता = आस्तृत, आच्छादन (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, स्तृ = आच्छादन करना, पूर्ण करना)।

आस्ते = बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आस्थात् = प्रतिष्ठित रहे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अस् = होना, स्था = ठहरना)।

आस्थाता = प्रतिष्ठित (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अस् = होना, स्था = ठहरना)।

आस्थानात् = आस्थान से (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अस् = होना, स्था = ठहरना)।

आस्थितम् - आस्थितम् = सम्यक् स्थित, प्रतिष्ठित (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अस् = होना, स्था = ठहरना)।

आस्माकः = हमारा (सर्वनाम्)।

आस्माको = हमारा (सर्वनाम्)।

आस्मिन् = इसमें (सर्वनाम्)।

आस्ये = आस्य में (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आस्येन = आस्य द्वारा (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आह = व्याप्त किया, कहा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हवे = शब्द

करना)।

आहनन्याय = आहनन्य के लिए (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, हन् - मारना)।

आहलक् = कृषक (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, हल् - खीचना, भूमि जोतना)।

आहंसि = प्रसन्न करते हो, नष्ट करते हो (हन् - मारना, हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

आहारम् = आहार को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ह = हरण करना, ले जाना)।

आहावम् = आदान को, आह्वान को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

आहितः = व्याप्त, प्रगतिशील, वृद्धिशील (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि करना)।

आहित्यः = व्याप्त, प्रगतिशील, वृद्धिशील (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि करना)।

आहुः = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आहुतः = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुतम् = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुतयः = आहुतियाँ, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना,

विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुताः = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुतिभिः = आहुतियों द्वारा, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता द्वारा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुती = आहुति, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुतीः = आहुति, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुतेत्या = आहुतियों द्वारा, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता द्वारा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

आहुवध्या = आहु द्वारा वध्य, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता द्वारा वध्य (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना, वध्-हन् - मारना, हिंसा करना)।

आह्वामहे = दान, आदान-प्रदान, आह्वान करते हैं, व्याप्त करते हैं (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, हवे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)।

इ

इक्षवः - इक्षवः = स्वादिष्ट (इक्ष = स्वाद लेना)।

इच्छ = इच्छा करें (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)।

इच्छतु - इच्छतु = इच्छा करें (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)।

इच्छन् = इच्छा करते हुए (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)।

इच्छन्ति - इच्छन्ति = चाहते हैं (इच्छ - इच्छा करना, चाहना)।

इच्छमानः = इच्छा करने वाला (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)।

इच्छमानाः = इच्छा करने वाला (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)।

इड = धारण, घर्षण, छेदन, स्तुति (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडः = धारण, घर्षण, छेदन, स्तुति करते हैं (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडया = धारण, घर्षण, छेदन, स्तुति द्वारा (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडा = धारण, घर्षण, छेदन, स्तुति योग्य, स्तुत, स्तुति योग्य (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडानाम् = स्तुतियों का (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडाभिः - इडाभिः = धारणकर्ताओं, इडाओं, धारण, घर्षण, छेदन, स्तुतिकर्ता द्वारा (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडाम् = इडा को, स्तुत, स्तुति योग्य को (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडायाः - इडायाः = इडा का, स्तुतियोग्य का, स्तुतिकर्ता का (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इडे = इडा, स्तुत, स्तुति योग्य (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)।

इत् = ही (अव्यय)।

इत = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इतः = यहां से।

इतन = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इतम् = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इतर = अन्य (सर्वनाम, अव्यय)।

इतरजनानाम् = अन्य जनों का (सर्वनाम, अव्यय)।
जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

इतराः = अन्य (सर्वनाम, अव्यय)।

इतरो = अन्य (सर्वनाम, अव्यय)।

इताः = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इति = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।

इते = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इतो = यहां से (सर्वनाम)।

इतो = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इतो = गये हुये, जाने वाले (इ - जाना)।

इत्था = इस प्रकार (अव्यय)।

इत्थाधिये = ऐसी धारणा शक्ति, बुद्धि में (इत्था - इत्था, इस प्रकार (अव्यय), धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

इत्या = प्राप्य, गति, ज्ञान (इ - जाना, जानना, पाना)।

इत्याम् = प्राप्य, गति, ज्ञान को (इ - जाना, जानना,

पाना)।

इत्थै = प्राप्ति के लिए, गति, ज्ञान, प्रकाश के लिए (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इत्वरीः = प्राप्त, गति, ज्ञान, प्रकाश (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इत्वा = प्राप्त होकर, गति, ज्ञान, प्रकाश को प्राप्त कर (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इथः = प्राप्ति से, गति, ज्ञान, प्रकाश से (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)।

इदा = आज, अब (सर्वनाम, अव्यय)।

इदानीम् = अब, इस समय (सर्वनाम)।

इदावत्सरः = प्राप्त वत्सर (इदा - आज, अब, इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, वद् - कहना, समझाना, सृ - सरकना, चलना, जाना, जानना, पाना)।

इदावत्सराय = इदावत्सर के लिए, प्राप्त वत्सर के लिए (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, वद् - कहना, समझाना, सृ - सरकना, चलना, जाना, जानना, पाना)।

इद्धः - इद्धः = प्राप्त, गति, ज्ञान, प्रकाश को धारण करने वाला (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इद्धाय - इद्धाय = प्राप्त, गति, ज्ञान, प्रकाश को धारण करने वाले के लिए = गति, ज्ञान, प्रकाश (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इद्भिः - इद्भिः = प्राप्ति, गति, ज्ञान, प्रकाश द्वारा (इ - जाना, जानना, पाना)।

इद्धे = गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त करते हैं (इ - जाना, जानना, पाना)।

इद्वत्सराय - इद्वत्सराय = इदावत्सर के लिए, प्राप्त वत्सर के लिए (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, वद् - कहना, समझाना, सृ - सरकना, चलना, जाना, जानना, पाना)।

इधा = गति, ज्ञान, प्रकाश (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इधानः = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हुए, गति, ज्ञान, प्रकाश करने वाले (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इधानाः = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हुए, गति, ज्ञान, प्रकाश करने वाले (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इधीमहि = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हैं (इन्ध - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, चमकना)।

इधो = गति, ज्ञान, प्रकाश (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्म = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हैं (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्मः = प्रकाशक, गति, ज्ञान, प्रकाश (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्मम् = गति, ज्ञान, प्रकाश को (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्यते = गति, ज्ञान, प्रकाश करता है (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्यसे = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हो (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्यायै = गति, ज्ञान, प्रकाश के लिए (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इनो = प्रगतिशील, प्रकाशवान् (इ - जाना, जानना, पाना, इन् - प्रकाश करना)।

इनक्षत् - इनक्षत् = गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इन् - प्रकाश करना, इध्-

इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, नक्ष् - जाना, जानना, पाना, समीप जाना, आना)।

इनक्षन् - इनक्षन् = गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इन् - प्रकाश करना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, नक्ष् - जाना, जानना, पाना, समीप जाना, आना, क्षण् - शब्द करना)।

इनीमसि = गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त करते हो (इ - जाना, जानना, पाना, इन् - प्रकाश करना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्दरः = परम ऐश्वर्य दाता (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दवः = इन्दुगण, परम ऐश्वर्यवान् जन (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दवायू = इन्द तथा वायु, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रवाहमान (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना, वा - गति करना, बहना, वे - बुनना, रचना करना)।

इन्दवे = इन्दु के लिए, परम ऐश्वर्यवान् के लिए (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दुः = इन्दु, परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दुभिः = इन्दुओं द्वारा, परम ऐश्वर्यवानों द्वारा (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दुम् = इन्दु को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दो = इन्दु, परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दोः = इन्दु का, परम ऐश्वर्यवान् का (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्र - इन्द्र = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रः = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रघोषः - इन्द्रघोषः = इन्द्रघोष, इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान का घोष (इन्द् = परम ऐश्वर्यवान् होना, घुष् - घोषित करना, शब्द करना)

इन्द्रतमे - इन्द्रतमे = इन्द्रतम, अत्यन्त परम ऐश्वर्यशाली, (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रपत्नीः = परम ऐश्वर्यशाली का ऐश्वर्य, पराक्रम (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

इन्द्रपीतम् = इन्द्रपीत को, परम ऐश्वर्य का पान करने वाले को (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, पी- पीना, पाशन करना)।

इन्द्रपीतस्य - इन्द्रपीतस्य = इन्द्रपीत का, परम ऐश्वर्य का पान करने वाले का (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, पी- पीना, पाशन करना)।

इन्द्रम् - इन्द्रम् = इन्द्र को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रवत् - इन्द्रवत् = इन्द्र के समान, परम ऐश्वर्यवान् के समान (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रवत्या - इन्द्रवत्या = परम ऐश्वर्यशाली द्वारा (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रवायुभ्याम् - इन्द्रवायुभ्याम् = इन्द्र तथा वायु के लिए, इन्द्र तथा वायु, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रवाहमान के लिए (इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, वा - गति करना, बहना, वे - बुनना, रचना करना)।

इन्द्रवायू - इन्द्रवायू = इन्द्र तथा वायु, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रवाहमान (इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, वा - गति करना, बहना, वे - बुनना, रचना करना)।

इन्द्रवाहा = इन्द्रवाही, इन्द्र को वहन करने वाला, परम ऐश्वर्यवान् को वहन करने वाला (इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

इन्द्रस्य - इन्द्रस्य = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रहवान् = परम ऐश्वर्यवान् दानी, इन्द्र का आह्वान करने वालों को (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

इन्द्राग्नयोः = इन्द्र तथा अग्नि का, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रगतिशील, अग्रणी का (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना,

अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)।

इन्द्राग्निभ्याम् - इन्द्राग्निभ्याम् = इन्द्र तथा अग्नि द्वारा, इन्द्र तथा अग्नि के लिए, इन्द्र तथा अग्नि से (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)।

इन्द्राग्नी - इन्द्राग्नी = इन्द्र तथा अग्नि, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रगतिशील, अग्रणी (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)।

इन्द्राग्न्यौः - इन्द्राग्न्यौः = इन्द्र तथा अग्नि का, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रगतिशील, अग्रणी का (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)।

इन्द्राण्या - इन्द्राण्या = इन्द्राणी द्वारा, परम ऐश्वर्यशाली द्वारा (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्राण्यै = इन्द्राणी के लिए, परम ऐश्वर्यशाली के लिए (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रात् = इन्द्र से, परम ऐश्वर्यवान् से (इदि-इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रापर्वता - इन्द्रापर्वता = इन्द्र और पर्वत, परम ऐश्वर्य को पूर्ण करने वाले (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, पर्व - पूर्ण करना, भरना)।

इन्द्रापूषणा - इन्द्रापूषणा = इन्द्र तथा पूषण, परम ऐश्वर्यशाली तथा पोषणकर्ता (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, पूष- पोषण करना)।

इन्द्रापूषोः - इन्द्रापूषोः = इन्द्र तथा पूषण का, परम ऐश्वर्यशाली तथा पोषणकर्ता का (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, पूष- पोषण करना)।

इन्द्राबृहस्पती = इन्द्र तथा बृहस्पती, परम ऐश्वर्यवान् तथा महान् ऐश्वर्यवान् (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, उड़ना, गिरना)।

इन्द्राबृहस्पतिभ्याम् - इन्द्राबृहस्पतिभ्याम् = इन्द्र

और बृहस्पति के लिए (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

इन्द्राय - इन्द्राय = इन्द्र के लिए, परम ऐश्वर्य के लिए (इदि-इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रावरुणा = इन्द्र और वरुण, परम ऐश्वर्यवान् तथा वरेण्य (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, वृ - वरण करना)।

इन्द्रावरुणाभ्याम्-इन्द्रावरुणाभ्याम् = इन्द्र और वरुण के लिए, परम ऐश्वर्यवान् तथा वरेण्य के लिए (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, वृ - वरण करना)।

इन्द्रावायू - इन्द्रावायू = इन्द्र तथा वायु, परम ऐश्वर्यवान् तथा प्रवाहमान (इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, वा - गति करना, बहना, वे - बुनना, रचना करना)।

इन्द्राविष्णुभ्याम् = इन्द्र तथा विष्णु के लिए, परम ऐश्वर्यवान् तथा व्यापक के लिए (इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, विष् - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, व्याप्त होना)।

इन्द्रासोमा - इन्द्रासोमा = इन्द्र और सोम, परम ऐश्वर्यवान् तथा सृजनकर्ता, प्रेरक (इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

इन्द्रियम् - इन्द्रियम् = इन्द्रिय को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियाणि - इन्द्रियाणि = इन्द्रिय समूह, परम ऐश्वर्यवान् समूह (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियाय - इन्द्रियाय = इन्द्रिय के लिए, परम ऐश्वर्यवान् के लिए (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियावत् = इन्द्रिय के समान, परम ऐश्वर्यवान् के समान (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियावतः - इन्द्रियावतः = इन्द्रिय के समान का, परम ऐश्वर्यवान् के समान का (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियावान् - इन्द्रियावान् = इन्द्रिययुक्त, परम ऐश्वर्य

युक्त (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रिये - इन्द्रिये = इन्द्रिय में, परम ऐश्वर्य में (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियेण - इन्द्रियेण = इन्द्रिय द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियेभ्यः - इन्द्रियेभ्यः = इन्द्रियों के लिए, इन्द्रियों से, परम ऐश्वर्यवान् के लिए, परम ऐश्वर्यवान् से (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रियैः = इन्द्रियों द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रे - इन्द्रे = इन्द्र में, परम ऐश्वर्य में (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रेण - इन्द्रेण = इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रो - इन्द्रो = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रौ - इन्द्रौ = इन्द्र में, परम ऐश्वर्यवान् में (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्धताम् = प्रकाशित हो, प्रकाशित करें (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्धते = प्रकाशित होते हैं, प्रकाशित करते हैं (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्धानः = प्रकाशित होने वाले, प्रकाशित करने वाले (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्धानाः = प्रकाशित करने वाले (इन्ध् = प्रकाश होना)।

इन्धीत = प्रकाशित होते हैं, प्रकाशित करते हैं (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्धे = प्रकाशित होते हैं, प्रकाशित करते हैं, प्रकाशित हो, प्रकाशित करें (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्धो = प्रकाशित, प्रकाशक (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्वति = व्याप्त होता है, तृप्त करता है, प्रसन्न करता है (इन्व् - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न

करना)।

इन्वतु = व्याप्त हो, तृप्त करे, प्रसन्न करें (इन्व - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

इन्वतुः = व्याप्त होने, तृप्त करने, प्रसन्न करने वाले का (इन्व - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

इन्वन् = व्याप्त, तृप्त, प्रसन्न करते हुए (इन्व - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

इन्वसि = व्याप्त करते हो, तृप्त करते हो, प्रसन्न करते हो (इन्व - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

इन्वाः = व्याप्त होने, तृप्त करने, प्रसन्न करने वाले (इन्व - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

इभेन = इभ द्वारा, प्रगति द्वारा (इ - जाना, जानना, पाना)।

इमेन = इससे, इसके द्वारा (सर्वनाम)।

इम = यह (सर्वनाम)।

इमः = यह (सर्वनाम)।

इमथा = इससे, इस प्रकार (सर्वनाम)।

इमम् = इसको (सर्वनाम)।

इमसि = इसमें (सर्वनाम)।

इमा = यह, इसको (सर्वनाम)।

इमाः = ये (सर्वनाम)।

इमानि = ये (सर्वनाम)।

इमाम् = इसको, इस (सर्वनाम)।

इमे = यह, इस, ये (सर्वनाम)।

इमौ = ये दो (सर्वनाम)।

इयक्षते - इयक्षते = पूजते हैं (इयक्ष-यक्ष - पूजा करना, श्रेष्ठ होना)।

इयक्षमाणाः - इयक्षमाणाः = पूजते हुए, पूजने वाले (इयक्ष - पूजा करना, श्रेष्ठ होना)।

इयक्षसि - इयक्षसि = पूजते हो (इयक्ष-यक्ष - पूजा करना, पूज्य होना, श्रेष्ठ होना)।

इयत् = पायें (इ = जाना, जानना, पाना)।

इयति = जाता है, जानता है, पाता है (इ = जाना, जानना पाना)।

इयम् = यह, इसको (सर्वनाम)।

इयमा = यह, इसको (सर्वनाम)।

इयर्ति - इयर्ति = जाता है, जानता है, प्राप्त करता है (ऋ = जाना, जानना पाना, इ = जाना, जानना पाना)।

इयर्त्ति = जाता है, जानता है, प्राप्त करता है (ऋ = जाना, जानना पाना, इ = जाना, जानना पाना)।

इयर्षि = जाते हो, जानते हो, प्राप्त करते हो (इ = जाना, जानना पाना)।

इयात् = जाता है (इ = जाना, जानना पाना)।

इयाते = जाता है (इ = जाना, जानना पाना)।

इयानाः = जाते हुए, जाने वाले (इ = जाना, जानना पाना)।

इरज्यन् = ईर्ष्या करते हुए (इरज् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना)।

इरत = ईर्ष्या की (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना)।

इरम् = ईर्ष्या की (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना)।

इरम्मदम् = ईर्ष्यालु आनन्द को (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना, मद - हर्षित होना, तृप्त करना, समाधान करना)।

इरायै = इरा के लिए, ईर्ष्यालु के लिए (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना)।

इरावती - इरावती = इरावती, ईर्ष्यायुक्त (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना)।

इरिण्याय = शब्दयोग्य के लिए (इरण् - शब्द करना)।

इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)।

इष = इच्छा, प्रगति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

इषः = इच्छा, प्रगति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

इषुमद्भ्यो = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चूना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर

इष्टकानाम् = विद्या, ज्ञान, इच्छा वालों का (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

स्वामी शरण

ईडते = स्तुति करते हैं (ईड् = स्तुति करना)।

ईडानः = स्तुति करता हुआ (ईड् = स्तुति करना)।

ईडितः = स्तुत, स्तुति किया हुआ, जिसकी स्तुति की गयी है (ईड् = स्तुति करना)।

ईडितम् = स्तुत, स्तुति किया हुए को, जिसकी स्तुति की गयी है, उसको (ईड् = स्तुति करना)।

ईडिष्व = स्तुति करो (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ईडे = स्तुति करता हूँ (ईड् = स्तुति करना)।

ईडेन्यः = स्तुत्य (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ईडेन्यम् = स्तुत्य को (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ईड्यः = स्तुत्य (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ईड्यम् = स्तुत्य को (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ईदिनम् = यह, इसको (वैदिक सर्वनाम)।

ईदृक्षासः - ईदृक्षासः = समदर्शी (ई - समान, वैदिक उपसर्ग, दृक्ष्-दृश् -देखना)।

ईदृङ् = समदर्शी (ई - समान, इस प्रकार, वैदिक उपसर्ग, दृक्ष्-दृश् -देखना)।

ईदृशे = इस प्रकार (अव्यय)।

ईदृशे = समदर्शी (ई - समान, इस प्रकार, वैदिक उपसर्ग, दृक्ष्-दृश् -देखना)।

ईधिरे = समान रूप से धारण करते हैं (ई = इस प्रकार, समान, वैदिक उपसर्ग, धि - धारण करना)।

ईधे = समान रूप से धारण करते हैं (ई = इस प्रकार, समान, वैदिक उपसर्ग, धि - धारण करना)।

ईम् = समान, इस प्रकार (अव्यय)।

ईमहे = जाते हैं, जानते हैं (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

ईयतुः = व्याप्त हो, प्राप्त हो, गमन करें (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

ईयते = व्याप्त होता है, गतिमान होता है (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

ईयसे = जाते हो (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

ईयानः = प्राप्त करता हुआ, जानता हुआ (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

ईयुः = प्राप्त करते हैं (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

ईरताम् = प्रेरित करो, कम्पित करो (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

ईरते = प्रेरित करता है, कम्पित करता है (ईर् = प्रेरणा करना, कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना)।

ईरय = प्रेरित करो, कम्पित करो (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

ईरयति = प्रेरणा करता है, कम्पित करता है (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

ईरयन् = प्रेरणा करता हुआ, कम्पित करता हुआ (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

ईरसे = प्रेरणा करते हो, कम्पित करते हो, प्राप्त करते हो (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

ईर्मन्तासः = प्रेरित, कम्पित, प्राप्त करने वाले (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

ईर्यताया = प्रेरणा के लिए, कम्पन के लिए (ईर् - जाना, कम्पन करना, प्रेरणा देना, फेंकना)।

ईर्यतायै = प्रेरणा के लिए, कम्पन के लिए (ईर् - जाना, कम्पन करना, प्रेरणा देना, फेंकना)।

ईवतो = व्याप्त, फैलना, प्राप्त हो, गमन करें (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, फैलना)।

ईशत = ऐश्वर्य हो, अधिकार हो, शासन करे (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशते = ऐश्वर्य, अधिकार, शासन करता है (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशा = ईश्वर द्वारा (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशानः = अधिकार करने वाला, शासन करने वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशानकृत् = ईश-कृत, शासन-कृत (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना, कृ = करना)।

ईशानम् = अधिकार करने वाले को, शासन करने वाले को (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशाना = अधिकार करने वाला, ऐश्वर्य वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशानाय = अधिकार करने वाले के लिए, शासन करने वाले के लिए (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशानो = अधिकार करने वाला, शासन करने वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशायै = अधिकार करने वाले के लिए, शासन करने वाले के लिए (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशिषे = ऐश्वर्य, अधिकार हो, शासन करे (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशीय = ऐश्वर्य, अधिकार, शासन करे (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशे = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है (ईश - अधिकार होना)।

ईश्वरः = ईश्वर, शासक, अधिकारी (ईश - अधिकार होना, शासक होना)।

ईषमाणाः = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि वाला (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

ईषुधिः = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को धारण करने वाला (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

ऋ

ऋक् = ऋचा, ऋक् वेद (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋक्वभिः = ऋचाओं द्वारा (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋक्षः - ऋक्ष = ऋक्ष, हिंसक, प्रकाशकर्ता (ऋक्ष - काटना, हिंसा करना, प्रकाश करना)।

ऋक्षलाभिः - ऋक्षलाभिः = ऋक्ष का लाभ पाने वाला

(ऋक्ष - काटना, हिंसा करना, प्रकाश करना)।

ऋक्षीकाभ्यः - ऋक्षीकाभ्यः = ऋक्षीक, हिंसक, प्रकाशकर्ता के लिए (ऋक्ष - काटना, हिंसा करना, प्रकाश करना)।

ऋक्षीकाभ्यो = ऋक्षीक, हिंसक, प्रकाशकर्ता के लिए (ऋक्ष - काटना, हिंसा करना, प्रकाश करना)।

ऋक्समम् = ऋक् के समान (ऋक्-ऋच - स्तुति करना, सम - एक समान रहना)।

ऋक्समात् = ऋक् के समान (ऋच - स्तुति करना, सम - एक समान रहना)।

ऋक्सामान्य = ऋक् तथा साम (ऋच - स्तुति करना, साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

ऋक्सामाभ्याम् - ऋक्-सामाभ्याम् = ऋक् तथा साम द्वारा, ऋक् तथा साम के लिए (ऋच - स्तुति करना, साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

ऋक्-सामयोः = ऋक् और साम का (ऋच - स्तुति करना, साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

ऋग्भिः - ऋग्भिः = ऋचाओं द्वारा (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋग्मियम् = ऋचा, प्रशंसा, स्तुति युक्त को (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋग्मियाय - ऋग्मियाय = ऋचा युक्त के लिए (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋचः = ऋचार्ये, ऋग्वेद के मन्त्र (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ऋचम् = ऋचा को (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋचा = ऋचार्ये (ऋच् - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ऋचीषम् = स्तुति करें, हे प्रकाशमान, प्रशंसनीय, स्तुत्य (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना)।

ऋचे = ऋचाओं के लिए, ऋग्वेद के मन्त्रों के लिए

(ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ऋचेम = स्तुति करें (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ऋचैः = ऋचाओं द्वारा, ऋग्वेद के मन्त्रों द्वारा (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ऋच्छु = जायें, पायें, पहुँचायें, मिलायें (ऋच्छ - जाना, जानना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋच्यते = स्तुति करते हैं, प्रशंसा करते हैं (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ऋजवे = ऋजु के लिए (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋजिश्वना = बलिष्ठों द्वारा (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

ऋजीते = ऋजता है, जाता है, स्थिर होता है, बलिष्ठ होता है (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीवित रहना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋजीषिणम् = ऋजीषियों को, स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवानों को (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋजीषी = ऋजीषी, स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवान् (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋजीषेण = ऋजीषेण के लिए, स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवान् के लिए (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋजुगः = ऋजुगामी (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, गम्-गच्छ = जाना)।

ऋजूयताम् = स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवान् हो (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋजः = स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवान् (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋज्जते = स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवान् के लिए (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋज्जसे = स्थिर, बलिष्ठ, सामर्थ्यवान् होते हो (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

ऋणया = ऋण से, गति से (ऋणु - चलना, जाना, गमन करना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

ऋणोः = जाता हुआ, गति का, ले जायें (ऋणु - चलना, जाना, गमन करना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

ऋणोति = जाता है (ऋणु - चलना, जाना, गमन करना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

ऋण्वति = जाता है (ऋणु - चलना, जाना, गमन करना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

ऋण्वन्ति = जाते हैं (ऋणु - चलना, जाना, गमन करना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

ऋत = ऋत, सञ्चालन नियम (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतः = ऋत, सञ्चालन नियम (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतजाः = ऋत से उत्पन्न (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

ऋतजातो = ऋत से उत्पन्न (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

ऋतजित् = ऋत को जीतने वाला (ऋ - जाना,

जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतज्जाः - ऋतज्ञाः = ऋत, सञ्चालन नियम को जानने वाले (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतधामा - ऋतधामा = ऋतधाम, ऋत को धारण करने वाले (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, धा = धारण करना)।

ऋतपाः = ऋत का पालन-रक्षण करने वाले (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, धा = धारण करना)।

ऋतप्रजात - ऋत-प्रजात = ऋत से उत्पन्न (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, धा = धारण करना)।

ऋतम् = सार्वभौम नियम, सत्य, ऋत को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतये = सार्वभौम नियम, सत्य, ऋत के लिए (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतवः = सार्वभौम नियम, ऋत, ऋतु (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतवादिभ्यो = ऋतवादियों के लिए (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतवो = सार्वभौम नियम, ऋत, ऋतु (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतसत् = सार्वभौम नियम, ऋत (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतसदनम् - ऋतसदनम् = ऋत के सदन को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

ऋतसदम् = ऋतसद को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

ऋतस्पते = ऋत-पति (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, पत् = जाना, नीचे जाना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

ऋतस्पृशा = ऋत को स्पर्श करने वाला (ऋ - जाना,

जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, स्पृश - स्पर्श करना, छूना, संयोग करना, हाथ से लेना)।

ऋतस्य = ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतायते = ऋत के समान आचरण करता है (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतायुभिः = ऋतायुओं, ऋत तथा आयु द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतायुभ्याम् = ऋतायु के लिए, ऋत तथा आयु के लिए (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)।

ऋतावरी = ऋत का रक्षक (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, अव - रक्षा करना)।

ऋतावा = ऋत का रक्षक (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, अव - रक्षा करना)।

ऋतावानम् = ऋतवानों को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, अव - रक्षा करना)।

ऋतावृधः = ऋतावृध, ऋत से वर्धित (ऋ = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

ऋतावृधा = ऋतावृध, ऋत से वर्धित (ऋ = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

ऋतावृधो = ऋतावृध, ऋत से वर्धित (ऋ = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

ऋतावृधौ = ऋतावृध, ऋत से वर्धित (ऋ = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

ऋतावृधे = ऋतावृध के लिए (ऋ - जाना, जानना, पहुँचना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋताषाट् = ऋतसह, ऋत-पालन में समर्थ (ऋ -

जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, सह - शक्ति-सामर्थ्य होना, साथ होना, तृप्त होना, प्रसन्न होना, सहन करना, सन्तुष्ट होना)।

ऋतिः = ऋति (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतिम् = ऋति को, सञ्चालन नियम को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतीषहम् = ऋतसह, ऋत-पालन में समर्थ (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, ऋती - कृपा करना, दया करना, निन्दा करना, दोष लगाना, घृणा करना, सह - शक्ति-सामर्थ्य होना, साथ होना, तृप्त होना, प्रसन्न होना, सहन करना, सन्तुष्ट होना)।

ऋतुः = ऋतु, प्रकृति नियम चक्र (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुथा = ऋतु के अनुसार (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुना = ऋतु द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुभिः = ऋतुओं द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुभ्यः = ऋतुओं के लिए, ऋतुओं से (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुम् = ऋतु को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुमत् = ऋतु के अनुसार, ऋतु-युक्त (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुमतः = ऋतु के अनुसार, ऋतु-युक्त (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुशः = ऋतु के अनुसार (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतुष्ठाः = ऋतु के अनुसार स्थित (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतू = ऋतु (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतून् = ऋतुओं को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत

- चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतूनाम् = ऋतुओं का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋते = विना (अव्यय)।

ऋते = ऋत में (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतेन = ऋत द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतेषु = ऋतों में (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋतैः = ऋतों द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋत्यै = ऋत्य के लिए, ऋत के लिए (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

ऋत्विजम् = ऋत्विज को, ऋतु से उत्पन्न को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

ऋत्विजा = ऋतु से उत्पन्न (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

ऋत्विजः - **ऋत्विज** = ऋत्विज, ऋतु सम्बन्धी, ऋतुगामी (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋत्विजम् = ऋत्विज, ऋतु सम्बन्धी, ऋतुगामी को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

ऋत्विजो - **ऋत्विजो** = ऋत्विज, ऋतु सम्बन्धी, ऋतुगामी (ऋ = जाना, जानना, ऋतु)।

ऋद्धम् - **ऋद्धम्** = ऋद्धि को, वृद्धि को (ऋद्ध - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋद्धिः - **ऋद्धिः** = ऋद्धि, वृद्धि (ऋद्ध - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋद्ध्यै - ऋद्ध्यै - ऋद्ध्यै = वृद्धि के लिए (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋधक् = समृद्धिशाली, वृद्धिगत, समृद्ध (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋध्यताम् = बढ़े, समृद्धिशाली हो, वृद्धिगत हो, समृद्ध हो (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋध्याम् = ऋद्धि हों, समृद्धि हो, वृद्धि करो (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋध्यामा = बढ़े, समृद्धिशाली हो, वृद्धिगत हो, समृद्ध हो (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋध्यासम् = बढ़े, समृद्धिशाली हो, वृद्धिगत हो, समृद्ध हो (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋधन् = समृद्धिशाली, वृद्धिगत हो, समृद्ध होते हुए (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)।

ऋभवः = प्रगतिशील, विद्वान् (ऋ - अर् - जाना, फैलाना, ऋ - जाना, चलना, जानना, पाना, भा - प्रकाश होना)।

ऋभुः = ऋभु, प्रगतिशील, विद्वान् (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, भा - प्रकाश होना)।

ऋभुक्षाः - ऋभुक्षाः = घातक (ऋभुक्ष् - घात करना, मारना)।

ऋभुभ्यः = ऋभुओं के लिए (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, भा - प्रकाश होना)।

ऋभुभ्यो = ऋभुओं के लिए (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, भा - प्रकाश होना)।

ऋभुमते = ऋभुमान के लिए (ऋ - जाना, जानना,

पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, भा - प्रकाश होना)।

ऋभूणाम् = ऋभुओं का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, भा - प्रकाश होना)।

ऋभवसः = ऋभुगण, प्रगतिशील, विद्वान् (ऋ - अर् - जाना, फैलाना, ऋ - जाना, चलना, जानना, पाना)।

ऋभवसम् = प्रगतिशील, विद्वान् (ऋ - अर् - जाना, फैलाना, ऋ - जाना, चलना, जानना, पाना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

ऋश्यः = ऋषि (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋश्यान् = ऋषियों को (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषभः = ऋषभ (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, भा - प्रकाश होना)।

ऋषभम् = ऋषित्व के प्रकाश युक्त (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषभस्य = ऋषभ का (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषभाः = ऋषभगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, भा - प्रकाश होना)।

ऋषभाय = ऋषभ के लिए (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषभासः = ऋषभगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषभेण = ऋषभ द्वारा (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषभैः = ऋषभों द्वारा (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, भा - प्रकाश होना)।

ऋषयः = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषयो = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)

ऋषिः = ऋषि (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषिकृत् = ऋषि-कृत, ऋषि द्वारा किया गया (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, कृ = करना)।

ऋषिभिः = ऋषियों द्वारा (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषिम् = ऋषि को (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषिमना = ऋषि-मनयुक्त (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

ऋषिषाणः = ऋषियों की सेवा करने वाले (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)

ऋषीणाम् = ऋषियों का (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषे = ऋषि (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋष्याः = ऋषि (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋष्येभिः = ऋषियों द्वारा (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

उ

उ = निश्चय ही, भी।

उक्ताः = उक्ति, कथन (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्तिम् - उक्तिम् = उक्ति को, कथन को, कही गयी बात को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्तेभ्यः = कथनों के लिए (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थ = उक्ति, कथन (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थम् = उक्ति, कथन को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थशंसिनम् = उक्तियों, कथनों द्वारा स्तुत, उक्ति, कथन की स्तुति करने वाले (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उक्थशासः = उक्ति, कथन का बोध करने वाले, कथन के अनुकूल शासन करने वाले (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)।

उक्था = उक्ति, कथन (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थानाम् = उक्थानों का, उक्तियों का, कथनयोग्यों का (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थानि = उक्ति, कथन (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थाव्यम् = उक्ति, कथन के योग्य (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थिनः = कथनशील, कहने वाले (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थिनम् - उक्थिनम् = उक्ति, कथन वाले को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थे = कहते हैं, एकत्र होते हैं (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थे-उक्थे = उक्ति-उक्ति में, कथन-कथन में (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

होना)।

उक्थेन = उक्ति द्वारा, कथन द्वारा (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थेभिः = वाणियों द्वारा, उक्तियों द्वारा, कथनों द्वारा (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थेषु = उक्तियों में, कथनों में (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थैः = उक्तियों द्वारा, कथनों द्वारा (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थ्य = कथन, कथनीय, कथ्य (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थ्यम् = उक्ति को, कथन को, कथनीय को, कथ्य को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्थ्यानि = कथन को, कथनीय को, कथ्य को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उक्षः = प्रोक्षण, सिञ्चन, दृढ़ करने वाले (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षणः - उक्षणः = प्रोक्षण, स्वच्छता, दृढ़ता, सिञ्चन (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षणम् = प्रोक्षण, स्वच्छता, दृढ़ता, सिञ्चन को (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षणीः - उक्षणीः = प्रोक्षणी, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन करने वाला (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षतम् - उक्षतम् = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया, करने वाले को (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षन्तम् - उक्षन्तम् = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया, करने वाले को (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन

करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षा - उक्षा = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया, करने वाला (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षाणः - उक्षाणः = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया, करने वाले (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षामि - उक्षामि = प्रोक्षण करता हूँ, स्वच्छ करता हूँ, दृढ़ करता हूँ, सिञ्चन करता हूँ (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षितम् - उक्षितम् = प्रोक्षण किया हुआ, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया हुआ (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उक्षो = प्रोक्षण, सिञ्चन, दृढ़ करने वाले (उक्ष - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)।

उखा = प्रगतिशील, विद्वान्, दाहक (उख - चलना, जाना, जलना)।

उखाम् = प्रगतिशील, विद्वान्, दाहक को (उख - चलना, जाना, जलना)।

उखायाः = प्रगतिशील, विद्वान्, दाहक का (उख - चलना, जाना, जलना)।

उखे = हे उखा, प्रगतिशील, विद्वान्, दाहक में (उख - चलना, जाना, जलना)।

उख्यम् = प्रगति योग्य, जानने योग्य, विद्वान्, दहनीय (उख - चलना, जाना, जलना)।

उख्यस्य = गतियोग्य का, दाह योग्य का (उख - चलना, जाना, जलना)।

उगणाः = वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उगणाभ्यः = वक्तागण, समूह, सम्बन्धियों के लिए (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उगम् = वक्तागण, समूह, सम्बन्धी को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उग्रः - उग्रः = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-

वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उग्रधन्वा = उग्र-गामी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेजस् होना, धन्व - जाना)।

उग्रम् - उग्रम् = उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उग्रस्य = उग्र का (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उग्रा = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उग्राः - उग्राः = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उग्राभिः = उग्रों द्वारा (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उग्राय - उग्राय = उग्र के लिए (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उग्रो - उग्रो = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)।

उच्चरत् = उच्चारण किया (उत् - ऊपर, उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उच्चा = ऊँचे (उच्च - ऊँचा, सर्वनाम)।

उच्चाचक्रम् = उच्च चक्र को (उच्च - ऊँचा, सर्वनाम, चक्र - चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

उच्चैः - उच्चैः = ऊँचे (उच्च - ऊँचा, सर्वनाम)

उच्छति = पूर्ण करता है, समाप्त करता है (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)।

उच्छन्तु = पूर्ण करें, समाप्त करें (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)।

उच्छ्वासे = उच्छ्वास में (उत्+श्वास, उत्कृष्ट, ऊपर,

उच्च (अव्यय), श्वस - श्वास लेना, श्वासोच्छ्वास करना, जीना, जीते रहना)।

उच्यते = उच्चारण करते हैं, कहते हैं (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उच्येते - उच्येते = कहे जाते हैं, कहते हैं (उच्-वद् - कहना, बोलना)।

उज्जितम् = उत्कृष्ट विजय को (उत् - ऊपर, जि = जीतना)।

उज्जिहानाः = उत्कृष्ट गति, ज्ञान वाले (उत् - ऊपर, जिह = चलना, जाना, जानना, पाना)।

उज्जेषी = उत्कृष्ट सेवा, प्रोक्षण (उत् - ऊपर, जिष् सेवा करना, प्रोक्षण करना, सींचना)।

उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय, उपसर्ग)।

उत = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)।

उतः = उससे, वैसे ही, उसी प्रकार (अव्यय)।

उतः = उससे (सर्वनाम)।

उता = ही (अव्यय)।

उताः = रक्षण-पालन, रक्षित, पालित (उ-अव - सुखाना, शोषण करना, उ-अव - पालन करना, रक्षा करना, शब्द करना)।

उतानि = रक्षक (उ-अव - सुखाना, शोषण करना, उ-अव - पालन करना, रक्षा करना, शब्द करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

उतापः = उत्कृष्ट व्यापक (उत = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

उतो = उससे, वैसे ही, उसी प्रकार (अव्यय)।

उत्कूल-निकूलेभ्यः = उत्कूल - निकूलों के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, नि - नीचे, निरन्तर, निश्चय, कूल - आच्छादित करना)।

उत्क्रमः - उत्क्रमः = उत्कृष्ट गति, रक्षण, वृद्धि (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, क्रम = चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

उत्क्रमणम् - उत्क्रमणम् = उत्क्रमण को (उत् - ऊपर, क्रम - चलना, जाना, रक्षण करना, वृद्धि करना, बढ़ना)।

उत्क्रमाय - उत्क्रमाय = उत्कृष्ट गति, रक्षण, वृद्धि के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, क्रम = चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

उत्क्रान्तिः - उत्क्रान्तिः = उत्कृष्ट गति, रक्षण, वृद्धि (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, क्रम = चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

उत्क्रान्त्यै - उत्क्रान्त्यै = उत्कृष्ट गति, रक्षण, वृद्धि के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, क्रम = चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

उत्-चरत् = उच्चारण किया, बोला, उच्चगति किया (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उच्- कहना, समझाना, चर - जाना, खाना, आचरण करना, उत्-चर् - उच्चारण करना, बोलना)

उत्तमः = उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तमम् - उत्तमम् = उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तमा - उत्तमा = उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तमानि - उत्तमानि = श्रेष्ठ, उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तमाम् = श्रेष्ठ, उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तमे - उत्तमे = श्रेष्ठ में, उत्तम में, श्रेष्ठ-इच्छा,

शुभ-इच्छा में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तमेन = उत्तम द्वारा, श्रेष्ठ-इच्छा द्वारा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

उत्तम्भनम् = उत्तम स्थान, स्तम्भ (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, स्तम्भ - स्थित करना, रोकना)।

उत्तरः - उत्तरः = अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर, (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)।

उत्तरतः - उत्तरतः = उत्तर से, उत्तर दिशा से, तैरने-पार जाने से (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)।

उत्तरतो - उत्तरतो = उत्तर से, उत्तर दिशा से, तैरने-पार जाने से (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)।

उत्तरम् - उत्तरम् = उत्तर को, तैरने-पार जाने को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)।

उत्तरवेद्याः - उत्तरवेद्याः = उत्तर-वेद्य, श्रेष्ठ के जानने योग्य (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, विद् = जानना)।

उत्तरस्मिन् - उत्तरस्मिन् = उत्तर में (सर्वनाम)।

उत्तरात् - उत्तरात् = उत्तर से, उत्तर दिशा से (सर्वनाम)।

उत्तराम् = उत्तर को (सर्वनाम)।

उत्तरासदः - उत्तरासदः = उत्तर से, उत्तर दिशा से आये हुए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् = जाना, आ-सद् - आना)।

उत्तरासद्भ्यः - उत्तरासद्भ्यः = उत्तरासदों के लिए, उत्तर से, उत्तर दिशा से, आये हुआ के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् = जाना, आ-सद् - आना)।

उत्तरेण - उत्तरेण = उत्तर से, उत्तर दिशा से (सर्वनाम)।

उत्तरो = उत्तर, उत्तर दिशा (सर्वनाम)।

उत्तान - उत्तान = उत्तान, उच्च विस्तार (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना)।

उत्तानाम् = उत्तान, उच्च विस्तार को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना)।

उत्तानाया = उत्तान, उच्च विस्तार करने वाले, फैलाने वाले के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना, फैलाना, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना)।

उत्तानायाः - उत्तानायाः = उत्तान, उच्च विस्तार करने वाले, फैलाने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना, फैलाना, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना)।

उत्तानायाम् - उत्तानायाम् = उत्तर से, उत्तर दिशा से, विस्तार करने, फैलाने वाले में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना, फैलाना, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना)।

उत्तिरन् = पार होता हुआ, पार होने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ - पार जाना, जल पर तैरना, जीतना, नौकादि साधन से जल के पार जाना)।

उत्-तिष्ठ - उत्तिष्ठ = उठो (उत् = ऊपर, तिष्ठ = ठहरना, उत्-तिष्ठ - उठना, खड़े होना)।

उत्-तिष्ठत = उठो (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तिष्ठ = ठहरना, उत् - तिष्ठ - उठना, खड़े होना)।

उत्-तिष्ठन् = उठते हुए, उठने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तिष्ठ = ठहरना, उत् - तिष्ठ - उठना, खड़े होना)।

उत्थाय = उठने के लिए, उठकर (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तिष्ठ = ठहरना, उत् - तिष्ठ - उठना, खड़े होना)।

उत्थिताय - उत्थिताय = उत्थित के लिए, उठे हुए के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तिष्ठ = ठहरना, उत् - तिष्ठ - उठना, खड़े होना)।

उत्पुण्याः = उत्तम पूर्ण करने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, पू - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

उत्पर - उत्प्र = उत्कृष्ट पूर्ण करने वाले (उत् = ही,

उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, प्रा = पूर्ण करना, तृप्त करना)।

उत्पतो = उद्योगी, उद्यमी, उत्कृष्ट यमी, नियमी, पोषक (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना, यातना देना, दुःख देना, रोकना, एकत्र करना)।

उत्पम् = उद्योगी, उद्यमी, उत्कृष्ट यमी, नियमी, पोषक को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, यम् - नियमन करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना)।

उत्सः = उत्स (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

उत्सक्थ्याः = उत्सक्थ्य, उत्कृष्ट पाचक (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सक्त = पकाना, भूँजना, भूना)।

उत्सम् = उत्स को, उत्कृष्ट सृजन को (सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

उत्सवे = उत्सव में, उत्कृष्ट सृजन में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

उत्सादतः = उत्साद से (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् - बैठना, जाना, उत्-साद् - उखाड़ना, नाश करना)।

उत्सादम् = उत्साद को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् - बैठना, जाना, उत्-साद् - उखाड़ना, नाश करना)।

उत्सादेभ्यः = उत्सादों के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् - बैठना, जाना, उत्-साद् - उखाड़ना, नाश करना)।

उत्सृजते = उत्सृजित करते हैं (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

उत्सो = उत्स, उत्कृष्ट सृजन (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

उत्सौ = उत्स में, उत्कृष्ट सृजन में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ

धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

उद = उत्कृष्ट, उच्च, उदार (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना)।

उदक् = उदक, उच्च गति, आद्रता (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदकम् = उदक, उच्च गति, आद्रता को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदकाय = उदक, उच्च गति, आद्रता के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदके = उदक, उच्च गति, आद्रता में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदक्ताः = उदक, आद्र करने वाला, आद्रक (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, गिनना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदगा = उत्कृष्ट, अग्रणी (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

उद-ग्राभस्य = उदक-ग्राही का (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, गृ = सींचना, समझना, जानना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

उदधिः = उदधि, उदक, आद्रता को धारण करने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, धि - धारण करना, रखना)।

उदधिम् = उदधि को, उदक को, उदक, आद्रता को धारण करने वाले को, आद्रक को धारण करने वाले को

(उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, धि - धारण करना, रखना)।

उदधीन् = उदधियों को, उदक, आद्रता को धारण करने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, धि - धारण करना, रखना)।

उदपप्तन् = उदय हुआ, उदित हुआ (उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, पत - नीचे गिरना, जाना या उतरना, चढ़ना, उड़ना, श्रीमान् होना, शक्तिमान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

उदप्रुतः = आद्रक को गति देने वाला, उदक द्वारा गतिशील (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

उदप्रुतम् = आद्रक को गति देने वाले, उदक द्वारा गतिशील को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

उदध्यायो = आद्र करने वाले, आद्रक को धारण करने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, धि - धारण करना, रखना)।

उदभिः = उदों द्वारा, आद्रकों द्वारा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदयन् = उदय होता हुआ (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ-अय् - जाना, जानना, पाना)।

उदरम् = उदर को, आद्र करने वाले को, आद्रता को देने वाले को (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदरस्य = उदर का, आद्र करने वाले, आद्रता को देने वाले का (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द्

- गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदरे = उदर में, आद्र करने वाले, आद्रता को देने वाले में (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदरेण = उदर द्वारा, आद्र करने वाले द्वारा, आद्रता को देने वाले में द्वारा (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदर्येण - उदर्येण = उदर-योग्य द्वारा, आद्र करने वाले, आद्रता को देने वाले द्वारा (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदरथाम् = उठें (उद्-अस्थाम्, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, स्था - स्थित होना)।

उदहार्यः = उत्कृष्टता से व्याप्त, विस्तार, हरण योग्य (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ह - हरण करना, ले जाना)।

उदहासत = उत्कृष्टता से हंसा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, हस - हंसना, टट्टा करना)।

उदा = उदा, आद्र (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदादाय = उत्कृष्टता से लेने के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, दा - देना, दान करना, आ-दा = लेना, ग्रहण करना)।

उदानः = उदान (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अन् = प्राण होना, जीवन होना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट

होना)।

उदानट् = उदान (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अन् = प्राण होना, जीवन होना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदानंश = उत्कृष्ट विनाशक (उत्+आ+नंश, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आगम, नश - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

उदानाय = उदान के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अन् = प्राण होना, जीवन होना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदारः = उदार, आद्रता देने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, ऋ - जाना, चलना, जानना, पाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना)।

उदारिथि = उदार हुआ (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदारुहन् = उत्कृष्ट, उच्च, उदार चढ़े, बढ़े को (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

उदारो = उदार, आद्रता देने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, ऋ - जाना, चलना, जानना, पाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदासरन् = उत्कृष्टता से प्रगति करते हुए, उत्तम प्रगतिशील (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), सु - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

उदित् = उदय (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, इ - जाना)।

उदितः = उदय हुआ (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, इ = जाना, उदि - उन्द् = भिगोना, गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदिता = उदय हुआ (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उदि - उन्द् = भिगोना, गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदिते = उदय होने पर, उदित में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, इ = जाना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदीची = उदीची (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदीचीम् = उदीची को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, इ = जाना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

उदीर = कहना, बोलना (उत्+ईर - कहना, बोलना, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

उदीरते = उत्तम उच्चारण करते हैं (उत्+ईर - कहना बोलना, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)।

उदेति = उदय होता है (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना)।

उदोजसम् = उत्कृष्ट ओज वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, ओज् = शक्तिमान होना, जीवन होना, वृद्धि करना)।

उद्गाः = उच्च गामी (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, गम् = जाना)।

उद्गीथो = उद्गीथ, उत्कृष्ट गायन करने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

उद्ग्रहणते = उद्ग्रहण करता है (उत् = ही, उत्कृष्ट,

ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, गृह = ग्रहण करना, लेना)।

उद्गुरमाणाय = उच्च उद्योग करने वाले के लिए, प्रयास करने वाले के लिए, शब्द, वाणी, वचन करने वाले के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

उद्ग्राभम् = उद्-ग्राभ को, उद्ग्राही को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, गृ = सींचना, समझना, जानना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

उद्ग्राभेण - उद्ग्राभेण = उद्ग्राभ द्वारा, उत्कृष्ट वाणी द्वारा, उत्कृष्ट शब्द द्वारा, उद्ग्राही द्वारा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, गृभ् = शब्द करना, जानना, समझना, समझाना, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

उद्दिशः = उच्च दिशा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, दिश् = दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

उद्द्रावाय = उद्द्राव के लिए, उच्च गति के लिए, (उत् - ऊपर, द्रु - जाना, अनुसरण करना)।

उद्-धृत्य = उद्-धृत कर (उत् - ऊपर, धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)।

उद्भराम् = भरते हैं, निकालते हैं (उत् - ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् - उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

उद्भिदः = उच्च भेदन करने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, भिद् = भेदना, चीरना, फाड़ना, तोड़ना, भाग करना)।

उद्भिदम् = उद्भिद् को, उच्च भेदन करने वाले को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, भिद् = भेदना, चीरना, फाड़ना, तोड़ना, भाग करना)।

उद्भृतम् = उद्भृत् को, उत्कृष्ट भरण करने वाले को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, भृ = भरना, भरण-पोषण करना)।

उद्भौ = उद्भूत, उद्भव, उत्पन्न (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, भू = होना)।

उद्यतः - उद्यतः = उद्यत, उद्योगी, उद्यमी, उत्कृष्ट यमी, नियमी, पोषक (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना, यातना देना, दुःख देना, मारना, आज्ञा करना, एकत्र करना, रोकना, यम् - नियमन करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना)।

उद्यता = उद्यत, उद्योगी, उद्यमी, उत्कृष्ट यमी, नियमी, पोषक (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना, यातना देना, दुःख देना, मारना, आज्ञा करना, एकत्र करना, रोकना, यम् - नियमन करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना)।

उद्यन् - उद्यन् = उद्यत, उद्योगी, उद्यमी, उत्कृष्ट यमी, नियमी, पोषक (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना, यातना देना, दुःख देना, मारना, आज्ञा करना, एकत्र करना, रोकना, यम् - नियमन करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना)।

उद्यसम् - उद्यसम् = उद्यस को, उद्यत, उद्योगी, उद्यमी को (उत् - ऊपर, यस - यत्न करना)।

उद्यासाय = उद्यास के लिए, उद्यत, उद्योगी, उद्यमी के लिए (उत् - ऊपर, यस - यत्न करना)।

उद्रावाय - उद्रावाय = उद्राव के लिए ((उ-ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, द्रु - जाना, बहना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उदुताय - उदुताय = उत्कृष्ट प्रगतिशील के लिए, उत्कृष्ट गतिशील के लिए (उ-ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, रा - देना, दान करना, रु - शब्द करना, बोलना, चलना, जाना, क्रोध करना, हिंसा करना)।

उदरेण = उदर द्वारा, आद्र करने वाले, आद्रता को देने वाले द्वारा (उ-ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)।

उद्रो = उद्र, आर्द्र, उदार ((उ-ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, रा - देना, दान करना)।

उद्रो-तृणाम् - उद्रो-तृणाम् = उदर में, आद्र करने वाले, आद्रता को देने वाले में ((उ-ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अर् - ऋ - जाना, फैलाना, तृण - अंकुरित होना, चरना, घास खाना)।

उन्दतः = सिञ्चन करने वाले (उन्द - गीला करना, आद्र होना, सिञ्चन करना, कष्ट होना)।

उन्दनम् = उन्दन को, आद्रता को (उन्द - गीला करना, आद्र होना, सिञ्चन करना, कष्ट होना)।

उन्नतः - उन्नतः = उच्चनत, उन्नत (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, नम् = नमना, नमन करना)।

उन्नीतः - उन्नीतः = ऊपर ले जाया गया (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, नी = ले जाना, पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना)।

उन्मत्तम् - उन्मत्तम् = उन्मत्त को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, मद् - मद होना, हर्ष होना, तृप्त होना, थकना)।

उन्मा = उच्चमान करने वाला (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, मा = मापना, मान करना)।

उप = समीप (उपसर्ग)।

उप-अतसत् = समीप भेजा (उप = समीप (उपसर्ग)। तस् = फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना। अत - चलना, निरन्तर चलना)।

उप-चिताम् = उपचित को, उपचयनित को, समीप चुने गये, एकत्र किये गये को (उप - समीप, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

उपजिह्विका - उपजिह्विका = समीप जाने वाला, जिह्वा की समीपता वाला (उप - समीप, जिह् - चलना,

जाना, जानना, पाना)।

उपजीवा = उपजीवी (उप - समीप (उपसर्ग), जीव - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

उपतिष्ठति = समीप स्थित होता है, निकट बैठता है, उपस्थित होता है (उप - समीप, तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

उप-तिष्ठन्त = उपस्थित होते हैं, समीप स्थित होते हैं (उप - समीप, तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

उपतिष्ठन्ते = उपस्थित होते हैं, समीप स्थित होते हैं (उप - समीप, तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

उपदधामि - उपदधामि = समीप धारण करता हूँ (उप - समीप, धा-दध् = धारण करना, पालन करना)।

उपदाम् - उपदाम् = उपदा को, समीप दान को, समीप दान करने वाले को (उप - समीप, दा - दान करना)।

उपदृक् = उपदृष्टि, समीप दृष्टि को (उप - समीप, दृश्-पश्य - देखना)।

उप-द्यवि = प्रकाश के समीप (उप - समीप, द्यु-द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - चमकना, प्रकाशित होना)।

उप-धापयेते = निकट पोषण करती हैं (उप- समीप, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

उपध्वस्ताः = निकट कम्पन करने वाले, ध्वस्त करने वाले (उप- समीप, धू - कम्पन करना, क्षुब्ध करना, क्षोभित करना, धुनना, ध्वंस् - ध्वंस करना, नष्ट करना, चूर्ण करना, नष्ट करना, गिरना)।

उपनतिः = निकट नति, उपनमन (उप - समीप, नम् - नमन करना, नमना, नत होना)।

उपबर्हणम् = उपबर्हण को, श्रेष्ठ को, ब्रह्म के निकट को (उप - समीप, बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

उपभृत् = उप भरण करने वाला, समीप पोषण करने

वाला (उप- समीप, भृ = भरण-पोषण करना)।

उपमन्थितारम् - उपमन्थितारम् = उपमन्थिता को, उपमन्थन करने वाले को (उप - उपसर्ग, मन्थ् - मन्थन करना, हिंसा करना)।

उपमाः = उपमान, निकट मान-मापन (उप- समीप, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

उपमानाम् = उपमानों का (उप- समीप, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

उपमानि = अनेक उपमान, निकट मान-मापन (उप- समीप, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

उपमाम् = उपमा को (उप- समीप, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

उपयाम = निकट गमन अथवा उपनियमन (उप - समीप, या - जाना, यम - नियमन करना, नियन्त्रण करना)।

उपयामम् = उपयाम को, निकट गमन अथवा उपनियमन को (उप - समीप, या - जाना, यम - नियमन करना, नियन्त्रण करना)।

उपयामगृहीतः = उपयाम अर्थात् निकट गमन अथवा उपनियमन द्वारा गृहीत अर्थात् ग्रहण किया हुआ (उप - समीप, या - जाना, यम - नियमन करना, नियन्त्रण करना, गृह-ग्रह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)।

उपयाम-गृहीतो = उपयाम अर्थात् निकट गमन अथवा उपनियमन द्वारा गृहीत अर्थात् ग्रहण किया हुआ (उप - समीप, या - जाना, यम - नियमन करना, नियन्त्रण करना, गृह-ग्रह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)।

उपरासः = उपरास, निकट रास, (उप - समीप, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

उपरि = ऊपर (सर्वनाम, अव्यय)।

उपरि-स्वित् = ऊपर भी, ऊपरी (सर्वनाम, अव्यय)।

उपरिष्ठात् - उपरिष्ठात् = ऊपर स्थित से (उपरि = ऊपर, स्था - स्थित होना)।

उपरिसदः = ऊपर स्थित (उपरि = ऊपर, सद - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना, बैठना, चढ़ाई करना, सूखना)।

उपरिसद्भ्यः = उपरिगामी, उच्च गति वालों के लिए (उपरि = ऊपर, सद - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना, बैठना, चढ़ाई करना, सूखना)।

उपलान् = उपग्रहण, उपदान (उप = समीप, ला - लेना, ग्रहण करना, दान करना)।

उपवसनानाम् = उपवसनों का (उप = समीप (उपसर्ग), वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

उपवाकाः = उपवाक् वाले, निकट वाणी वाले (उप - समीप, वच् - बोलना, अध्ययन करना, समझाना)।

उपवाकाभिः = उपवाक् वालों द्वारा, निकट वाणी वालों द्वारा (उप - समीप, वच् - बोलना, अध्ययन करना, समझाना)।

उपवाकैः = उपवाक् वाले, निकट वाणी वाले द्वारा (उप - समीप, वच् - बोलना, अध्ययन करना, समझाना)।

उपवाक्भिः = उपवाक् द्वारा, निकट वाणी द्वारा (उप - समीप, वच् - बोलना, अध्ययन करना, समझाना)।

उपविष्टाय = उपविष्ट के लिए, विस्तृत के लिए (उप - समीप, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, विश = घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)।

उपवीतने = उपवीत के लिए, निकट व्याप्त के लिए, समीप कान्ति-प्रकाश करने वाले के लिए (उप - समीप,

वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

उपशिक्षायै - उपशिक्षायै = उपशिक्षा के लिए, निकट शिक्षा के लिए (उप - समीप, शिक्ष = विद्या ग्रहण करना, सीखना, सिखाना)।

उपशृण्वन्ति - उपशृण्वन्ति = उपश्रवण करते हैं (उप - समीप, शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

उपश्रवत् = उपश्रवण करें, सुनें, श्रवण करें (उप - समीप, शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

उपश्रिताः - उपश्रिता = उपश्रित, निकट सेवित (उप - समीप, श्री - सेवा करना, शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

उपश्रुतिम् - उपश्रुतिम् = उपश्रुति को, निकट सुने हुए को (उप - समीप, शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

उपसत्ता - उपसत्ता = सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (उप - समीप, सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

उपसत्तारः = सत्य, प्रतिष्ठित, प्रगतिशील (उप - समीप, सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

उपसदम् = उपसद को, सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य को (उप - समीप, सद = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

उपसदाम् = उपसद को, सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य को (उप - समीप, सद = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

उप-संयात् = भली-भाँति प्राप्त करो (उप - समीप, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

उपसृजन् = उपसृजन करते हुए, उपसृजन करने वाले (उप - समीप, सृज् = उत्पन्न करना, रचना करना, छोड़ना)।

उपसेक्तारम् = उपसेक्ता को, उपसिञ्चन करने वाले को (उप - समीप, सीक् - सींचना, अभिषेक करना, विचार करना, सिञ्च् - सींचना, सिञ्चन करना)।

उपस्तयः = उपस्तुति, समीप गामी, उपरक्षण, समीप रक्षा करने वाले (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना, तय = जाना, संरक्षण करना, चुम्बन करना)।

उपस्तृणन्ति - उपस्तृणन्ति = उपस्तृण करते हैं, पूर्ण करते हैं (उप - समीप, स्तृ = पूर्ण करना)।

उपस्तुतम् = उपस्तुत को (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उपस्तुता = उपस्तुत (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उपस्तुतासो = उपस्तुत (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उपस्तुतिम् = उपस्तुति को (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उपस्तुत्य = उपस्तुति योग्य, समीप स्तुत्य, समीप रहने वाले स्तुत्य (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उपस्तुत्यम् = उपस्तुति योग्य, समीप स्तुत्य को (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

उपस्थ = समीप स्थित (उप - समीप, स्था = स्थित होना)।

उपस्थसत् = समीप स्थित होते हुए, निकटस्थ होते हुए (उप - समीप, स्थ = स्थित)।

उपस्थात् = समीप स्थित हो, उपस्थ से, समीपस्थ से, निकटस्थ से (उप - समीप, स्था = स्थित होना)।

उपस्थाय = उपस्थित होकर, समीप स्थित के लिए (उप - समीप, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

उपस्थावराभ्यः = उपस्थावर के लिए, समीपस्थ के लिए (उप - समीप, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

उपस्थावराभ्यो = उपस्थावर के लिए, समीपस्थ के लिए (उप - समीप, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

उपस्थिताय - उपस्थिताय = समीप स्थित के लिए (उप - समीप, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

उपस्थे = उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में (उप - समीप, स्थ = स्थित)।

उपस्थेषम् = समीप स्थित रहें, उपस्थित हों (उप -

समीप, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

उपहस्वान् = उपहासवान्, उपहास करने वाला (उप - समीप, हस - हंसना, ठट्ठा करना)।

उपहूत = उपहूत, समीप बुलाये गये, आह्वान किये गये (उप - समीप, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = बुलाना, आह्वान करना)।

उपहूतः = उपहूत, समीप बुलाये गये, आह्वान किये गये (उप - समीप, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = बुलाना, आह्वान करना)।

उपहूतस्य = उपहूत का, समीप बुलाये गये, आह्वान किये गये का (उप - समीप, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = बुलाना, आह्वान करना)।

उपहूता = समीप बुलाया गया, आह्वान किया गया (उप - समीप, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = बुलाना, आह्वान करना)।

उपहूताः = समीप बुलाया गया, आह्वान किया गया (उप - समीप, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = बुलाना, आह्वान करना)।

उपहूतो = समीप बुलाया गया, आह्वान किया गया (उप - समीप, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = बुलाना, आह्वान करना)।

उपह्वरे = उपवरण, उपाच्छादन में, उपकुटिल में (उप - समीप, ह्वे = पुकारना, ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना)।

उपाकयोः = समीप विद्या में, विद्वान के समीप में (उप - समीप, अक् = जाना, जानना, पाना, वक्र गति होना, कुटिल गति होना)।

उपाके = उपकुटिल गति में (उप - समीप, अक् = जाना, जानना, पाना, वक्र गति होना, कुटिल गति होना)।

उपागाः = उपकुटिल गति में, उपग्रहण में (उप - समीप, अग् = जाना, जानना, पाना, वक्र गति होना, कुटिल गति होना, लेना, ग्रहण करना, पीना, गम् - जाना)।

उपावरोह = उप-अवरोह, समीप अवरोह (उप - समीप, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, रुह = ऊपर चढ़ना)।

उपावरोहन्तु = उप-अवरोह करें, समीप अवरोह करें

(उप - समीप, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, रुह = ऊपर चढ़ना)।

उपावसरक्षत् - उपावस्रक्षत् = निकट आये, उपगति किया, निकट चला (उप - समीप, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, सृक्ष = चलना, जाना)।

उपावहरियमाणः - उपावह्रियाणः = उप-अवरोह, समीप अवरोह (उप - समीप, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, हि - लज्जा करना)।

उपावीः = समीप रक्षक (उप - समीप, अव = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

उपावृतः = समीप आवृत (उप - समीप, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वृ = वरण करना)।

उपांशुः = समीप अंशु, निकट साथी, उपविभाग (उप - समीप, अंश् = विभाग करना, साथ होना)।

उपांशोः = उपांशु का, निकट साथी का, उपविभाग का (उप - समीप, अंश् = विभाग करना, साथ होना)।

उपासत् = उपासना की, उपासना करते हैं (उप - समीप, निकट, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

उपासते = उपासना करते हैं (उप - समीप, निकट, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

उपैमि = जाता हूँ (उप-एमि, उप - समीप, निकट, इ-ए - जाना)।

उपो = समीप, निकट (उपसर्ग, सर्वनाम)।

उपोत्थितः - उपोत्थितः = समीप खड़ा हुआ (उप - समीप, निकट, उत् - उच्च, स्था - ठहरना, स्थित होना)।

उपोदके = उपोदक में, निकट आद्रता में (उप - समीप, उदि-उन्द = आद्र होना, गीला होना)।

उपोप = समीप-समीप (उप-उप, उप - समीप, निकट, उपसर्ग)।

उब्ज = सीधा, सरल, दमन करो (उब्ज = सीधी रीति से चलना, सीधी रीति से बर्ताव करना, दबाना, दमन करना)।

उभयङ्करम् = उभयङ्कर को, दोनो के कर्ता को (उभय - दोनों, कृ = करना)।

उभयतः = दोनों ओर से (सर्वनाम)।

उभयम् = दोनों को (सर्वनाम)।

उभया = दोनों, पूर्णताओं द्वारा (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभयादतः = दोनों खाने वाले (उभय - दोनो, अद् - खाना, खिलाना, नष्ट करना)।

उभयान् = दोनों, पूर्णताओं को (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना, अद् - खाना, खिलाना, नष्ट करना)।

उभयानि = दोनों, पूर्णताएं (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना, अद् - खाना, खिलाना, नष्ट करना)।

उभयाविनम् = उभयावी को, दोनो के रक्षक को (उभय - दोनो, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)।

उभयेभ्यः = दोनों के लिए, पूर्णताओं के लिए (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभयेषु = दोनों में, पूर्णताओं में (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभयोः = दोनों का, पूर्णताओं का (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभा = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभाभ्याम् = दोनों के लिए, पूर्णताओं के लिए (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभे = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभौ = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उरः = निरन्तर गति, विस्तार करने वाला (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरसा = निरन्तर गति, विस्तार द्वारा (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरसि = निरन्तर गति, विस्तार में (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरामथिः = विस्तृत मन्थन करने वाले (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, मथ् - मथना, विलोडन करना, विचार करना)।

उरु - उरु = बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम)।

उरुः - उरुः = निरन्तर गति, विस्तार करने वाला (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरुकृत् = बहुकृत, बहुत करने वाला (उरु = बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम), कृ = करना)।

उरुक्रमः - उरुक्रमः = उरुक्रम, निरन्तर गति, विस्तार की रक्षा करने वाला (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, कृ - करना, क्रम - चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

उरुक्षया = निरन्तर गति, विस्तार में निवास करने वाला (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, क्षि - निवास करना)।

उरुक्षाययः - उरुक्षाययः = निरन्तर गति, विस्तार में निवास करने वाले के लिए (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, क्षि - निवास करना)।

उरुगव्यूतिः = अत्यधिक विद्वान्, बहुत प्रगतिशील (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

उरुगाय - उरुगाय = बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, गा = चलना, जाना, गान करना)।

उरुगायस्य = बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति का (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, गा = चलना, जाना, गान करना)।

उरुगायो - उरुगायो = बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, गा = चलना, जाना, गान करना)।

उरुजयः = बहुत वृद्धि करने वाला, विजेता (उरु -

बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, जि - जीतना, जय पाना, कम होना, न्यून होना, वृद्ध होना, जीर्ण होना, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना, वृद्धि करना, पुराना होना)।

उरुधाराम् = बहुत धारायुक्त को, गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

उरुधारा = बहुत धारायुक्त, बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

उरुप्रथाः - उरुप्रथाः = बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक प्रसिद्धि (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, प्रथ = प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

उरुम् - उरुम् = गतिशीलता को, निरन्तर गति, विस्तार करने वाले को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरुव्यचसः = बहुत गतिशील, निरन्तर गति, विस्तार व्यापक का (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, व्यच् - जाना, व्यापना, ठगना)।

उरुव्यचसे = बहुत गतिशीलता, निरन्तर गति, विस्तार व्यापक में (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, व्यच् - जाना, व्यापना, ठगना)।

उरुव्यञ्चम् - उरुव्यञ्चम् = अति व्यञ्च को, पूजन, मान करने वाले को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, वि - विशेष, अञ्च् - जाना, पूजा करना, मान करना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना)।

उरुशर्मा - उरुशर्मा = अति सुखी (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना,

निरन्तर चलना, शर्म - सुख होना)।

उरुशंस - उरुशंस = बहुत स्तुति करने वाले को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, शंस - इच्छा करना, स्तुति करना)।

उरुशंसा = उरुशंस, बहुत स्तुति करने वाले (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, शंस - इच्छा करना, स्तुति करना)।

उरुषु - उरुषु = गति, व्यापकता, विस्तार में (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरुष्य - उरुष्य = गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार योग्य (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरुष्यतम् = गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार योग्य को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरुष्या - उरुष्या = गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार योग्य (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरूचीम् - उरूचीम् = अति संग्रहकर्ता को, बहुत एकत्र करने वाले को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उच् - एकत्र करना)।

उरुष्य = गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार योग्य (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरो = बहुत, गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरोः = बहुत, गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उरौ = बहुत, गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम, अव्यय), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उर्क् - उर्क = गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उर्द्धायै - उर्द्धायै = बहुत, गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, धा - धारण करना)।

उर्ध्वायै = उर्ध्व के लिए (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, धा - धारण करना)।

उर्वरापते = हे बहुत इच्छा, गति युक्त की रक्षा, पालन करने वाला (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, पा - रक्षा करना, पालन करना)।

उर्वशी - उर्वशी = उर्वशी, बहुत इच्छा, गति युक्त, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, वश् - इच्छा करना, चाहना, चमकना, शी - शयन करना, सोना)।

उर्वाकम् - उर्वारुक् = उर्वारुक, समर्थ, प्रकाशमान (उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, रुच - चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, उत्साह करना, रुचना)।

उर्विया - उर्विया = उर्विया, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

उर्वी - उर्वी = सहनशील, समर्थ, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

उर्व्या = विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

उर्व्यावि - उर्व्यावि = विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

देना, पीड़ा करना, वश् - इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

उर्व्ये = उर्व के लिए, विस्तृत के लिए, प्रगतिशील के लिए (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

उलः = गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उलप्याय = गति-वृद्धि (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, प्याय - वृद्धि होना, प्यास होना)।

उलूकः = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उलूकान् = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उलो = गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उल्काः = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उल्बः = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उल्बम् = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उल्वम् = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

उवोच = बोला, कहा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

उशतः = इच्छा करने वाला, कामना करने वाला (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशतीः = उशती, इच्छा करने वाला, कामना करने वाला (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशत्भिः - उशत्भिः = उशती, इच्छा करने वाला, कामना करने वालों द्वारा (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशद्भ्यः = इच्छा करने वाले, कामना करने वाले के लिए (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशद्भिः = उशदों द्वारा, इच्छा करने वालों द्वारा, कामना करने वालों द्वारा (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशधक् = कामना धारण करने वाला (उश्-वश् - चाहना, कामना करना)

उशन् = कामनाओं को, इच्छा करने वाले, कामना करने वाले (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशना = कामनाएँ, इच्छाएँ (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशन्तः = इच्छा करने वाला, कामना करने वाला (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशन्तम् = कामनायुक्त, इच्छा करने वाला, कामना करने वाला (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)।

उशन्ति - उशन्ति = कामना करते हैं (उश्-वश् - चाहना, कामना करना, इच्छा करना)।

उशिक् = कामना करने वाला (उश्-वश् - चाहना, कामना करना, इच्छा करना)।

उशिजः = कामना जनित (उश्-वश् - चाहना, कामना करना, इच्छा करना)।

उशिजा = कामना जनित (उश्-वश् - चाहना, कामना करना, इच्छा करना)।

उश्मसि = कामना करते हो, चाहते हो (उश्-वश् - चाहना, कामना करना, इच्छा करना)।

उषः = प्रभात, ताप (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

उषद्भिः - उषद्भिः = प्रभात, ताप द्वारा (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

उषर्बुधः = प्रभात को समझने, जानने वाले, प्रभात बोध, हिंसको को समझने वाले (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना, बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

उषसः = उषा का, प्रभात का, ताप का (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

उषसा = उषा द्वारा (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

उषसाम् = प्रभातों का (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

उष्ण करने वालों में (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना, रोग होना)।

उस्रौ - उस्रौ = प्रकाशस्वरूप, उष्ण, उष्ण होने वाला, उष्ण करने वाला (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना, रोग होना)।

उह्याथे = वहन करते हैं (उह्-वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

ऊ

ऊ = ही (अव्यय)।

ऊ = शब्द करना, विश्वास करना (धातु)।

ऊचिम = कहा, शब्द किया, रक्षा की (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊचिषे = कहते हैं (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊच्छन्ती = बोलते हैं, रक्षा करते हैं (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊढम् - ऊढम् = वाणी को, वाणियों, रक्षाओं को (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना, वह-ऊढ् - ले जाना, वहन करना)।

ऊतयः = रक्षक, वाणी (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊतये = रक्षा के लिए (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊतिः = शब्द, रक्षण (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊतिभिः = ऊतियों, वाणियों, रक्षाओं द्वारा (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊतिम् = रक्षा को, वाणी को (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊती = शब्द करने वाला, रक्षा करने वाला (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊत्या = वाणी द्वारा (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊद्रे = वाणी दी, शब्द किया, आद्र किया (ऊ - शब्द

करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

ऊधः = वाणी, शब्द, आद्र करने वाले (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

ऊधन् = वाणी, शब्द, आद्र करने वाले (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

ऊधभिः = वाणियों, आद्रों द्वारा (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

ऊनम् = न्यूनताओं को (ऊन् = अल्प करना, घटाना, नापना, गिनना)।

ऊमाः = विश्वास, वाणी सम्पन्न (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

ऊरुभ्याम् = ऊरु द्वारा, निरन्तर गति द्वारा, विस्तार करने वाले द्वारा (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

ऊरू - ऊरू = निरन्तर गति, विस्तार करने वाले (उरू - बहुत, अधिक, उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना, विश्वास करना)।

ऊरौ = निरन्तर गति, विस्तार करने वाले (उरू - बहुत, अधिक, उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना, विश्वास करना)।

ऊर्क - ऊर्क = विद्या, निरन्तर गति, विस्तार करने वाले (उरू - बहुत, अधिक, उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना, विश्वास करना)।

ऊर्ज = ऊर्जा (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जः - ऊर्जा = ऊर्जा (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन

होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जम् - ऊर्जम् = ऊर्जा को (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जयन्तीम् - ऊर्जयन्तीम् = ऊर्जावान् करते हुए को (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जयमाने - ऊर्जयमाने = ऊर्जावान् करते हुए को (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जस्वती = ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जस्वतीः - ऊर्जस्वतीः = ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जस्वन्तम् - ऊर्जस्वन्तम् = ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् करते हुए को (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जा - ऊर्जा = ऊर्जा, बल, प्राण, चेतना (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जाम् = ऊर्जा, बल, प्राण, चेतना को (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जाहुतयः - ऊर्जा-हुतयः = ऊर्जा प्रदान करने वाले (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जाहुती = ऊर्जा प्रदान करने वाले (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जे - ऊर्जे = ऊर्जा के लिए (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्जो = ऊर्जा (ऊर्ज = प्राण होना, चेतन होना, बल

होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)।

ऊर्णमृदसम् - ऊर्णमृदसम् = आवरण-विनाशक, आच्छादन को चूर्ण करना, मर्दन करना, कोमल आच्छादन (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना, मृद्-मृद = चूर्ण करना, मर्दन करना, कोमल बनाना)।

ऊर्णमृदाः - ऊर्ण-मृदा = आवरण-विनाशक, आच्छादन को चूर्ण करना, मर्दन करना, कोमल आच्छादन (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना, मृद्-मृद = चूर्ण करना, मर्दन करना, कोमल बनाना)।

ऊर्णवाथाम् - ऊर्णवाथाम् = आवरण-आच्छादन के सुख को (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना, वात् = सुखी होना, सेवा करना, जाना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना)।

ऊर्णा - ऊर्णा = आवरण-आच्छादन युक्त (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

ऊर्णायुम् - ऊर्णायुम् = आवरण-आच्छादन युक्त आयु को (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

ऊर्णी - ऊर्णी = आवरण-आच्छादन युक्त (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

ऊर्णु - ऊर्णु = आवरण-आच्छादन युक्त (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

ऊर्णुवाथाम् - ऊर्णुवाथाम् = आवरण-आच्छादन के सुख को (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना, वात् = सुखी होना, सेवा करना, जाना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना)।

ऊर्णुषे - ऊर्णुषे = शब्द, आवरण-आच्छादन के लिए (ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना, विश्वास करना, ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

ऊर्ध्वा - ऊर्ध्वा = ऊर्ध्व, उच्च (ऊर्ध्व = उच्च, ऊपर, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

ऊर्ध्वः - ऊर्ध्वः = ऊर्ध्व, उच्च, ऊपर (सर्वनाम)।

ऊर्ध्वचितः - ऊर्ध्वचितः = ऊर्ध्व, उच्च चेतना वाले, ऊर्ध्वचेता (ऊर्ध्व = ऊर्ध्व, उच्च, ऊपर, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

ऊर्ध्वचितो = ऊर्ध्व, उच्च चेतना वाले, ऊर्ध्वचेता (ऊर्ध्व = उच्च, ऊपर, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

ऊर्ध्वबर्हिभ्यो - ऊर्ध्वबर्हिभ्यो = ऊर्ध्व-बर्हि के लिए, उच्च वृद्धि के लिए (ऊर्ध्व = उच्च, ऊपर, बृह- बढ़ना, वृद्धि होना)।

ऊर्ध्व-नभसम् - ऊर्ध्वनभसम् = ऊर्ध्व-नभयुक्त को (ऊर्ध्व = उच्च, ऊपर, नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना)।

ऊर्ध्वम् - ऊर्ध्वम् = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)।

ऊर्ध्वया = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)।

ऊर्ध्वा = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)।

ऊर्ध्वाम् = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)।

ऊर्ध्वो - ऊर्ध्वो = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)।

ऊर्मतः - ऊर्मतः = ऊर्म से, वाणी, विश्वास, प्रगति से (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्मयः ऊर्मयः = ऊर्मियाँ, वाणी, विश्वास, प्रगति (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्मा = ऊर्म, वाणी, विश्वास, प्रगति (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्माय - ऊर्माय = ऊर्म के लिए, वाणी, विश्वास, प्रगति के लिए (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्मिः - ऊर्मिः = ऊर्मि, वाणी, विश्वास, प्रगति (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्मिणा = ऊर्मियों द्वारा, वाणी, विश्वास, प्रगति द्वारा (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्मिम् - ऊर्मिम् = ऊर्मियों को, वाणी, विश्वास, प्रगति को (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्मैः = ऊर्मि का, वाणी, विश्वास, प्रगति का (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्वम् = ऊर्व को, हिंसा को, वाणी, विश्वास, प्रगति को (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या

दुःख देना, पीड़ा करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्वर्याय - ऊर्वर्याय = ऊर्वर्य के लिए, वरणीय ऊर्व के लिए, वरणीय वाणी, विश्वास, प्रगति के लिए (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना, वृ - वरण करना)।

ऊर्वष्ठीवे - ऊर्वष्ठीवे = ऊर्वष्ठीव में, वाणी, विश्वास, प्रगति में (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना, ष्ठीव् - निकालना। स्था - स्थित होना, ठहरना)।

ऊर्वान् - ऊर्वान् = ऊर्वों को, वाणी, विश्वास, प्रगति को (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्व्याय - ऊर्व्याय = ऊर्व्य के लिए, वाणी, विश्वास, प्रगति के लिए (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, उर् = जाना, चलना)।

ऊर्वध्यम् = ऊर्वध्य को, वाणी, विश्वास, प्रगति को (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

ऊर्वध्यम् = ऊर्वध्य को, वाणी, विश्वास को (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

ऊष्मणा = ऊष्मा द्वारा (ऊष् = जलाना, ताप देना, ऊष्म करना, रोग होना, पीड़ा होना, एकत्र होना)।

ऊष्मण्या = ऊष्मण्य, ऊष्मायुक्त, ऊष्मायोग्य (ऊष् = जलाना, ताप देना, ऊष्म करना, रोग होना, पीड़ा होना, एकत्र होना)।

ऊहामि = तर्क करता हूँ, विचार करता हूँ (ऊह् = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

ए

एक = एक (संख्या)।

एक = एक, विचार (एक = एक संख्या, एक - विचार

करना)।

एकः = एक (संख्या)।

एकताय = एकत के लिए (एक - संख्या, एक - विचार करना)

एकत्रिंशः - एकत्रिंशः = एकतीस, इकतीस (संख्या)।

एकत्रिंशत् - एकत्रिंशत् = एकतीस, इकतीस (संख्या)।

एकत्रिंशता - एकत्रिंशता = एकतीस, इकतीस (संख्या)।

एकत्वम् = एकत्व को, एकता को, विचार को (एक = एक, एक - विचार करना)।

एकनीडम् = एक आश्रय वाला, विचार का आश्रय लेने वाला (एक = एक, एक - विचार करना, निड् - निवास करना, गृह बनाना)।

एकपदीम् = एक पद वाले को, विचारशील प्रगति को (एक = एक, एक - विचार करना, पद् - चलना)।

एकपात् = एकपाद, एक पद वाला, विचारशील प्रगतियुक्त (एक = एक, एक - विचार करना, पद् - चलना)।

एकम् = एक, विचार को (एक = एक, एक - विचार करना)।

एकया = एक द्वारा, विचार को (एक = एक, एक - विचार करना)।

एकरूपम् = एक रूप को, विचारशील रूपयुक्त को (एक = एक, एक - विचार करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

एकविंशः = इक्कीस (एक = एक (संख्या), विंश - बीस (संख्या)।

एकविंशतिः = इक्कीस (एक = एक (संख्या), विंश - बीस (संख्या)।

एकविंशत्या = इक्कीस द्वारा (एक = एक (संख्या), विंश - बीस (संख्या)।

एकविंशतु = इक्कीस (एक = एक (संख्या), विंश - बीस (संख्या)।

एकविंशाभ्याम् = इक्कीस के लिए (एक = एक (संख्या), विंश - बीस (संख्या)।

एकवीरः = एक वीर, एक ही वीर, विशिष्ट वीर, विचारवान्

वीर (एक = एक संख्या, एक - विचार करना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

एकवृषः = एक शक्तिशाली, एक ही पराक्रमी, विचारशील पराक्रमी (एक - एक संख्या, एक - विचार करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

एकशताय = एक सौ के लिए, विचारशील सौ के लिए (एक = एक संख्या, एक - विचार करना, शत - सौ)।

एकशफम् = एक शफ वाले को, विचारशील शफ वाले को (एक = एक संख्या, एक - विचार करना, शप् - शाप देना, आक्रोश करना, कोप करना, शब् - जाना, जानना, पाना)।

एकशफाः = एक शफ वाले, विचारशील शफ वाले (एक = एक संख्या, एक - विचार करना, शप् - शाप देना, आक्रोश करना, कोप करना, शब् - जाना, जानना, पाना)।

एकशितिपात् = एक श्रुति का पालन- रक्षण करने वाले (एक = एक संख्या, एक - विचार करना, शि = सुनना, तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

एकस्मै = एक के लिए (एक = एक संख्या)।

एकस्य = एक का (एक = एक संख्या)।

एकस्या = एक का (एक = एक संख्या)।

एका = एक (एक = एक संख्या)।

एकाकी = एक ही, अकेला (एक = एक संख्या)।

एकाक्षरेण - एकाक्षरेण = एक अक्षर द्वारा (एक = एक संख्या, अ - नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना, क्षर् - टपकना, झरना, गिरना, बहना)।

एकादश = ग्यारह (संख्या)।

एकादशभिः = ग्यारह द्वारा (संख्या)।

एकादशाक्षरेण - एकादशाक्षरेण = एकादश अक्षर द्वारा (एक = एक संख्या, अ - नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना, क्षर् - टपकना, झरना, गिरना, बहना)।

स्वामी शरण

स्वामी शरण

करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)।

एत्यै = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)।

एदम् = यह, यही। (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इदम् - यह, सर्वनाम)।

एदिधिषुः = एदिधिषु के (एध् - बढ़ना, आ-इदि-धिष्, इदि-इन्द् - ऐश्वर्य होना, धि - धारण करना, धिष् - शब्द करना)।

एधताम् = बढ़ाये, दे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एधते = बढ़ाये, दे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एधम् = बढ़ाये, दे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एधि = जाता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एधिः = बढ़ाये, दे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एधिषीमहि = वृद्धि करते हैं (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एधिषीय = बढ़ें, प्रकाश करें, प्रगति करें (एध - बढ़ना, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इध्-इधि-इन्द् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

एधो = वृद्धि (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)।

एनः = यह (सर्वनाम)।

एन-इन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना।

एनत = प्रकाशित करते हैं (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना,

मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एनम् = इसको, इसे (सर्वनाम)।

एनसः = प्रकाशित करने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एना = इससे, इसके द्वारा, इसके साथ (सर्वनाम)।

एना = प्रकाशित करने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एनान् = इनको (सर्वनाम)।

एनान् = प्रकाशित करने वालों को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एनाम् = प्रकाशित करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एनांसि = प्रकाशित करने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एनीम् = प्रकाश को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एने = इसमें, यह (सर्वनाम)।

एने = प्रकाशित करने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एनेन = इनसे (सर्वनाम)।

एनो = यह, ये (सर्वनाम)।

एन्यः = प्रकाशित करने योग्य (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एन्यो = प्रकाशित करने योग्य (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना,

मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)।

एभिः = इनके द्वारा (सर्वनाम)।

एभ्यः = इनके लिए (सर्वनाम)।

एमः = सम्यक् गति, जाते हैं, जानते हैं, प्राप्त करते हैं (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एमन् = जाते हैं, प्रगतिशील, विद्वान्, प्राप्त करने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एमसि = जाते हो, जानते हो, प्रेरित करते हो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एमि = जाता हूँ (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एरिरे = कम्पन किया (ईर - जाना, कम्पन करना, प्रेरणा देना, फेंकना)।

एव = ही (अव्यय)।

एवः = ही (अव्यय)।

एवथा = तान, गति, इच्छा, प्रेरणा करने वाले (ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एवम् = इस प्रकार, इस तरह (अव्यय)।

एवया = सम्पूर्ण गति, जानना, प्राप्ति, विद्वान्, प्रगतिशील द्वारा (ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एवा = ही (अव्यय)।

एवैः = प्रगतिशील, विद्वानों द्वारा (ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

एष = यह (सर्वनाम)।

एष = प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति)।
इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एष = यह (सर्वनाम)।

एषः = यह (सर्वनाम)।

एषः = प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति)।
इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषते = प्रयत्न करते हैं, समीप आते, चाहते हैं (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति)। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषम् = यह, इसको (सर्वनाम)।

एषम् = प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति)।
इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषा = यह (सर्वनाम)।

एषा = प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति)।
इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषाम् = इनका (सर्वनाम)।

एषाम् = प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति)। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषि = प्रयत्न करते हो, समीप जाते हो, आते हो, चाहते हो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषु = इनमें (सर्वनाम)।

एषु = प्रयत्न में, समीप में, चाहने में (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एषो = यह (सर्वनाम)।

एषो = प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एष्टयो = अभीष्ट, प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एष्टा = अभीष्ट, प्रयत्न करने वाले, समीप जाने वाले, आने वाले, चाहने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना। एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)।

एहि = जाओ, प्राप्त करो (ई - जाना)।

ऐ

ऐक्षेताम् - ऐक्षेताम् = देखें (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ईक्ष् - देखना)।

ऐडम् = धारण, घर्षण, सहन करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, एड - धारण करना, घर्षण करना, सहन करना)।

ऐडात् = धारण, घर्षण, सहन करने वाले से (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, एड - धारण करना, घर्षण करना, सहन करना)।

ऐडान् = धारण, घर्षण, सहन करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, एड - धारण करना, घर्षण करना, सहन करना)।

ऐडेन = धारण, घर्षण, सहन करने वाले द्वारा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, एड - धारण करना, घर्षण करना, सहन करना)।

ऐत् = जाये, प्राप्त करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना)।

ऐताम् = इनको (सर्वनाम)।

ऐति = जाता है, प्राप्त करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना)।

ऐन्द्रः - ऐन्द्रः = परम ऐश्वर्यवान्, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, परम ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

ऐन्द्रम् - ऐन्द्रम् = परम ऐश्वर्यवान् को, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न को, परम ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी को (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

ऐन्द्रवायवः - ऐन्द्रवायवः = इन्द्र-वायु सम्बन्धी, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, प्रवाहमान से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भोजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

ऐन्द्रा = परम ऐश्वर्यवान्, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, परम ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना)।

ऐन्द्राग्नः - ऐन्द्राग्नः = ऐन्द्र और आग्नेय, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न और अग्रगति से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, ग्रहण करना, लेना)।

ऐन्द्राग्ना = परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, अग्रगति से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना,

पाना, ग्रहण करना, लेना)।

ऐन्द्राग्नाः - ऐन्द्राग्नाः = परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, अग्रगति से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, ग्रहण करना, लेना)।

ऐन्द्रा-बार्हस्पत्याः = ऐन्द्र और बार्हस्पत्य, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, बृहस्पति से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - गिरना, ऐश्वर्य होना)।

ऐन्द्रा-वैष्णवा = ऐन्द्र और वैष्णव, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, सर्वव्यापी से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

ऐन्द्रावैष्णवाः - ऐन्द्रावैष्णवाः = ऐन्द्र और वैष्णव, परम ऐश्वर्यवान् से उत्पन्न, सर्वव्यापी से उत्पन्न (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

ऐन्द्रो = परम ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी (इन्द्र = परम ऐश्वर्य होना, विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

ऐमि = जाता हूँ (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

ऐरत = प्राप्त, शब्द, ध्वनि करो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

ऐरयः = प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

ऐरयत् = प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते हुए (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

ऐरयन् - ऐरयन् = प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते

हुए (इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

ऐरयन्त = प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते हैं, प्राप्त होते हैं (इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

ऐलः = प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रगति (इल् - जाना, भेजना, फेकना, भेजना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सोना, नींद लेना। एल - प्रेरणा करना, प्रोत्साहन करना)।

ओ

ओकः = निवास (ओक - निवास करना)।

ओकसो = निवास, आह्वान (ओक - निवास करना)।

ओकांसि = निवास (ओक - निवास करना)।

ओक्यः = निवास योग्य (ओक - निवास करना)

ओजः = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजमानम् = ओजयुक्त (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजष्ठेभिः = ओजस्थों द्वारा, ओजवानों द्वारा (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजसा = ओज द्वारा (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजसे = ओज के लिए (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजस्वतीः = ओजवान्, ओजयुक्त (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजिष्ठ = ओजस्थ, अतिशय ओजयुक्त, ओजवान् (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजिष्ठः = ओजस्थ, अतिशय ओजयुक्त, ओजवान् (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजिष्ठम् = ओजस्थ, अतिशय ओजयुक्त, ओजवान् को (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजिष्ठाय = अतिशय ओजयुक्त, ओजिष्ठ के लिए (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजिष्ठो = अतिशय ओजयुक्त (ओज - बल होना,

तेज होना, ओज होना)।

ओजीयः = ओजवान्, अतिशय ओजयुक्त (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजो = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओज्मानम् = ओजमान को (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओण्योः = नायक, ले जाने वाला (ओण् = दूर ले लाना, ले जाना)।

ओतः = आहुत, बुलाया गया (ओ - आह्वान करना, बुलाना)।

ओतः-प्रोतः = आहुत, ओत - प्रोत, स्थित या व्याप्त (ओ - आह्वान करना, बुलाना)।

ओतम् = आहुत को, बुलाये गये को (ओ - आह्वान करना, बुलाना)।

ओदतीनाम् = ओदितों का, आद्र करने वालों का (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

ओद्मन् = आद्र (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)।

ओपशम् = बोने वाले को (उप्-वप् = बोना, बुनना)।

ओम् = परमात्मा (अव्यय)।

ओ३म् - ओ३म् = परमात्मा (अव्यय)।

ओमासः - (ओम्-आसः) = ओम् है (ओम् - आसः, ओम् - परमात्मा, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

ओषतात् = ऊष्म करे (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, ऊष् = जलाना, ताप देना, ऊष्म करना, रोग होना, पीडा होना, एकत्र होना)।

ओषधयः = ओषधियाँ (उषध्-ओषध् - जानना, रोग मुक्त करना, चिकित्सा)।

ओषधीः = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

ओषधीनाम् = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

ओषधीभिः = ओषधियों द्वारा (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

ओषधीभ्यः = ओषधियों के लिए (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

ओषधीषु = ओषधियों में (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

ओषधे = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)।

ओषध्याः = ओषधि का (ओषध्, उषध् = रोगमुक्त करना)।

ओष्टेन = ओष्ठ द्वारा, ऊष्म द्वारा (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, ऊष् = जलाना, ताप देना, ऊष्म करना, रोग होना, पीडा होना, एकत्र होना)।

ओहसे = तर्क के लिए (ओह- उह - मार डालना, नष्ट करना, दुःख देना, सताना, ऊह = अनुमान करना, कल्पना करना, तर्क करना)।

ओहैः = ऊहों द्वारा, तर्कों द्वारा (ओह- उह - मार डालना, नष्ट करना, दुःख देना, सताना, ऊह = अनुमान करना, कल्पना करना, तर्क करना)।

औ

औक्षत् = सिञ्चन करता है (उक्ष् - सिंचन करना, स्वच्छ करना)।

औक्षन् - औक्षन् = सींचते हुए (उक्ष् - सिंचन करना, स्वच्छ करना)।

औद्भिदम् - औद्भिदम् = औद्भिद्, उद्भेद करने वाले को (भिद् - भाग करना, चीरना, तोड़ना)।

औद्भिद्यम् - औद्भिद्यम् = औद्भिद्, उद्भेद करने योग्य को (भिद् - भाग करना, चीरना, तोड़ना)।

औपद्रष्ट्याय - (औपद्रष्ट्याय) = उपद्रष्टा के लिये (उप - समीप, दृश् - देखना)।

औरणोत् - और्णोत् = आवरण-आच्छादन करे (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

और्वभृगुवत् = और्वभृगु के समान, हिंसक को जलाने वाले के समान (उर्व - हिंसा करना, सहन करना, मार डालना या दुःख देना, पीडा करना, भृज् - भूँजना, तलना,

सैंकना, भृज् -भृग् = चमकना, तेज होना, जानना)।

औशजः = प्रभातजन्य (उश्-वश् = इच्छा करना, चाहना)।

औषधयः = ओषधियाँ (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

औषधयो = ओषधियाँ (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

औषधीः = ओषधियाँ (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

औषधीभ्यः = ओषधियों के लिए (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

औषधीषु = ओषधियों में (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

औषधे = हे ओषधि, ओषधियों में (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

औष्णिहाय - औष्णिहाय = औष्णिह के लिए (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, ऊष् = जलाना, ताप देना, ऊष्म करना, रोग होना, पीडा होना, एकत्र होना)।

औहताम् = ऊहन करें, कल्पना करें, तर्क करें (ऊह् = अनुमान करना, कल्पना करना, तर्क करना)।

क

क = कौन (सर्वनाम)।

कः = कौन (सर्वनाम)।

कः = करो (कृ - करना - वैदिक प्रयोग)।

ककरान् = गर्वित, चञ्चल, प्यासों को (कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)।

ककाटम् = गर्वित, चञ्चल, प्यासा को (कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)।

ककुत् = गर्वित, चञ्चल, प्यासा (कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)।

ककुत्पतिः = गर्वित पति, गर्वितों का ईश (कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

ककुप् = गर्वित, चञ्चल, प्यासा (कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)।

ककुभः = ककुभ, गर्वित, चञ्चल, प्यासा, धारण करने वाला (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुभ - धारण करना, घर्षण करना)।

ककुभम् = ककुभ, गर्वित, चञ्चल, प्यासा, धारण करने वाले को (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुभ - धारण करना, घर्षण करना)।

ककुभा = ककुभ, गर्वित, चञ्चल, प्यासा, धारण करने वाला (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुभ - धारण करना, घर्षण करना)।

ककुभाय = ककुभ के लिए, गर्वित, चञ्चल, प्यासा, धारण करने वाले के लिए (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुभ - धारण करना, घर्षण करना)।

ककुभे = ककुभ में, ककुभ के लिए, गर्वित, चञ्चल, प्यासा, धारण करने वाले के लिए (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुभ - धारण करना, घर्षण करना)।

ककुहासो = गर्व को छोड़ने वाले, विद्वान्, वाणी, विद्या का हास, प्रसन्नता (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुह - उगना, आश्चर्य या चमत्कार दिखाना, मोहित करना, कु - शब्द करना, कविता करना, कु - शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौरे के समान शब्द करना, हन् - मारना, हा - छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना, हस - हँसना, टट्टा करना)।

ककटः - कक्कटः = भ्रमण करने वाला, हसने वाला (कक्क - भ्रमण करना, हँसना, मुस्कराना)।

कक्षाय - कक्षाय = कक्ष के लिए (कक्ष् - धारण करना, घर्षण करना)।

कक्षाणाम् - कक्षाणाम् = कक्षों का (कक्ष् - धारण करना, घर्षण करना)।

कक्षीवन्तम् - कक्षीवन्तम् = कक्षीवान्, कक्षीयुक्त (कक्ष् - धारण करना, घर्षण करना)।

कक्षेषु - कक्षेषु = कक्षों में (कक्ष् - धारण करना, घर्षण करना)।

कक्ष्यप्रा - कक्ष्यप्रा = कक्ष्य को पूर्ण करने वाला

(कक्ष - धारण करना, घर्षण करना, प्रा - पूर्ण करना)।

कक्षाय = कक्ष के लिए (कक्ष - धारण करना, घर्षण करना)।

कङ्कः - कंकः = कंक, प्रगतिशील (कङ्क - उत्पाटन करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना)।

कङ्काः = कंकगण, प्रगतिशील (कङ्क - उत्पाटन करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना)।

कच्च = कुछ भी (अव्यय)।

कच्चित् = किसी, कोई (अव्यय)।

कञ्चित् = किसी को, क्या (सर्वनाम)।

कण्टकीकारीम् = कण्टकीकारी को (कण्ट - पीड़ा होना, जाना)।

कण्ठ्यम् = कण्ठ्य को (कण्ट - निगलना, शब्द करना)।

कण्वः = कण्व, शब्दकर्ता (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)।

कण्ववत् = कण्व के समान (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)।

कण्वस्य = कण्व का, शब्द करने वाले का (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)।

कण्वाः = कण्वगण (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)।

कण्वासः = अनेक कण्व, कण्वगण (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)।

कण्वेषु = कण्वों में, शब्दकर्ता (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)।

कत् = कितना (सर्वनाम)।

कतमः = कितना (सर्वनाम)।

कतमत् = कितना (सर्वनाम)।

कतमस्मै = कितनों के लिए (सर्वनाम)।

कतमस्याः = कितनों का (सर्वनाम)।

कतरेण = किसके द्वारा (सर्वनाम)।

कति = कितना (सर्वनाम)।

कतिधा = कितने प्रकार से (सर्वनाम)।

कथा = किस प्रकार (सर्वनाम)।

कथा = कथन (कथ् - कहना)।

कदा = कब (सर्वनाम)।

कदाचन = कभी (सर्वनाम)।

कद्रुवः = भ्रमित, व्याकुल (कद - भ्रमित होना, घबरा जाना, व्याकुल होना)।

कनिक्रदत् - कनि-क्रदत् = प्रकाश करते हुए, व्याप्त होते हुए (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, जाना, जानना, पाना, क्रन्द - पुकारना, जोर से बुलाना, रोना, क्रन्द - घबराना, दुःखी होना, क्रन्द - निरन्तर होना, बुलाना, पुकारना, कृ - करना)।

कनिक्रन्ति = प्रकाश करते हैं, व्याप्त होते हैं, प्राप्त करते हैं, शब्द करते हैं (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, जाना, जानना, पाना, क्रन्द - पुकारना, जोर से बुलाना, रोना, क्रन्द - घबराना, दुःखी होना, क्रन्द - निरन्तर होना, बुलाना, पुकारना, कृ - करना)।

कनिष्ठाय = कनिष्ठ के लिए, छोटे के लिए (सर्वनाम)।

कनिष्ठाय = प्रकाशमान के लिए, व्यापक के लिए (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)।

कनीनकः = कनीनक, प्रकाशक (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)।

कनीनकम् = कनीनक, प्रकाशमान को (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)।

कनीनकाभ्याम् = प्रकाशमान युगल के लिए (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)।

कनीनाम् = प्रकाशमानों का (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)।

कन्याः = कन्या, प्रकाशयोग्य (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)।

कपर्दिनः - कपर्दिनः = कम्पन करने वाले, कम्पित

करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कपर्दिने = कम्पन करने वाले में, कम्पित करने वाले में (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कपार्दिने = कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कपालः = कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कपालो = कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कपिञ्जलः = कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना, जल - तेजस्वी होना, तेजस्वी करना, सम्पन्न होना, ढकना, प्यास बुझाना)।

कपिञ्जलान् = कपिञ्जलों को, कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले को (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना, जल - तेजस्वी होना, तेजस्वी करना, सम्पन्न होना, ढकना, प्यास बुझाना)।

कपोतः = कपोत, कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कपोतान् = कपोतों को, कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

कम् = किसको (सर्वनाम)।

कयस्यचित् = किसी का (कयस्यचित्-कश्चित् - किसी का (सर्वनाम)।

कयस्यचित् = विद्वान् का (कयस्यचित्-कश्चित् - किसी का, कि - जानना समझना)।

कया = किससे (सर्वनाम)।

कयादो = विद्या-भोजी (कि - जानना समझना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

करः = करने वाला (कृ - करना)।

करत् = करते हुए (कृ - करना)।

करत = करता है (कृ - करना)।

करतः = करते हुए, करते हैं (कृ - करना)।

करताम् = करें (कृ - करना)।

करते = करता है (कृ - करना)।

करम्भः = करम्भ, कर्म का प्रकाश (कृ - करना, भा - प्रकाश करना, भृ - भरण करना, भरना)।

करम्भस्य = करम्भ का, कर्म के प्रकाश का (कृ - करना, भा - प्रकाश करना, भृ - भरण करना, भरना)।

करम्भिणम् - करम्भिणम् = करम्भी को, कर्म के प्रकाश युक्त को (कृ - करना, भा - प्रकाश करना, भृ - भरण करना, भरना)।

करम्भेण - करम्भेण = करम्भ द्वारा, कर्म के प्रकाश द्वारा, कर्मशीलता के तेज द्वारा, (कृ - करना, भा - प्रकाश करना, भृ - भरण करना, भरना)।

कराम् = करते हैं (कृ - करना)।

करामहे = करते हैं (कृ - करना)।

करिष्यतः = करेंगे (कृ - करना)।

करिष्यथः = करेंगे (कृ - करना)।

करिष्या = करोगे (कृ - करना)।

करो = करने वाला, करो (कृ - करना)।

करोति = करता है (कृ - करना)।

करोतु = करो (कृ - करना)।

कर्कन्धु = कर्कन्धु, कठोरता को धुनने वाला, कम्पित-क्षुब्ध करने वाला (कर्क - कठोरता करना, हँसना, धु-धू - कम्पन करना, कम्पित करना, नोचना, क्षुब्ध करना)।

कर्कन्धुभिः = कर्कन्धु द्वारा, कठोरता को धुनने वाले, कम्पित-क्षुब्ध करने वाले द्वारा (कर्क - कठोरता करना, हँसना, धु-धू - कम्पन करना, कम्पित करना, नोचना, क्षुब्ध करना)।

कर्कन्धूनि - कर्कन्धूनि = कर्कन्धु, कठोरता को धुनने वाले, कम्पित-क्षुब्ध करने वाले (कर्क - कठोरता करना, हँसना, धु-धू - कम्पन करना, कम्पित करना, नोचना, क्षुब्ध करना)।

कर्णः - कर्ण = कर्ण (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णम् - कर्णम् = कर्ण को (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णयोः - कर्णयोः = कर्णों का (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णा = कर्ण (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णाः - **कर्णाः** = कर्ण (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णाभ्याम् - **कर्णाभ्याम्** = कर्णों के लिए (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णे = कर्ण में (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णेभिः - **कर्णेभिः** = कर्णों द्वारा (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्णो - **कर्णो** = कर्ण (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्तम् = कर्तन, छेदन को, कर्तन, छेदन करो (कृत् - काटना, छेदना, घेरना, कृ - करना)।

कर्तवे = कर्तन, छेदन के लिए, करने के लिए (कृ - करना)।

कर्तात् - **कर्तात्** = करे, करते हैं (कृ - करना)।

कर्तोः - **कर्तोः** = कर्ता का (कृ - करना)।

कर्तन - **कर्तन** = करे, करते हैं (कृ - करना)।

कर्त्तारम् = करने वाले को, कर्ता को (कृ - करना)।

कर्त्तृभिः = कर्ताओं द्वारा (कृ - करना)।

कर्त्त्वम् = कर्ता को, करने वाले को (कृ - करना)।

कर्म - **कर्म** = कर्म, कार्य (कृ = करना)।

कर्मकृतः - **कर्मकृतः** = कर्मशीलों ने (कृ - करना)॥

कर्मकृत्वा = कर्म करके (कृ - करना)।

कर्मणः = कर्म का (कृ - करना)।

कर्मणा = कर्म द्वारा (कृ - करना)।

कर्मणे - **कर्मणे** = कर्म के लिए (कृ - करना)।

कर्मणो = कर्म का (कृ - करना)।

कर्मण्यम् - **कर्मण्यम्** = कर्मण्य को, कर्मशीलों को, कर्मों को (कृ = करना)।

कर्मण्याम् - **कर्मण्याम्** = कर्मशील में (कृ = करना)।

कर्मन् = कर्म (कृ = करना)।

कर्मभिः - **कर्मभिः** = कर्मों द्वारा (कृ = करना)।

कर्मम् = कर्म को (कृ = करना) ॥52

कर्मसु - **कर्मसु** = कर्मों में (कृ = करना)।

कर्माणि - **कर्माणि** = कर्मों को, कर्म (कृ - करना)।

कर्मारम् - **कर्मारम्** = कर्मशील को (कृ-करना)।

कर्मारभ्यः - **कर्मारभ्यः** = कर्मशीलों के लिए (कृ-करना)।

कलविङ्कः - **कलविकः** = शब्दकर्ता, गणनाकार (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना, विङ्क - गति करना, बोना)।

कलविङ्कान् - **कलविकान्** = शब्द-वपन, शब्दकर्ता, गणनाकारों को (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना, विङ्क - गति करना, बोना)।

कलशम् = कलश को (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

कलशान् = कलशों को (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

कलशे = कलश में (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

कलशेषु = कलशों में (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

कल्पताम् = कल्पना करें, बनायें, रचना करें (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पन्ताम् = कल्पना करें, बनायें, रचना करें (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पमाना = कल्पना करें, बनायें, रचना करें (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पमानो = समर्थ, रचनाशील (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पयन्ती = समर्थ, रचनाशील (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पयस्व = कल्पना करें, बनायें, रचना करें (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पयाति = कल्पना करता है, बनाता है, रचना करता है (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पस्व = कल्पना करें, बनाओं, रचना करें (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पिनम् - कल्पिनम् = कल्पिन को, कल्पना करने वाले, रचनाशील को (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पेताम् = कल्पना करें, बनायें, रचना करें (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्पेथाम् = कल्पना करें, बनायें, रचना करें (कल्प - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।

कल्माषः = सृजन-विनाशक (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना, मष् - हिंसा करना)।

कल्माषाः = सृजन-विनाशक (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना, मष् - हिंसा करना)।

कल्याणीम् = कल्याणी को (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

कल्याण्यः = कल्याणी (कल - गणना, करना, गिनना,

गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

कवचिने = कवि का चयन करने वाले (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, चि - चयन करना, एकत्र करना)।

कवयः = बोलने वाले, कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवये = कवि के लिए (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवयो = बोलने वाले, कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवषः = कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवष्यः = कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कविः = ज्ञानी, कवि (कु - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कविक्रतुम् - कविक्रतुम् = शब्द करने वाले (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, कृ - करना)।

कविच्छदा = वाणी को आच्छादित करने वाले, कवि-आच्छादन करने वाले (कु - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)।

कविना = ज्ञानियों, कवियों द्वारा (कु - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कविम् = कवि को (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कविशस्ता = कवि की स्तुति करने वाले (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, शंस - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

कवी = कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवीनाम् = ज्ञानियों का, कवियों का (कु - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवे = हे कवि (कु, क्व = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कवेः = कवि का (कु, क्व = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कव्यवाहन = शब्द, वाणी को वहन करने वाले, विद्वान् (कु, क्व = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, वह = वहन करना, ले जाना)।

कव्यवाहनः = शब्द, वाणी को वहन करने वाले, विद्वान् (कु, क्व = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, वह = वहन करना, ले जाना)।

कव्यवाहनाय = कव्यवाहन के लिए, शब्द, वाणी को वहन करने वाले, विद्वान् (कु, क्व = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, वह = वहन करना, ले जाना)।

कव्या = कवि योग्य, वर्णन योग्य (कु, क्व = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कशः = कश, शासन, प्रकाश, प्रगति, दण्ड (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)।

कशया = कशा द्वारा, शासन, प्रकाश, प्रगति, दण्ड द्वारा (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)।

कशा = कशा, शासन, प्रकाश, प्रगति, दण्ड (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)।

कशान् = कशों को (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)।

कश्चन - कश्चन = कोई (सर्वनाम)।

कश्यपः = कश्य का पालन-रक्षण करने वाले, प्रकाशनीय, शासनीय का पालन-रक्षण करने वाले (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

कश्यपस्य = कश्यप का (कश - प्रकाश होना, शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)।

कस्मा = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)।

कस्मात् = किससे (सर्वनाम)।

कस्मिन् = किस में (सर्वनाम)।

कस्मै = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)।

कस्य = किसका (सर्वनाम)।

कस्याः = किसका (सर्वनाम)।

कस्याश्चित् = किसी का (सर्वनाम)।

का = कौन (सर्वनाम)।

काः = कौन (सर्वनाम)।

कटः = कट, वर्षा, प्रगति (कट् - बरसना, घेरना, जाना, चलना, समीप जाना)।

काट्याय = काट्य के लिए, वर्षा, प्रगति के लिए (कट् - बरसना, घेरना, जाना, चलना, समीप जाना)।

काण्डात् = काण्ड से (कण्ड् - विभाग करना, अलग करना, दुःख-आनन्द में लीन होना, बढ़ना)।

कानि = क्या, कौन (सर्वनाम)।

कामः = कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामदुघाः = कामना, इच्छा का दोहन करने वाले (कम् - चाहना, इच्छा करना, दुह् - दुहना, दोहन करना, लेना)।

कामदुधे = कामना, इच्छा का दोहन करने वाले (कम् - चाहना, इच्छा करना, दुह् - दुहना, दोहन करना, लेना)।

कामधरणम् = कामनाओं का धारण (कम् - चाहना, इच्छा करना, धृ - धारण करना)।

कामधुक्षः - कामधुक्षः = कामनाओं को जीवन देने वाला, प्रकाशित करने वाला (कम् - चाहना, इच्छा करना, धुक्ष = दीप्त करना, प्रकाशित करना, जीवन होना)।

कामम् = कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय)।

कामम् = कामना, इच्छा को (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामयते = कामना, इच्छा करता है (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामयन्ते = कामना, इच्छा करते हैं (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामया = कामी द्वारा, इच्छुक द्वारा (कम् - चाहना,

इच्छा करना)।

कामाः = कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामान् = कामनाओं, इच्छाओं को (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामाय = काम के लिए, कामना के लिए, इच्छा के लिए (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामयते = कामना, इच्छा करते हैं (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामे = कामना, इच्छा में (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

कामेन = कामना द्वारा (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

काम्पीलवासिनीम् = काम्पीलवासिनी को, कम्पनशीलों में निवास करने वाली को (कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना, वस् - रहना, वास करना)।

काम्यम् = कमनीय, कामना, इच्छा योग्य को (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

काम्या = कमनीय, कामना, इच्छा योग्य (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

काम्याः = कमनीय, कामना, इच्छा योग्य (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

काम्ये = कमनीय, कामना, इच्छा योग्य में (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

काय = स्तुति, प्रशंसा, स्तोता, स्तुति करने वाला (कै-काय् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

कायाः = स्तोता, स्तुति करने वाला (कै-काय् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

कारवः = करने वाला, कराने वाला (कृ - करना)।

कारवो = करने वाला, कराने वाला (कृ - करना)।

कारान् = कारों को, करने वालों को, कराने वालों को (कृ - करना)।

कारिणम् = करने वाले को, कर्त्ता को (कृ - करना)।

कारिणाम् = कारियों का, कर्त्ताओं का (कृ - करना)।

कारिणे = करने वाले के लिए, कर्त्ता के लिए (कृ - करना)।

करितिकः = करने वाला (कृ - करना)।

कारिम् = कारी को, कर्त्ता को (कृ - करना)।

कारु = कारु, कर्त्ता (कृ = करना)।

कारेभिः = करने वालों द्वारा, कर्त्ताओं द्वारा (कृ - करना)।

कारोः = कारु का, करने वालों का, कर्त्ताओं का (कृ = करना)।

कारोतरः = अधिकतर करने वाला (कृ - करना)।

कारोतरेण = कारोतर द्वारा, अधिकतर करने वाले द्वारा (कृ - करना)।

कार्षिः - कार्षि = कृषि करने वाला (कृ - करना)।

कालका = उपदेशक, काल गणना वाला (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना, काल - उपदेश करना, काल-गणना करना)।

काव्यम् = काव्य (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

काव्ययोः = काव्यों के (कु-कव् - कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

काव्या = काव्य (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

काव्येन = काव्य द्वारा (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

काव्येना = काव्य द्वारा (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

काव्यैः = काव्यों द्वारा (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

काष्ठाः = प्रकाशक (कास् = प्रकाश करना)।

काष्ठाम् = प्रकाशक को (कास् = प्रकाश करना)।

काष्ठासु = प्रकाशकों में (कास् = प्रकाश करना)।

किः = कोई, किसी (अव्यय)।

किकिदीविना = ज्ञानी, चिकित्सक (कित् = ज्ञान होना, निवास करना, रोग निवारण करना, जानना, वक्रगति करना)।

किञ्च = कुछ भी (सर्वनाम)।

किञ्चन = कोई। (किम् + चन, सर्वनाम)।

कितवः = कितव, ज्ञानी, चिकित्सक (कित् - निवास करना, रोग निवारण करना, जानना, वक्रगति करना)।

कितवम् = ज्ञानी, चिकित्सक को (कित् = ज्ञान होना, निवास करना, रोग निवारण करना, जानना, वक्रगति करना)।

किन्त्वः = ज्ञानी, चिकित्सक (कित् = ज्ञान होना, निवास करना, रोग निवारण करना, जानना, वक्रगति करना)।

किम् = क्या (सर्वनाम)।

किम् चन = कुछ भी (सर्वनाम)।

किमीदिनम् = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु को (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))।

किरातम् = किरात को, विक्षेपी को, अल्पायु को, हिंसक को (कृ - करना, कृ-किर् - फेंक देना, विक्षेप करना, छिड़कना, वयहानि होना, हिंसा करना)।

किरामि = दूर करता हूँ, विक्षेप करता हूँ, अल्पायु करता हूँ, हिंसा करता हूँ (कृ-किर् - फेंक देना, विक्षेप करना, छिड़कना, वयहानि होना, हिंसा करना)।

किरिकेभ्यः = किरिकों के लिए, विक्षेप के लिए, अल्पायु के लिए, हिंसकों के लिए (कृ-किर् - फेंक देना, विक्षेप करना, छिड़कना, वयहानि होना, हिंसा करना)।

किर्मिरम् - किर्मिरम् = किर्मिर को, विक्षेपी को, अल्पायु को, हिंसक को (कृ - करना, कृ - विकीर्ण करना, विखेरना, फेंकना, विक्षेप करना, छिड़कना, वयहानि होना, हिंसा करना)।

किल = निश्चय ही (सर्वनाम)।

किलासम् = किलास को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना)।

किल्पयन्ती = श्वेत करने वाली (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना)।

किल्विषम् - किल्विषम् = किल्विष को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना, विष् - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, व्याप्त होना, फैलना, सींचना)।

किंशिलाय = किंशिल के लिए (कि = जानना समझना। शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना।

शिल् - शिला होना, बीनना, उज्छन करना, एक एक करके बीनना)।

की = कोई, किसी (अव्यय)।

कीकसा = कीकस, विद्वान् (कि = जानना, समझना)

कीनाशम् = विद्वान् को (कि - जानना)।

कीनाशा = विद्वान् (कि - जानना)।

कीनाशाः = विद्वान् (कि - जानना)।

कीम् = तो (अव्यय, निपात)।

कीर्तिम् = कीर्ति (कीर्त - नाम लेना)।

कीलाल = बाँधने वाला, कील लगाने वाला, भेजने वाला, खेलने वाला (कील् = बाँधना, कील लगाना, किल् = श्वेत होना, भेजना, खेलना)।

कीलालः = बाँधने वाला, कील लगाने वाला, भेजने वाला, खेलने वाला (कील् = बाँधना, कील लगाना, किल् = श्वेत होना, भेजना, खेलना)।

कीलालपे = बाँधने वाला, कील लगाने वाला, भेजने वाला, खेलने वाला (कील् = बाँधना, कील लगाना, पा - रक्षा करना, पालन करना)।

कीलालम् = बाँधने वाला, कील लगाने वाला, भेजने वाला, खेलने वाला (कील् = बाँधना, कील लगाना, किल् = श्वेत होना, भेजना, खेलना)।

कीलालाय = कीलाल के लिए, बाँधने, कील लगाने, भेजने, खेलने वाले के लिए (कील् = बाँधना, कील लगाना, किल् = श्वेत होना, भेजना, खेलना)।

कृकलासः = कर्मशील को आलिंगन करने वाला, कर्मशील के साथ रमण करने वाला, खेलने वाला (कृ = करना, लस् = आलिंगन करना, रमण करना, खेलना)।

कृकवाकुः = कर्मशील से संवाद करने वाला (कृ = करना, वच् = बोलना, कहना)।

कृच्छ्रेश्रितः = कठिनाई में सेवा करने वाले (कृत - कतरना, काटना, घेर लेना, वेष्टित करना, श्रि - सेवा करना, चाकरी करना)।

कृणवत् = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् (कृ = करना, कृण् - सुनना, करना, हिंसा करना)।

कृणवसे = करते हो (कृ = करना)।

कृणवामा = करें (कृ = करना)।
 कृणवाथ = करो (कृ = करना)।
 कृणु = करो (कृ = करना)।
 कृणुत = करो (कृ - करना)।
 कृणुतम् = करो (कृ = करना)।
 कृणुता = करो (कृ - करना)।
 कृणुताम् = करो (कृ = करना)।
 कृणुते = करता है। (कृ = करना)
 कृणुध्वम् = करो (कृ = करना)।
 कृणुषु = करो (कृ = करना)।
 कृणुषे = करता है (कृ = करना)।
 कृणुष्व = कीजिये (कृ - करना)।
 कृणुहि = करो (कृ = करना)।
 कृणोति = करता है (कृ = करना)।
 कृणोतु = करो (कृ = करना)।
 कृणोमि = करता हूँ (कृ = करना)।
 कृणोषि = करते हो (कृ = करना)।
 कृण्महे = करते हैं (कृ = करना)।
 कृण्वतः = करने वाले (कृ = करना)।
 कृण्वते = करने वाले के लिए, कर्मशील के लिए (कृ = करना)।
 कृण्वन् = करने वाला, करते हुए (कृ = करना)।
 कृण्वन्तम् = करने वाले को, करते हुए को (कृ = करना)।
 कृण्वन्ति - कृण्वन्ति = करते हैं (कृ - करना)।
 कृण्वन्तु = करो (कृ = करना)।
 कृण्वन्तो = करते हुए, करने वाले (कृ = करना)।
 कृण्वाना = करने वाला, करते हुए (कृ = करना)।
 कृतः = किया (कृ = करना)।
 कृतम् = कृतित्व, किया हुआ (कृ = करना)।
 कृतस्य = किये हुए का (कृ = करना)।
 कृता = किया हुआ, बनाया (कृ = करना)।
 कृताः = किया (कृ = करना)।

कृताय = कृत के लिए (कृ - करना)।
 कृतीनाम् = कृतियों का (कृ = करना)।
 कृते = कृत के लिए (कृ - करना)।
 कृतेन = कृत द्वारा (कृ - करना)।
 कृतो = किया (कृ = करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्तिम् = कृत को (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्नुम् = कृत को, करने वाले को (कृ = करना)।
 कृत्तिवासा - कृत्तिवासा = कर्म-वासी, कर्मशील (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना, वस- निवास करना)।
 कृत्यानि = कृत्य, कृत्यों को (कृ - करना)।
 कृत्याम् = कृत्य को (कृत - कतरना, काटना, कृ - करना)।
 कृत्वसु = कर्म-वासों में (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना, वस- निवास करना)।
 कृत्वा = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्वाय = कृत्व के लिए, कृतित्व के लिए (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्वी = करने वाला (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्व्यः = कर्तव्य (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्व्यो = कर्तव्य (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)।
 कृत्स्न = कृत्स्न, पूर्ण (अव्यय)।
 कृत्स्न = कृत्स्न, कर्तन, आच्छादन (कृत - कतरना, काटना, घेर लेना, वेष्टित करना)।
 कृत्स्नायतया = कृत्स्न-आयत द्वारा, पूर्ण प्राप्ति द्वारा, आच्छादन द्वारा (कृत - कतरना, काटना, घेर लेना, वेष्टित करना)।
 कृथ = करो (कृ - करना)।
 कृदरम् = कृदर को, कृति को (कृत - कतरना, काटना, कृ - करना)।
 कृधि = करो (कृ = करना)।

कृधि: = करो (कृ = करना)।

कृधु = करो (कृ = करना)।

कृन्तामि = घेरता हूँ, कतरता हूँ (कृन्त = घेरना, कतरना)।

कृपा = कृपा द्वारा, सामर्थ्य द्वारा (कृप् - कृपा करना, दया करना, सामर्थ्य होना, कल्पना करना, विचार करना)।

कृपे = कृपा, दया में (कृप - कृपा करना, दया करना, कल्पना करना, विचार करना)।

कृमि: = कृमि, कर्मशील (कृ - करना)।

कृविम् = मारने को, दुःख देने को (कृवि - मार डालना, सताना, दुःख देना)।

कृशानु: = कृशानु (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना)।

कृशानो = कृशान, कृश, सूक्ष्म (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना)।

कृषन्तु = कृष करो, कर्षण करो (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृषि: = कृषि, कर्षण (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृषी: = कर्षण, रेखांकन (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, रेखा करना)।

कृष्टय: = कृष्टय, कर्षण, रेखांकन (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, रेखा करना)।

कृष्टिषु = कृषि में, कर्षितों में, रेखांकनों में (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, रेखा करना)।

कृष्टुपच्या: = कृषिपाचन, कृषि-पचनीय (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृष - कृषिकर्म करना, जोतना, हल चलाना, रेखा करना, पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

कृष्ण: = कृष्ण, आकर्षण (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णगर्भा = कृष्णगर्भ वाले, आकर्षणयुक्त (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना, गृह - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना,

चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

कृष्णग्रीवः - कृष्ण-ग्रीवः = कृष्ण-ग्रीव, कृष्ण ग्रीवा वाला (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना, गृ = समझना, जानना, निगलना, बोलना, समझाना, बताना)।

कृष्णग्रीवाः - कृष्ण-ग्रीवाः = कृष्ण-ग्रीव, कृष्ण ग्रीवा वाले (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना, गृ = समझना, जानना, निगलना, बोलना, समझाना, बताना)।

कृष्णम् = कृष्ण को, आकर्षण को (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णा = कृष्णा, आकर्षण (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णाः = कृष्ण, आकर्षण (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णाज्जि: = कृष्ण-अज्जि वाला, आकर्षण का प्रकाश, आकर्षक स्वच्छता, प्रकाश करने वाले (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना। अज्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)।

कृष्णाज्जिरः - कृष्णाज्जिरः = कृष्णाज्जिर, आकर्षक स्वच्छता, प्रकाश करने वाले (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना, अज्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)।

कृष्णान् = कृष्णों को (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णाम् = कृष्णा को (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णाय = कृष्ण के लिए (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णेन = कृष्ण से, कृष्ण द्वारा (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्णो = कृष्ण, आकर्षक (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्यै = कृषि के लिए (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)।

कृष्ण = करो (कृ = करना)।

कुक्कुट = लोभी, लेने वाला (कुक्-कुक् = ललचाना, लेना)।

कुक्कुटो = लोभी, लेने वाला (कुक्-कुक् = ललचाना, लेना)।

कुक्कूननानाम् = लोभियों का, लेने वालों का (कुक्-कुक् = ललचाना, लेना)।

कुक्षये = पूर्ण करने वाले, भरने वाले के लिए (कुक्ष = पूर्ण करना, भरना)।

कुक्षा = पूर्ण करने वाले, भरने वाले (कुक्ष = पूर्ण करना, भरना)।

कुक्षिभ्याम् - कुक्षिभ्याम् = कुक्षियों के लिए, पूर्ण करने वालों के लिए, भरने वालों के लिए (कुक्ष = पूर्ण करना, भरना)।

कुक्ष्यो = पूर्ण करने वाले, भरने वाले (कुक्ष = पूर्ण करना, भरना)।

कुचरः = कुचर, आकुञ्चन, स्वच्छ, लेखनकर्ता, चोर, कुत्सित आचरण करने वाले (कु - कुत्सित, चर - चलना, आचरण करना, कुच् - आकुञ्चन होना, लपेटना, स्वच्छ करना, लिखना, चुराना)।

कुचरो - कुचरो = कुचर, आकुञ्चन, स्वच्छ, लेखनकर्ता, चोर, कुत्सित आचरण करने वाले (कु - कुत्सित, चर - चलना, आचरण करना, कुच् - आकुञ्चन होना, लपेटना, स्वच्छ करना, लिखना, चुराना)।

कुटरुः = निवास, कोटर (कुट् = गति करना, पोला करना, खोखला करना, कुटी बनाना)।

कुटरुन् = निवासों को, कोटरों को (कुट् = गति करना, पोला करना, खोखला करना, कुटी बनाना)।

कुतः = कहाँ से (सर्वनाम)।

कुड्वाची = बालक्रीडा के समान बोलने वाले (कुड् = बालक के समान खेलना, एकत्र करना, खाना)।

कुणारुम् = कुणारु को, शब्दकर्ता को, विद्वान को (कुण - शब्द करना, दानादिक से संरक्षण करना, सम्भालना, झगड़ना, दुःख में रहना। कुण - खेलना, नृत्य करना, आमंत्रण करना, अभिमुख वार्ता, संकोच, पूर्ण करना, उपदेश

करना, बोलना, बुलाना)।

कुण्डपायः = कुण्ड-पालक, कुण्डगति, असत्यगति, कुण्डितों का पालक, दहन-रक्षक, रक्षकों का रक्षक (कुण्ड - कुण्डित करना, दुःखादि से कुण्डित होना, कुण्ड - जलना। कुण्ड - असत्य बोलना, कुण्ड - रक्षा करना, संभालना, पय - चलना, जाना, रक्षा करना, पालन करना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

कुण्डणाची = कुण्डगति, असत्यगति, रक्षक, पालक (कुण्ड - कुण्डित करना, दुःखादि से कुण्डित होना, कुण्ड - जलना। कुण्ड - असत्य बोलना, कुण्ड - रक्षा करना, संभालना)।

कुतश्चित् = कहीं से, सबसे (अव्यय)।

कुन्था = हिंसा, युद्ध (कुन्थ् = हिंसा करना, वध करना, पीडा करना)।

कुब्जम् = कुब्ज (कुप् - क्रोध करना, कुम् - धारण करना, घर्षण करना)।

कुमारम् = कुमार को, बालक को, चाहने वाले को, इच्छाओं को (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)।

कुमाराः = कुमार, चाहने वाले, इच्छुक (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)।

कुमारी = कुमारी, इच्छुक (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)।

कुमारी-पुत्रम् = कुमारी पुत्र को (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

कुमारेण = कुमार द्वारा (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)।

कुम्भः = कुम्भ (कुम्भ् = आच्छादन करना)।

कुम्भी = कुम्भी (कुम्भ् = आच्छादन करना)।

कुम्भीभ्याम् = कुम्भीद्वय द्वारा, के लिए, से (कुम्भ् = आच्छादन करना)।

कुयवम् = कुयव को, कुयोग को (कु = शब्द करना,

कविता करना। कु = शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौरे के समान शब्द करना। कु - बुरा, यु = मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना। यु = अपमान करना, दोष लगाना, निन्दा करना। यु = बांधना, बन्धन करना, गूँथना)

कुरु = करो (कृ- करना)।

कुरुमः - कुरुमः = करते हैं (कृ = करना)।

कुरुवते - कुरुवते = करते हैं, करने वाले के लिए (कृ = करना)।

कुरुवन् - कुरुवन् = करता हुआ (कृ = करना)।

कुरुवन्ति - कुरुवन्ति = करते हैं (कृ = करना)।

कुलायिनी = कुलायिनी, कुलवती (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, अपने के समान रहना, गिनना)।

कुलालेभ्यः = कुलालों के लिए (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)।

कुलीकाः = कुलीक (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, अपने के समान रहना, गिनना)।

कुलीपयः = कुल-पालक (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना, पय् - जाना, चलना, बहना, रक्षा करना, पालन करना)।

कुलीपयान् = कुल-पालकों को (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना, पय् - जाना, चलना, बहना, रक्षा करना, पालन करना)।

कुलुङ्गः = कुल-गामी (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना, गम् - जाना)।

कुलुङ्गान् = कुल-गामियों को (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना, गम् - जाना)।

कुलुञ्चानाम् = कुलुञ्चों का (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना, कु - बुरा, लुञ्च् - छीलना, उखाड़ना)।

कुल्याः = कुल्या, कुल योग्य (कुल् = आवरण होना,

एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)।

कुल्या = कुल्या, कुल योग्य (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)।

कुल्याय = कुल्या के लिए (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)।

कुवलम् = कुवल, कुत्सित आवरण को (कु - कुत्सित, अनुचित। कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना। वल् = आवरण होना, आच्छादित करना, घेरना, जाना, अंकुरित होना, विस्तार करना)।

कुवलैः = कुवलों, कुत्सित आवरण द्वारा (कु - कुत्सित, अनुचित। कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना। वल् = आवरण होना, आच्छादित करना, घेरना, जाना, अंकुरित होना, विस्तार करना)।

कुवित् = बहुत (अव्यय)।

कुवित् = कवि, शब्दज्ञ, शब्दज्ञानी, शब्द को जानने वाला (कु - कुत्सित, अनुचित। कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कुवित्सस्य = कवि, शब्दज्ञ, शब्दज्ञानी, शब्द को जानने वाले का (कुवित् = बहुत (अव्यय)।

कुष्ठाभ्याम् = वाणी में स्थित द्वारा, कवि द्वारा, परीक्षित द्वारा, के लिए, से (कुष् - बाहर करना, घिसना, परीक्षा करना, घेरना, घर बनाना, कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, स्था - ठहरना, स्थित होना)।

कुह = कहाँ (सर्वनाम)।

कुहचित् = कहीं (सर्वनाम)।

कूजते = कूजता है, कूजन के लिए (कूज् = शब्द करना, अस्पष्ट शब्द करना, कूजना)।

कूप्याभ्यः = कूप्यों के लिए (कुप् - रोष होना, क्रोध करना, चमकना, बोलना, कूप् - छिपना, अशक्त करना, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कूप्याय = कूप्य के लिए (कुप् - रोष होना, क्रोध

करना, चमकना, बोलना, कूप - छिपना, अशक्त करना, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कूर्मः - कूर्मः = करने वाले, कर्मशील (कृ = करना)।

कूर्मान् - कूर्मान् = करने वालों को, कर्मशीलों को (कृ = करना)।

कूल्लाय = कूल्ल के लिए, आच्छादन के लिए (कूल - आच्छादित करना)।

कूश्मान् = कूश्यों को, आलिंगन, कोश होना, समाधान, सहनशीलों को (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

के = कौन, कोई (सर्वनाम)।

केतः = प्रकृष्ट ज्ञानी, निवास, परामर्श (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतपूः = गृह, ज्ञान को पवित्र करने वाला (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतम् = प्रकृष्ट ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता को (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतवः = ज्ञानी, निवास, परामर्शदाता (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतवे = केतु के लिए, प्रज्ञा के लिए ज्ञानी, निवास, परामर्शदाता के लिए (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतुः = ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतुना = केतु द्वारा, ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता द्वारा (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतुम् = ज्ञानी, निवास, परामर्शदाता को (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केतुमत् = ज्ञानी, निवास, परामर्श युक्त (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

केन = किसके द्वारा (सर्वनाम)।

केवर्तम् = केवर्त को, सेवा, सिंचन को (केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)।

केवलीः = केवली, सेवा, सिंचन (केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)।

केशम् = केश को (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

केशाः = केश (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

केशाय = केश के लिए (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

केशिना = केशी द्वारा (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

केशिभिः = केशियों द्वारा (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

केशैः = केशों द्वारा (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

केषाम् = किन सब के (सर्वनाम)।

केषु = किनमें (सर्वनाम)।

केसराणि = केसर (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)।

कैवर्तम् - कैवर्तम् = कैवर्त को, सेवा, सिंचन को (केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)।

को = कौन (सर्वनाम)।

कोना = शब्द करें, स्तुति करें (कु - शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौरे के समान शब्द करना)।

कोश = कोश (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कोशकारीम् = कोशकारी को (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कोशम् = कोश को (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कोशात् = कोशों से (कुश् - आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कोशान् = कोशों को (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कोश्याभ्याम् = कोश्यों द्वारा, कोश्यों के लिए, कोश्यों से (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कौलालम् = कौलाल को, बन्धुत्व को (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, आत्मीयता-बन्धुत्व भाव से रहना, गणना करना)।

कौलीकान् = कौलीकों को, बन्धुत्व को (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, आत्मीयता-बन्धुत्व भाव से रहना, गणना करना)।

करणाभ्याम् - क्रणाभ्याम् = कर्मशील के लिए, कर्म के लिए (कृ = करना)।

क्रतवः - क्रतवः = कर्मशील (कृ = करना)।

क्रतवे - क्रतवे = क्रतु के लिए, कर्मशील के लिए (कृ = करना)।

क्रतवो = कर्मशील (कृ - करना)।

क्रतुः - क्रतुः = क्रतु, कर्मशील, करने वाला (कृ = करना)।

क्रतुना = कर्मशील द्वारा, कर्म द्वारा (कृ = करना)।

क्रतुभिः = क्रतुओं द्वारा (कृ = करना)।

क्रतुम् - क्रतुम् = कर्म को (कृ = करना)।

क्रतुमत् = कर्म को (कृ = करना)।

क्रतुवित् = कर्मवेत्ता, कर्म को जानने वाले (कृ = करना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

क्रतुवित्तमो = अत्यन्त कर्मवेत्ता, कर्म को अत्यन्त जानने वाले (कृ = करना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना,

जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

क्रतुस्थला - क्रतुस्थला = कर्मस्थल, कर्मशीलों का स्थल (कृ = करना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

क्रतूदक्षाभ्याम् - क्रतूदक्षाभ्याम् = क्रतूदक्ष के लिए (कृ = करना, दक्ष - दक्ष होना, कुशल होना, जाना, मार डालना)।

क्रतून् - क्रतून् = कर्मशीलों को (कृ = करना)।

क्रतो - क्रतो = कर्मशील (कृ = करना)।

क्रतोः - क्रतोः = कर्मशील का (कृ = करना)।

क्रत्वा - क्रत्वा = कर्मशील, करके (कृ - करना)।

क्रत्वे = क्रतु के लिए, करने वाले के लिए (कृ = करना)

क्रन् - क्रन् = कर्मशील (कृ = करना)।

क्रन्दन् = पुकारते हुए (क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रन्दनेन = क्रन्दन द्वारा (क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रन्दन्ते = क्रन्दन करते हैं (क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रन्दम् = क्रन्दन को, क्रन्दनयुक्त को (क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रन्दय - क्रन्दय = क्रन्दन करो (क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रन्दसी - क्रन्दसी = क्रन्दन करने वाले, क्रन्दनयुक्त (क्रन्द - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रमः - क्रमः = क्रम, सम्यक् गति, रक्षण (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रमणेषु - क्रमणेषु = गति, रक्षण में (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रमताम् - क्रमताम् = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रमध्वम् - क्रमध्वम् = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रमस्व - क्रमस्व = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रमिषम् - क्रमिषम् = क्रमिष को, गतिशील, आगे बढ़ने वाले को (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रयस्य - क्रयस्य = क्रय का (क्री = क्रय करना, खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

क्रविषः - क्रविषः = कर्मशील (कृ = करना)।

क्रव्य = करणीय, क्रूर, निर्दयता (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना)।

क्रव्यादम् - क्रव्यादम् = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना, अद् - खाना)।

क्रव्यादो = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, कृ - करना, अद् - खाना)।

क्राणा = करने वाले (कृ - करना)।

क्रान्तम् - क्रान्तम् = क्रान्त को (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्राम - क्राम = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

क्रामाम् - क्रामाम् = क्रमणशील कों (क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)।

क्रावा - क्रावा = क्रावा, कर्मशील (कृ - करना)।

क्रिमयः = अनेक कृमि (कृ - करना)।

क्रिमीन् = कृमियों को (कृ - करना)।

क्रियते - क्रियते = किया जाता है (कृ - करना)।

क्रियमाणस्य = क्रियमाण का (कृ - करना)।

क्रिवः - क्रिवः = कर्मशील (कृ - करना, क्रिव् - करना, हिंसा करना)।

क्रिवि = कर्मशील (कृ - करना, क्रिव् - करना, हिंसा करना)।

क्रीडतः - क्रीडतः = खेलते हैं, खेल से (क्रीड् - खेलना)।

क्रीडन् = क्रीडा करते हुए (क्रीड् - खेलना)।

क्रीडन्तम् = क्रीडा करते हुए को (क्रीड् - खेलना)।

क्रीडा - क्रीडा = खेल (क्रीड् - खेलना)।

क्रीडी - क्रीडी = खिलाड़ी (क्रीड् - खेलना)।

क्रीडिभ्यः = क्रीडियों के लिए, खेल वालों के लिए, खिलाड़ियों के लिए (क्रीड् - खेलना)।

क्रीडुः = क्रीडा करने वाला (क्रीड् - खेलना)।

क्रीणामि - क्रीणामि = क्रय करता हूँ (क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

क्रीणावहा - क्रीणावहा = क्रय करते हैं (क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

क्रीतः - क्रीतः = क्रय किया हुआ (क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

क्रीतस्य = क्रीत का, खरीदे हुए का (क्री = खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

क्रीयसे - क्रीयसे = खरीदते हो (क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)।

क्रुड् - क्रुड् = कर्मशील (कृ = करना)।

क्रुज्चः - क्रुज्चः = निकट, वक्र (क्रुज्च् = समीप जाना, समीप आना, वक्र चलना, घूमना, मुड़ना, वक्र होना, अल्प होना, वक्र करना, अल्प करना)।

क्रुज्चान् - क्रुज्चान् = निकट, वक्रगामियों को (क्रुज्च् = समीप जाना, समीप आना, वक्र चलना, घूमना, मुड़ना, वक्र होना, अल्प होना, वक्र करना, अल्प करना)।

क्रुज्चौ - क्रुज्चौ = निकट, वक्र (क्रुज्च् = समीप जाना, समीप आना, वक्र चलना, घूमना, मुड़ना, वक्र होना, अल्प होना, वक्र करना, अल्प करना)।

क्रुद्धस्य = क्रुद्ध का, क्रोधित का (क्रुध् - क्रोध करना)।

क्रूरम् = क्रूर को (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना)।

क्रूरस्य - क्रूरस्य = क्रूर का (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना)।

क्रोडः - क्रोडः = गतिशील, दृढ़ (क्रुड् = चलना, जाना, बाल-चेष्टा करना, डूबना, खाना, दृढ़ होना)।

क्रोधाय - क्रोधाय = क्रोध के लिए (क्रुध् - क्रोध करना)।

क्रोशकम् = क्रोशक को (क्रुश् - रोना, पुकारना, शब्द करना)।

क्रोशाय - क्रोशाय = क्रोश के लिए (क्रुश् - रोना, पुकारना, शब्द करना)।

क्रोष्टा - क्रोष्टा = शाब्दिक, शब्दकर्ता (क्रुश् - रोना, पुकारना, शब्द करना)।

क्लथन् - क्लथन् = हिंसक (क्लथ - हिंसा करना, दुःख देना, मार डालना, घूमना)।

क्लप्तम् = क्लप्त, अस्पष्ट बोलने वाला, क्रूर वचन वाले को (क्लप् - अस्पष्ट बोलना, क्रूरता से बोलना, शब्द करना)।

क्लप्तिः - क्लप्तिः = अस्पष्ट वाणी, क्रूर वचन (क्लप् - अस्पष्ट बोलना, क्रूरता से बोलना, शब्द करना)।

क्लीबे - क्लिवे = कोमलता, गति, ज्ञान (क्लीब - कोमल होना, क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्लीबः = कोमल, गतिशील, ज्ञानी (क्लीब - कोमल होना, क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्लीबम् = कोमल, गतिशील, ज्ञानी को (क्लीब - कोमल होना, क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्लीबो = कोमल, गतिशील, ज्ञानी (क्लीब - कोमल होना, क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्लोभिः = गतिशील, ज्ञानी द्वारा (क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्लोमभिः = क्लोमों द्वारा, गतिशीलों द्वारा, ज्ञानियों द्वारा (क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्लोमानम् = कोमल, गतिशील, ज्ञानी को (क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)।

क्व = कहाँ (सर्वनाम)।

क्वयिः = कवि, शब्दज्ञ, शब्दज्ञानी, शब्द को जानने वाला (कु, क्व् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

क्षत्तृभ्यः - क्षत्तृभ्यः = क्षत्तृ को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तारम् = क्षत्तार को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृभृत् - क्षत्रभृत् = क्षत्तृभृत्, क्षत्तृ का भरण करने वाला (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना,

रक्षा करना)।

क्षत्तृम् - क्षत्रम् = क्षत्र को, रक्षा को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृवनि - क्षत्रवनि = क्षत्र की सेवा, याचना (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृवनिः - क्षत्रवनिः = क्षत्र की सेवा, याचना (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना, वन् = शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, याचना करना)।

क्षत्तृस्य - क्षत्रस्य = क्षत्र का (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृणाम् - क्षत्राणाम् = क्षत्रों का (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृाय - क्षत्राय = क्षत्र के लिए (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृरिया - क्षत्रिया = रक्षक, आच्छादक, हिंसक (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तृरियाय - क्षत्रियाय = रक्षक, आच्छादक, हिंसक के लिए (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्तरे - क्षत्रे = क्षत्र में, रक्षा में, रक्षक, आच्छादक, हिंसक में (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षत्रेण = क्षत्र, रक्षक, आच्छादक, हिंसक द्वारा (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

क्षपमाणो = क्षपमान, सहनशील, संयमी (क्षप = क्षमा करना, प्रेरणा करना, भेजना, सहन करना, संयमी होना)।

क्षपा = प्रेरक, सहनशील, संयमी (क्षप = क्षमा करना, प्रेरणा करना, भेजना, सहन करना, संयमी होना)।

क्षपो = प्रेरक, सहनशील, संयमी (क्षप = क्षमा करना, प्रेरणा करना, भेजना, सहन करना, संयमी होना)।

क्षमया - क्षमया = क्षमा द्वारा (क्षम् = क्षमा करना, सहन करना, समर्थ होना, रोकना)।

क्षमाचराः - क्षमाचराः = क्षमा युक्त आचरण करने

वाले (क्षम् = क्षमा करना, सहन करना, समर्थ होना, रोकना)।

क्षयः = निवास, क्षय, गति (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयणम् = क्षयण को, निवास को, क्षय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयणाय - क्षयणाय = निवास के लिए (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयत् - क्षयत् = निवास करते हैं (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयद्वीराय = प्रगतिशील वीर के लिए, क्षयद्वीर के लिए (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयन्तम् - क्षयन्तम् = निवास करने वाले को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयम् = निवास को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयस्य - क्षयस्य = निवास का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षयाय - क्षयाय = निवास के लिए (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षये - क्षये = निवास में, क्षय में (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षरन् = क्षरण करते हुए, टपकते हुए (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

क्षरन्ति - क्षरन्ति = क्षरण करते हैं, झरते हैं, गिरते हैं (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

क्षरन्तु = क्षरण करें (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

क्षरसि = क्षरते हो, झरते हो, गिरते हो (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

क्षरा = क्षरण करो (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

क्षराणाम् - क्षराणाम् = क्षरण करने वालों का (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

क्षसाम् - क्षसाम् = गतिशील, शब्दकर्ताओं का (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना)।

क्षसो - क्षसो = गतिशील, शब्दकर्ताओं का (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना)।

क्षा = प्रगतिशील, विद्वान्, निवासी (क्षि - जाना, चलना, निवास करना, रहना, बसना)।

क्षामन् - क्षामन् = क्षमा, सामर्थ्य युक्त (क्षम् = क्षमा करना, सहन करना, समर्थ होना, रोकना)।

क्षामा - क्षामा = क्षमा, सामर्थ्य युक्त (क्षम् = क्षमा करना, सहन करना, समर्थ होना, रोकना)।

क्षामीः = क्षमा, सामर्थ्य युक्त (क्षम् = क्षमा करना, सहन करना, समर्थ होना, रोकना)।

क्षिणन्ति - क्षिणन्ति = निवास, हिंसा करते हैं (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना। क्षिण् = हिंसा करना)।

क्षिणीहि = निवास, हिंसा करे (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना। क्षिण् = हिंसा करना)।

क्षिणोमि = निवास, हिंसा करता हूँ (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना। क्षिण् = हिंसा करना)।

क्षित् - क्षित् = निवास, क्षति, क्षय (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षित - क्षित = निवास, क्षति, क्षय (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षितीनाम् - क्षितीनाम् = निवासों, क्षति, क्षयों का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षिपणिम् - क्षिपणिम् = प्रक्षेपण करने वाले को (क्षिप् - प्रक्षेपण करना, फेंकना, प्रेरणा करना, भेजना, नियमन

करना, चलना, कम्पन करना, हिंसा करना)।

क्षिपणोः - क्षिपणोः = प्रक्षेपण करने वाले का (क्षिप् - प्रक्षेपण करना, फेकना, प्रेरणा करना, भेजना, नियमन करना, चलना, कम्पन करना, हिंसा करना)।

क्षिपो = प्रक्षेपण करने वाला (क्षिप् - प्रक्षेपण करना, फेकना, प्रेरणा करना, भेजना, नियमन करना, चलना, कम्पन करना, हिंसा करना)।

क्षिप्रधन्वा = प्रक्षेप-गति करने वाले (क्षिप् - प्रक्षेपण करना, फेकना, प्रेरणा करना, भेजना, नियमन करना, चलना, कम्पन करना, हिंसा करना, धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

क्षिप्रश्येनाय - क्षिप्र-श्येनाय = क्षिप्र श्येन के लिए, क्षिप्र गति के लिए (क्षिप् - प्रक्षेपण करना, फेकना, प्रेरणा करना, भेजना, नियमन करना, चलना, कम्पन करना, हिंसा करना, श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

क्षियन्तम् - क्षियन्तम् = निवास करने वाले को, क्षति, क्षय करने वाले को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षीरम् - क्षीरम् = क्षीर को, निवास, क्षति, क्षय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, क्षी - क्षीण होना, हिंसा करना)।

क्षुधे - क्षुधे = गतिशील, शब्दकर्ता (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना)।

क्षुत् - क्षुत् = गतिशील, शब्दकर्ता, चूर्ण, लघु, सूक्ष्म (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, क्षुद् - चूर्ण करना, कूटना, पीसना)।

क्षुद्र-पृषती = क्षुद्र-पृषती (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, क्षुद् - चूर्ण करना, कूटना, पीसना। पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।

क्षुद्राः - क्षुद्राः = गतिशील, शब्दकर्ता, चूर्ण, लघु, सूक्ष्म (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, क्षुद् - चूर्ण करना, कूटना, पीसना)।

क्षुधे = क्षुधा के लिए (क्षुध् - भूख लगना)।

क्षुमत् = विद्वान्, प्रगतिशील (क्षु - जाना, जानना,

पाना, शब्द करना)।

क्षुमन्तम् = विद्वान् को, गतिशील को, शब्दकर्ता को (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना)।

क्षुमन्तो = विद्वान्, गतिशील, शब्दकर्ता (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना)।

क्षुम्पम् = प्रगति, प्राप्ति, शब्द, दया, सहन को (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, क्षम्प - सहन करना, सहना, दया करना, चमकना)।

क्षुरः - क्षुरः = कर्तनशील, कर्तनसाधन (क्षुर - काटना, चीरना, रेखा खींचना)।

क्षेति = निवास करता है (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षेत्रस्य = क्षेत्र का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षेत्राणाम् - क्षेत्राणाम् = क्षेत्रों का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षेमः - क्षेमः = क्षेम (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)।

क्षेमाय - क्षेमाय = क्षेम के लिए (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)।

क्षेम्याय - क्षेम्याय = क्षेम्य के लिए (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)।

क्षैतो = प्रगतिशील, निवासी (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना)।

क्षेत्र-जित्याय = क्षेत्र-जित्य के लिए (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, जि - जीतना)।

क्षैतवत् = प्रगतिशील, निवास के समान (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना)।

क्षोणी = गति, ध्वनि करने वाली (क्षु - शब्द करना, जाना, जानना, पाना)।

क्षोभणः = क्षोभ करने वाला, कम्पन करने वाला (क्षुभ् - क्षोभ होना, कम्पन करना)।

क्षम्या = क्षमा द्वारा (क्षम् - क्षमा करना, सहन करना, समर्थ होना, क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना)।

ख

खड्ग = खण्ड करने वाला, टुकड़े करने वाला (खड्ग = खण्ड करना, टुकड़े करना)।

खजकृत् = मन्थन करते हैं (खज - मथना, हिलाना, मन्थन करना, कृ - करना)।

खनतु = खनन करे, खोदे (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनन्त = खनन करते हुए, खोदने वाले (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनन्तः = खनन करते हुए, खोदने वाले (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनामः = खनन करते हैं, खोदते हैं (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनामि = खनन करता हूँ, खोदता हूँ (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनिता = खनित, खनन किया हुआ, खनन करने वाला, खोदने वाला (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनितुम् = खनन करने के लिए, खोदने के लिए (खन् = खनन करना, खोदना)।

खनेम = खनन करे, खोदे (खन् = खनन करना, खोदना)।

खम् = सर्वव्यापी (अव्यय)।

खलतिम् = खलति को, संचय, प्रगति, भ्रमण को (खल् - संचय करना, चलना, भ्रमण करना)।

खल्याय = खल्य के लिए, संचय, प्रगति, भ्रमण के लिए (खल् - संचय करना, चलना, भ्रमण करना)।

खल्वाः = खल्व, संचयी, भ्रमणशील (खल् - संचय करना, चलना, भ्रमण करना)।

खाद = खाना, भोजन (खद्-खाद् - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना)।

खानि = खनन करे, खोदे (खन् = खनन करना, खोदना)।

ख्यः = व्याख्यान (ख्या - प्रसिद्ध करना, कहना, व्याख्यान करना)।

ख्यन् = प्रख्यात करने वाले, संचयी, भ्रमणशील (खै -

खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना, खोदना, ख्या - प्रसिद्ध करना, कहना, व्याख्यान करना)।

ख्याता = प्रख्यात करने वाले, खाने वाले, संचयी, भ्रमणशील (खै - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना, खोदना, ख्या - प्रसिद्ध करना, कहना, व्याख्यान करना)।

ग

गच्छ = जाओ (गम्-गच्छ = जाना)।

गच्छत = जाओ (गम्-गच्छ = जाना)।

गच्छतम् = जाओ (गम्-गच्छ = जाना)।

गच्छति = जाता है (गम्, गच्छ = जाना)।

गच्छतु = जाओ, जाये (गम्, गच्छ = जाना)।

गच्छथः = जाते हो (गम्-गच्छ - जाना)।

गच्छध्वम् = जाओ, जाये (गम्-गच्छ = जाना)।

गच्छन् = जाते हुए (गम्-गच्छ = जाना)।

गच्छन्ति = जाते हैं (गम्-गच्छ = जाना, जानना, पाना)।

गच्छन्तो = जाते हुए (गम्-गच्छ = जाना)।

गच्छसि = जाते हो (गम्, गच्छ = जाना)।

गच्छेम = जायें (गम्-गच्छ = जाना, जानना, पाना)।

गणः = गणक, गण, समूह (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणकम् = गणक को (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणपतये = गणपति के लिए (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

गणपतिभ्यः = गणपतियों के लिए (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

गणपतिम् = गणपति को (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

गणम् = गणक, गण, समूह को (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणश्रिये = गणश्री के लिए, समूह की श्री के लिए (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना, श्री - सेवा करना, श्रीमान् होना)।

गणस्य = गणक, गण, समूह का (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणाः = गणक, गण, समूह (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणान् = गणक, गण, समूहों को (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणानाम् = गणक, गण, समूहों का (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणेन = गणक, गण, समूह द्वारा (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गणेभ्यः = गणक, गण, समूहों के लिए (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)।

गत = गया हुआ, संगत (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गतम् = गये हुए को, संगत को (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गतिः = गति, गमन, वेग (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गतेभ्यः = गये हुआ के लिए (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गत्वा = जाकर (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गधि = मिश्रित करो, मिलाओ (गध - मिश्रित होना, मिल जाना, मिश्रित करना, मिलाना)।

गन् = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गनीगन्ति - गनीगन्ति = गति, गमन करते हैं (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्तन = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्तवे = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्तवे = गतिमान, जाने वाले के लिए (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्ता = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्ताम् = गतिमान, जाने वाले को (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्तोः = गतिमान, जाने वाले का (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गन्धः = गन्ध (गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)।

गन्धर्वः - गन्धर्वः = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)।

गन्धर्वाः-गन्धर्वाः = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाले (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना)।

गन्धर्वाणाम् = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वालों का (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना)।

गन्धर्वाप्सरोभ्यः - गन्धर्वाप्सरोभ्यः = गन्धर्वों तथा अप्सराओं के लिए (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, अप् - पालन करना, सृ - चलना, सरकना)।

गन्धर्वाप्सरोभ्यो = गन्धर्वों तथा अप्सराओं के लिए (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, अप् - पालन करना, सृ - चलना, सरकना)।

गन्धाय = गन्ध के लिए (गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)।

गभस्तौ = गहन (गह् - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गभस्त्योः = गहन (गह् - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गभीरम् = गहन, गम्भीर (गह् - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गभीराः = गहन, गम्भीर (गह् - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गभे = गहन, गम्भीर (गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गमत् = गतिमान, जाने वाले, जाता है, गया (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमन् = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमन्त = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमन्तु = गमन करें (गम् - जाना)।

गमम् = जाने वाले को (गम् = जाना)।

गमय = जाओ (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमया = जाओ, गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमाम = जायें (गम् = जाना)।

गमिष्ठा = अत्यन्त प्रगतिशील (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमेः = जायें, प्रगतिशील, गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमेन = गमन द्वारा (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमेम = जायें (गम् = जाना)।

गमेमहि = जाते हैं (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गमो = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गम्भन् = प्रगतिशील, गतिमान, गहन (गम् = जाना, जानना, पाना)। गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गम्भीरान् = प्रगतिशील, गतिमान को, गम्भीरों को, गहनता को (गम् = जाना, जानना, पाना, गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गम्याः = गम्य, गमनीय (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गम्यात् = जायें (गम् = जाना, जानना, पाना)।

गयम् - गयम् = गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान को (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना)।

गयसाधनम् = गय-साधन को, वाणी की पूर्णता को, शब्दों की सिद्धि को, गायन की पूर्णता को (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

गयस्फानः = स्तुतियों का विस्तार करने वाले (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना, गम् - जाना, गा - स्तुति करना, स्फायी - बढ़ना)।

गये = गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान में (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना)।

गुत्मान् - गरुत्मान् = गरुत्मान् (गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)।

गर्तम् - गर्तम् = गर्त को (गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)।

गर्दभः - गर्दभः = गर्दभ (गर्द - शब्द करना, गर्जना करना, कुत्सित शब्द करना, गृध् = चाहना, आशा करना, लोभ करना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)।

गर्भः - गर्भ = गर्भ (गृह - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भत्वम् = गर्भत्व को (गृह - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भधम् = गर्भ को धारण करने वाले (गृह - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भधिम् = गर्भ को धारण करने वाले को (गृह - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना,

जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना। धि = धारण करना, युक्त होना)।

गर्भम् - गर्भम् = गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भाः - गर्भाः = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भिणीभिः = गर्भिणी द्वारा (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भे - गर्भे = गर्भ में (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गर्भो - गर्भो = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृम्-गर्म् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गल्गलीति = निगलता है (गल् = खाना, निगलना, टपकना)।

गल्दया = उपभोग, भक्षण करना (गल् - निगलना, खाना, भक्षण करना)।

गवयम् = गवय को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)।

गवयान् = गवयों को (गु - शब्द करना, मनन करना,

अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)।

गवयी = गवयी (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)।

गवा = गवा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)।

गवाम् = गवा को, गौ को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)।

गवाशिरः = गवाशिर (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, शिर् - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)।

गवि = वाणी, ज्ञान में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

गविष्टये = गविष्ट के लिए, अत्यन्त विद्वान् के लिए (गु = शब्द करना, मनन करना)।

गविष्टिषु = गविष्टियों में, अत्यन्त विद्वानों में (गु = शब्द करना, मनन करना)।

गविष्टौ = गविष्ट युगल, वाणी, ज्ञान, इच्छा (गु = शब्द करना, मनन करना, गम् = जाना, जानना, पाना, इष् - इच्छा करना, एक-एक कर चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना)।

गविष्टिरः - गविष्टिरः = वाणी में स्थिर (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, स्था - स्थिर होना)।

गवे = वाणी के लिए, गौ के लिए (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गव्यन्तः = वाणी वाले, कहने वाले, बोलने वाले, बोलते हुए (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)।

गव्यम् = गव्य, कहने योग्य, कथनीय को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गव्यानि = गव्य (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गव्यया = गव्य, कहने योग्य, कथनीय द्वारा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गव्ययुः = गव्यवान्, शब्द की कामना वाले (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गव्युः = गव्यवान्, शब्द की कामना वाले (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गव्यूतिम् = गव्यूति को, बोलने योग्य वाणी बोलने वाले को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना। ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

गव्ये = गव्य में, वाणी में, कहने योग्य, कथनीय में (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना)।

गहनम् = गहन (गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गहि = गति, ज्ञान, घना करें (गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गह्वरेष्टा - गह्वरेष्टा = घने स्थान में स्थित (गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, निबिड़ होना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गह्वरेष्ठाय - गह्वरेष्ठाय = घने स्थान में स्थित के लिए, गहन-गह्वर में स्थित के लिए (गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, निबिड़ होना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गा = गान, गायक, गाय (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गाः = गान, गाय, गायक, गाने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गाणपत्यम् = गणपति-सम्बन्धी को (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

गात् = गान करो, जाओ, जाते हैं, प्राप्त होते हैं (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गात = गान, गाय, गायक, गाने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गातुम् = स्तुति को, गान, गाय, गायक, गाने वाले को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गातुवित्तमो = स्तुति जानने वाले, गान, गायन को जानने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना, विद् = जानना)।

गातुविदः = स्तुति जानने वाले, गान, गायन को जानने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना, विद् = जानना)।

गातुविदो = स्तुति जानने वाले, गान, गायन को जानने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना, विद् = जानना)।

गात्रा - गात्रा = स्तुति, गान, गायन करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गात्राणाम् - गात्राणाम् = स्तुति, गान, गायन करने वालों का (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गात्राणि - गात्राणि = स्तुति, गान, गायन करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गात्रात् - गात्रात् = स्तुति, गान, गायन करने वाले से (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गाथम् = गाथा को (गाथ - प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गाथया = गाथा द्वारा (गाथ - प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गाथान्याम् = गाथा योग्य को (गाथ - प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गाथाभिः = गाथाओं द्वारा (गाथ - प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गाथिनो = गाथा करने वाले, गाथा सुनने-सुनाने वाले (गाथ - प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गाधम् = गाध को, ग्रन्थकार को, कथाकार को (गाध - प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, ढूँढ़ना, ठहरना, रहना)।

गाम् = गान, गाय, गायक को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गाय = गाने के लिए, गायन के लिए, गाकर (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत = गाते हैं, गायन करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायता = गायन करते हुए, गाने वाले, स्तुति करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्रः = गायत्र, गाने वाले, स्तुति करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्रम् - गायत्रम् = गायत्र, गाने वाले, स्तुति करने वाले को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्रवेपसम् = व्यापक गायत्र, व्यापक गान, स्तुति करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना, वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना वेप् = काँपना)।

गायत्रस्य = गायत्र का, गाने वाले, स्तुति करने वाले का (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्राय = गायत्र के लिए, गाने वाले के लिए, स्तुति करने वाले के लिए (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गायत्री = गायत्री, गान, स्तुति (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्रीम् - गायत्रीम् = गायत्री, गान, स्तुति को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्रेण - गायत्रेण = गायत्र से, गान, स्तुति द्वारा (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्रो - गायत्रो = गायत्रो, गान, स्तुति (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्राम् - गायत्राम् = गायत्री, गान, स्तुतिकर्ता को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्र्या - गायत्र्या = गायत्री, गान, स्तुति द्वारा (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्र्यै - गायत्र्यै = गायत्री, गान, स्तुति के लिए (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायन्तः = गाते हैं, गायन करने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गाये = गाता हूँ, गायन में (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गार्हपत्यः - गार्हपत्यः = गृहपति का, गृहपति सम्बन्धी (गृह - लेना, स्वीकार करना, पत्- श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गार्हपत्यानि - गार्हपत्यानि = गृहपति सम्बन्धी (गृह - लेना, स्वीकार करना, पत्- श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गाव = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द

करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गावः = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गावो = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गाहते = अवगाहन करता है, विलोड़न करता है (गाह - नष्ट करना, मर्म भेद करना, फेरना, हिलाना, गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गाहमानः = अवगाहन करने वाला (गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गाहसे = अवगाहन करते हो, विलोड़न करते हो (गाह - नष्ट करना, मर्म भेद करना, फेरना, हिलाना, गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गाहात् = गाह से, गहनता से (गाह - नष्ट करना, मर्म भेद करना, फेरना, हिलाना, गह - गहन होना, घना होना, डराना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

गिर = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरः = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरयः = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरा = स्तुतियाँ, वाणियाँ (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिराम् = वाणियों, बोध, सिञ्चन को (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरिः = स्तुति, वाणी (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरि = स्तुति, वाणी (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरिजा = स्तुति, वाणी से उत्पन्न (गृ - सींचना, गीला

करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

गिरिष्ठाः = वाणियों में स्थित (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, स्थ = स्थित होना)।

गिरित्र = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरिम् = गिरि को, स्तुति, वाणी, बोध, सिञ्चन को (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरिश = गिरिशाही, वाणियाँ, बोध, सिञ्चन में शयन करने वाले (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना, शी-शय् - शयन करना)।

गिरिशन्त = गिरिशाही, स्तुतियाँ, वाणियाँ, बोध, सिञ्चन में शयन करने वाले (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना, शी-शय् - शयन करना)।

गिरिशयाय = गिरिशाही के लिए, स्तुतियाँ, वाणियाँ, बोध, सिञ्चन में शयन करने वाले के लिए (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, शी-शय् - शयन करना)।

गिरिषु = वाणियाँ, बोध, सिञ्चनों में (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरिष्ठाः = वाणी में स्थिर (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना, शी-शय् - शयन करना, स्था - स्थिर होना)।

गिरीणाम् = वाणियों का, बोध का, सिञ्चन का (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरीन् = वाणियों को, बोध को, सिञ्चन को (गृ -

करना, निवास करना, पत- श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गृहपते = हे गृहपति! (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गृहपम् = गृहपालक को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना, पा - पालन करना)।

गृहम् = गृह को, घर को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहमेधिभ्यो = गृहमेधियों के लिए (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना, मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

गृहाः = गृहस्थ, गृह, घर (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहाण = गृहस्थ, गृह, घर (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहाणाम् = गृहस्थों, गृहों का, घरों का (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहान् = घरों को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहीतः = ग्रहीत, ग्रहण किया हुआ, स्वीकार किया हुआ (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहीतया = ग्रहीत द्वारा, ग्रहण किया हुआ, स्वीकार किया हुआ द्वारा (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहीताय = गृहीत के लिए (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहे = गृह में, घर में (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृहेषु = घरों में, गृहों में (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृह्णते = गृहण के लिए, ग्रहण करते हैं (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गृह्णामि = गृहण करता हूँ (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

गुणे = गुण में (गुण् - गुण होना, शब्द करना, विचार-विमर्श करना, आमन्त्रण करना, गुणा करना)।

गुदम् = गुद को, खेल को, क्रीडा को (गुद् - खेलना, क्रीडा करना)।

गुदाः = खेल, क्रीडाएं (गुद् - खेलना, क्रीडा करना)।

गुदाभिः = गुदाओं द्वारा, क्रीडाओं द्वारा (गुद् - खेलना, क्रीडा करना)।

गुम् = शब्द, वाणी, वचन को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गुरमाणाय = उद्योग करने वाले के लिए, प्रयास करने वाले के लिए, शब्द, वाणी, वचन करने वाले के लिए (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गुरस्व = उद्योग करो, प्रयास करो, शब्द करो (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गूर्धया = प्रयास, शब्द करो (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुर्द - क्रीडा करना, खेलना)।

गुल्मान् = खाने वाले, भक्षण करने वाले (गुल् = खाना, भक्षण करना, निगलना)।

गुहा = गुह्य, गुहा (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गुहाभ्यः = गुहा के लिए (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गुह्यम् = गुह्य, गुहायोग्य (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गुह्यमानः = आच्छादित करता हुआ, आच्छादित करने वाला (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गुह्यमानम् = आच्छादित करते हुए, आच्छादित करने वाले को (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गुह्येन = गुह्य, गुहायोग्य द्वारा (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

करना)।

गूढे = गूढ में, गहनता में (गूड - रहना, निवास करना, घर बनाना, गुड - संरक्षण करना, बनाना मधुर होना, गुह - हिंसा करना, गति करना, छिपाना, वस्त्रादि से ढांकना)।

गूर्तिभिः = गूर्तियों द्वारा, प्रयत्नों द्वारा, उद्योगों द्वारा (गूर - मार डलना, दुःख देना, जीर्ण होना, पुराना होना, जाना, गमन करना, गूर - प्रयत्न करना, उद्योग करना)।

गूहत = गूहन करो, सहन करो (गूह - सहन करना, सहना, समर्थ होना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गेषम् = खोज को (गेष - ढूँढ़ना, खोजना)।

गेहाय = गेह के लिए (गेह - गति करना, कम्पन करना, हिंसा करना)।

गेहयाय = गेहय के लिए (गेह - गति करना, कम्पन करना, हिंसा करना)।

गोः = शब्द करने वाला, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गो-ऋजीकम् = वाणी में स्थिर (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीवित रहना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)।

गोघातम् = गो-घात को, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक के घातक को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, घ्न-हन् - हिंसा करना, मारना)।

गोजाः = शब्द करने वाला, उपदेशक, कष्ट (गुज् - शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, चुराना, गोज् - कष्ट होना)।

गोजितम् = गो-जित को, शब्द, मननशील, उपदेशक को जीतने वाले को (गुज् - शब्द करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

गोजीरया = शब्द करने वाला, उपदेशक द्वारा (गुज् - शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, चुराना, गोज् - कष्ट होना)।

गोत्रभिः - **गोत्रभिः** = गोत्र-भेदी, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक को भेदने वाले, गोत्र तोड़ने वाले, गोत्र का विभाजन करने वाले (गु - शब्द करना, मनन

करना, अस्पष्ट बोलना, भिद् - भेदना, भाग करना, चीरना, तोड़ना)।

गोत्रभिदम् - **गोत्रभिदम्** = गोत्र-भेदी को, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक को भेदने वाले को, गोत्र तोड़ने वाले को, गोत्र का विभाजन करने वाले को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, भिद् - भेदना, भाग करना, चीरना, तोड़ना)।

गोत्राणि - **गोत्राणि** = गोत्र, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोदाः = क्रीडक, खिलाड़ी, वाणी, ज्ञान का दाता (गुद् - खेलना, क्रीडा करना। गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

गोदुहे = गोदोहन के लिए (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, दुह् - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

गोधा = शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक को धारण करने वाले (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, धा - धारण करना)।

गोधूमाः = शब्दों से कम्पन कराने वाले, वाणी से क्षोभ उत्पन्न करने वाले (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

गोधूमैः = शब्दों से कम्पन कराने वालों द्वारा, वाणी से क्षोभ उत्पन्न करने वालों द्वारा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

गोन् = शब्दकर्ता, मननशील (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोनाम् = गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोन्योघा = विद्वानों का समूह (गोन्+योघा, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, युध् - युद्ध करना)।

गोपतिः = शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट

बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

गोपतिम् = गोपति को, सुरक्षा, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गोपती = रक्षक, गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

गोपतौ = शब्दकर्ता, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गोपरीणसम् = महाज्ञानी, पूर्ण ज्ञानी (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पृ - भरना, पूर्ण करना, रि = हिंसा करना, जानना)।

गोपवनो = गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

गोपा = रक्षक, गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

गोपाः = रक्षक, गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

गोपाम् = रक्षा करने वालों के, रक्षक, गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा

करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

गोपायत = रक्षा करो (गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना)।

गोपालम् = गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा- पाल - पालन करना, रक्षा करना)।

गोभाज = गोसेवी, शब्दकर्ता, मननशीलों की सेवा करने वाले (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, भग्-भज् = सेवा करना, देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

गोभाजः = गोसेवी, शब्दकर्ता, मननशीलों की सेवा करने वाले (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, भग्-भज् = सेवा करना, देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

गोभिः = शब्दकर्ता, मननशीलों द्वारा (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना)।

गोमत् = गो युक्त, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोमतः = गोयुक्त का, गो के मत वाले, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोमति = गोयुक्त, गो के मत वाली, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)।

गोमतीः = गोयुक्त, गो के मत वाली, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)।

गोमते = गोयुक्त, गो के मत वाले, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)।

गोमतो = गोयुक्त का, शब्द करने वालों, मननशीलों,

उपदेशकों से युक्त का (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोमतिः = गोयुक्त द्वारा, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के मत वालों द्वारा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)।

गोमन् = गोयुक्त, शब्द करने वाला, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)।

गोमन्तम् = गोयुक्त को, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)।

गोमान् = गोमान्, गोयुक्त, शब्दयुक्त, विद्वान् (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोमृगः = गोमृग, गो-अन्वेषक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, मृग् - मृगया करना, खोजना, अन्वेषण करना)।

गोलतिका = खाने वाले, भक्षण करने वाले (गुल् = खाना, भक्षण करना, निगलना)।

गोवित् = गोविद्, शब्द जानने वाले (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, विद् - जानना)।

गोविदम् = गोविद्, शब्द जानने वाले (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, विद् - जानना)।

गोविन्दुः = गो-प्राप्त कराने वाला, वाणी को प्राप्त करने वाला (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, विन्द - लाभ होना, प्राप्त करना, सम्पादित करना)।

गोव्यच्छम् - गोव्यच्छम् = गोव्यच्छ को (गु - बोलना, मनन करना, वि - विशेष, अच्छ - गति करना, निर्मल होना, सत्य होना)।

गोशफे = शब्दों द्वारा, ज्ञान द्वारा आगे जाने वाले (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, शप् - शाप देना, क्रोध करना, शब् - जाना, चलना, आगे जाना)।

गोश्रीते = शब्दों द्वारा, ज्ञान द्वारा व्याप्त होना, आश्रय होना (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

गोषणिम् = शब्दकर्ता, मननशील, उपदेशक को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

गोषाः = गो, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक दाता (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

गोषाता = गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

गोषातिः = शब्द करने वाले हो, मननशील हो, उपदेशक हो (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

गोषु = गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोष्ठम् = गोष्ठ को, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह को, स्थान को (गोष्ठ - मिलकर रहना, बटोरना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गोष्ठात् = गोष्ठ से, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के स्थान से (गोष्ठ - मिलकर रहना, बटोरना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गोष्ठानम् = गोष्ठान को, गो के स्थान को, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के स्थान को (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गोष्ठे = गोष्ठ में, गो के स्थान में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह में (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गोष्ठ्याय = गोष्ठ्य के लिए, गो के स्थान, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह के लिए (गोष्ठ -

मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

गोसखा = मननशील मित्र (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सख् = मित्र होना)।

गोसनिः = शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों की सेवा में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सन् - सेवा करना, दान करना, सत्कार करना, पूजा करना)।

गोसादीः = गो के साथ बैठने वाले, शाब्दिक, मननशील, उपदेशक के साथ बैठने वाले (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

गौ = शाब्दिक, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गौः = शाब्दिक, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोधूमैः = शब्दों से कम्पन कराने वालों द्वारा, वाणी से क्षोभ उत्पन्न करने वालों द्वारा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

गोपत्यम् = सुरक्षा योग्य, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक के योग्य (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गोपत्येन = वाणी के ऐश्वर्य द्वारा, सुरक्षा योग्य द्वारा, शाब्दिक, मननशील द्वारा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)।

गौरः = उद्योगी, प्रयासरत, शब्दकर्ता (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गौरम् = उद्योगी, प्रयासरत, शब्दकर्ता को (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गौरमृगः = गौरमृग, प्रयासरत अन्वेषक, विद्वान् अन्वेषक

(गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

गौरान् = गौरों को, उद्योगी, प्रयासरत, शब्दकर्ता (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गौरी = उद्योगी, प्रयासरत, शब्दकर्ता (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गौरो = उद्योगी, प्रयासरत, शब्दकर्ता (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गौर्यः = उद्योगी, प्रयासरत, शब्दकर्ता (गुर - उद्योग करना, प्रयत्न करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

ग्नाः = गति-ज्ञान-ग्रहण (अग् - जाना, जानना, पाना, (वेद में विकल्प से अ, आ का लोप हो सकता है)। गम् - जाना, जानना, पाना)।

ग्नेः = गति-ज्ञान-ग्रहण का (अग् - जाना, जानना, पाना, (वेद में विकल्प से अ, आ का लोप हो सकता है)। गम् - जाना, जानना, पाना)।

ग्नन्तः = गति-ज्ञान-ग्रहण करते हुए (अग् - जाना, जानना, (वेद में विकल्प से अ, आ का लोप हो सकता है)। पाना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

ग्नम् = गति-ज्ञान-ग्रहण को (अग् - जाना, जानना, पाना, (वेद में विकल्प से अ, आ का लोप हो सकता है)। गम् - जाना, जानना, पाना)।

गुमिषीय - गुमिषीय = जानूँ, प्राप्त करूँ, गति-ज्ञान-ग्रहण करूँ (अग् - जाना, जानना, पाना, (वेद में विकल्प से अ, आ का लोप हो सकता है)। गम् - जाना, जानना, पाना)।

ग्रसिष्ठः - ग्रसिष्ठ = अत्यन्त ग्रसने वाला (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना)।

ग्रहम् - ग्रहम् = ग्रह को (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रहा - ग्रहा = ग्रहण करने वाले (ग्रह - लेना,

स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रहाः - ग्रहाः = ग्रहण करने वाले (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रहान् - ग्रहान् = ग्रहों को, ग्रहण करने वालों को (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रहाभ्याम् - ग्रहाभ्याम् = दो ग्रहों द्वारा, के लिए, से (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रहैः - ग्रहैः = ग्रहों द्वारा (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रह्यः = ग्रहणीय, ग्रहण योग्य (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्रहयो - ग्रहयो = ग्रहणीय, ग्रहण योग्य (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

ग्राभम् = ग्राही को, ग्रहण करने वाले को (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना। गृभ् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)।

ग्रामजितम् = ग्राम-जित को (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

ग्रामण्यम् - ग्रामण्यम् = ग्रामण्य को (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

ग्रामे - ग्रामे = ग्राम में (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

ग्राम्याः - ग्राम्याः = ग्रामों वाले (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

ग्राम्यान् - ग्राम्यान् = ग्राम्यों को (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

ग्रावः - ग्रावः = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी (गृ = सींचना, समझना, जानना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना)।

ग्रावग्राभः - ग्रावग्राभः = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना, गृह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, निवास करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर

होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - ग्रहण करना, लेना, अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

ग्रावभिः = ग्रावों द्वारा, सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणियों द्वारा (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रावभ्यः - ग्रावभ्यः = ग्रावों के लिए, सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी के लिए (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रावा - ग्रावा = सींचने वाला, सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी से युक्त (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रावच्युतो = ग्राव से च्युत, सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी से च्युत (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना, च्यु - हसना, सहना, गिरना, तैरना, च्युत् - सींचना, गीला करना, भिगोना, बहना)।

ग्रावाणः - ग्रावाणः = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द करने वाले (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रावाभिः - ग्रावाभिः = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी द्वारा (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्राह्या = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा (ग्रह = ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)।

ग्रीवा - ग्रीवा = ग्रीवा (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रीवाः = ग्रीवा (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रीवायाम् - ग्रीवायाम् = ग्रीवा में (गृ = सींचना,

समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रीवासु = ग्रीवाओं में (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

ग्रीष्म = ग्रीष्मकाल, ग्रसने वाला (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रीष्मः - ग्रीष्मः = ग्रीष्मकाल, ग्रसने वाला (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रीष्माय - ग्रीष्माय = ग्रीष्म के लिए, ग्रसने वाले के लिए (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रीष्मेण - ग्रीष्मेण = ग्रीष्म द्वारा, ग्रसने वाले द्वारा (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रीष्मो = ग्रीष्मकाल, ग्रसने वाला (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रैष्मी - ग्रैष्मी = ग्रीष्म वाला, ग्रसने वाला (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रैष्मौ - ग्रैष्मौ = ग्रीष्म में, ग्रसने में (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्लाविनम् - ग्लाविनम् = ग्लाविन को, ग्लानि को, हर्ष को (ग्ला - मुरझाना, ग्लै - ग्लानि होना, कष्ट होना, हर्ष-क्षय होना, हर्ष होना)।

ग्लौभिः = ग्लानि द्वारा, हर्ष द्वारा (ग्ला - मुरझाना, ग्लै - ग्लानि होना, कष्ट होना, हर्ष-क्षय होना, हर्ष होना)।

घ

घ = ही, भी (अव्यय, निपात)।

घनाघनः = अतिशय घना, उच्च ध्वनि, अतिशय हुँकार (घु - शब्द करना, ध्वनि करना, हुँकार करना)।

घर्म = घर्म (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

घर्मः - घर्मः = घर्म, अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

घर्मम् - घर्मम् = घर्म को, अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले को (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

घर्मस्य - घर्मस्य = घर्म का, अभिसिञ्चन, प्रकाश का (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

घर्माय - घर्माय = घर्म के लिए, अभिसिञ्चन, प्रकाश के लिए (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

घर्मो - घर्मो = घर्म, अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

घस्ताम् = खाये (घस् - खाना)।

घा = ही (अव्यय, निपात)।

घासम् = घास को, खाद्य को (घस् - खाना)।

घासिनो = खाने वाला, घास वाला (घस् - खाना)।

घासिम् = खाने वाला, घास वाला (घस् - खाना)।

घासे = खाने में, घास में (घस् - खाना)।

घृणा = शब्द, प्रकाश (घृण - शब्द करना, प्रकाश करना, घूमना)।

घृणिः - घृणिः = घृणि, वाणी, प्रकाश (घृण - शब्द करना, प्रकाश करना)।

घृणीवान् = शब्दयुक्त, प्रकाशयुक्त (घृण् - शब्द करना, प्रकाश करना, घूमना)।

घृणेः = शब्द-वाणी, प्रकाश (घृण - शब्द करना, प्रकाश करना, घूमना)।

घृणे = शब्द-वाणी में, प्रकाश में (घृण - शब्द करना, प्रकाश करना, घूमना)।

घृतकेशम् = घृत-केश को, प्रकाशमान प्रगति को (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)।

घृतपावानः = घृत-पावन, प्रकाश से पवित्र (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना,

घृतयोने - घृतयोने = हे घृत-योनि, हे घृतयोनि वाले,
हे प्रकाशमान योनि वाले (घृ - चमकना, प्रकाश करना,
सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना,
क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना,

घृतश्रियम् = घृतश्रिय को (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। श्रा = पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

घृतस्नुः = प्रकाशमान (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। स्नु - भाप से टपकना, झरना, चूना)।

घृतस्नूः - **घृतस्नूः** = प्रकाशमान (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। स्नु - भाप से टपकना, झरना, चूना)।

घृतस्नो = प्रकाशमान (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। स्नु - भाप से टपकना, झरना, चूना)।

घृतस्य = घृत का, प्रकाश का (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)।

घृताची = प्रकाशगामी (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। अच् - जाना, चलना, आदर करना, मांगना)॥

घृताचीः = प्रकाशगामी (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। अच् - जाना, चलना, आदर करना, मांगना)।

घृताचीम् = प्रकाशगामी को (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। अच् - जाना, चलना, आदर करना, मांगना)।

घृतान्नः = घृतान्न, प्रकाशजीवी, प्रकाशभोजी (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। अन - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

घृतायोने = हे घृतयोनि वाले, हे घृत-योनि (घृ -

चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना, गूँथना, स्थित होना)।

घृतावसानः = घृत-अवसान वाले, प्रकाश-अवसान वाले (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। अव = नीचे, दूर, प्राप्त। सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

घृता-सुती = घृत को उत्पन्न करने वाले (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

घृते = प्रकाशमान में (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)।

घृतेन = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)।

घृतैः = अभिसिञ्चितों प्रकाशितों द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)।

घृष्वयः = संघर्षशील, प्रकाश करने वाले (घृष - पीसना, कूटना, घिसना, घृ - गीला करना, तरडा देना, सींचना, बूंद बूंद गिरना, टपकना, (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)।

घृष्वये = संघर्षशील, प्रकाश करने वाले के लिए (घृष् - पीसना, कूटना, घिसना, घृ - गीला करना, तरडा देना, सींचना, बूंद बूंद गिरना, टपकना, घृ - टपकना, क्षरित होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

घोर = घोर (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर = चतुराई से चलना)।

घोरम् = घोर को (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर = चतुराई से चलना)।

घोराय = घोर के लिए (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर = चतुराई से चलना)।

घोरे = घोर में (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर = चतुराई से चलना)।

घोषः = घोष (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घोषतम् = घोष करें (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घोषयन् = घोष करते हुए (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घोषाः = घोष (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घोषान् = घोषों को (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घोषाय = घोष के लिए (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घोषेण = घोष द्वारा (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)।

घ्नता = हनन करने वाले, नष्ट करने वाले, (हन् - मारना)।

घ्नन = हनन करने वाले, नष्ट करने वाले, (हन् - मारना)।

घ्नन्तः = हनन करते हुए, नष्ट करते हुए (हन् - मारना)।

घ्नन्तो = हनन करते हुए, नष्ट करते हुए (हन् - मारना)।

घ्राताय - घ्राताय = प्रकाशित के लिए (घ्रा-जिघ्र -

सूँघना, चूमना। घृ = सींचना, चमकना, प्रकाशित होना, घृ - शब्द करना)।

च

च = और।

चकरिष्यथः = किया (कृ = करना, चक् = तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा करना)।

चकानः = तृप्त करते हुए, तृप्त होते हुए (चक् = तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा करना)।

चकारः = तृप्त करने वाले (कृ = करना)।

चकार = किया (कृ = करना)।

चकृम = किया (कृ = करना)।

चकृम् = किया (कृ = करना)।

चकृम् = चक्र को (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चकृमा = किया (कृ = करना)।

चकृषे = किया (कृ = करना)।

चके = तृप्त किया (चक् = तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा करना)।

चक्कुः - चक्कुः = तृप्त किया (चक् = तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा करना, चक्क् - तृप्त करना, दुःख देना, दुःख पाना, धुलाना, धुलना)।

चक्ररतुः - चक्ररतुः = किया, चक्रण किया (कृ = करना, चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रथुः = चक्रण किया किया, चक्रण किया (कृ = करना, चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रदो = चक्र देनेवाला, शब्दकर्ता, चिन्तनकर्ता (क्रद - दुःखित होना, विकल होना, घबरा जाना, चिन्तन करना क्रन्द - पुकारना, जोर से बुलाना, रोना, चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रम् = चक्र को (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रमाणः - चक्रमाणः = चक्रण करता हुआ, चक्रण करते हुए (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रमे - चक्रमे = किया, पराक्रम किया, चक्रण किया

(कृ - करना। चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रयोः = दोनों चक्रों में, दोनों चक्रों का (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्रवाकः = चक्रवाक, गोलाकार घूमने वाली वायु (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना। वा - प्रवाह होना, बहना, वायु के समान चलना, वच्, वद् - बोलना, कहना, समझाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

चक्रवाकान् = चक्रवाकों को, गोलाकार घूमने वाली वायु को (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना, वच्, वद् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

चक्रवाकौ = चक्रवाक द्वय, गोलाकार घूमने वाली वायु (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना, वच्, वद् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

चक्रा = चक्र (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)

चक्राण = चक्रण करता हुआ, चक्रण करते हुए (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

चक्राम = किया (कृ - करना)।

चक्रियौ = किया (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना, कृ - करना)।

चक्रिरे - **चक्रिरे** = किया, करते हैं (कृ - करना)।

चक्रुः - **चक्रुः** = किया (कृ - करना)।

चक्रे - **चक्रे** = किया (कृ - करना)।

चक्षते = देखता है (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षसा - **चक्षसा** = नेत्रों द्वारा, दृष्टि द्वारा, स्पष्ट वाणी द्वारा (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षसे - **चक्षसे** = देखने के लिए, देखते हो (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षाः = दृष्टि, वाणी (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षाणो = दृष्टि, वाणी वाले (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षथाम् - **चक्षथाम्** = देखें (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षिरे = देखा है, उपदेश करते हैं (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षु - **चक्षु** = दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुः = दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुर्दा - **चक्षुर्दा** = चक्षु अर्थात् स्पष्ट वाणी, दृष्टि को देने वाले (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुर्दाः - **चक्षुर्दाः** = चक्षु अर्थात् स्पष्ट वाणी, दृष्टि को देने वाले (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुर्भ्याम् - **चक्षुर्भ्याम्** = देखने के लिए, आँखों के लिए (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुषा - **चक्षुषा** = नेत्रों द्वारा, दृष्टि द्वारा, स्पष्ट वाणी द्वारा (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुषे - **चक्षुषे** = देखने के लिए, आँखों के लिए (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुषो - **चक्षुषो** = चक्षुओं का (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुष्पाः - **चक्षुष्पाः** = वाणी की रक्षा करने वाला, नेत्रों की रक्षा करने वाला (चक्षुः + पा, चक्ष = स्पष्ट बोलना, कहना, देखना, पा = पालन करना, रक्षा करना)।

चक्षुष्मते - **चक्षुष्मते** = हे चक्षुष्मती, स्पष्ट वाणी, दृष्टि युक्त (चक्ष = स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षोः - **चक्षोः** = चक्षु अर्थात् नेत्रों से (चक्ष = स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चखान = खोदा (खन् - दुःख देना, खोदना)।

चचक्षिरे - **चचक्षिरे** = देखते हैं, उपदेश करते हैं (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चचन्द्राः - **चचन्द्राः** = आनन्द, प्रकाश (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)।

चचरतः = विचरण करते हैं (चर् - चलना, विचरण करना)।

चतम् = याचक, प्रगतिशील, गतिमान (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)।

चतसृणाम् = चार (संख्या)।

चतसृभिः = चार (संख्या)

चतसृभ्यः = चार (संख्या)

चतसृषु = चार (संख्या)

चतस्रः = चार (संख्या)

चतुः = चार।

चतुश्चत्वारिंश = चौवालीसवाँ (चतुः - चार, चत्वारिंशत् - चालीस, संख्या)।

चतुश्चत्वारिंशत् = चौवालीस (चतुः - चार, चत्वारिंशत् - चालीस, संख्या)।

चतुभिः = प्रगतिशील, गतिमानों द्वारा, याचकों द्वारा (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)।

चतुरः = चार (संख्या)

चतुरः = चतुर, प्रगतिशील, गतिमान, याचक (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)।

चतुर्थी = चतुर्थ, चौथा (चतुः - चार, संख्या)।

चतुर्थे - चतुर्थे = चतुर्थ में, चौथे में (चतुः - चार, संख्या)।

चतुर्भिः = चार द्वारा (संख्या)

चतुर्भ्यः = चार के लिए (संख्या)

चतुर्विंशः = चौबीसवाँ (संख्या)।

चतुर्षु = चार में (संख्या)

चतुष्टोमः = चतुष्टोम (चतुः - चार, संख्या (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

चतुष्पदः = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुष्पदा = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुष्पदाः = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुष्पदाम् = चार पैर वाले को (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुष्पदे = चार पैर वाले में (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुष्पात् = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद -

चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुर्विंशतिः = चौबीस (चतु - चार, विंश - बीस, संख्या)।

चतुस्त्रिंशत् = चौतीस (संख्या)।

चत्ताय - चत्ताय = याचक के लिए, प्रगतिशील के लिए, गतिमान के लिए (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)।

चत्वरिंश्याम् = चालीसवें (संख्या)।

चत्वा = याचना कर, जाकर, चलकर (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)।

चत्वारः = चार (संख्या)

चत्वारि = चार (चतुः - चार, संख्या)।

चत्वारिंशत् = चालीस (संख्या)।

चन् = ही।

चन = ही।

चनः = वाणी, विश्वास (चन् - स्मरण करना, शब्द करना, विश्वास करना, मिलाना, अलग करना, हिंसा करना)।

चना = वाणी, विश्वास (चन् - स्मरण करना, शब्द करना, विश्वास करना, मिलाना, अलग करना, हिंसा करना)।

चनोधाः = वाणी, विश्वास को धारण करने वाला (चन् - स्मरण करना, शब्द करना, विश्वास करना, मिलाना, अलग करना, हिंसा करना, धा - धारण करना)।

चनोहितः = शब्दकर्ता, विद्वान्, विश्वास तथा स्मरण करने वालों का हित करने वाला (चन् - स्मरण करना, शब्द करना, विश्वास करना, मिलाना, अलग करना, हिंसा करना, हि - जाना, जानना, पाना, हित करना)।

चनोहितो = शब्दकर्ता, विद्वान्, विश्वास तथा स्मरण करने वालों का हित करने वाला (चन् - स्मरण करना, शब्द करना, विश्वास करना, मिलाना, अलग करना, हिंसा करना, हि - जाना, जानना, पाना, हित करना)।

चन्दैः = आनन्द, प्रकाश द्वारा (चन्द् - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्र = आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)।

चन्द्रः = आनन्दप्रद, प्रकाशमान (सु - अच्छा, सुन्दर,

चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)।

चन्द्रम् - चन्द्रम् = आनन्द, प्रकाश को (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)।

चन्द्रमसः = आनन्द, प्रकाश का (चन्द्र- आनन्द होना, चमकना)।

चन्द्रमसि - चन्द्रमसि = आनन्द, प्रकाश में, आनन्दपूर्वक (चन्द्र = चमकना, आनन्द होना)।

चन्द्रमसे - चन्द्रमसे = चन्द्रमा के लिए, आनन्द, प्रकाश के लिए (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्रमा = चन्द्रमा, आनन्द, प्रकाश दायक (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्रमाः - चन्द्रमाः = चन्द्रमा, आनन्द, प्रकाश दायक (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्रा - चन्द्रा = चन्द्रमा, आनन्द, प्रकाश दायक (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्राग्रा - चन्द्राग्रा = चन्द्राग्र, चन्द्रमा का अग्र, आनन्द, प्रकाश दायक का अग्र (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्राणि - चन्द्राणि = प्रसन्नताएं, आनन्ददायक (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्राय - चन्द्राय = चन्द्र के लिए, आनन्द, प्रकाश के लिए (चन्द्र = चमकना, आनन्द होना)।

चन्द्री - चन्द्री = आनन्ददायक (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्रेण - चन्द्रेण = चन्द्र द्वारा, आनन्द, प्रकाश द्वारा (चन्द्र - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चप्यम् = तोषणीय, रक्षणीय (चप् - शान्त करना, सन्तुष्ट करना, सान्त्वना करना, चूर्ण करना, जाना, रक्षा करना, सहन करना)।

चमसाः = चमस, भोजन-पात्र (चम् - खाना)।

चमसैः = चमसों द्वारा (चम् - खाना)।

चमू = भोजन, खाने वाला, प्राप्ति (चम् - खाना, पाना)।

चमूषत् = भोजन किया, प्राप्त किया (चम् - खाना, पाना)।

चमूषदो = प्राप्त करने वाला, प्राप्ति के लिए जाने वाला (चम् - खाना, पाना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

चमूषु = भोजनों में (चम् - खाना, पाना)।

चम्वी = भय दिखाने वाला, मर्दन करने वाला (चम् - खाना, पाना। चम्ब - मर्दन करना, भय दिखाना)।

चम्बोः = भय दिखाने वाला, मर्दन करने वाला, प्राप्त करने वाला (चम् - खाना, पाना। चम्ब - मर्दन करना, भय दिखाना, चम - खाना, पाना)।

चर = चलने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरतः = विचरण करता है, चलने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरति = विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरथम् = विचरणशील को (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरन् = विचरण करते हुए (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरन्तम् = विचरण करने वाले को (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरन्ति - चरन्ति = विचरण करते हैं, चलते हैं (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरन्ती = विचरण करते हुए (चर -जाना, खाना,

चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरसि = विचरण करते हो (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरा = विचरण करने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चराचरेभ्यः = चराचरों के लिए, चर - अचर के लिए (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरामसि = विचरण करते हो (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चराय = विचरण के लिए (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरित्रान् - चरित्रान् = चरित्रों को, विचरण करने वालों को (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरित्राय - चरित्राय = चरित्र के लिए, विचरण करने वाले के लिए (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरिष्णु-धूमम् = चरिष्णु-धूम को, विचरणशील-धूम (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

चरिष्यामि = विचरण करूँगा, आचरण करूँगा (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरुः = विचरण करने वाला, विचरणशील (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चरुणाम् = चरुणों का (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास

करना)।

चरेम = विचरण करें, आचरण करें (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चर्कृत्यानि = चर्कृत्यों को, तृप्ति्यों को, प्रतिघातों को (चर्क - तृप्त करना, प्रतिघात करना, कृ - करना)।

चर्कृषत् = तृप्त करना चाहता है, प्रतिघात करना चाहता है (चर्क - तृप्त करना, प्रतिघात करना, कृ - करना)।

चर्मन्मन् - चर्मन्मन् = चर्मन् को, (चर्म - चर्म होना, आवरण होना, चर् - चलना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चर्मव = चर्म के समान, आवरण के समान (चर्म - चर्म होना, आवरण होना, चर् - चलना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)।

चर्षणि - चर्षणि = आनन्द, चेतना, विचार वाला (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।

चर्षणिप्राः - चर्षणिप्रा = आनन्द, चेतना, विचार को पूर्ण करने वाला (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।

चर्षणीः = आनन्द, चेतना, विचार (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।

चर्षणीधृतः - चर्षणीधृतः = आनन्द, चेतना, विचार को धारण करने वाला (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना, धृ - धारण करना)।

चर्षणीधृतम् = आनन्द, चेतना, विचार को धारण करने वाले को (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना, धृ - धारण करना)।

चर्षणीधृतिः = आनन्द, चेतना, विचार को धारण करने वाला (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना, धृ - धारण करना)।

चर्षणीधृतो - चर्षणीधृतो = आनन्द, चेतना, विचार को धारण करने वाला (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना, धृ - धारण करना)।

चर्षणीनाम् - चर्षणीनाम् = आनन्द, चेतना, विचार युक्तों का (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार

करना)।

चर्षणीभ्यः = आनन्द, चेतना, विचारों के लिए (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।

चर्षणीसहम् = आनन्द, चेतना, विचार को सहन करने वाला, आनन्द, चेतना, विचार में समर्थ (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना, सह - सहना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

चर्षणीसहाम् - चर्षणीसहाम् = आनन्द, चेतना, विचार को सहन करने वाला, आनन्द, चेतना, विचार में समर्थ (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना, सह - सहना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

चषालम् = खाने, बोलने, देखने वाले (चष् - खाना, बोलना, देखना)।

चष्टे = खाते हैं, बोलते, देखते हैं (चष् - खाना, बोलना, देखना)।

चस्कन्द = वक्ता, दृष्टा (चष् - खाना, बोलना, देखना)।

चस्कभाने = हे स्तम्भित करने वाले, हे स्थापित करने वाले (चष् - खाना, बोलना, देखना। स्कम्भ - गति करना, रोकना, प्रतिबन्ध करना, मूर्ख होना, मतिमन्द होना, स्कम्भ - स्थापित करना, स्थित करना)।

चाकशीभिः = प्रकाशमानों द्वारा (चाकश् - चमकना, प्रकाश करना)।

चाकशीमि = प्रकाश करता हूँ (चाकश् - चमकना, प्रकाश करना)।

चाकशीहि = प्रकाश करो (चाकश् - चमकना, प्रकाश करना)।

चाक्षुष्यः - चाक्षुष्यः = दर्शनीय, कथनीय, वर्णनीय (चक्ष् = स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चाक्षुष्यो = दर्शनीय, कथनीय, वर्णनीय (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)

चाण्डालम् = चाण्डाल को (चण्ड - तीक्ष्ण होना, क्रोध करना, दुष्टता करना)।

चातनम् = चातन को, याचना, नाश, गति को (चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)।

चारय = चलाओ, खिलाओ (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)।

चारु - चारु = चारु (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)।

चारुः - चारुः = चारु (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)।

चारुणः = चलाने वाला, वीर, प्रयास करने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)।

चारुणो = चलाने वाला, वीर, प्रयास करने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)।

चारुम् - चारुम् = चारु को (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)।

चाषान् = खाने, बोलने, देखने वालों को (चष् - खाना, बोलना, देखना)।

चाषेण = खाने, बोलने, देखने वालों द्वारा (चष् - खाना, बोलना, देखना)।

चिकित् = विद्वान् (चिकित् - जानना)।

चिकितः = विद्वान् (चिकित् - जानना)।

चिकित्रे = जानता है (चिकित् - जानना)।

चिकित्वन् = विद्वान् (चिकित् - जानना)।

चिकित्वान् = विद्वान् (चिकित् - जानना)।

चिकित्स = जानो, निवास करो, शासन करो, चिकित्सा करो (चिकित्स - जानना, निवास करना, शासन करना, चिकित्सा करना, पीड़ा निवारण करना, दुःख देना)।

चिकित्सति = जानता है, निवास करता है, शासन करता है, चिकित्सा करता है (चिकित्स - जानना, निवास करना, शासन करना, चिकित्सा करना, पीड़ा निवारण

चिंताना: = चेतन, चुना गया, एकत्र करने वाले (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चित्पतिः – चित्पतिः = चित्त या चेतना, ज्ञान के पति
(चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार
करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना,
शंका करना, सन्देह करना, पत = ऐश्वर्य होना, स्वामी

शंका करना, सन्देह करना)।

चित्त्रावसो – चित्रावसो = चेतनावास, निश्चल चेतना (चित्र = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निश्चल होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

चित्रोतयो = चेतन करने वाले, चित्र, आश्चर्यस्वरूप (चित्र = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चिनुषे = चुनते हो (चि - चयन करना, ढूँढ़ना, बटोरना, एकत्र करना)।

चिन्वन्तु = चुनो, एकत्र करो (चि - चुनना, एकत्र करना)।

चिन्वानः = चुनने वाले, एकत्र करने वाले (चि - चुनना, एकत्र करना)।

चिश्चा = चिं-चा (ध्वन्यानुसारी शब्द)।

चीकलृपाति = सक्षम करे (चीक - सहन करना, सहना, उतावला होना, असहिष्णु होना, छूना, स्पर्श करना)।

चीकलृपाति = सामर्थ्यवान् करता है (चीक - सहना, उतावला होना, असहिष्णु होना, स्पर्श करना)।

चीयमानः = चुनने वाले, एकत्र करने वाले (चि - चुनना, एकत्र करना)।

चृत = प्रकाशक, गूँथने वाले, एकत्र करने वाले, संगठनकर्ता (चृत् - प्रकाशित करना, चमकाना, जलाना, एकत्र कर बाँधना, गूँथना, हिंसा करना)।

चृता = प्रकाशक, गूँथने वाले, एकत्र करने वाले, संगठनकर्ता (चृत् - प्रकाशित करना, चमकाना, जलाना, एकत्र कर बाँधना, गूँथना, हिंसा करना)।

चुक्रुधम् = क्रोध किया (क्रुध - क्रोध करना)।

चुच्यवत् = चुच्य के समान, स्नान योग्य, मथने, काटने के समान (चुच-चुच्य - अर्क निकालना, स्नान करना,

मथना, काटना, अर्क निकालना)।

चेकितत् = जानता हुआ (चिकित् - जानना)।

चेकितानः = विद्वान् (चिकित् - जानना)।

चेत् = यदि (अव्यय)।

चेततः = चेतन, चुना गया, एकत्र (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेतति = चेतता है, चुनता है, एकत्र करता है (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेततुः = चेतन, चुना गया, एकत्र (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेततो = चेतन करने वाला, सचेत करने वाला, ज्ञान देने वाला, चेतन, एकत्र, विचार करने वाला (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेतनः = चेतन, विचारशील, चुना गया, एकत्र (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेतनम् = चेतन, विचारशील, चुना गया, एकत्र को (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेतन्ती = चेतन करती हुई, एकत्र करती हुई (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चेतय = चिन्तन, विचार, चेतन, एकत्र करो (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका

चोदिता = प्रेरित करने वाला, प्रेरणा-दाता (चुद - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)।

चोदेथाम् = प्रेरित करे (चुद - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)।

च्यवनः = हँसने वाला, तैरने वाला, पार कराने वाला, विद्वान् (च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

च्यवनेन = हँसने वाल, तैरने वाले, पार कराने वाले, विद्वान् द्वारा (च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

च्यवस्व = हँसाओ, तैरो, पार कराओ (च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

च्यवानाम् = हँसने वालों का, तैरने वालों का, पार कराने वालों का, विद्वानों का (च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

च्यवया = हँसने वालों का, तैरने वालों का, पार कराने वालों का, विद्वानों का (च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

छ

छत् = आच्छादन, आवरण, बल (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)।

छदिः = आच्छादन, आवरण, बल (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)।

छत्सत् = संवरण किया (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्ति = आच्छादित करते हो (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्द = छन्द (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दः = छन्द (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दसा = छन्द द्वारा (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दांसि = छन्द (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन

करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दो = छन्द (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दोनामानाम् = छन्द नामों का (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दोभिः = छन्दों द्वारा (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छन्दम् = छन्द को (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)।

छर्दिः = सम्यक् दीपन, कथन (छृद्-छर्द् - सम्यक् दीपन करना, कहना, उद्गार होना, वमन होना)।

छर्दिषा = छर्दि द्वारा, सम्यक् दीपन, कथन, उद्गार द्वारा (छर्द् - सम्यक् दीपन करना, कहना, उद्गार होना, वमन होना)।

छागः = छाग (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छागम् = छाग को (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छागस्य = छाग का (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छागेन = छाग द्वारा (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छागैः = छागों द्वारा (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छादयामि = आच्छादन करता हूँ (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)।

छाया = छाया (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना, छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छायाम् = छाया को (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना, छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छायायाम् = छाया में (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना, छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छिद्रम् - छिद्रम् = छिद्र (छिद्र - छेद करना)।

छिद्रा = छिद्र (छिद्र - छेद करना)।

छिन्नम् - छिन्नम् = छिन्न (छिद्- छेदना, काटना, छिन्न-भिन्न करना)।

छृन्दन्तु = प्रकाशित करो (छृन्द - प्रकाश करना, चमकना, खेलना)।

छ्यति = काटता है (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

छ्यन्तु = काटो (छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)।

ज

जक्षिवांसः - जक्षिवांसः = खाने वाले, हँसने वाले (जक्ष - खाना, हँसना)।

जगच्छन्दसम् = संसार, गतिशील आच्छादन को (जगत्-छन्दसम्, जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना, छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना)।

जगत् = संसार, गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगतः = जगत् का, संसार का, गतिशील का (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगताम् = जगतों का, संसारों का, प्रगतिशीलों का, गतिशील हो, चलें (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगती = जगती, संसार, गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगतीभिः - जगतीभिः = जगती द्वारा (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगतीम् = जगती को, संसार को, गतिशील को (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगत्याः = जगती का, संसार का, गतिशील का (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगत्याम् = जगती में (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगत्यै = जगती के लिए, संसार, गतिशील के लिए (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगन्था = गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगम्यात् = चलें, ग्रहण करें (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगार = स्तुति-प्रशंसा करते हैं, प्रगतिशील (जिगा-गा - प्रशंसा करना, सराहना, गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना)।

जगृह्या = गृहण किया (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृभ्-गर्भ - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

जगमयः = गम्य, जाने योग्य, गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगमये = गम्य, जाने योग्य, गतिशील के लिए (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जग्मुः = गये (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जग्रभत् - जग्रभत् = गृहण किया (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

जग्रह = गृहण किया, जाना (गृह् - ग्रह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)।

जग्राह = गृहण किया (गृह् - ग्रह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)।

जघनान् = हिंसा की, मार दिया, हनन किया, हिंसकों को (हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जघन्थ = हिंसा की, मार दिया, हनन किया (हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जघन्याय = जघन्य के लिए, हिंसनीय के लिए, मारने योग्य के लिए (हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जघान = हिंसा की, मार दिया, हनन किया (हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जघास = खाया (घस् - खाना)।

जघ्निः = हननकर्ता (जघ्न् - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)।

जघ्रिः - जघ्रिः = प्रकाशक, विनाशक (जघृ - प्रकाश करना, नाश करना)।

जङ्घनत् = हनन किया, हिंसा की, मार दिया, गये (जङ्घ - गति करना, जाना, जानना, पाना, हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जङ्घन्ति - जङ्घन्ति = जाते हैं, जानते हैं, हनन करते हैं, हिंसा करते हैं (जङ्घ - गति करना, जाना, जानना, पाना, हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जङ्घाभ्याम् = जङ्घाओं द्वारा, जानने वालों द्वारा (जङ्घ - गति करना, जाना, जानना, पाना, हन्-घ्न - हिंसा करना)।

जज्नुः = उत्पन्न किया, प्रकट करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जजान = उत्पन्न किया (उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन- उत्पन्न करना)।

जज्जतुः - जज्ञतुः = उत्पन्न किया, जाना (जन- उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, ज्ञा - जानना)।

जज्जान - जज्ञान = उत्पन्न किया, जाना (जन- उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, ज्ञा - जानना)।

जज्जानः - जज्ञानः = उत्पन्न किया, जान लिया, जानने वाले (जन- उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, ज्ञा - जानना)।

जज्जानम् - जज्ञानम् = उत्पन्न किया, जाना (जन- उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, ज्ञा - जानना)।

जज्ञानो = उत्पन्न किया, जाना (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना, ज्ञा - जानना)।

जज्जिरे - जज्ञिरे = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जज्ञिषे = उत्पन्न होता है (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जज्जे - जज्ञे = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जठरम् = जठर को (जठ् - धारण करना)।

जठरे = जठर में, धारण में (जठ् - धारण करना)।

जठरेषु = जठरों में, धारणों में (जठ् - धारण करना)।

जतूः = उत्पन्न करने वाले (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जत्रवो = जत्रव, उत्पन्नकर्ता (जन = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

जन = जन (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनः = जन (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनत = उत्पन्न करता है, प्रकट करता है (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जननाम् = उत्पन्न करने वालों का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनपानम् = जन-रक्षक, जन-पान को (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना, पा - रक्षा करना, पा- पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

जनभृतः = जनों का भरण करने वाले (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, भृ - भरण करना)।

जनम् = जन को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनमाने = जनमान में, उत्पन्न करने वाले में (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनय = उत्पन्न करो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयः = उत्पन्न करो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयत् = उत्पन्न करता है (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयत्यै = उत्पादक शक्ति के लिए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयथ = उत्पन्न करो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयथा = उत्पन्न करे (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयन् = उत्पन्न करते हुए, उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनयन्त = उत्पन्न किया (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्तुभिः = जन्तुओं द्वारा (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्त्वः = जन्तु (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्त्वम् = जन्तु को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्म = जन्म (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्मन् = जन्म (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्मना = जन्म द्वारा (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्मनी = जन्म लेने वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्मने = जन्म के लिए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्याः = जन्य, उत्पन्न करने योग्य (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्याम् = जन्या को, उत्पन्न करने योग्य को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जन्यासः = जन्य, उत्पन्न करने योग्य (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जभार = परिहास किया, विनोद किया, भरण किया (जभ् - परिहास करना, विनोद करना, मैथुन करना, भृ - भरण करना)।

जभ्रिरे - जभ्रिरे = परिहास किया, विनोद किया, भरण किया (जभ् - परिहास करना, विनोद करना, मैथुन करना, भृ - भरण करना)।

जभ्रिषे = पोषण करता है, विनोद करता है, भरण करता है (जभ् - परिहास करना, विनोद करना, मैथुन करना, भृ - भरण करना)।

जमदग्निः - जमदग्निः = अग्नि-भोजी (जम् = खाना, निगलना, अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)।

जमदग्निना = अग्नि-भोजी द्वारा (जम् = खाना,

निगलना, अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)।

जमदग्निवत् = अग्नि-भोज युक्त, अग्नि-भोज के समान (जम् = खाना, निगलना, अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)।

जमदग्नेः = जगदग्नि का, अग्नि-भोजी का, अग्रणी का (जम् = खाना, निगलना, अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)।

जम्भकम् = जम्भक को, विनाशक, गर्वीले, आलसी को (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जम्भयन् = गर्व करता हुआ, नाश करता हुआ, आलस्य करता हुआ (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जम्भयन्तः = गर्व करता हुआ, नाश करता हुआ, आलस्य करता हुआ (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जम्भयोः = गर्व का, नाश का (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जम्भे = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जम्भ्यैः = गर्व योग्य द्वारा, नाशयोग्य योग्य द्वारा (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जय = विजय (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयत = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयताम् = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयति = जीतता है (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयतु = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयन् = जय करते हुए (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयन्तम् = जीतने वाले (जि - सब से बढ़ कर होना, जीतना)।

जयन्तीनाम् = विजेताओं का, जय करने वाले लोगों का (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयन्तु = जीतें (जि - सब से बढ़ कर होना, जीतना)।

जया = जय करो (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयाति = जय करता है (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयेम = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जयेयम् = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जरते = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरदष्टिः - जरदष्टि = जरदृष्टि, वृद्धदृष्टि, वर्धित दृष्टि। (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, दृश् - देखना)

जरन्ते = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व करते हैं (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरसम् = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरा = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरायुः = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)।

जरायुजः = जरायुज, जरायु से उत्पन्न (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना, जन-उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जरायुणा = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व आयु द्वारा (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)।

जरितारः - जरितारः = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितारो = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितृणाम् - जरितृणाम् = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व लोगों का (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितृन् = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितृभ्यः = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व लोगों के लिए (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितृभ्यो = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व लोगों के लिए (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितुः = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व लोगों का (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरित्रे = जरित्र में, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व में, के लिए (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरेत = जरित्र, जीर्ण, वृद्ध, परिपक्व करें (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरहृषाणः - जरहृषाणः = हर्षित होता हुआ (हृष - सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)

जर्भुराणा = प्रकाशित होकर विकसित होकर (जृभृ - जृम्भ - विकसित होना, प्रकाशित होना)।

जल्प्या = जल्पने वाले, बहुवादी (जल्प् - बहुत बोलना)।

जवः = वेगवान् (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना)।

जवम् = वेगवान् को (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना)।

जवाय = वेगवान् के लिए (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना)।

जविष्ठम् = अतिशय वेगवान् (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना)।

जवीयो = अधिक वेगवान् (जु - जाना, जल्दी जाना, भागना)।

जहका = हनन, त्याग करने वाले (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा - परित्याग करना, छोड़ना)।

जहाति = त्याग देते हैं, हनन, त्याग करते हैं (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा - परित्याग करना, छोड़ना)।

जहामि = त्याग करता हूँ, हनन करता हूँ (जह - हिंसा

करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)।

जहि = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)।

जही = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)।

जहीत = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)।

जहीमो - जहीमो = हनन, त्याग, प्रगति करते हैं (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)।

जाः = उत्पन्न होने वाले, विद्वान्, गति वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना, जु - जाना, जल्दी जाना, भागना)।

जागतः = जगत् सम्बन्धी, प्रगति सम्बन्धी (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जागतेन = जागत द्वारा, प्रगति द्वारा (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जागतेभ्यः = जागतों के लिए, जागतों से, प्रगति के लिए (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जागरणम् = जागरण, जाग्रति (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागार = जागता है (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृतो = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृयाम = जाग्रत होते हैं, जाग्रत रहते हैं, जागते हैं (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृवद्भिः = जागृवद् द्वारा (जागृ - जगना, नींद न लेना, वद् = कहना, बोलना)।

जागृवांसः - जागृवांसः = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृवि = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृविः = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृविम् = जागे हुए, जाग्रत को (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृवे = हे जाग्रत, जागरूक (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जागृहि = जाग्रत हो (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जाग्रत - जाग्रत = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जाग्रते - जाग्रते = जाग्रत में (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जाग्रतो - जाग्रतो = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जाग्रद्भ्यः = जाग्रत के लिए (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जात = उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जातः = उत्पन्न (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जातम् = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जातवेद = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)।

जातवेदः = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)।

जातवेदसम् = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले को (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)।

जातवेदसे = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले के लिए (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)।

जातवेदसौ = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना,

उत्पन्न करना)।

जामिः = उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जामिभिः = जामियों द्वारा, पोषण करने वालों द्वारा (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जामिम् = खिलाने वाले को उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जाम्बीलेन = जाम्बील द्वारा, गर्वितों द्वारा, नाशकों द्वारा, आलस्यों द्वारा (जम् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

जायताम् = उत्पन्न हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायते = उत्पन्न होता है (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायमानः = उत्पन्न करने वाला, उत्पन्न होने वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायमानम् = उत्पन्न होने वालों को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायमानस्य = जायमान का, उत्पन्न करने वाले का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायमानाः = जायमान, उत्पन्न करते हुए, उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायमाने = उत्पन्न होने में (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जायसे = उत्पन्न होते हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जाया = उत्पन्न करने वाली (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जारः = जार, वृद्ध, विजेता (जृ - वृद्ध होना, जि - जय होना, वृद्ध होना)।

जारम् = जार को, वृद्ध, विजेता को (जृ - वृद्ध होना, जि - जय होना, वृद्ध होना)।

जारो = जार, वृद्ध, विजेता (जृ - वृद्ध होना, जि - जय होना, वृद्ध होना)।

जावतः = वेगवान् को, प्रगतिशील (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, भागना)।

जास्पत्यम् = उत्पन्न (सृष्टि) के पालन-रक्षण करने वाले को (जस् - मार डालना, पीड़ा देना, ताड़ना करना, उपेक्षा करना, मुक्त करना, छोड़ देना, जन् - उत्पन्न करना, पत् - ऐश्वर्य होना, पा - पालन करना)।

जिगाति = स्तुति करता है (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

जिगासि = स्तुति करते हो (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना, जाना, जानना, पाना)।

जिगीषणम् = स्तुति करने वाले को (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

जिगीषम् = स्तुतिमान को, स्तुति करने वाले को (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

जिगीषमाणम् = स्तुतिमान को, स्तुति करने वाले को (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

जिग्युः = स्तुति करते हो (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

जिग्युषे = स्तुति करते हो (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

जिघर्मि - जिघर्मि = प्रकाश करता हूँ, नाश करता हूँ (जिघ्र - गन्ध लेना, गन्ध ग्रहण करना, सूँघना, जिघृ - प्रकाश करना, नाश करना)।

जिघांसत् = हिंसा की (हन्-घ्न-जिघ् - हिंसा करना)।

जिघांसति = हिंसा करता है (हन्-घ्न-जिघ् - हिंसा करना)।

जिघांसद्भ्यो = हिंसा के लिए (हन्-घ्न-जिघ् - हिंसा करना)।

जिघ्न - जिघ्न = हिंसक (हन्-घ्न-जिघ् - हिंसा करना)।

जिघ्नते - जिघ्नते = हिंसा करता है (हन्-घ्न-जिघ् - हिंसा करना)।

जिघ्नतो = हिंसा करने वाले (हन्-घ्न-जिघ् - हिंसा करना)।

करना)।

जिघ्रसे = हिंसा करता है (हन्-घ्न-जिघ्र - हिंसा करना)।

जिघ्रत - जिघ्रत = गन्धग्राही, सूँघने वाला, प्रकाश करने वाला, नाश करने वाला (जिघ्र - गन्ध लेना, गन्ध ग्रहण करना, सूँघना, जिघ्र - प्रकाश करना, नाश करना)।

जिजीविषेत् = जीवन की इच्छा करें {जीव् = प्राण धारण करना, जीवन धारण करना}।

जित् = जीतने वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जित = जीतने वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जितम् = जीतने वाले को (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जितिम् = जीतने वाले को, जय को, विजय को (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जित्याय = जीतने वाले के लिए (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जिनाति = जीतता है, , अलग करता है, मिलाता है (जिन - जय करना, अलग करना, मिलाना)।

जिन्व = प्रसन्न करो (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वतम् = प्रसन्न करो, सन्तुष्ट करो (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वति = सन्तुष्ट करता है, प्रकाशित होता है (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वथ = प्रीति करो (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वन् = प्रसन्न करता हुआ, सन्तुष्ट करता हुआ (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वन्तः = प्रसन्न करते हुए (जिन्व् = सन्तुष्ट करना,

प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वम् = प्रसन्न करने वाले को (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिन्वसि = प्रसन्न करते हो (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जिष्णुः = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जिष्णुना = जिष्णु द्वारा, जीतने वाले, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाले द्वारा (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जिष्णोः = जिष्णु का, जीतने वाले, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाले का (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जिहताम् = जाओ, जानो, प्राप्त करो (जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)।

जिह्वया - जिह्वया = जिह्वा से (जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)।

जिह्वा - जिह्वा = जिह्वा (जिह् = जाना, जानना, पाना)।

जिह्वाभिः = जिह्वों द्वारा (जिह् = जाना, जानना, पाना)।

जिह्वाम् - जिह्वाम् = जिह्वा को (जिह् = जाना, जानना, पाना)।

जिह्वाया = जिह्वा का (जिह् = जाना, जानना, पाना)।

जिह्वायाः - जिह्वायाः = जिह्वा का (जिह् = जाना, जानना, पाना)।

जिह्व्या - जिह्व्या = जिह्वा द्वारा (जिह् = जाना, जानना, पाना)।

जिमूतान् = दानी को, खाने वालों को (जिम् = खाना, देना, दान करना, अर्पण करना)।

जीयते = जीता जाता है (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जीरदानुम् = जीरदानु को, वृद्धि, परिपक्वता देने वाले को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, दा = देना)।

जीराश्वो = अत्यन्त प्रगतिशील, जीर्ण-व्यापकता (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

जीव = जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवगृभो = जीवगर्भ, जीव को गृहण करने वाला (जीव - जीवन होना, प्राणवान् होना, गृह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, निवास करना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्म् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ - ग्रहण करना, लेना, अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

जीवदानुम् = जीवनदायी को (जीव - जीवन होना, प्राणवान् होना, दा = देना)।

जीवनाय = जीवन के लिए (जीव - जीवन होना, प्राणवान् होना)।

जीवन्तु = जीवित रहो (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीव-भोजनः = जीव-भोजन (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

जीवम् = जीव को (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवला = जीवला, प्राण धारण, जीवन धारण (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवसे = जीव के लिए, जीवन के लिए (जीव् = जीवन

होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवाः = जीव (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवात् = जीवन-यापन करता है (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवातवे = जीवन-यापन के लिए (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवातुः = जीव का, जीवन का (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवाय = जीव के लिए (जीव् = प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीविता = जीवित (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवेभ्यः = जीवों के लिए (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवेम = जीवित रहें (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवेषु = जीवों में (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीव्यासम् = जीवन पायें, जीवित रहें (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जुजुषाणः = विचार, सेवा करने वाले (जुष - विचार करना, सेवा करना, चाहना, दुलारना)।

जुजोषते = विचार, सेवा, स्नेह करता है (जुष - विचार करना, सेवा करना, चाहना, दुलारना)।

जुनाः = गति, कम्पन, मिश्रण, विभाग, जय करने वाले (जुन् - गति करना, हिलना, कम्पन करना, जीतना, मिलाना, अलग करना)।

जुम्बकाय = जुम्बक के लिए, तीव्र गति के लिए (जु = जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुवम् = गति, कम्पन, मिश्रण, विभाग, जय करने वाले

करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

जुहुता = दानी, दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुहुमः = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुहुराणम् = जुहुराण को, त्याज्य, कुटिलता, आदान-प्रदान को (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, हृवृ - कुटिल होना, वक्र होना, ठगना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुहुरे = आदान-प्रदान किया (हु-जुहु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, हृवृ - कुटिल होना, वक्र होना, ठगना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुहः = आदान-प्रदान करने वाला (जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना)।

जुहूभिः = आदान-प्रदान द्वारा, दानियों द्वारा (जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, जु - जाना, जल्दी जाना, भागना)।

जुहोत = दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना)।

जुहोतन = दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुहोमि = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुह्वः = दान करने वाले, आदान-प्रदान करने वाले (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुह्व = दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुहवत् = दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुह्वा = दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जुह्वास्यः = दान ही जिसका आसन है, दानासन (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

जुह्वो = दान करने वाले, आदान-प्रदान करने वाले (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूः = गति, विद्या, वेगवान् चंचल (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूतये = वेगवान्, चंचल के लिए (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूतिः = वेग, चंचलता (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूतिम् = वेग को, चंचलता को (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूत्या = वेग द्वारा, चंचलता द्वारा (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूर्णाम् = वेगवान् को (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जूर्णायाम् = वेगवान् में (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

जेता = जीतने वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जेतारम् = जीतने वाले को (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जेत्वानि = जीत, विजय (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जेन्यस्य = जीतने योग्य का (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, जिन -

मिलाना, अलग करना)।

जेन्यावसू = जेन्य वसु वाले (जिन - मिलाना, अलग करना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जेमा = दानी, खाने वालें (जिम् = खाना, देना, दान करना, अर्पण करना)।

जेषम् = सेवा, सिञ्चन करने वाले को (जिष् - सेवा करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना)।

जेषि = सेवा, विजय करो (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, जिष् - सेवा करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना)।

जेष्म = सेवा करे, सिञ्चन करें, जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, जिष् - सेवा करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना)।

जेष्यसि = सेवा करते हो, सिञ्चन करते हो, जय करते हो (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, जिष् - सेवा करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना)।

जेहमानम् = विचारशील, विद्वान् (जेह् - विचार करना, जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)।

जैत्रम् - जैत्रम् = जैत्र को, जीत, विजय करने वाले को (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जैत्रस्य = जैत्र का, जीत, विजय करने वाले का (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जैत्राय - जैत्राय = जैत्र के लिए, जीत, विजय के लिए (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

जोष = विचारशील, सेवाभावी (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोषत् = विचारशील, सेवाभावी (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोषम् = विचारशील, सेवाभावी को (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोषि = विचार, सेवा करो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोष्टरी = विचारशील, सेवाभावी (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोष्टारम् = विचारशील, सेवाभावी को (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोष्टरी - जोष्ट्री = विचारशील, सेवाभावी (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोष्टरीभ्याम् - जोष्ट्रीभ्याम् = विचारशील, सेवाभावी युगल द्वारा, के लिए, से (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोष्ट्रे - जोष्ट्रे = विचारशील, सेवाभावी में (जुष् = विचार करना, सेवा करना, विवेक-प्रीति करना)।

जोहवीति - जोहवीति = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हू-जुहू = दान करना, आदान-प्रदान करना)।

ज्जात्रम् - ज्जात्रम् = ज्ञानी को (ज्ञा = जानना)।

ज्ञानम् = ज्ञान को (ज्ञा = जानना)।

ज्जेषम् - ज्जेषम् = ज्ञानी को (ज्ञा = जानना)।

ज्जम् = भोजी, खाने वाला, निगलने वाला (जम् = खाना, निगलना, गति करना, जाना)।

ज्जम् = भोजी, खाने वाला, निगलने वाला (जम् = खाना, निगलना, गति करना, जाना)।

ज्ज्मायन्तम् = भोजन करते हुए को, भोजन कराते हुए को (जम् = खाना, निगलना, गति करना, जाना)।

ज्जम् = गति, जाना (जम् = खाना, निगलना, गति करना, जाना)।

ज्यया = ज्या, वृद्ध, जयी द्वारा (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्या = ज्या, वृद्ध, जयी (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्याकाः = विजेता, बर्द्धित (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्याकारम् = ज्याकार को, जय करने वाले को (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्याम् = ज्या, वृद्ध, जयी को (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यायः = ज्याय, वृद्ध, जयी (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यायाः = ज्या का, वृद्ध, जयी का (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यायान् = अति प्रशंसित, वृद्ध, बर्द्धित (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यायो = वृद्ध, जयी (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्येष्ठतातिम् = प्रशंसनीय ज्येष्ठ को, ज्येष्ठता का विस्तार करने वाले को (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। तन् - विस्तार करना, ताति प्रत्यय का प्रयोग प्रशंसित के अर्थ में)।

ज्येष्ठम् = ज्येष्ठ, बड़े को (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्येष्ठा = ज्येष्ठ, बड़ा (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्येष्ठाय = ज्येष्ठ के लिए (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यैष्ठ्यम् = ज्येष्ठ को (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यैष्ठ्याय = ज्येष्ठ के लिए (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

जीतना)।

ज्योक् = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर (ज्यु = गति होना)। ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्योतय = प्रकाश करो (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिः = प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतीरथः = ज्योति-रथ, प्रकाश-रथ वाले (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना, रम् - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

ज्योतिषः = ज्योति का (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिषस्पते = हे प्रकाश के स्वामी (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

ज्योतिषा = ज्योति द्वारा, प्रकाश द्वारा (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिषाम् = ज्योतियों का, ज्योतियों में (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिषि = प्रकाश में (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिषे = ज्योति, कान्ति, प्रकाश, ज्योतिष् के लिए, में (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिष्कृत् = प्रकाशकर्ता (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना, कृ - करना)।

ज्योतिष्मतीम् = प्रकाशवान् को (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिष्मन्तम् = प्रकाशवान् को (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिष्मान् = प्रकाशमान (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतींषि = ज्योतियाँ, ज्योतियों को (ज्युत - प्रकाशित होना, चमकना)।

ज्योष्ट्री - ज्योष्ट्री = ज्येष्ठ, निकट आने वाला (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना। ज्यु - गति करना, निकट आना, जाना)।

ण

णः (नः) = हमारा, हमारे लिए, हमको (सर्वनाम)।

णपात् = प्राप्त किया (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, इंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

णीयते = ले जाता है (नी - ले जाना)।

णुदा = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

णो (नः) = हमारा, हमारे लिए, हमको (सर्वनाम)।

णौ (नौ) = हम दोनों (सर्वनाम)।

त

तकवे = सहन करने के लिए (तक - सहन करना, उपहास करना, ठट्ठा करना)।

तक्षति - तक्षति = तक्षण करता है (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

तक्षभ्यः - तक्षभ्यः = तक्षों के लिए, तक्षों से (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

तक्षभ्यो = तक्ष के लिए (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

तक्षणम् - तक्षणम् = तक्षण करने वाले को (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

तक्ष्या = तक्ष योग्य, आच्छादन योग्य (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

तत् = वह, उस को (सर्वनाम)।

तत् एव = वही (सर्वनाम)।

ततः = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)।

ततक्षुः = आच्छादित करने वाले (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

ततन्थ = विस्तार किया (तन् = विस्तार, फैलाना, शब्द करना)।

ततम् = विस्तार युक्त (तन् = विस्तार, फैलाना, शब्द

करना)।

ततर्दित = विस्तार करता हुआ, हिंसा करता हुआ (तन् = विस्तार, फैलाना, शब्द करना, तर्द - मार डालना, दुःख देना)।

ततस्मात् = उससे (सर्वनाम)।

ततान = विस्तारित किया (तन् = विस्तार, फैलाना, शब्द करना)।

ततृषाणो = प्यास, इच्छा (तृष् = तृषा होना, प्यासा होना, इच्छा करना, चाहना)।

ततो = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)।

तत्वाय = तत्व के लिए, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, फैलाना, शब्द करना)।

तत् - तत्र = वहाँ (सर्वनाम)।

तथा = उसी प्रकार (अव्यय)।

तद् = वह (सर्वनाम)।

तदिद् = वही (अव्यय)।

तनचमि - तनचमि = शब्द करता हूँ, विस्तार करता हूँ (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनत् = विस्तार किया (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनयम् = विस्तार को, तनय को (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनयाः = विस्तार, तनय (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनयाय = विस्तार के लिए, तनय के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनयित्नोः = विस्तार करने वालों का (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनये = तनय के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार,

तनूनपात = विस्तार, पालन करने वाले, श्रद्धा, उपकार,

तन्तुम् = तन्तु को (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तरित्तरतः - तरित्रतः = पार कराने वाले से (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तरुणस्य = तरुण का, पार कराने वाले का (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तरुणेन = तरुण द्वारा, पार कराने वाले द्वारा (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तरुता = पार करने वाला, तारने वाला, तारक (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तरुष्यतः = तरने के इच्छुक, पार करने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तरेम = तैरें, तैर जाये, पार हो जायें (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तरोभिः = तरने वालों द्वारा, तैरने वालों द्वारा (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तर्तुराणाः = शीघ्रता से पार करने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तर्पयत - तर्पयत = तृप्त करो (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना)।

तलवम् = तलव को, पूर्ण, स्थापना, सिद्ध करने वाले को (तल् - पूर्ण होना, स्थापना करना, सिद्ध करना)।

तल्य्याय = तल्य के लिए, पूर्णता, स्थापना योग्य के लिए (तल् - पूर्ण होना, स्थापना करना, सिद्ध करना)।

तव = तुम्हारा (सर्वनाम)।

तवसम् = तवस को, गति, वृद्धि, हिंसा को (तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तवसा = तवस् द्वारा, गति, वृद्धि, हिंसा द्वारा (तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तवसे = तवस् के लिए, गति, वृद्धि, हिंसा के लिए (तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तवस्तरम् = अत्यन्त प्रगतिवान्, वृद्धिवान्, हिंसक को (तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तविषाणि = तविषी, गति, वृद्धि, हिंसा, प्रकाशमान (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तविषीः = तविषी, गति, वृद्धि, हिंसा, प्रकाशमान (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तविषीभिः = तविषियों, गतियों, वृद्धियों, हिंसाओं द्वारा, प्रकाशमानों द्वारा (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तविषीम् = तविषी को, गति, वृद्धि, हिंसा, प्रकाशमान को (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तविष्यते = तविष्यमान, गतिमान, प्रकाशमान किया जाता है (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तविष्यमाणो = तविष्यमान, गतिमान, वृद्धि वाले, हिंसा वाले, प्रकाशमान (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तष्टा = स्थापित (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना)।

तसरम् = तसर को, रक्षक को, खोदने, फेंकने, उड़ाने वाले को (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्करम् = तस्कर को, रक्षक को, खोदने, फेंकने, उड़ाने वाले को (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्करस्य = तस्कर का, प्रकट चोर का, रक्षक का, खोदने, फेंकने, उड़ाने वाले का (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्करा = तस्कर, रक्षक, खोदने, फेंकने, उड़ाने वाले (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्कराः = तस्कर, रक्षक, खोदने, फेकने, उड़ाने वाले (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्कराणाम् = तस्करों का, रक्षकों, खोदने, फेकने, उड़ाने वालों का (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्करान् = तस्करों को, रक्षकों को, खोदने, फेकने, उड़ाने वालों को (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)।

तस्तभाने = स्तम्भित अथवा प्रकाशित करने वाले (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, स्तम्भ-स्तम्भ-स्तम्भ - स्थापित करना, स्थित करना)।

तस्तम्भ = स्तम्भित, स्थापित किया (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, स्तम्भ-स्तम्भ-स्तम्भ - स्थापित करना, स्थित करना)।

तस्थिरे = स्थित हैं (तस् - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)।

तस्यथिवांसम् - तस्थिवांसम् = स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)।

तस्थुः = स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)।

तस्थुषः = स्थित का, स्थापित का (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)।

तस्थौ = स्थित किया है, स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)।

तस्मा = इससे (सर्वनाम)।

तस्मात् = उससे (सर्वनाम)।

तस्मिन् = उसमें (सर्वनाम)।

तस्मै = उसके लिए (सर्वनाम)।

तस्य = उसका (सर्वनाम)।

तस्याः = उसका (सर्वनाम)।

तस्याम् = उसमें (सर्वनाम)।

तस्यै = उसके लिए (सर्वनाम)।

ता = वे, वह, वे दोनो (सर्वनाम)।

ताः = वे (सर्वनाम)।

ताडि = ताड़ना दो (ताड - मारना, ताड़न करना। तड - चमकना, चमकाना, बोलना)।

तान् = उनको (सर्वनाम)।

तानि = वे, उन को (सर्वनाम)।

तापम् = ताप को (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)।

ताप्सीत् = तपा, तप किया (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)।

ताभिः = उनके द्वारा (सर्वनाम)।

ताभ्यः = उनके लिए, उनसे (सर्वनाम)।

ताभ्यम् = उनके लिए (सर्वनाम)।

ताभ्याम् = उनके लिए (सर्वनाम)।

ताम् = उसको (सर्वनाम)।

ताम्रः - ताम्रः = अन्धकार, इच्छा, दुःख (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

ताम्राय - ताम्राय = ताम्र के लिए, अन्धकार, इच्छा, दुःख के लिए (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

ताम्रो = अन्धकार, इच्छा, दुःख (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)।

तायत् = संरक्षण करता हुआ, विस्तार करता हुआ (ताय - संरक्षण करना, फैलाना, लम्बा करना)।

तायते = संरक्षण करता है, विस्तार करता है (ताय - संरक्षण करना, फैलाना, लम्बा करना)।

तायवो = संरक्षण करने वाले, विस्तार करने वाले (ताय

- संरक्षण करना, फैलाना, लम्बा करना)।

तारकाः = तारक, तारने वाले, पार कराने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तारम् = पार कराने वाले को (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

ताराय = पार कराने वाले के लिए (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

तारिषः = चाहने वाला, तार दिया, पार किया (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना)।

तारिषत् = चाहा, तार दिया, पार किया (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना)।

तारिष्टम् - तारिष्टम् = अत्यन्त तारने वाले को, चाह, इच्छा करने वाले को (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना)।

तारीषः = पार कराने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना)।

तार्क्ष्यः - तार्क्ष्यः = गमनीय, गम्य, प्राप्य, पाने योग्य, विद्वान् (तृक्ष - चलना, जाना, जानना, पाना)।

तालु = तालु (तल् - पूर्ण होना, स्थापना करना, सिद्ध करना)।

तावत् = तब तक (सर्वनाम)।

तावन्तः = उतना (सर्वनाम)।

तासाम् = उनका (सर्वनाम)।

तिग्म-इषवः = तीव्र इच्छा, तीव्र गति वाले (तिग् - जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्-तेज् - चमकना, चमकाना, पैना करना, इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर

देखना, निरन्तर करना)।

तिग्मजम्भ = कुटिलता से नाश करने वाला, नाश होने वाला, कुटिलता पर गर्व करने वाला (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, जम्भ - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)।

तिग्मतेजः = तिग्मतेज वाले (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्-तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना)।

तिग्मतेजा = तिग्मतेजवाले (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्-तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना)।

तिग्मम् = ज्ञानी, कूटचाल को (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना)।

तिग्मशृङ्गो = कुटिलता से नाश करने वाला, कुटिलता का नाश करने वाला (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

तिग्महेते = ज्ञानी, कूटचाल से बढ़ने वाले के लिए (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, हि - जाना, जानना, पाना, वृद्धि होना, प्रेरणा करना, भेजना)।

तिग्मानि = ज्ञानी, कूटचाल, तीक्ष्ण (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्-तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना)।

तिग्मायुधः = तीक्ष्ण आयुध (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्-तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना)।

तिग्मेन = तिग्म द्वारा, ज्ञानी, कूटचाल द्वारा (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना)।

तितिक्षन्ते - तितिक्षन्ते = क्षमा करते हैं, सहन करते हैं (तितिक्षा - सहन करना, क्षमा करना)।

तितृत्सान् = हिंसक, मारने वाले (तृद् = मार डालना, दुःख देना, अवज्ञा करना, अनादर करना, देना, दान करना, खाना, भक्षण करना)।

तित्तिरिः - तित्तिरिः = पार कराने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के

पार जाना)।

ति॒त्तिरीन् - ति॒त्तिरीन् = पार कराने वाले को (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

ति॒त्विष = प्रकाश का (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

ति॒थिम् = तिथि को (तिक् - जाना, जानना, पाना)।

ति॒रः = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒रः = पार कराने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

ति॒र = पार उतारो, पार करो, तैरो (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

ति॒रन्तु = पार उतारो, पार करो, तैरो (तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)।

ति॒रश्चये = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒रश्चा = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒रश्चीन = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒रश्चीनः = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒रश्चीनो = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒र्यञ्चम् - ति॒र्यञ्चम् = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

ति॒लाः = तिल (तिल् - स्निग्ध होना, तेल होना, तेल लगाना, चिकना होना)।

ति॒लामि = स्निग्ध होता हूँ (तिल् - स्निग्ध होना, तेल होना, तेल लगाना, चिकना होना)।

ति॒ष्ठ = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठत् = ठहरा, खड़ा रहा (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठत = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठति = स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठते = स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठन् = स्थित होता हुआ, ठहरा हुआ (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठन = स्थान, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठन्तीभ्यः = स्थितों के लिए (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठन्तु = स्थित हों, ठहरें (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठसि = स्थित होते हो, ठहरे होते हो, खड़े होते हो (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठसे = प्रतिष्ठित होते हो, स्थित हो, ठहरे हो, खड़े होते हो (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठस्व = ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठा = ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठाति = प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठामि = प्रतिष्ठित होता हूँ, स्थित हूँ, ठहरा हूँ, खड़ा हूँ (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठिपत् - ति॒ष्ठिपत् = प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठुत् = प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒ष्ठुद्भ्यो = प्रतिष्ठित के लिए, स्थित के लिए, (तिष् = ठहरना, खड़ा होना)।

ति॒सृ = तीन (संख्या)।

ति॒सृभिः = तीन (संख्या)।

ति॒सृभ्यः = तीन (संख्या)।

ति॒सृणाम् = तीन (संख्या)।

ति॒सृषु = तीन (संख्या)।

ति॒स्रः = तीन (संख्या)।

ती॒क्ष्ण - ती॒क्ष्ण = प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा (तीक्ष् = बैठना, ठहरना, तीक्ष्ण होना)।

तीक्ष्ण = तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा (तीक्ष् = बैठना, ठहरना, तीक्ष्ण होना)।

तीतपासि = तप करो, ताप करो, ऐश्वर्ययुक्त हो (तप् - तप्त होना, जलना, जलाना, तप्त करना, मन से या शरीर में जलना, ऐश्वर्ययुक्त होना)।

तीर्णम् - तीर्णम् = तैरा, पार हुआ (तृ - तैरना, पार जाना, तीर् - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

तीर्त्वा - तीर्त्वा = तरकर, तैरकर, पार करके (तृ - तैरना, पार जाना, तीर् - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

तीर्थानि - तीर्थानि = तीर्थ, पार करने वाले (तृ - तैरना, पार जाना, तीर् - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

तीर्थे = तीर्थ में, पार करने वाले में (तृ - तैरना, पार जाना, तीर् - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

तीर्थेभ्यः - तीर्थेभ्यः = तीर्थों के लिए, पार करने वालों के लिए (तृ - तैरना, पार जाना, तीर् - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

तीर्थ्याय - तीर्थ्याय = तीर्थ के लिए, पार करने योग्य के लिए (तृ - तैरना, पार जाना, तीर् - पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना)।

तीव्रम् - तीव्रम् = तीव्र को, स्थूल को (तीव् = मोटा, स्थूल होना, रोगी होना)।

तीव्राः - तीव्राः = तीव्र, स्थूल (तीव् = मोटा, स्थूल होना, रोगी होना)।

तीव्रान् - तीव्रान् = तीव्रों को, स्थूलों को (तीव् = मोटा, स्थूल होना, रोगी होना)।

तीव्राम् - तीव्राम् = तीव्र को, स्थूल को (तीव् = मोटा, स्थूल होना, रोगी होना)।

तीव्रेण = तीव्र द्वारा, स्थूल द्वारा (तीव् = मोटा, स्थूल होना, रोगी होना)।

तृणम् = अंकुर, तृण, घास, शब्द को (तृण् - घास चरना, खाना, शब्द करना, अंकुरित होना)।

तृणेषु = तृणों में, अंकुरों में, घासों में, शब्दों में (तृण् - घास चरना, खाना, शब्द करना, अंकुरित होना)।

तृणम् = अंकुर, तृण, घास, शब्द को (तृण् - घास चरना, खाना, शब्द करना, अंकुरित होना)।

तृतीयः = तृतीय, तीसरा (संख्या, सर्वनाम)।

तृतीयम् = तृतीय को, तीसरे को (संख्या, सर्वनाम)।

तृतीयस्याम् - तृतीयस्याम् = तृतीय में, तीसरे में (संख्या, सर्वनाम)।

तृतीयाः = तृतीय, तीसरा (संख्या, सर्वनाम)।

तृतीये = तृतीय में, तीसरे में (संख्या, सर्वनाम)।

तृतीयैः = तृतीय द्वारा, तीसरे द्वारा (संख्या, सर्वनाम)।

तृप्त = तृप्त होता हुआ, प्रसन्न, शान्त होता हुआ (तृप् - तृप्त होना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, शीत होना, शान्त होना, प्रेम करना)।

तृपला = तृप्ति (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना)।

तृप्ताः = तृप्त (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना)।

तृप्ति = तृप्ति (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना)।

तृप्यतु = तृप्त करो (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना)।

तृम्पत् = तृप्त होता हुआ, शान्त होता हुआ (तृम्प - तृप्त होना, तृप्त करना, शान्त होना, प्रेम करना)।

तृम्पताम् = तृप्त करें, शान्त करें (तृम्प - तृप्त होना या करना, शान्त होना, प्रेम करना)।

तृषन् = प्यास, इच्छा (तृष् = तृषा होना, प्यासा होना, इच्छा करना, चाहना)।

तृषाणः = तृषा, प्यास, इच्छा, चाह (तृष् = तृषा होना, प्यासा होना, इच्छा करना, चाहना)।

तृषु = क्षिप्र, शीघ्र (अव्यय)।

तृष्वीम् = प्यास, इच्छा वाले को (तृष् = तृषा होना, प्यासा होना, इच्छा करना, चाहना)।

तृहतीभ्यः = हिंसकों के लिए (तृह्-तृह् = हिंसा करना)।

तु = तो, परन्तु, अब, क्षिप्र, शीघ्र, द्रुत (अव्यय, निपात)।

तुचे = गति, वृद्धि, प्रकाश करते हैं (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल, दान, निवास, प्रकाश करना)।

तुज्यमानासः = अनेक तुज्यमान, प्रकाशमान, दानी (तुज् - बल, दान, निवास, प्रकाश करना)।

तुञ्जन्ति = दान, रक्षा, निवास, निन्दा, प्रकाश करते हैं

(तुञ्ज - रक्षा करना, प्रतिपालन करना, संभालना, मार डालना, तुञ्ज - मार डालना, बलवान् होना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना, चमकना, प्रकाशित होना, तुञ्ज - निन्दा करना, चमकना, प्रकाशित होना)।

तुञ्जानः = दान, रक्षा, निवास, निन्दा, प्रकाश वाले (तुञ्ज - रक्षा करना, प्रतिपालन करना, संभालना, मार डालना, तुञ्ज - मार डालना, बलवान् होना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना, चमकना, प्रकाशित होना, तुञ्ज - निन्दा करना, चमकना, प्रकाशित होना)।

तुतोद = दुःखी हुआ, दुःख दिया आच्छादन किया, स्तुति की (तुद् - दुःख देना, दुःखी होना, पीड़ा होना, घाव करना)।

तुथः = आच्छादन-स्तुति करने वाले (तुत्थ-आच्छादित करना, स्तुति करना, फैलाना, तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तुथो = आच्छादन-स्तुति करने वाले (तुत्थ-आच्छादित करना, स्तुति करना, फैलाना, तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तुदन्तु = दुःख दें, दुःखी हों (तुद् - दुःख देना, दुःखी होना, पीड़ा होना, घाव करना)।

तुनाय = गति, वृद्धि, पूर्ण के लिए (तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना)।

तुभ्य = तुम्हारे लिए (सर्वनाम)।

तुभ्यम् = तुम्हारे लिए (सर्वनाम)।

तुम्रम् = गति, वृद्धि को (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

तुरः = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर् = शीघ्रता करना)।

तुरण्यतः = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुरण्यति = शीघ्रता करता है (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुरयन्तम् = शीघ्रता करने वाले को (तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

तुरण्यवो = शीघ्रतायुक्त (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुरस्य = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी, हिंसक का (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुर् = शीघ्रता करना)।

तुराय = शीघ्रता के लिए, शीघ्रकारी, शीघ्रगामी के लिए (तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

तुराषाट् = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुरीपः = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी का पालन करने वाले (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना, पा - पालन करना)।

तुरीपम् = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी का पालन करने वाले को (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना, पा - पालन करना)।

तुरीपाय = शीघ्रकारी के लिए, शीघ्रगामी का पालन करने वाले के लिए (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना, पा - पालन करना)।

तुरीय = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुरीयः = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुरीयम् = तुरीय, शीघ्रकारी, शीघ्रगामी को (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुर्य = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर् = शीघ्रता करना)।

तुर्यवाट् - तुर्यवाट् = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी, तुर्यवाह, शीघ्रकारी, शीघ्रगामी को वहन करने वाला (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुर्यवाड् = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी, तुर्यवाह, शीघ्रकारी, शीघ्रगामी को वहन करने वाला (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुर्यवाह = तुर्यवाह, शीघ्रकारी, शीघ्रगामी को वहन करने वाला (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)।

तुर्योही = तुर्योह (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना, ऊह = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

तुर्वणिः - तुर्वणिः = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी, हिंसक (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना, वण् - शब्द करना, तुर्व - हिंसा करना, खुरचना)।

तुर्वशम् = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी, हिंसक को (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना, वण् - शब्द करना, तुर्व - हिंसा करना, खुरचना)।

तुर्वशे = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी, हिंसक में (तुर्-तुर्ण = शीघ्रता करना, तुर्व - हिंसा करना, खुरचना)।

तुलायै = तुला के लिए (तुल् - तोलना, तुलना करना)।

तुवि = बहुत, अधिक, प्रगति, वृद्धि, दुःख, हिंसा (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना)।

तुविक्रतो = अत्यन्त कर्मशील (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। कृ = करना)।

तुवि-क्षत्राम् = बहुत क्षत्रों को (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

तुविग्रीवो = तुविग्रीव (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

तुविजातो = तुविजात, अत्यन्त भयभीत, आपदा, विपत्ति (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। विज- डरना, डर से कम्पित होना, कांपना, आपद्ग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना)।

तुविद्युम्नम् = अत्यन्त प्रकाशमान को (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

तुविद्युम्नस्य = अत्यन्त प्रकाशमान का (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

तुविनृम्णः = बहुत ले जाने वाले, बहुत धन वाले (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। नृ - ले जाना, विनम्र होना)।

तुवि-प्रतिम् = वृद्धि-कर्ता को, पूर्ण-कर्ता को (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। प्रा - पूर्ण करना। प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में)।

तुविवाजाः = अत्यन्त प्रगतिशील, बलवान् (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

तुविशुष्म = हे अत्यन्त शोषक, बहुत सुखाने वाले (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। शुष् - सुखाना)।

तुविशुष्मः = अत्यन्त शोषक, बहुत सुखाने वाले (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। शुष् - सुखाना)।

तुविश्रवस्तमः = उत्तम, विद्वान्, उत्तम श्रवणशील, उत्तम प्रगतिशील (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)। श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

तुविष्मान् = तुविष्मान्, बहुतयुक्त (तुवि = बहुत, अधिक (अव्यय, सर्वनाम्)।)।

तुवीकूर्मिम् = बहुत, कर्म करने वाले को (तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना, कृ = करना)।

तुवीमघः = बहुत धन वाले, महाधनी (तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, हिंसा करना, पूर्ण करना, मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

तुवीमघ = हे बहुत धन वाले, हे महाधनी (तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, हिंसा करना, पूर्ण करना, मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

तुष्टुवांसः = तुष्टवान्, सन्तुष्ट, तृप्त करने वाले (तुष् = सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, तृप्त करना, प्रीति करना)।

तुष्टुवुः = तृप्त करते हैं (तुष् = सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, तृप्त करना, प्रीति करना)।

तूणवधम् = तूणवध को, कुटिलता को मारने वाला (तुण् - गति करना, अंकुरित होना, कुटिल होना, वक्र होना, वध्-हन् - हिंसा करना, मारना, वद् - बोलना)।

तूतुजान = प्रकाशमान्, प्रगतिशील, निवासी (तुज - रहना, बसति करना, बलवान् होना, ग्रहण करना, लेना, चमकना, प्रकाशित होना, दुःख देना, मार डालना)।

तूपरः = हिंसक, निन्दक (तुप् = हिंसा करना, निन्दा करना)।

तूपराः = हिंसक, निन्दक (तुप् = हिंसा करना, निन्दा करना)।

तूपरौ = हिंसक, निन्दक युगल, हिंसक, निन्दक में (तुप् = हिंसा करना, निन्दा करना)।

तूयम् = गति को, तूय को, वर्द्धन को (तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना)।

तूरणितम् - तूर्णितम् = शीघ्रकारी को (तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

तूर्णितमो = अत्यन्त शीघ्रकारी (तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

तूर्णी = शीघ्रकारी (तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

तूर्तिः = शीघ्रकारी (तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

तूर्यवाहः - तूर्यवाहः = तूर्य को वहन करने वाला, गति, वृद्धि, पूर्ण करने वाले को वहन करने वाला (तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना, वह - वहन करना)।

तूर्य = गति, वृद्धि, पूर्ण करने वाले (तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

तूरवन् - तूर्वन् = वृद्धि, पूर्ण करने वाले (तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

तूरवसि - तूर्वसि = मारते हो (तूर्व - हिंसा करना, मारना)।

ते = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)।

तेगाम् = तेगवान् को, ज्ञानी को, कूटचाल को (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेजः = तेज (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेजसा = तेज द्वारा, तेज के साथ (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेजसे = तेजस् के लिए (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेजस्विन् - तेजस्विन् = तेजस्वी (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेजिष्ठा = अत्यन्त प्रकाशवान् (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेजो = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेतिजानः = तेतिजान, तेजस्वी, प्रकाशमान (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)।

तेदनीम् = तेदनी को, तेजस्वी, प्रकाशमान को (तिज् = तीक्ष्ण करना, पैना करना, धार लगाना, चमकाना। तेज = पालन करना, रक्षा करना)।

तेन = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)।

तेनिरे = विस्तार किया (तन् = विस्तार करना)।

तेभिः = उनके द्वारा (सर्वनाम)।

तेभ्यः = उनके लिए (सर्वनाम)।

तेषाम् = उनका (सर्वनाम)।

तेषु = उनमें (सर्वनाम)।

तोकम् = तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास को (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)।

तोकस्य = तोक का, तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास का (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)।

तोकाय = तोक के लिए, तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास के लिए (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)।

तोके = तोक में, तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास में (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)।

तोक्मभिः = तोक्म द्वारा, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास द्वारा (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)।

तोक्मानि = तोक्म, तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)।

तोतो = विद्वान् (तु = जानना)।

तोदस्य = तुद का (तुद - दुःख देना, पीड़ा करना, घाव करना)।

तोशते = तुष्ट करता है (तुष् - सन्तुष्ट करना, तृप्त

करना, प्रसन्न करना)।

तोशमाना = तुष्ट करने वाले (तुष् - सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना)।

तोशसे = तुष्ट करते हो (तुष् - सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना)।

तोशासा = हिंसकों को अनुशासित करने वाले, तुष्ट करने वाले (तुष् - सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना। तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना, शास् - शासन करना)।

तौ = वे दो (सर्वनाम)।

त्मना = आत्मा द्वारा, गति, वृद्धि, हिंसा, इच्छा द्वारा (तु - गति-वृद्धि, हिंसा करना, तम् - इच्छा करना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना। (वैदिक भाषा में अ या आ का लोप हो सकता है)।

त्मन्या = आत्मा द्वारा, गति, वृद्धि, हिंसा, इच्छा द्वारा (तु - गति-वृद्धि, हिंसा करना, तम् - इच्छा करना, आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना। (वैदिक भाषा में अ या आ का लोप हो सकता है)।

त्मा = गति, वृद्धि, हिंसा, इच्छा (तु - गति-वृद्धि, हिंसा करना, तम् - इच्छा करना, आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना। (वैदिक भाषा में अ या आ का लोप हो सकता है)।

त्यक्तेन = त्याग द्वारा, त्यागपूर्वक, त्यागमय, त्याग भावना से (त्यज् - छोड़ना, त्यागना, देना, दान करना)।

त्यत् = वह, उसने (सर्वनाम)।

त्यम् = उस को (सर्वनाम)।

त्या = वे (सर्वनाम)।

त्ये = वे (सर्वनाम)।

त्रदम् = त्रद को, रक्षा को (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

त्रपु - त्रपु = लज्जाशील (त्रप् - लज्जित होना, डरना)।

त्रयः - त्रयः = तीन (संख्या)।

त्रयस्त्रिंशः = तैंतीस (संख्या)।

त्रयस्त्रिंशः - त्रयस्त्रिंशः = तैंतीस (संख्या)।

त्रयस्त्रिंशे - त्रयस्त्रिंशे = तैंतीस में (संख्या)।

त्रयस्त्रिंशाय = तैंतीस के लिए (त्रयस्त्रिंशः = तैंतीस, संख्या)।

त्रया = तीन (संख्या)।

त्रयाणाम् = तीन का (संख्या)

त्रयाणि - त्रयाणि = तीन (संख्या)।

त्रयोदश = तेरह (संख्या)।

त्रयोदशम् - त्रयोदशम् = तेरह (संख्या)।

त्रयोदशाक्षरेण - त्रयोदशक्षरेण = तेरह अक्षरों द्वारा (त्रयोदश - तेरह, संख्या, अ - नहीं, क्षर् - चलना, टपकना, झरना, गिरना, बहना, क्षरण होना, अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)।

त्रयोदशी = त्रयोदशी, तेरह (संख्या)।

त्रयोविंशः - त्रयोविंशः = बाईस (संख्या)।

त्रयोविंशतिः - त्रयोविंशतिः = बाईस (संख्या)।

त्रयोविंशो = तेईस (संख्या)।

त्राता - त्राता = रक्षक, पालक, पोषक (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रातारम् - त्रातारम् = रक्षक, पालक, पोषक को (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्राध्वम् = रक्षा करो (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रामणम् = रक्षक, पालक, पोषक को (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रायस्व - त्रायस्व = रक्षा करो (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रायेथाम् = रक्षक, पालक, पोषक करे (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रास्व = रक्षण, पालन, पोषण करे (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रिः = तीन (संख्या)।

त्रि - त्रि = तीन (संख्या)।

त्रि-आयुषम् = तीन आयु ((त्रि = तीन, संख्या, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलाना, अलग करना)।

त्रिककुप् = तीन गर्वित, चञ्चल, प्यासा (त्रि = तीन, संख्या, कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)।

त्रिकद्रु = तीन भ्रम (त्रि - तीन (संख्या), कद् - भ्रमित होना, घबरा जाना, व्याकुल होना)।

त्रिकद्रुकेषु = तीन भ्रमों में, त्रिकद्रों में (त्रि - तीन (संख्या), कद् - भ्रमित होना, घबरा जाना, व्याकुल होना)।

त्रिचक्रो = तीन चक्र वाला (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, चक्र = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

त्रिणव = त्रिणव, त्रिस्तुति (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

त्रिणवाय = त्रिणव के लिए, त्रिस्तुति के लिए (त्रि = तीन (संख्या), नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

त्रितस्य = त्रित का, तीन का (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रिताय - त्रिताय = त्रित के लिए, तीन के लिए (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रिते = त्रित में, तीन में (संख्या, सर्वनाम)।

त्रितो - त्रितो = त्रित, तीन (संख्या, सर्वनाम)।

त्रिधा - त्रिधा = त्रिधा, तीन प्रकार से (संख्या, सर्वनाम)।

त्रिधातवो = त्रिधातु, तीन धातुएँ (त्रि - संख्या, सर्वनाम, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

त्रिधातु = त्रिधातु, तीन धातुएँ (त्रि - संख्या, सर्वनाम, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

त्रिधातुभिः = त्रिधातुओं द्वारा (त्रि - संख्या, सर्वनाम, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

त्रिधातू = त्रिधातु (त्रि - संख्या, सर्वनाम, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

त्रिपदाः - त्रिपदाः = तीन पद वाले (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, पद् - चलना, भूषित होना)।

त्रिपदीम् - त्रिपदीम् = तीन पद वाले को (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, पद् - चलना, भूषित होना)।

त्रिपाद् = तीन पाद युक्त (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, पद् - चलना, भूषित होना)।

त्रिपादत् - त्रिपादत् = तीन पाद युक्त, त्रिपाद किया, तीन पद चला, भूषित हुआ (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, पद् - चलना, भूषित होना)।

त्रिपृष्ठ = त्रिपृष्ठ (त्रि = तीन (संख्या), पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

त्रिपृष्ठम् = त्रिपृष्ठ को (त्रि = तीन (संख्या), पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

त्रिबन्धुरः - त्रिबन्धुरः = तीन बन्धुयुक्त (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, बन्ध-बन्ध् - बाँधना, बन्धन होना)।

त्रिभिः = तीन द्वारा (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रिभ्यः = तीन के लिए, तीन से (संख्या)

त्रि-वत्सः = त्रिवत्स, तीन वाणियों वाले (त्रि = तीन (संख्या), वद् -वच्- बोलना)।

त्रिवत्सम् = त्रि-वत्स, त्रि-वाणी को (त्रि - तीन (संख्या), वद् = कहना, बोलना)।

त्रि-वत्सा = त्रिवत्स, तीन वाणी वाले (त्रि = तीन (संख्या), वद् -वच्- बोलना)।

त्रिवत्सो = त्रिवत्स, तीन वाणियों वाले (त्रि = तीन (संख्या), वद् -वच्- बोलना)।

त्रिवरुथः = त्रिवरुथ, त्रिकामनाएँ, त्रि-आच्छादन (त्रि = तीन (संख्या))। वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

त्रिवरुथम् = त्रिवरुथ को, तीन कामनाओं को, त्रिविध प्रेम, आच्छादन, नियोजन को (त्रि = तीन (संख्या), वर -

इच्छा करना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

त्रिवृत् = त्रिवृत् (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम। वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

त्रिवृता = त्रिवृत् (त्रि = तीन (संख्या), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

त्रिवृते = त्रिवृत् में (त्रि = तीन (संख्या), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

त्रिवृतो = त्रिवृत् (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

त्रिंशत् - त्रिंशत् = तीस, (संख्या, सर्वनाम)।

त्रिंशतम् = तीस को (संख्या, सर्वनाम)।

त्रिंशता - त्रिंशता = तीस (संख्या, सर्वनाम)।

त्रिशुक् - त्रिशुक् = तीन शुक्, तीन गुना (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रिशुक् = तीन शुक्, तीन पवित्रताएँ (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम। शुक् - पवित्र होना, पवित्र करना)।

त्रिंशौ - त्रिंशौ = तीस (संख्या, सर्वनाम)।

त्रिषु - त्रिषु = तीनों में (त्रि = तीन, , संख्या, सर्वनाम)।

त्रिष्टुप् = त्रिष्टुप् (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

त्रिष्टुभः = त्रिष्टुभ (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

त्रिष्टुभा = त्रिष्टुभ (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना, त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

त्रिष्टुभे = त्रिष्टुभ के लिए, त्रिस्तुत के लिए (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्तु - स्तुति करना)।

त्रिष्ठिनम् - त्रिष्ठिनम् = त्रिष्ठिन को, त्रिविध प्रतिष्ठित को (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

त्रिषधस्थे = तीन सहस्थान, त्रिसधस्थ में, त्रिसधस्थ के लिए (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, सध - साथ (अव्यय), स्था - स्थित होना, ठहरना)।

त्रिषधस्थस्य = तीन सहस्थान, त्रिसधस्थ का (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, सध - साथ (अव्यय), स्था - स्थित होना, ठहरना)।

त्रिषप्ताः = त्रि-सप्त, तीन सर्वज्ञ, तीन समूह (त्रि = तीन (संख्या)। सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, समूह होना, संलग्न होना, मिलना)।

त्रिस्थिनम् - त्रिस्थिनम् = त्रिष्ठिन को, त्रिविध प्रतिष्ठित को (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

त्री = तीन (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रीणाम् - त्रीणाम् = तीन का (त्रि = तीन, , संख्या, सर्वनाम)।

त्रीणि - त्रीणि = तीन (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रीन् - त्रीन् = तीन को (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रेतायै - त्रेतायै = त्रेता के लिए (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रेधा - त्रेधा = तीन प्रकार से (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)।

त्रैयम्बकाः = त्रैयम्बक, तीन वाणी युक्त (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, अम्ब = शब्द करना, जाना, जानना)।

त्रैष्टुभः = त्रैष्टुभ (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना, त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

त्रैष्टुभो = त्रैष्टुभ (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना, त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, स्तु - स्तुति करना)।

त्रैष्टुभम् - त्रैष्टुभम् = त्रैष्टुभ को (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना, त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, स्तु - स्तुति करना)।

त्रैष्टुभाय = त्रैष्टुभ के लिए (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना, त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, स्तु - स्तुति करना)।

त्रैष्टुभेन - त्रैष्टुभेन = त्रैष्टुभ द्वारा (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना, त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, स्तु - स्तुति करना)।

त्रयक्षरेण - त्र्यक्षरेण = तीन अक्षरों द्वारा (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, अ - नहीं, क्षर् - चलना, टपकना, झरना, गिरना, बहना, क्षरण होना)।

त्रयम्बकम् - त्र्यम्बकम् = तीन वाणीयुक्त (त्रि - तीन, संख्या, सर्वनाम, अम्ब = शब्द करना, जाना, जानना)।

त्रयविः - त्र्यविः = तीन संरक्षण (त्रि - तीन, संख्या। अक् - रक्षा करना)।

त्रयवी - त्र्यवी = तीन संरक्षण (त्रि - तीन, संख्या। अक् - रक्षा करना)।

त्रयवो = तीन संरक्षण (त्रि - तीन, संख्या। अक् - रक्षा करना)।

त्र्यवी = तीन संरक्षण (त्रि - तीन, संख्या। अक् - रक्षा करना)।

त्वक् - त्वक् = त्वचा (त्वच् - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।

त्वचम् = त्वचा, चर्म, खाल को (त्वच् - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।

त्वचा = त्वचा, चर्म, खाल (त्वच् - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।

त्वचि = त्वचा, चर्म, खाल में (त्वच् - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।

त्वचे = त्वचा, चर्म, खाल के लिए (त्वच् - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।

त्वत् = तुमसे (सर्वनाम)।

त्वम् = तुम (सर्वनाम)।

त्वया = तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)।

त्वयि = तुम में (सर्वनाम)।

त्वष्टः = त्वष्ट, प्रकाशक (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वष्टा = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वष्टारम् = त्वष्टा को, प्रकाशक को (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वष्टुः = त्वष्टा का, प्रकाशक का (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वष्ट्रा - त्वष्ट्रा = त्वष्ट्रा, प्रकाशक (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वष्ट्रे - त्वष्ट्रे = त्वष्ट्रा में, प्रकाशक में, त्वष्ट्रा के लिए, प्रकाशक के लिए (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वा = ही (अव्यय, निपात)।

त्वा = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)।

त्वादातम् = प्राप्त, आदान-प्रदान (तु+आदातम्, तु = तो, परन्तु, अब (अव्यय), आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

त्वाम् - त्वाम् = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)।

त्वायवः = तुमको मिलाने वाले (त्वा - तुम्हें, तुमको (सर्वनाम), यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

त्वायवो = तुमको मिलाने वाले, तुम्हें प्राप्त करते हैं (त्वा = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा, अय - चलना, जाना, ध्वनि करना, तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, आर डालना, पूर्ण करना, यु = मिलाना, अलग करना, यव - समाप्त करना, उपसंहार करना)।

त्वावतः = तुम्हारे समान (त्वा = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा, वतः - समान)।

त्वावान् = तुम्हारे समान (सर्वनाम)।

त्वाष्ट्राः - त्वष्ट्राः = त्वष्ट्रा, प्रकाशक (त्वक्ष् = छीलना,

रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वाष्ट्रौ - त्वष्ट्रौ = त्वष्ट्रा, प्रकाशक (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)।

त्विषः - त्विषः = प्रकाश का (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्विषम् - त्विषम् = प्रकाश को (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्विषिः - त्विषिः = प्रकाशमान (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्विषिम् - त्विषिम् = प्रकाशमान को (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्विषी-मते = त्विषी-मत के लिए, प्रकाशमान मत के लिए (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

त्विषीमान् = प्रकाशमान (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वे = तुममें (सर्वनाम)।

त्वेषः = प्रकाशवान् (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वेषनृम्णः - त्वेष-नृम्णः = तेजोमय ज्ञान वाले (त्विष् - प्रकाश होना, नृ - गति करना, चलना, ले जाना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति होना)

त्वेषम् = प्रकाशवान् को (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वेषस्य = प्रकाशवान् का (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वेषो = प्रकाशवान् (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)।

त्वो = तुम (सर्वनाम)।

त्वोताः = गति, वृद्धि, प्रगतिशील वाले को (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

त्सर (धातु) (त्सरति) = छद्मगतौ - कुटिलगतौ। टेढ़ा जाना, कपटपूर्वक जाना, छिपकर जाना।

द

दक्षः - दक्षः = दक्ष (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना,

शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षकृतवः - दक्ष-कृतव = दक्षकर्मी, दक्षता से कार्य करने वाला (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना, कृ = करना)।

दक्षपिता = दक्षता से पालन करने वाला, तक्ष पिता (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।

दक्षम् = दक्ष को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षसाधनः = दक्षता के साधन (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

दक्षसाधनम् = दक्ष-साधन को, दक्षता की पूर्णता को, प्रगति की पूर्णता को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

दक्षसाधनो = दक्षता के साधन (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

दक्षसे = दक्ष (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षस्य - दक्षस्य = दक्ष का (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षाय - दक्षाय = दक्ष के लिए (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध

समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिसा करना, मार डालना)।

दक्षिणायै - दक्षिणायै = दक्षिणा के लिए (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षिणावते = दक्षिणावान् के लिए (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षिणेन = दक्षिण द्वारा (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षिणो - दक्षिणो = दक्षिण (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षेण = दक्ष द्वारा (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षैः - दक्षैः = दक्षों द्वारा (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दक्षो - दक्षो = दक्ष (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दङ्क्षणवः = डसने वाले, बोलने वाले, चमकने वाले
(दंश = डसना, काटना, दंश मारना, देखना, चमकना,
डंक मारने के समान बोलना)।

दत्त - दत्त = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दत्तम् - दत्तम् = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दत्तस्य = दिये हुए का, दत्त का (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दत्राणि = दानियों को (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दत्वा = देकर (दा, दद् - दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददत् = दान करने वाले, देते हुए (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददति = देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददथुः = दान करते हो, त्याग करते हो (दद-दा - दान करना, देना, त्याग करना)।

ददन् = दान करने वाले, देते हुए (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददन्ते = दान करते हैं (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददाति = देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददातु = प्रदान करें (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददामि = देता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददाशत् = दिया है (दाश - देना, दाश - मार डालना, दुःख देना)।

ददाश = देता है (दाश - देना, दाश - मार डालना, दुःख देना)।

ददिः = दिया, दान करने वाले हो (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददितार = दान करने वाले (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददृशे = देखा (दृश् - देखना)।

ददे = दिया, दान किया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददो = दिया, दान किया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददभिः = दानियों द्वारा (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददमहे = देता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

रखना)।

ददरिरे - दद्रीरे = समादृत किया, दान किया (दृ - आदर करना)।

दधः = धारण करने वाला (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधत् = धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधतः = धारण करते हुए, धारक (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधताम् = धारण करो (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधति = धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधतीः = धारण करने वाले (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधतु = धारण करें (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधथो = धारण करने वाले (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधनत् = धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधन्तु = धारण करें (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधन्वान् = धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधन्विरे = धारण करने वाले के लिए (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

दधन्वे = धारण करता है (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

दधमः = धारण करते हैं (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधर्षति - दधर्षति = जीतता है, गर्व करता है, धृष्टता करता है (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान

करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

दधर्षीत् = जीतता है, गर्व करता है, धृष्टता करता है (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

दधसे = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधा = धारण करो, धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधात = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधातन = धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधाति = धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधातु = धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधाथाम् = धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधानः = धारण करने वाले, धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधाना = धारण करने वाले, धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधानाः = धारण करने वाले (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधाने = धारण में (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधामि = धारण करता हूँ (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधासि = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधि = धारण करें (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधिध्वम् = धारण करो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधिरे = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधिषे = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधिष्व = धारण करो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधीत = धारण करे, धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधुः = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधे = धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधनः = धारण करने वाले, धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दध्ना = धारण करने वाले, धारण द्वारा (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधम् = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधमः = धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधमसि = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दध्यङ् = धारण करने वाले (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दध्याशिरः = धारण, पालन को व्याप्त होने वाले, सुनने वाले (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

दधिषे = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, धृ - धारण करना)।

दध्रे - दध्रे = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, धृ - धारण करना)।

दन्तमूलैः = दन्तमूलों द्वारा (दो = दान करना, दया करना, कतरना, विभाग करना। मूल = बोना, उगना, उत्पन्न होना)।

दन्तो = दन्त (दो = दान करना, दया करना, कतरना, विभाग करना। मूल = बोना, उगना, उत्पन्न होना)।

दभन् - दभन् = निन्दक, हिंसक (दभ - निन्दा करना, हिंसा करना)।

दभ्यते = निन्दा करता है, हिंसा करता है (दभ - निन्दा करना, हिंसा करना)।

दभ्रस्य = निन्दक, हिंसक का (दभ - निन्दा करना, हिंसा करना)।

दमम् = दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन करने वाले, जीतने वाले को (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना)।

दमाम् = दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन करने वाले, जीतने वाले को (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना)।

दमे = दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन, जय करते हैं (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना)।

दमे = दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन, जय में (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना)।

दम्पती = दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन, जय, ऐश्वर्ययुक्त, दम्पती युगल (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना)।

दयते = देते हैं (दय - दान करना, पालन करना, गति करना, हिंसा करना)।

दयन्त = देते हैं (दय - दान करना, पालन करना, गति करना, हिंसा करना)।

दयमाने = दाता में (दय - दान करना, पालन करना, गति करना, हिंसा करना)।

दयसे = देते हो (दय - दान करना, पालन करना, गति करना, हिंसा करना)।

दरिद्र = दरिद्र (दृ - आदर करना, सत्कार करना, दृ - विदीर्ण करना, हिंसा करना)।

दर्मा - दर्मा = आदर देते हैं (दृ - आदर करना, सत्कार करना, दृ - विदीर्ण करना, हिंसा करना)।

दर्माणम् = दर्माण को, आदर करने को (दृ - आदर करना, सत्कार करना, दृ - विदीर्ण करना, हिंसा करना)।

दर्मो = आदर वाला, विदीर्ण करने वाला (दृ - आदर करना, सत्कार करना, दृ - विदीर्ण करना, हिंसा करना)।

दर्वि - दर्वि = विद्वान् (दर्व = जाना, जानना, पाना)।

दर्विदा - दर्विदा = दर्वि-दाता, गति-ज्ञान को देने वाला (दर्व = जाना, जानना, पाना, दा - देना)।

दर्वी - दर्वी = प्रगतिशील, विद्वान् (दर्व = जाना, जानना, पाना)।

दर्वे = विद्वान् (दर्व = जाना, जानना)।

दर्शतः - दर्शतः = देखने वाला, देखने से (दृश् - देखना)।

दर्शतम् - दर्शतम् = देखा, दर्शनीय को, देखने वाले को (दृश् - देखना)।

दर्शतस्य - दर्शतस्य = दर्शत का, दर्शनीय का, देखने वाले का, दिखाने वाले का (दृश् - देखना)।

दर्शतासो = दर्शन देने वाले, दर्शत, दर्शनीय, दिखाने वाले (दृश् - देखना)।

दर्शते - दर्शते = देखता है (दृश् - देखना)।

दर्षि = आदर देते हो, देखा (दृश् - देखना। दृ - आदर करना, सत्कार करना, दृष - बहना, सहना)।

दर्षीष्ट - दर्षीष्ट = देखा (दृश् - देखना)।

दवि = विशेष (वैदिक उपसर्ग)।

दविद्युतत् = प्रगतिशील प्रकाशमान, विशेष प्रकाशमान (दवि- विशेष, वैदिक उपसर्ग। दव-दु = जाना। द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

दविद्युतत्या = प्रगतिशील प्रकाशमान द्वारा (दवि- विशेष, वैदिक उपसर्ग। दव-दु = जाना, द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

दविष्टम् = दविष्ट को (दवि- विशेष, वैदिक उपसर्ग)।

दव-दु = जाना, सुगन्ध लेना)।

दवीयः = सुगन्धित (दु-दव् - जाना, सुगन्ध लेना)।

दश = दश (दश = दश, दस, (संख्या)।

दशभिः = दश द्वारा, दस द्वारा (दश = दश, दस, संख्या)।

दशभ्यः = दस के लिए (संख्या)।

दशमी = दशमी, दसवीं (दश = दश, दस, संख्या)।

दशमे = दशम में, दसवें में (दश = दश, दस, संख्या)।

दशम्या = दशमी द्वारा, दसवीं द्वारा (दश = दश, दस, संख्या)।

दशवीरम् = दशवीर को (दश = दश, संख्या, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

दशसु = दस में (संख्या)।

दशस्या = दानी के लिए (दश् - देखना, दश् - डसना, काटना)।

दशाङ्गुलम् = दश अंगुल को (दश - दस, अङ्ग - चलना, अंकुरित होना, अंग होना, अवयव होना)।

दशानाम् = दस का (संख्या)।

दंष्ट्राभ्याम् = दंष्ट्रो द्वारा, दंष्ट्रो के लिए, दंष्ट्रो से (दंस् - डसना, काटना, देखना, शब्द करना)।

दंष्ट्राभ्याम् = डसने वालों के लिए, काटने वालों के लिए, देखने वालों के लिए, बोलने वालों के लिए (दंश् - डसना, काटना, देखना, शब्द करना)।

दंसनाभिः = डसने वालों द्वारा, काटने वालों द्वारा, देखने वालों द्वारा, बोलने वालों द्वारा (दंस् - डसना, काटना, देखना, शब्द करना)।

दसाम = डसने वाले, काटने वाले, देखने वाले, बोलने वाले (दंस् - डसना, काटना, देखना, शब्द करना)।

दंसो = दंस (दंस - देखता है, काटता है, डसता है। दंस - चमकना, बोलना, कठोर बोलना)।

दंसोभिः = दर्शनों द्वारा, प्रकाश द्वारा, वाणी द्वारा (दंस - देखना, काटना, डसना। दंस - चमकना, बोलना, कठोर बोलना)।

दस्म = हे रक्षा करने वाले (दस् - रक्षण, पालन,

स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दस्मम् = नष्ट करने वाले को (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दस्मो = रक्षा करने वाले (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दस्युम् = दस्यु को, रक्षणीय को, विनाशी को (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दस्यु-हन्तमम् = दस्यु-हन्ता को, दस्यु को मारने वाले को (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना, हन् - मारना, हिंसा करना)।

दस्युहा = दस्यु-हन्ता, दस्यु को मारने वाले (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना, हन् - मारना, हिंसा करना)।

दस्यून् = दस्यु-हन्ताओं को, दस्युओं को, मारने वालों को (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना, हन् - मारना, हिंसा करना)।

दस्योः = दस्यु का रक्षणीय का (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दस्रा - दस्रा = नष्ट करने वाले, रक्षण, पालन, स्थापन करने वाले, देखने वाले (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दह = जलाओ (दह - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)।

दहतम् = जलाते हैं (दह - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)।

दाः = दानी, दो (दा, दद् = देना)।

दाक्षायणम् - दाक्षायणम् = दाक्षायण को, दक्ष करने वाले को (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, दक्ष - चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दाक्षायणा = दाक्षायणों ने (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, दक्ष - चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दाता = देने वाला (दा - देना, सौंपना, लौटाना,

रखना)।

दातारम् = देने वाले को (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दातारौ = दानी (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दातुः = देने वाला (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दात्यौहः = दाता, दान (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, ऊह = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

दात्यौहान् = दाताओं को (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, ऊह = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

दात्रम् - दात्रम् = दानी (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दात्रस्य = दानी का (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दात्रे - दात्रे = दानी में (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दाधर्त्य - दाधर्त्य = धारण योग्य, स्थापना योग्य (धृ - धारण करना)।

दाधर्थ = धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)।

दाधार = धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)।

दाधृषिम् = विजय, गर्व को (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

दान = दान (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दानम् = दान को (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दाना = दान (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दानानि = दान (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दानाय = दान के लिए (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दानुः = दानी (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दानुमत्याः = दान करने योग्य (दा - देना, सौंपना,

लौटाना, रखना)।

दानो = दान (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दान्ति - दान्ति = देते हैं, दान करते हैं (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दापयति = दान करता है (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दापयतु = दान करे (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दाम = दान, दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन, जय (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दामने = दान, दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन, जय के लिए (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दामानम् = दाताओं को, दयालु, शान्त, दमन, दया, सन्धि, शमन, जय करने वाले को (दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दादु - दारु = देने वाले, आदरणीय, आदर करने वाले (दा - देना, दृ - आदर करना, हिंसा करना)।

दारुणि - दारुणि = देने वाले (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, दृ - आदर करना, हिंसा करना)।

दार्वघाटः = दार्वघाट (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, हिंसा करना, घट = होना, रचना करना। घट = घोंटना, हिलाना, बटोरना, लड़ना, एकत्र करना, मार डालना। उत् - उद्घाटन करना। घट = अल्प होना, चमकना, प्रकाशित होना। घट = चेष्टा करना, व्यवहार करना, व्यापार करना)।

दार्वहारम् = दार्वहार को (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, दृ-द्वि-द्री - आदर करना, हिंसा करना, हृ - हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

दावनः = दानशील, प्रगतिशील (दु-दव् - जाना, सुगन्ध लेना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दावपम् = सुगन्धि-पालक, रक्षक (दु-द्व - जाना, सुगन्ध लेना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, पा - पालन करना)।

दाशत् = दानी, दान करने वाले (दश् = देना)

दाशम् = दानी को, दान करने वाले को (दश् = देना)।

दाशिवान् = दानी, दानवान् (दश् = देना, दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)।

दाशुषः = दानी (दश् = देना)।

दाशुषे = दानी के लिए (दश् - देना)।

दाशेम = दान करें (दाश् - देना)।

दाश्वध्वरः = दानी-अहिंसक, दानी-अवर्णनीय (दश् = देना, अ - नहीं, ध्व-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

दाश्वान् = दानी (दश् = देना)।

दाश्वंसः = दानी (दश् = देना)।

दाश्वंसम् = दानी को (दश् = देना)।

दासः = दास, दानी, सेवाधर्मी, सेवाभावी (दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)।

दासपत्नीः = दासपत्नी, दानी ऐश्वर्यवती (दास् - काटना, दान करना, सेवा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

दासानि = दास, दानी, सेवाधर्मी, सेवाभावी (दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)।

दासाय = दास के लिए, दानी, सेवाधर्मी, सेवाभावी के लिए (दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)।

दास्वन्तम् = दास, दानी, सेवाधर्मी, सेवाभावी को (दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)।

दिक् = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

दिक्त - दिक्त = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

दिक्भ्यः - दिक्भ्यः = दिशाओं के लिए (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना,

पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

दिक्षु - दिक्षु = दिशाओं में (दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

दिग्भ्यः - दिग्भ्यः = दिशाओं के लिए (दिश्-दिक् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

दिग्भ्यो = दिशाओं के लिए (दिश्-दिक् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

दिङ् = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

दिताय = दित के लिए, विनाशी के लिए (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना)।

दितिः = विनाश (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना)।

दितिम् = विनाश को (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना)।

दित्यवाट् = दित्यवाही (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

दित्यवाङ् = दित्यवाही विनाशवाही (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

दित्यवाहः = विनाशी को वहन करने वाला (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना, वह् - वहन करना, ले जाना)।

दित्यवाहम् = विनाशी को, वहन करने वाले को (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना, वह् - वहन करना, ले जाना)।

दित्यवाहो = दित्यवाह, विनाशी को वहन करने वाला (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना, वह् - वहन करना, ले जाना)।

दित्यौही = दित्यौह (दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट

होना, झरना, ऊह = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

दित्सन्तम् = क्षयमान, क्षयकारी को (दी = क्षय होना, हास होना, नष्ट होना, झरना)।

दित्सेयम् = दान दूँ (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, दी = क्षय होना, हास होना, नष्ट होना, झरना)।

दिदिङ्ढि = प्रदान करो (दा = देना, सौंपना, प्रदान करना)।

दिदीहि = बढ़ाओ, रूप बनाओ (दिह् = रूप बनाना, बढ़ना, वृद्धि करना)।

दिद्युतद् - दिद्युतत् = प्रकाशित किया (द्युत - चमकना, प्रकाशित होना)।

दिद्योः - दिद्योः = विनाश, कष्ट, प्रकाश, अग्रगामी का (द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, द्युत - चमकना, प्रकाशित होना, दी = क्षय होना, हास होना, दुःख भोगना)।

दिधिषेय = धारण करूँ (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दिवः = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिवम् = दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिवमात् = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय करो (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिवस्पदे = दिव्यपद में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना, पद - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

दिवा = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी

होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिवाभिः = दिवों द्वारा, दिव्यों द्वारा, तेजस्वी, ज्योतिर्मय द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिवावसो = हे दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय वसु, आवास देने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

दिवि = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिविष्टयः = दिव्यता की इच्छा, तेजस्व की कामना (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना, इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

दिविष्टिषु = दिव्य स्थितियों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना, स्था- स्थित होना, ठहरना, इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

दिविस्पृशा = दिव्य को स्पर्श करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द

स्वामी शरण

दीक्षितो = दीक्षित (दीक्ष - दीक्षा देना, उपदेश देना, आत्मनिग्रह करना, मानव धर्म सिखाना, आदेश देना)।

दीदयत् = दिया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दीदयति = देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दीदाय = दिया, देने वाले के लिए (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दीदिवः = तेजस्वी! (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दीदिवम् = प्रकाश करने वाले को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दीदिवान् = प्रकाश करने वालों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दीदिविम् = प्रकाश करने वाले को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दीदिहि = वृद्धि करो (दिह् = रूप बनाना, बढ़ना, वृद्धि करना)।

दीदेथ = दिया (दा = देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दीद्यत् = प्रकाश करता है, प्रकाशवान् (द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

दीद्यतम् = प्रकाशित को, प्रकाश करो (द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

दीद्यानः = प्रकाशित होते हुए (द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

दीद्यानो = प्रकाशित होते हुए (द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

दीधितिभिः = धारणाओं द्वारा, बुद्धि द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

दीधितिम् = धारणाओं को, बुद्धि को (दीध - चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना)।

दीधिम् = धारणाओं को, बुद्धि को, धारण करते हैं, प्रकाशित करते हैं (दीध - चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना, धारण करना)।

दीधिमः = धारण करते हैं, प्रकाशित करते हैं (दीध - चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना, धारण करना)।

दीध्यानः = प्रकाशमान (दीध - चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना)।

दीयते = दान करता है, क्षरित होता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना। दी - ह्रास (हरास) होना, झरना, नष्ट होना)।

दीयसे = दान करते हो, क्षरित होता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना। दी - ह्रास (हरास) होना, झरना, नष्ट होना)।

दीया = दान करो, दीया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना। दी = क्षय होना, ह्रास होना)।

दीर्घम् - दीर्घम् = दीर्घ को, विशाल को (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)।

दीर्घजिह्वम् = दीर्घजिह्वा को, प्रगतिशील, विद्वान् को (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना, जिह = जाना, जानना, पाना)।

दीर्घाम् - दीर्घाम् = दीर्घ को, विशाल को (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)।

दीर्घाय = दीर्घ के लिए, विशाल के लिए (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)।

दीर्घायु - दीर्घायु = दीर्घ आयु वाला (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)।

दीर्घायुः - दीर्घायुः = दीर्घ आयु वाला (दृह - बढ़ना,

वृद्धिगत होना)।

दीष = दो (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दृक् = आदर देने वाले, हिंसक (दृ - आदर करना, हिंसा करना)।

दृक्षसे = देखते हैं (दृक्-दृक्ष - देखना)।

दृढा = दृढ़ (दृद्-दृढ - दृढ़ होना, धारण करना, सहना, समर्थ होना, दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)।

दृते = आदरणीय (दृ - आदर करना)।

दृवा = आदरणीय (दृ - आदर करना)।

दृशानः = दृष्टिमान, देखने वाले (दृश्-पश्य -देखना)।

दृशानम् = देखने वाले को (दृश्-पश्य -देखना)।

दृशानो = दृष्टिमान, देखने वाले (दृश्-पश्य -देखना)।

दृशि = देखने में (दृश्-पश्य -देखना)।

दृशीकम् = देखने को, दृशीक को (दृश्-पश्य -देखना)।

दृशे = देखने के लिए, देखता है (दृश्-पश्य -देखना)।

दृष्टः = देखा हुआ (दृश्-पश्य -देखना)।

दृष्टो = देखा हुआ (दृश्-पश्य -देखना)।

दृष्ट्वा - दृष्ट्वा = देखकर (दृश्-पश्य -देखना)।

दृंह = दृढ़ करो, बढ़ाओ (दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

दृंहतम् = दृढ़ करो, बढ़ाओ (दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

दृंहन्ताम् = दृढ़ करो, बढ़ाओ (दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

दृंहस्व = दृढ़ करो, बढ़ाओ (दृंह = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

दुः = बुरा, अनुचित (उपसर्ग, अव्यय)।

दुग्धम् = दुग्ध को, दुहा हुआ को (दुह - दोहन करना)।

दुग्धा = दुग्ध, दुहा हुआ (दुह - दोहन करना)।

दुग्धाभिः = दुग्धों द्वारा (दुह - दोहन करना)।

दुच्छुनाः = दुष्ट, दुःखी, तप्त करने वाले, प्रगतिशील (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुच्छुनाम् = दुष्ट, दुःखी, तप्त करने वाले, गतिशील का (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुदुक्षन् - दुदुक्षन् = दोहन करते हुए (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दुह - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

दुदुहानः = दोहन करता हुआ (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दुह - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

दुदुहिरे = दोहन किया (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दुह - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

दुदुहरे - दुदुहरे = दोहन किया (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दुह - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

दुधे = दुग्ध, दुहा हुआ (दुह - दोहन करना)।

दुद्रवत् = द्रुतगति से गया (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

दुध्वा = दोहन करने वाले, दुःख देने वाले (दुह - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना, दु-दुन - दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना, दू - दुःख में जर्जर होना, दुःख सहन करना, दुःख देना, पीड़ा करना)।

दुन्दुभिः = दुन्दुभि, दुन्दुओं द्वारा (दुन्+दुभ, दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दु-दुन = दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना)।

दुन्दुभे = दुन्दुभ में, दुःख-ताप को दुहने वाले में (दुन्+दुभ, दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दु-दुन = दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना, दुह - दुहना, दोहन करना)।

दुन्दुभ्याय = दुन्दुभ्य के लिए (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दु-दुन = दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना)।

दुरदमन्या = कुभोजन से (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना, दम् - शान्त करना, दमन करना, दया करना, शमन करना, सन्धि करना, जीतना, मन् - मनन करना, विचार करना, मानना)।

दुरात् = दुःख से, दूर से (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुराधर्षम् - दुराधर्षम् = दुर्जय (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना, धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

दुराध्यो = दुःख देने वाले (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुरितम् = दुरित को, दुःख को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुरिता = बुराई, दुःख (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुरितात् = बुराइयों से, दुःख से (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुरितानि = बुराइयाँ, दुःख (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुरिष्ट्यै = बुराई के लिए, दुःख के लिए (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुरेवाः = दुर्गम मार्ग, अनुचित मार्ग (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।

दुरोणसत् = दूर ले गया, ज्ञान, गमन, प्रप्ति हुआ (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, ओण् - दूर ले जाना, द्रू-द्रूण - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, हिंसा करना)।

दुरोणे = दूर ले जाने में, ज्ञान, गमन, प्रप्ति में (द्रू-द्रूण - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, हिंसा करना)।

दुरोणयुः = दूर ले गया, ज्ञान, गमन, प्रप्ति हुआ (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, ओण् - दूर ले जाना, द्रू-द्रूण - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, हिंसा करना)।

दुरोषम् = दुर्दाह को, अत्यधिक हिंसा को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, उष - हिंसा करना, जलना, रोग होना)

दुर्मतिम् - दुर्मतिम् = दुर्मति को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, मन् - मनन करना, विचार करना, जानना, समझना)।

दुर्मदम् - दुर्मदम् = दुर्मद को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, मद् - मद होना, हर्ष होना, तृप्त होना, थकना)।

दुर्मर्षम् - दुर्मर्षम् = दुर्मर्ष को, दुस्सहनीय को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, मृष - सहन करना, क्षमा करना)।

दुर्मित्रियाः - दुर्मित्रियाः = दुर्मित्र (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, मिद् - प्रीति करना, स्नेह करना)।

दुर्यम् = दुर्य को, दूर को (दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दुर्यान् - दुर्यान् = अनुचित-मार्गी को, अनुचित मार्ग पर जाने वाले को, कठिन मार्गी पर चलने वाले को (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, या = जाना)।

दुर्याः - दुर्याः = अनुचित-मार्गी, अनुचित मार्ग पर जाने वाले, कठिन मार्गी पर चलने वाले (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, या = जाना)।

दुर्ये - दुर्ये = दुःख में, कठिनता में (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना)।

दुर्हणायतो = दुःख का हरण करने वाले (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

दुर्हणायून् = दुःख का हरण करने वाले (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

दुवः = सेवा, पीड़ा, प्रगति (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, दुवस् - पीड़ित होना, पीड़ित करना, सेवा करना)।

दुवस्यत = सेवा की, पीड़ित किया (दुवस् - पीड़ित होना, पीड़ित करना, सेवा करना)।

दुवस्वद्भ्यः = सेवायुक्त के लिए, पीड़ित के लिए (दुवस् - पीड़ित होना, पीड़ित करना, सेवा करना)।

दुवस्वन्तः = सेवा युक्त, पीड़ित (दुवस् - पीड़ित होना, पीड़ित करना, सेवा करना)।

दुवस्वान् = सेवा युक्त, पीड़ित (दुवस् - पीड़ित होना, पीड़ित करना, सेवा करना)।

दुवो = सेवा, पीड़ा, प्रगति (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, दुवस् - पीड़ित होना, पीड़ित करना, सेवा करना)।

दुःशंसः = अनुचित स्तुति, निन्दक (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, शंस = प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

दुःशंसो = अनुचित स्तुति, निन्दक (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, शंस = प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

दुश्चरितात् - दुश्चरितात् = दुश्चरित से (दुः = बुरा, कठिन, चर = आचरण करना, जाना, खाना)।

दुष्कृताय = दुष्कृत के लिए (दुः = बुरा, कठिन, कृ - करना)।

दुष्टरम् = दुष्ट को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन)।

दुष्टरो = दुष्ट (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन)।

दुष्टुतिः = अनुचित स्तुति (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन (उपसर्ग), स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

दुःस्वप्न्यम् = दुःस्वप्न्य को (दुः = बुरा, कठिन, स्वप् - सोना, निद्रा लेना)।

दुह = दुहो (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दुहते = दुहने वाले के लिए (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दुहाना = दुहने वाले (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दुहानाम् = दुहने वालों का (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दुहिता = दुही हुई, दुहने वाली (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दुहे = दुहता है, दोहन के लिए (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दुदुहे = दोहन किया (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दूढभः = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना,

तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूढ्यम् = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी को (दू - जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूढ्या = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी द्वारा (दू - जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूतः = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूतम् = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी को (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूतो = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूत्यम् - दूत्यम् = गतिशीलता, विद्वता, परिश्रम को (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूरम् = दूर (अव्यय)।

दूरात् = दूर से (सर्वनाम)।

दूरे = दूर (अव्यय)।

दूरेदृशम् = दूरदृश्य को, दूर के दृश्य को (दूरे = दूर (अव्यय), दृश्-पश्य -देखना)।

दूरेवधाय = दूर वध के लिए (दूरे = दूर (अव्यय), वध-हन् = मारना)।

दूरोहणम् = दुःख पूर्वक रोहण को (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

दूर्वे = दूर्वे (दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।

दूषीकाभिः = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषकों द्वारा (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना,

जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना)।

देदिशतीः = दिशा देते हैं (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

देदिश्यते = दिशा देता है (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)।

देयाय = देय के लिए (दा, दद् = देना)।

देव = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवः = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवकामम् = देव-कामना को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)।

देवकिल्बिषात् = देवकिल्बिष से (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना, विष् - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, व्याप्त होना, फैलना, सींचना)।

देवकृतम् = देवकृत को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, कृ - करना)।

देवकृतस्य = देवकृत का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, कृ - करना)।

देवगण = देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, गण् - गिनना, गणना करना, शब्द करना, मापना, समूह बनाना)।

देवगणाः = देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना,

प्रसन्न होना, खेलना, गण् - गिनना, गणना करना, शब्द करना, मापना, समूह बनाना)।

देवजनाः = देवजन (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन् - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

देवजातस्य = देवजात का, देव से उत्पन्न का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन - उत्पन्न होना)।

देवजाताय = देव से उत्पन्न के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन - उत्पन्न होना)।

देवजामिभ्यो = देव-जामियों के लिए, देव-भोजनों के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन - उत्पन्न होना। जम् = खाना, निगलना)।

देवतया = देवता द्वारा, देवत्व द्वारा, दिव्यता द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवता = देवत्व, दिव्यता (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवताः = देवत्व, दिव्यता (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवतातये = देवत्व के लिए, दिव्यता के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवताति = देवत्व में, दिव्यता में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवताम् = देवत्व को, दिव्यता को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवतायाम् = देवत्व में, दिव्यता में (दिव् = तेजस्वी

होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवतासु = देवत्वों में, दिव्यताओं में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवत्रा - देवत्रा = देवों का त्राण करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, त्रै - त्राण करना, रक्षा करना)।

देवत्वम् = देवत्व को, दिव्यता को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवद्रीचा = देवों का आदर करने वाले, विद्वानों को प्राप्त करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

देवपीयवः = देव-पायी को, देव-द्वेषी को, देव-हिंसक को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, पी-पिब् - पीना, पान करना, पीय- हिंसा, द्वेष करना)।

देवबन्धोः = देवबन्धु का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

देवभक्तम् = देव-भक्त को, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यता के सेवित को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

देवम् = देव को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवम्-देवम् = देव-देव को, प्रत्येक देव को (दिव् =

तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवयजनम् = देवयजन को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देव-यजनात् = देव-यजन से (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देव-यजनि = देवयजन में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देव-यजने = देव-यजन में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देव-यजम् = देव-यजन को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देव-यज्ञायै = देव-यजन के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देव-यज्यायै = देव-यजनीय के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देवयताम् = दिव्य यत्न करने वाले को, दिव्यता करो (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यत -यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

देवयतीनाम् = देवयतियों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना,

करना, प्रीति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, वा - गति करना, बहना)।

देववाहनः = देव-वाहन (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रीति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

देववीः = देवों को प्राप्त करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

देववीतमः = अत्यन्त देव-व्याप्ति, दिव्य ज्ञान (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रीति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, वी = व्याप्त होना, गति करना, चलना, जाना, जाना, जानना, पाना)।

देववीतये = देव-व्याप्ति के लिए, दिव्य ज्ञान के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रीति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, वी = व्याप्त होना, गति करना, चलना, जाना, जाना, जानना, पाना)।

देववीतौ = देव-व्याप्ति, दिव्य ज्ञान में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रीति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, वी = व्याप्त होना, गति करना, चलना, जाना, जाना, जानना, पाना)।

देवशिष्टे = देव-प्रयोजन, देव-आशीष में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

देवश्रीः = देवश्री (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना)।

देव-सेनानाम् = देव-सेनाओं का, देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप सेनाओं का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, सि-सिन् = बांधना, गूँथना, फन्दे से

पकड़ना)। अभि-भञ्जतीनाम् = सभी ओर, प्रभञ्जन करने वालों का (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भञ्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, भञ्जन करना, नष्ट करना)।

देवस्य = देव का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवहविः = दिव्य-हवि, देवों का आह्वान, दान, ग्रहण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हु = आदान-प्रदान करना, लेना, हवे = शब्द करना)।

देवहितम् = देवहित को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हि = गति करना, चलना, जाना, जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

देवहूः = दिव्य-हवि, देवों का आह्वान, दान, ग्रहण करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हु = आदान-प्रदान करना, लेना, हवे = शब्द करना)।

देवहूतमम् = देवों के अत्यन्त आह्वान, दान, ग्रहण करने योग्य को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हु = आदान-प्रदान करना, लेना, हवे = शब्द करना)।

देवहूतमान् = देवों के अत्यन्त आह्वान, दान, ग्रहण करने योग्यों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हु = आदान-प्रदान करना, लेना, हवे = शब्द करना)।

देवहूतामान् = देवों के अत्यन्त आह्वान, दान, ग्रहण करने योग्यों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हु = आदान-प्रदान करना, लेना, हवे = शब्द करना)।

देवहेडनम् = देवहेडन को, देवगति को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हेड् - लपेटना, घेरना, तिरस्कार करना, गति करना, जाना, जानना, पाना)।

स्वामी शरण

देव्या = देवी द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देव्यो = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देशे = देश में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना)।

देष्म = दो (दा, दद् = देना, दान करना, रखना)।

देहि = दो, दीजिये। (दा = देना, दान करना, रखना)।

दैवम् = देव से सम्बन्धित (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैवीः = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैवीम् = दिव्य को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैवेन = दैव द्वारा, दैव के साथ, दिव्य के साथ (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैवोदासो = दिव्यदास (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)।

दैव्यः = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैव्यम् = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देव्या = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैव्याः = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैव्यानि = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैव्याय = दिव्य के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना,

प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैव्येन = दिव्य द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैव्यो = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दोग्धी = दुहन वाले, दुग्ध युक्त (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दोधतः = कम्पन करने वाला, दोहन करने वाला (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

दोधुवत् = कम्पन करता है, दोहन करता है (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

दोर्भ्याम् = दोषी के लिए (दुः-दुष् - दूषित होना, दूषित आचरण करना)।

दोषावस्तः = प्रातः तथा सायम् अथवा दिन तथा रात्रि में (अव्यय)।

दोषावस्तः = प्रातः तथा सायम् अथवा दिन तथा रात्रि में (दुः-दुष् - दूषित होना, वश् - प्रकाश होना, इच्छा करना, वष-भोजन करना)।

दोषो = रात्रि, दोष (अव्यय, दुः-दुष् - दूषित होना)।

दोहः = दोहन करने वाला (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दोहते = दोहन करता है (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दोहना = दोहन (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दोहम् = दोहन को, दोहन करने वाले को (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

दोहसे = दोहन करते हो (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

द्यावापृथिवीयाः = द्यावापृथिवी का, अग्रगामी विस्तारक
का, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी का (द्यु - आगे जाना,
समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना,
द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फैकना,

द्युभिः – द्युभिः = प्रकाश द्वारा, प्रकाशमय, अग्रगामियों द्वारा (द्युत = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना,

आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमत् - द्युमत् = अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमत्तमम् - द्युमत्तमम् = अत्यन्त अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमत्तमा - द्युमत्तमा = अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमद्गामम् = अग्रगामी, प्रकाशगामी को (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)

द्युमन्तम् = द्युमान् को, आगे जाने वाले को, अग्रगामी को, तेजस्वी को (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमान् = प्रकाशमान, तेजस्वी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमन् - द्युमन् = अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमन् - द्युमन् = प्रकाशमान को, तेजस्वी को (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युमन्वत्तमः = अत्यन्त अग्रगामी, प्रकाशमान् (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्नानि - द्युम्नानि = प्रकाश, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्नाय = प्रकाश के लिए, अग्रगामी के लिए (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्नितमो = अत्यन्त अग्रगामी, अभिगमन करने वाला, आक्रामक, प्रकाशक (द्युत् - प्रकाशित होना, द्यु - अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्नी = अभिगमन करने वाला, आक्रामक, प्रकाशक (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्ने - द्युम्ने = प्रकाशमान में, अग्रगामी में (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्नेन - द्युम्नेन = अग्रगामी द्वारा (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्युम्न = अग्रगामियों को (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्योः - द्योः = प्रकाश, अग्रता, अग्रगति (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)।

द्योतताम् = प्रकाशित करें (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्यौ = अग्रगामी, प्रकाश (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

द्यौः - द्यौः = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)।

द्रप्सः - द्रप्सः = हर्ष, आनन्द, गर्व (द्रृप् = हर्ष होना, गर्व होना)।

द्रप्सम् - द्रप्सम् = हर्ष, आनन्द, गर्व को (द्रृप् = हर्ष होना, गर्व होना)।

द्रप्साः = हर्ष, आनन्द, गर्व (द्रृप् = हर्ष होना, गर्व होना)।

द्रव - द्रव = प्रवाही, ज्ञान (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रवः = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रवतः - द्रवतः = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् से, प्रवाह करें (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रवन्ति - द्रवन्ति = द्रवित होते हैं, पिघलते हैं, प्रवाहित होते हैं (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रवा = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रविणः - द्रविणः = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रविणम् - द्रविणम् = द्रविण को, प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, वेगवान् को, प्रवाहमान को (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रविणस्युः - द्रविणस्युः = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रविणा - द्रविणा = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रविणोदाः - द्रविणोदाः = द्रविण-दाता, ज्ञान-दाता, प्रवाह-प्रगति देने वाले (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्राघिमा - द्राघिमा = समर्थ, सरल, सूचना देने वाले (द्राघ - सामर्थ्य होना, तानना, लम्बा करना, सूचना करना, पीडा होना, सरल होना)।

द्राघिष्ठाभिः = समर्थ स्तुतियों द्वारा, सरल स्तुतियों द्वारा (द्राघ - सामर्थ्य होना, तानना, लम्बा करना, सूचना करना, पीडा होना, सरल होना)।

द्राप - द्रापः = हर्ष, आनन्द, गर्व (द्रृप् = हर्ष होना, गर्व होना)।

द्रापिम् = हर्ष, आनन्द, गर्व को (द्रृप् = हर्ष होना, गर्व

होना, द्रा - भाग जाना, लज्जित होना, निन्दा करना, दोष लगाना, उड़ जाना)।

द्रापे = द्राप में, हर्ष, आनन्द, गर्व में (द्रा = भाग जाना, लज्जित होना, निन्दा करना, दोष लगाना, उड़ जाना)।

द्रावया = प्रवाही, ज्ञानी, द्रवणशील, प्रवाहमान द्वारा (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रावयित्त्वो = प्रगतिशील, प्राप्त करने वाले, प्रवाही, ज्ञानी, द्रवणशील, प्रवाहमान (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रु = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

द्रुत = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, प्रवाहमान, वेगवान् (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

द्रुपदात् - द्रुपदात् = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, पद से (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना, पद - चलना)।

द्रुवः = प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, वेगवान् (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

द्रुवम् = द्रुव को, प्रवाही, ज्ञान को (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रुहन्तरः = अत्यन्त द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)।

द्रूणानः - द्रूणानः = हिंसा, गति, कुटिलता (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना, द्रुण् = हिंसा, गति, कुटिलता होना)।

द्रोणकलशः = द्रोण-कलश (द्रुण् = हिंसा, गति, कुटिलता होना। कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)।

द्रोणम् = हिंसक, गति, कुटिलता को (द्रुण् = हिंसा, गति, कुटिलता होना)।

द्रोणानि = हिंसा, गति, कुटिलता में (द्रुण् = हिंसा, गति, कुटिलता होना)।

द्रोणे - द्रोणे = हिंसा, गति, कुटिलता में (द्रुण् = हिंसा, गति, कुटिलता होना)।

द्रोणेषु = द्रोणों, हिंसा, गति, कुटिलताओं में (द्रुण् = हिंसा, गति, कुटिलता होना)।

द्वयाविनो = युगल (द्वि = दो, संख्या)।

द्वा = दो, द्वय (संख्या)।

द्वात्रिंशत् = बत्तीस (द्वा - दो, त्रिंश - तीस, संख्या)।

द्वादशकपालो = बारह कपाल वाला (द्वादश - बारह, संख्या, कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)।

द्वादशी = बारहवीं (द्वादश - बारह, संख्या)।

द्वादशे - द्वादशे = बारह में (द्वादश - बारह, संख्या)।

द्वापराय - द्वापराय = द्वापर के लिए (द्वा, द्वि - दो, पृ - पालन-पोषण, रक्षण करना, भरना, पूर्ण करना, तृप्त करना)।

द्वाभ्याम् = दो के लिए (द्वि - दो, संख्या)।

द्वार = द्वार (द्वृ-द्वृ - वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, अपनाना, रोकना)।

द्वारः - द्वारः = द्वार (द्वृ-द्वृ - वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, अपनाना, रोकना)।

द्वारा = द्वार से (द्वृ-द्वृ - वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, अपनाना, रोकना)।

द्वारौ - द्वारौ = द्वार (द्वृ-द्वृ - वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, अपनाना, रोकना)।

द्वार्थः = द्वाः (द्वारों) के लिए अथवा आच्छादन के लिए (द्वृ-द्वृ - वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, अपनाना, रोकना)।

द्वाविंशः - द्वाविंशः = बीस (द्वाविंश = बीस, संख्या)।

द्विः = दो (संख्या)।

द्विजन्मा = दो जन्म वाला (द्वि - दो (संख्या), जन-उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

द्विजानाम् = द्विजों का, दो जन्म वालों का (द्वि - दो (संख्या), जन-उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

द्विता = द्वित (द्वि = दो, संख्या)।

द्विताय - द्विताय = द्वित या दो के लिए (द्वि = दो,

संख्या)।

द्वितीयः - द्वितीयः = द्वितीय, दूसरा (द्वि = दो, संख्या)।

द्वितीयम् - द्वितीयम् = द्वितीय को, दूसरे को (द्वि = दो, संख्या)।

द्वितीयया = द्वितीय द्वारा (द्वि = दो, संख्या)

द्वितीयस्याम् - द्वितीयस्याम् = द्वितीय में (द्वि = दो, संख्या)।

द्वितीया - द्वितीया = द्वितीय, दूसरा (द्वि = दो, संख्या)।

द्वितीये - द्वितीये = द्वितीय में, दूसरे में (द्वि = दो, संख्या)।

द्वितीयैः - द्वितीयैः = द्वितीय द्वारा, दूसरे द्वारा (द्वि = दो, संख्या)।

द्विपदः - द्विपदः = द्विपद वाला (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपदम् = द्विपद को (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपदा - द्विपदा = द्विपद वाला (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपदीम् - द्विपदीम् = द्विपद वाले को (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपदे - द्विपदे = द्विपद में, द्विपद वाले में (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपात् - द्विपात् = द्विपद वाला (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपादम् = द्विपद वाले को (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विबर्हसम् = दोगुनी वृद्धि करने वाले को (द्वि = दो, बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

द्विबर्हाः = द्विगुण, दोबारा प्रयास करने वाला, द्विगुण श्रेष्ठ (द्वि = दो, संख्या, बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रयास करना)।

द्विरूपाः - द्विरूपाः = दो रूप वाला (द्वि = दो,

संख्या, रूप - रूप बनाना, आकार बनाना, रचना करना)।

द्विशवसम् = द्वि शवस को, द्विगुणित गति को (द्वि = दो, संख्या, शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

द्विषः - द्विषः = द्वेष करने वाला (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विषन् = द्वेष करता हुआ (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विषतो - द्विषतो = द्वेष करने वाले का (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विषो - द्विषो = द्वेष करने वाला (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विष्टिषु - द्विष्टिषु = द्वेष करने वालों में (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विष्मः - द्विष्मः = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)।

द्विष्मस्तम् - द्विष्मस्तम् = द्वेष करने वाले को (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विष्मो - द्विष्मो = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)।

द्वीतया - द्वितया = द्वितीय द्वारा, दूसरे द्वारा (द्वि = दो, संख्या)।

द्वीप्याय = द्वीप्य के लिए, दुगुनी वृद्धि के लिए (द्वि = दो, संख्या, प्याय = बढ़ना)।

द्वे = दो (द्वि = दो, संख्या)।

द्वेषः - द्वेषः = द्वेष (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्वेषते - द्वेषते = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)।

द्वेषांसि = द्वेषों को (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)।

द्वेषो - द्वेषो = द्वेष (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्वेषोभ्यः - द्वेषोभ्यः = द्वेषियों के लिए (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्वेष्टि - द्वेष्टि = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्वौ = दो (संख्या)।

द्व्यूधनीः = द्विविध ऊधन वाली, पालन, रक्षण, शब्द करने वाली (द्वि - दो, संख्या, उ-अव - सुखाना, शोषण करना, उ-अव - पालन करना, रक्षा करना, शब्द करना, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

ध

धक्षतः = नष्ट करने वाले (धक् - दह - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना, दग्ध करना)।

धक्षि = जलाओ (धक् - दह = जलाना, नष्ट करना, दुःख देना, दग्ध करना)।

धत = धारण, पोषण करो (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धत्त - धत्त = धारण, पोषण करो (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धत्तम् = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धत्ते = धारण के लिए, धारण किया (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धत्री = धारण, पोषण करने वाला (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धत्वम् = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धत्स्व = धारण, पोषण करो (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धन = धन (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)

धनजित् = धन जीतने वाले (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना)।

धनजितम् = धन जीतने वाले को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना)।

धनञ्जयम् = धन जीतने वाले को (धन् - शब्द करना,

गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना)।

धनञ्जयो = धन जीतने वाले (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना)।

धनदा: = धन देने वाले (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना, दा - देना, दान करना)।

धनम् = धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धनम्-धनम् = सभी धनों को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धनर्विम् = धनर्वि को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धनविदे = धन को जानने वाले के लिए (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, विद् - समझना, जानना)।

धनसा = धनसात में, धन के संभजन में (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धनसातौ = धनसात में, धन के संभजन में (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, सन = सेवा करना, चाकरी करना। सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

धना = धन (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धनानि = धनों को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धनाय = धन के लिए (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर

धन्वन् = गति, शब्द करने वाले (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वनः = गति, शब्द करने वाले का (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वना = गति, शब्द करने वाले द्वारा (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वने = गति, शब्द करने वाले के लिए (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वसि = प्राप्त करता है, जाता है (धन्व - जाना, स्थानान्तर करना)।

धन्वसु = धन्वों में, प्रगतिशीलों में (धन्व - जाना, स्थानान्तर करना)।

धन्वा = गति, शब्द करने वाले (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वानि = गति, शब्द करने वाले (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वायि = गति, शब्द करने वाले (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वायिभ्यः = गति, शब्द करने वाले के लिए (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धन्वासहा = प्रगतिशील सामर्थ्यवान् धन्व-सहनशील (धन्व - जाना, स्थानान्तर करना, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

धमति = वाद्य बजाता है, धौंकता है, फूँकता है (धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)।

धय = धारण, पोषण, रक्षण (धा-धि-धय् - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धयति = धारण, पोषण, रक्षण करते हैं (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धयन् = धारण, पोषण, रक्षण करने वाले (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धरणी = धारणकर्ता, धारण करने वाली (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धरित्री - धरित्री = धारण करने वाली (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, युक्त होना)।

धरीमणि = धारण करने वाले में (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, युक्त होना)।

धरुणः = धारणकर्ता, धारण करने वाला (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धरुणम् - धरुणम् = धारण करने वाले को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना)।

धरुणा = धारणकर्ता, धारण करने वाली (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धरुणे = धारण करने वाले में (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना)।

धर्णसिः = धारण करने वाला, धारणकर्ता (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्णसिम् = धारणकर्ता, धारण करने वाले को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्ता - धर्ता = धारणकर्ता, धारण करने वाला (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्त्ता = धारणकर्ता, धारण करने वाला (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्तारम् = धारणकर्ता को, धारण करने वाले को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्त्तरम् - धर्त्रम् = धारण करने वाला, धारणकर्ता को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

स्थिर रहना)।

धर्त्री - धत्री = धारण करने वाली, धारणकर्त्री (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्त्रीम् - धत्रीम् = धारण करने वाली को, धारणकर्ता को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्तरे - धर्त्रे = धारण करने वाले में, धारणकर्ता में (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्म - धर्म = धर्म (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्मः - धर्मः = धर्म (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्मणः - धर्मणः = धर्म का (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्मणा - धर्मणा = धर्म द्वारा (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्मणि = धर्म में (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्मन् = धर्म (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्मम् - धर्मम् = धर्म को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्माणम् - धर्माणम् = धर्म को, धारणकर्ता को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्माणि - धर्माणि = धर्म (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्माय - धर्माय = धर्म के लिए (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धर्ष - धर्ष = विजय, गर्व (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

धा = धारण करो, पोषण करो, रक्षण करो, दान करो

(धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धाः = धारण करो, पोषण करो, रक्षण करो, दान करो (धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धात् = धारण करे (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धातमो = दान, धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धातवे = धारण करने के लिए (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाता = धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाति = धारण करने वाला, धारण करता है (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धातृभिः - धातृभिः = धारण करने वालों द्वारा, धाताओं द्वारा (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धातु = धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धातुः = धातु, धाता का, धारण करने वाले का (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धात्रे = धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धानाः = धारण करने वाले, गति, शब्द करने वाले (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धानानाम् = धानों का, धारण करने वालों का, गति, शब्द करने वालों का (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धानावन्तम् = धारण, गति, शब्द युक्त (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धान्यम् - धान्यम् = धारण करने योग्य, गति, शब्द करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धापयेते = धारण कराता है, धारण करता है (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाम् = धारण करने वाले को (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाम - धाम = धारण करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामच्छत् = धाम का आच्छादन (धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)।

धामन् - धामन् = धाम, धारण करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामनाम् = धामों का (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामभिः - धामभिः = धामों द्वारा (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामभ्यः = धामों के लिए (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामसु = धामों में (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामहे - धामहे = धारण करते हैं (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामानि - धामानि = धामों को (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाम्ना - धाम्ना = धाम द्वारा, धारण करने वाले द्वारा (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाम्ने = धाम में, धारण करने वाले के लिए (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाम्ने-धाम्ने = प्रत्येक धाम में (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धायि = धारण किया (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाय्यारूपम् = धाय्यारूप को, धारण योग्य रूप को, (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

धारका = धारक, धारण, पोषण, रक्षण करने वाले (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धारम् = धार को, धारण, पोषण, रक्षण करने वाले को (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धारय = धारण करो (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धारयन् = धारण किया, धारण करते हुए (धृ-धा = धारण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धारया = धार द्वारा (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धारयामा = धारण करते हैं (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धारयुः = धारण की इच्छा वाला, धारण करने वाला (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार

बाँधना, धारा होना)।

धाराः = धारण, पोषण, रक्षण (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धारा = धारण, पोषण, रक्षण (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धाराभिः = धाराओं द्वारा, धारण, पोषण, रक्षण द्वारा (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धाराम् = धारा को (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

धार्याभ्यः - धार्याभ्यः = धार्यों के लिए (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धाव = प्रगति करो, दौड़ो (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावत् = दौड़ते हुए (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावता = जायें (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावति = दौड़ता है (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावते = दौड़ता है (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावतो = दौड़ते हुए (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावन्ति = दौड़ते हैं (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावन्तु = दौड़ें (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावमाना = दौड़ते हुए (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावमानाः = दौड़ते हुए (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धावसि = दौड़ते हो (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)।

धिनुहि = सन्तुष्ट करो (धिन, धिन्व = सन्तुष्ट होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, समीप होना, समीप जाना, समीप आना)

धिप्सात् = धारण करे, युक्त हो (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धियः = धारणा शक्ति, बुद्धि (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धियन्धाः = धियधारी, धिया को धारण करने वाला, (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धियम् = धारणा शक्ति, बुद्धि को (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धिया = धारणा द्वारा, बुद्धि द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धियायते = धारण करता है (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धिये = धारणा शक्ति, बुद्धि में (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धियो = धारणा शक्ति, बुद्धि (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धिषणयोः = वाणी का (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिषणा = वाणी द्वारा (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिषणाः = वाणी (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिषणे = वाणी में (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिषाय = वाणी के लिए (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिषण्या = वाणी द्वारा (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिष्ण्याः - धिष्ण्याः = वाणी का (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धिष्व = शब्द करो, बोलो (धिष् = शब्द करना, बोलना)।

धीः = धारणा शक्ति (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीजवनम् = धारण योग्य विद्वान्, धारण करने वाले सेवाशील को (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना, वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

धीतम् = ज्ञानीजन, धारण करने वाले को (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीतयः = ज्ञानीजन, धारण करने वाले (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीतिः = धारणा शक्ति (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीतिभिः = धारणा द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीतिम् = धारणा शक्ति को (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीभिः = बुद्धियों द्वारा, धारणा द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धीमहि = धारण करते हैं (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

धीमहे = धारण करते हैं, धारण करें (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

धीयताम् = धारण करो (धी = धारण करना, आधारभूत

होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

धीयते = धारण करता है (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

धीरः = धीर (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीरस्य = धीर का (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीरा = धीर जन, धैर्यवान् जन, धीर लोग (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीराः = धीर जन, धैर्यवान् जन, धीर लोग (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीराणाम् = धीरों का (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीरासो = धीरगण (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीरैः = धीरों द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

धीषु = धारण में (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

धृता = धारण किये हुए, धैर्ययुक्त (धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)।

धृतवती = धारण किये हुए, धृतयुक्त, धैर्य-सम्पन्न (धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)।

धृतव्रतो = व्रतधारी (धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित

धृष्णू = विजय, गर्व (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

धू: = कम्पन करने वाला, कंपाने वाला, हिलाने वाला
(धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूनवत् = कम्पन युक्त, कम्पन के समान (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूनुते = धुनता है, कंपाता है, हिलाता है (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूनोमि = धुनता हूँ, कंपाता हूँ, हिलाता हूँ (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूपयतत्वा = धूपित कर (धूप - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना)।

धूपयतु = धूपित करें (धूप - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना)।

धूपयन्तु = धूपित करें (धूप - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना)।

धूपयामि = धूपित करता हूँ (धूप - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना)।

धूमः = धूम, कम्पन करने वाला, कंपाने वाला, हिलाने वाला (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूमकेतव = धूमकेतु समूह (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, सलाह देना)।

धूमकेतवो = धूमकेतु समूह (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, सलाह देना)।

धूमकेतुः = धूमकेतु (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, सलाह देना)।

धूमगन्धिः = धूम-गन्ध, धूम-गन्ध वाला (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, गन्ध = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)।

धूमम् = धूम को, कम्पन को (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूमाय = धूम के लिए, कम्पन के लिए (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूमासः = धूम (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूमर् - धूम्र = धूम (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूम्रः - धूम्रः = धूम (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूम्रनीकाशाः = धूम्रनी-प्रकाश (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना, काश = चमकना)।

धूम्राः - धूम्राः = धूम (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूम्रान् - धूम्रान् = धूमों को (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धूर्तिः - धूर्तिः = हिंसा, धूर्तता, गति (धूर् = हिंसा करना, गति करना)।

धूर्व - धूर्व = हिंसा करो (धूर् = हिंसा करना, गति करना)।

धूर्वणे = धूर्व के लिए, हिंसक के लिए (धूर् = हिंसा करना, गति करना)।

धूर्वति - धूर्वति = हिंसा करता है (धूर् = हिंसा करना, गति करना)।

धूर्वन्तम् - धूर्वन्तम् = हिंसक को (धूर् = हिंसा करना, गति करना)।

धूर्वन्तु = हिंसा करो, प्रगति करो (धूर् = हिंसा करना, गति करना)।

धूर्वाम् - **धूर्वामः** = हिंसा करते हैं (धूर् = हिंसा करना, गति करना)

धेनवः = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनवो = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेना = धारणा, बुद्धि, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनाः = धारणा, बुद्धि, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनाम् = धारणा, बुद्धि, प्रिय, पालन करने वाले को (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनुः = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनुभिः = धेनु, प्रिय, पालन करने वालों द्वारा (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनुम् = धेनु को, प्रिय को, पालन करने वाले को (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनुमती = धेनुमती, धेनु-युक्त, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनुमिव = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले के समान (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)।

धेनू = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना,

सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेनूनाम् = धेनुओं, प्रियों, पालन करने वालों का (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)।

धेहि = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)।

धैर्याय - **धैर्याय** = धैर्य के लिए (धृ-धारण करना, स्थिर रहना)।

धैवरः = धैवर (धिव् - प्रेम करना, प्रीति करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, जाना, जानना, पाना)।

धैवरम् = धैवर को (धिव् - प्रेम करना, प्रीति करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, जाना, जानना, पाना)।

धौतः = धौत (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धौतम् = धौत को, कम्पन को (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

धौतो = धौत (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

ध्रजतः - **ध्रजतः** = ध्रजत, गतिमान, ज्ञानी (ध्रज् - जाना, जानना, पाना)।

ध्रजीमान् - **ध्रजीमान्** = गतिमान, ज्ञानी (ध्रज् - जाना, जानना, पाना)।

ध्रष्टम् = ध्रष्ट को (धृष = जीतना, पराभव करना, अमीर होना, घबरा जाना, गर्व करना, अपने को बड़ा समझना, धारण करना, कर्षण करना)।

ध्राज्या - **ध्राज्या** = गतिमान, ज्ञानी (ध्रज् - जाना, जानना, पाना)।

ध्राज्यै - **ध्राज्यै** = गतिमान, ज्ञानी के लिए (ध्रज् - जाना, जानना, पाना)।

ध्रात - **धात** = धारण किये हुए, धैर्ययुक्त (धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)।

ध्रुणम् = ध्रुण को, वाद्यों को, वाद्य-वादकों को, धारण किये हुए, धैर्ययुक्त को (ध्रण - शब्द करना, वाद्य बजाना, धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)।

ध्रुव - ध्रुव = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवः - ध्रुवः = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवक्षित् = ध्रुवक्षित्, जिसका निवास ध्रुव हो, ध्रुव निवास वाला (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना, क्षि - जाना, चलना, निवास करना, क्षि - जाना, चलना, निवास करना)।

ध्रुवक्षितिः - ध्रुवक्षितिः = ध्रुवक्षिति, जिसका निवास ध्रुव हो, ध्रुव निवास वाला (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना, क्षि - जाना, चलना, निवास करना, क्षि - जाना, चलना, निवास करना)।

ध्रुवतमः = अत्यन्त ध्रुव, सर्वाधिक ध्रुव (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवम् - ध्रुवम् = ध्रुव को, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवयोनिः = ध्रुवयोनि (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)।

ध्रुवस्य = ध्रुव का, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील का (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवा - ध्रुवा = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवाणाम् - ध्रुवाणाम् = ध्रुवों का, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवे - ध्रुवे = अचल, स्थिर, अविचल गतिशील में (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवेण - ध्रुवेण = ध्रुव द्वारा (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्रुवो - ध्रुवो = अचल, स्थिर, अविचल गतिशील (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्वजेषु = ध्वजों में, गतिशीलों में (ध्वज् = जाना, गति करना, जानना, पाना)।

ध्वनयीत् = ध्वनि करे (ध्वन - शब्द करना, ध्वनि करना)।

ध्वस्त्रयोः = दो गतिमानों का, में (ध्वंस - चूर्ण होना या करना, जाना, नीचे गिरना, नष्ट होना)।

ध्वान्तः = ध्वान्त, ध्वनित, ध्वनि-युक्त (ध्वन - शब्द करना, ध्वनि करना)।

न

न = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)।

नः = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)।

नकिः = नष्ट, विनाशक (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)।

नकुलः = नकुल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)।

नकुलान् = नकुलों को (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)।

नक्तः = नक्त, नष्ट, विनाशक (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)।

नक्तम् = नक्त, नष्ट, विनाशक को (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)।

नक्तम् = रात्रि (अव्यय)।

नक्ता = रात्रि (नक्त - रात्रि (नज् - लज्जा होना, नज्ज - गति कररना, हिंसा करना)।

नक्तोषासा = रात-दिन (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)।

नक्षत्रदर्शम् = नक्षत्रदर्शक को (नक्ष - जाना, आना,

पहुंचना, जानना, पाना, दृश् - देखना)।

नक्षत्रम् = नक्षत्र को (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षत्राणि = नक्षत्र (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षत्रियेभ्यः = नक्षत्रियों के लिए, नक्षत्र-विदों के लिए (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षत्रेभ्यः = नक्षत्रों के लिए (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षत्रेषु - नक्षत्रेषु = नक्षत्रों में (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षत्रैः - नक्षत्रैः = नक्षत्रों द्वारा (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षन् = प्राप्त करते हुए, जाते हुए (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षन्तु = प्राप्त करते हुए, जाते हुए (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षन्ते = प्राप्त करते हैं, जाते हैं (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षसे - नक्षसे = प्राप्त करते हो, जाते हो (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षामहे = प्राप्त करते हैं, जाते हैं (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नक्षि - नक्षि = गति, ज्ञान, प्राप्ति (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

नखेषु = नखों में (नख - जाना, जानना, पाना)।

नग्नहुः = नग्नहु, किंचन, नगण्य, लज्जाशील को देने वाला (न - नहीं, गण = शब्द करना, गिनना, नापना, मानना, समझना, समूह बनाना। नज = लज्जित होना, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना)

नग्नहुम् = नग्नहु, किंचन, नगण्य, लज्जाशील को देने वाले को (न - नहीं, गण = शब्द करना, गिनना, नापना, मानना, समझना, समूह बनाना। नज = लज्जित होना, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना)।

नड्वलाभ्यः - नड्वलाभ्यः = नड्वल के लिए (नड्व -

अवस्यन्दन होना, टपकना, गिरना, झरना, वल् - आच्छादित करना, अंकुरित होना)।

नते = नत में (नम् - नमना, नमस्कार करना, सम्मान देना)।

नदनुम् = शब्द करने वाले, प्रकाश करने वाले को (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नदम् = शब्द को, प्रकाश को (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नदयन् = शब्द करते हुए, प्रकाश करते हुए (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नदीनाम् = नदियों का (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नदीपतये = नदीपति के लिए, नाद-ऐश्वर्य के लिए (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

नदीभ्यः = नदियों के लिए (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नदीषु = नदियों में (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नद्धः - नद्धः = तत्पर, युक्त (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना, नध् - युक्त होना, जुड़ना, तैयार होना, तत्पर होना)।

नद्धा - नद्धा = तत्पर, युक्त (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना, नध् - युक्त होना, जुड़ना, तैयार होना, तत्पर होना)।

नद्यः - नद्यः = नदियाँ (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

ननक्षे = गति, ज्ञान, प्राप्त किया (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)।

ननु = निश्चय ही (अव्यय)।

नपयः = प्राप्त करने वाले (न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नपात् = प्राप्त किया (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा -

पालन करना, रक्षा करना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना)।

नपातम् = विद्वान्, प्रकाशमान, ऐश्वर्यहीन, अपतित को (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना)।

नपाता = शब्दकर्ता, प्रकाशक, न गिराने वाला, प्राप्त करने वाला (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)।

नप्योः = प्राप्त करने वाले, विद्वान् (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नप्त्रे - नप्त्रे = ज्ञानियों के लिए, प्रकाशमान के लिए (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नप्यः = ज्ञान वाली, प्रकाश वाली (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभः = नभ (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभन्ताम् = मध्य में स्थित हों, नष्ट हों (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभन्यो = नभ वाले, नभ-स्थित, नभ के (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभसे = नभः के लिए (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभस्यः = नभः के योग्य (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभस्याय = नभस्य के लिए (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभस्वान् = नभः युक्त (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना,

पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभो - नभो = नभ (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नभोरूपाः - नभोरूपाः = नभ-रूप वाला (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, रूप - रूप बनाना, आकार बनाना)।

नभोवित् = नभ को जानने वाला (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना)।

नम = नमन (नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमतु = नमन करें (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमन्त = नमन करें (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमन्ताम् = नमन करें (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमन्ति = नमन करते हैं (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमसा = नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमस्ते - नमस्ते = तुम्हारे लिए नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, ते - तुम्हारे लिए, तुमको)।

नमस्यः = नमन करने योग्य (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, ते - तुम्हारे लिए, तुमको)।

नमस्यत = नमस्कार करो (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, ते - तुम्हारे लिए, तुमको)।

नमस्यता = नमस्कार करो (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, ते - तुम्हारे लिए,

तुमको)।

नमुचा = नमनशील (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमुचेः = नमनशील का (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमुचैः = नमनशीलों द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमुचौ = नमनशील (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमो = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमोभिः = बहुशः नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमोवृधा = नमन द्वारा वर्द्धित (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, वृध - बढ़ना, अधिक होना)

नमनमाने = नमनशील (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नय = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयत = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयतम् = ले जाओ (नी = ले जाना, नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयति = ले जाता है (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयन्त = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयन्तम् = ले जाने को (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयन्ति - नयन्ति = ले जाते हैं (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयन्तु = ले चलें (नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नयामसि - ले जाते हो (नी = ले जाना)।

नयामि = ले जाता हूँ (नी = ले जाना, नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।

नरः = नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नरम् = नर को (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नरा = नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नराम् = नर को (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नराशम् = नम्र कल्याणकारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

नराशंसः = नर की स्तुति करने वाला, नर की प्रशंसा करने वाला (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

नराशंसम् = नर की स्तुति करने वाले को, नर की प्रशंसा करने वाले को (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

नराशंसस्य = नराशंस का, नर की स्तुति करने वाले का, नर की प्रशंसा करने वाले का (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

नराशंसेन = नम्र प्रशंसकों द्वारा (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = प्रशंसा करना)।

नराशंसो = नर की स्तुति करने वाला, नर की प्रशंसा करने वाला (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

नरिष्ठायै = नरिष्ठा के लिए, नेतृत्व के लिए (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले

जाना)।

नरे = नर में (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नरमाय - नर्माय = नर्म के लिए, ले जाने के लिए, नम्रता, कोमलता के लिए (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नर्य - नर्य = नर्य (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नर्यः - नर्यः = नर्य (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नर्यम् - नर्यम् = नर्य को (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नर्यापसम् = नरो के पालनकर्ता को (नर्य+अपसम्, नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, अप = पालन करना)।

नव = नौ (संख्या)।

नवग्वा = नव-वाणी, नव-गति (नव = नौ (संख्या), गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, गम्-गच्छ - जाना, इष्टार्थ सिद्ध होना)।

नवतिम् = नब्बे को, स्तुतियों को (संख्या, नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नवतीः = नब्बे (संख्या)।

नवन्त = स्तुति करते हैं (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नवन्ते = स्तुति करते हैं (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नवदश = उन्नीस (संख्या)।

नवदशः = उन्नीसवाँ (संख्या)।

नवदशभिः = उन्नीस द्वारा (संख्या)।

नवभिः = नौ द्वारा (संख्या)।

नवभ्यः = नौ के लिए (संख्या)।

नवम् = नव को (संख्या)।

नवमी = नौवाँ (संख्या)।

नवमे = नौवें (संख्या)।

नवविंशतिः = उनतीस (संख्या)।

नवसु = नौ में (संख्या)।

नवस्य = स्तुति का, नव (नौ) का (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना, नव = नव - नौ (संख्या)।

नवस्रक्तिम् = नव-गतियों को (नव - नौ (संख्या), स्र - जाना, सरकना)।

नवानाम् = नौ (संख्या)।

नवामहे = स्तुति करते हैं (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नविष्टया = स्तुतिमय के लिए, स्तुतिमयी द्वारा (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नवीयसीम् = उत्तम स्तुति को (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नवेन = नव-द्वारा, स्तुति द्वारा (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नव्यः = नवीन, स्तुतियोग्य (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नव्यम् = नवीन को, स्तुतियोग्य को (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नव्यसे = नवीनता के लिए, स्तुतियोग्य के लिए (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नव्यांसम् = नवीनता को, स्तुतियोग्य को (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)।

नशत् = नष्ट होता है, लुप्त होता है, अदृश्य होता है (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नशत = नष्ट होता है, लुप्त होता है, अदृश्य होता है (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नशते = नष्ट होता है, लुप्त होता है, अदृश्य होता है (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नशन्त = नष्ट हों लुप्त हों, अदृश्य हों (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नशे = नाश में (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नश्य = नाशयोग्य, विनाशशील (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नश्यति = नष्ट होता है, लुप्त होता है, अदृश्य होता है (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नष्टम् = नष्ट को (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नसन्त = कुटिल, वक्र (नस् - कुटिल होना, वक्र होना, नमना)।

नसि = कुटिल, वक्र में (नस् - कुटिल होना, वक्र होना, नमना)।

नस्यानि = कुटिल, वक्र (नस् - कुटिल होना, वक्र होना, नमना)।

न हि = नहीं (अव्यय)।

नहि = बंधन (नह - बांधना, अड़ाना)।

नहुष्याणि = अनेक बंधन (नह - बांधना, अड़ाना)।

ना = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)।

नाकः = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

नाकम् = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

नाकस्य = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल का (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

नाकाय = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

नाके = अकुटिलता में, नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल में (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

नाक्रः - नाक्रः = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

नाक्रान् - नाक्रान् = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल को (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)।

होना)।

नाथितात् = नाथित से (नाथ - याचना करना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना, स्वस्ति-वाचन करना)

नादेयाय = नादेय के लिए (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नाधमानाः = याचना करते हुए (नाध - याचना करना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना, स्वस्ति-वाचन करना)।

नाधृषे = धृष्टता नहीं करते हैं (न - नहीं, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

नानदत् = नाद किया (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

नाना = अनेक, बहुत, विविध (अव्यय)।

नान्दनम् = आनन्द को (नन्द - आनन्द पाना, प्रसन्न होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना)।

नाभा = नाभि में (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभिः = नाभि (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभिम् = नाभि को (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभौ = नाभि में, मध्य में (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभ्या = नाभि में (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभ्याम् = नाभियुगल द्वारा, के लिए, से (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभ्यै = नाभि के लिए (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाम = नाम वाले (अव्यय)।

नाम = नाम वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नामधाः = नाम धारण करने वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नामयति = नाम लेता है, नाम रखता है (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नामानि = नाम (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नामौ = नाम में (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नाम्ना = नाम द्वारा (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नारकाय = नारक के लिए ((नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नाराशंसाः = नरों द्वारा प्रशंसित, नर-प्रशंसा (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = प्रशंसा करना)।

नाराशंसे = नरों द्वारा प्रशंसित होता है, नर-प्रशंसा करता है (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = प्रशंसा करना)।

नाराशंसेन = नाराशंस द्वारा, नरों द्वारा प्रशंसित से (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना, शंस = प्रशंसा करना)।

नारि = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नारिः = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नारिम् = नारी को (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नारीः = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नारी = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल

होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नार्मिणीम् = नरों को, ले जाने वाले को, नम्रशीलों को (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नार्यः - नार्यः = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नावः = नाव, तैरने वाला, स्तुतियाँ (नौ - तैरना, नु - स्तुति करना)।

नावम् = नाव को, तैरने वाले को (नौ - तैरना)।

नाशनी = नाश करने वाली, विनाशिका (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नाशयित्री - नाशयित्री = नाश करने वाली, विनाशिका (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।

नाष्ट्राभ्यः - नाष्ट्राभ्यः = नष्टकारियों से (नश - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

नासत्या = असत्य से रहित युगल, नासत्य युगल, श्वास-प्रश्वास, शब्द करने वाले युगल (न - नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय), अ - नहीं, सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, नास - श्वास लेना, शब्द करना, ध्वनि करना, श्वास-ध्वनि करना, खुर्राटा मारना)।

नासत्याभ्याम् = नासत्य युगल के लिए, श्वास-प्रश्वास के लिए (नास - श्वास लेना, शब्द करना, ध्वनि करना, श्वास-ध्वनि करना, खुर्राटा मारना)।

नासिके = हे नासिका, हे श्वास-प्रश्वास, नासिक में, श्वास-प्रश्वास में (नास - श्वास लेना, शब्द करना, ध्वनि करना, श्वास-ध्वनि करना, खुर्राटा मारना)।

नाहुषीषु = बंधनों में (नह - बांधना, अड़ाना)।

नि = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)।

निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)।

नि असादयन्त = निरन्तर स्थापित करें (नि - निश्चित, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना)।

निकामाः = निरन्तर कामना वाले (नि - निश्चित, निरन्तर, कम् - चाहना, इच्छा करना)।

निकामे = निरन्तर कामना में (नि - निश्चित, निरन्तर,

कम् - चाहना, इच्छा करना)।

निकारिणः = निरन्तर करने वाले, कराने वाले (नि - निश्चित, निरन्तर, कृ - करना)।

निक्तम् = शुद्ध, स्वच्छ, पालन को (निक्-निज-निनिक् - शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालना)।

निक्तैः = शुद्धता, स्वच्छता द्वारा (निक्-निज-निनिक् - शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालना)।

निक्तो = शुद्ध, स्वच्छ, पालन (निक्-निज-निनिक् - शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालना)।

निक्रमणम् = निक्रमण को, निकलने को (नि - निश्चित, निरन्तर, कृ - करना)।

निगल्गलीति = निगलता है (निः = बिना, बाहर, निश्चित (अव्यय), गल् = खाना, निगलना, टपकना)।

निगुतः = शब्द, मनन करने, अस्पष्ट बोलने वाला (निः = बिना, बाहर, निश्चित (अव्यय), गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

निग्राभम् = निग्राभ को (नि - निश्चित, निरन्तर, गृ = सींचना, समझना, जानना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

निग्राभेण = निग्राभ द्वारा (नि - निश्चित, निरन्तर, गृ = सींचना, समझना, जानना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

निचितो = निरन्तर चयनित, एकत्र किया गया, चेतन (नि - निश्चित, निरन्तर, चि = चुनना, चयन करना, चित = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

निचुम्पुण = मन्द गति वाला (नि - निश्चित, निरन्तर, चुप्-चुम्प = धीरे चलना)।

निचुम्पुणः = मन्द गति वाला (नि - निश्चित, निरन्तर, चुप्-चुम्प = धीरे चलना)।

निचेरवे = चयन-कर्ता के लिए (नि - निश्चित, निरन्तर, चि = चुनना, चयन करना)।

निचेरुः - निचेरुः = चयनकर्ता (नि - निश्चित, निरन्तर, चि = चुनना, चयन करना)।

निचाय्य = चयन कर (नि - निश्चित, निरन्तर, चि = चुनना, चयन करना)।

निजा = शुद्ध-कर्ता (नि - निश्चित, निरन्तर, निज्-निज्ज - शुद्ध करना, निर्मल करना)।

निजुरः = निरन्तर वेगवान् (नि - नितराम्, निरन्तर, जु - जाना, दौड़ना, भागना)।

निजुरो = निरन्तर वेगवान् (नि - नितराम्, निरन्तर, जु - जाना, दौड़ना, भागना)।

नित्यः = निरन्तर, निश्चित, सतत (नि - निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), त्य - प्रत्यय)।

नित्यस्तोत्रो = निरन्तर स्तुति वाले, निरन्तर प्रशंसा वाले (नि - निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), त्य - प्रत्यय। नी = पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना, स्तु- प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

नित्यासो = नित्य, निरन्तर, निश्चित, सतत (नि - निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), त्य - प्रत्यय)।

निदः = निन्दा (निद - दोष लगाना, निन्दा करना, समीप जाना या पहुँचना)।

निदधामि = निश्चित, निरन्तर धारण करता हूँ (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, दध-धा - धारण करना)।

निदधे = निश्चित, निरन्तर धारण किया (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, दध-धा - धारण करना)।

निदे = निन्दा के लिए (निद - दोष लगाना, निन्दा करना, समीप जाना या पहुँचना)।

निधाना = धारण करने वाला (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, दध-धा - धारण करना)।

निधाय = निध के लिए, निश्चित, निरन्तर धारण के लिए (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, दध-धा - धारण करना)।

निधिः = निधि, धारणा शक्ति, बुद्धि (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धि = धारण करना, युक्त होना, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)।

निधिपतिः = निधि-पति, निधि का स्वामी (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना,

पराक्रम होना)।

निधिपतिम् = निधि-पति को, धारणा, बुद्धि के पति, स्वामी को (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

निधिपाः = निधि-पालक को, धारणा, बुद्धि के पालक को (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, पा = पालन करना, रक्षा करना)।

निधिषु = निधियों में, धारणा शक्ति, बुद्धियों में (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

निधीतः = निधीत, निश्चित, निरन्तर धारण किया (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

निधीनाम् = निधियों का, धारणा शक्ति, बुद्धियों का (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

निध्रुविः = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, ध्रुव = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)।

निनद्धः = झंकृत किया, शब्द किया (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

निनीषति = ले जाता है (नि - निरन्तर, निश्चित, नी - ले जाना)।

निन्दात् = निन्दा से (निन्द - निन्दा करना)।

निपक्षतिः = निश्चित, निरन्तर धारण करता है, निष्पक्षता (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

निपुरः = मुख्य (अव्यय)।

निपुरः = अग्रसर (पुर = मुख्य होना, आगे जाना)।

निपुरो = अग्रसर (पुर = मुख्य होना, आगे जाना)।

निमिषतः = निमिष से, सिञ्चन, प्रोक्षण से (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)।

निमृजानाः = निरन्तर मार्जन करने, स्वच्छ करने वाले (नि - निश्चित, निरन्तर, मृज् - मार्जन करना, स्वच्छ करना)।

निमे = माना, मान किया (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मा = मान करना, मापन करना, मानना)।

निमेषतः = निमिष से, सिञ्चन करना, प्रोक्षण से (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)।

निमेषा = निमेष, निमिष से, सिञ्चन करना, प्रोक्षण से (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)।

निमेषाः = निमेष, सिञ्चन, प्रोक्षण (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)।

निमेषाय = निमेष के लिए, सिञ्चन, प्रोक्षण के लिए (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)।

निम्रोचन् = प्रगतिशील (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, म्रुच् - जाना, स्थानान्तर करना)।

नियच्छ = दो, प्रदान करो (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, यच्छ = दान करना, देना)।

नियुत् = नियुक्त, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त, जुड़े हुए (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त

करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुतः = नियुत, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त, जुड़े हुए (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुतम् = नियुत को, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त, जुड़े हुए को (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

निरतष्ट = निरन्तर रक्षा की (निः+अतष्ट, निः-निर् - विना, बाहर, निश्चित, तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना)।

निरमोचि = निर्मोचित किया, छोड़ा, प्रसन्नता दी (निः+अमोचि, निः (अव्यय) = विना, बाहर, निश्चित, अ - भूतकालिक उपसर्ग, मुच - बोलना, कहना, पीसना, ठगना, मुच - छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना)।

नियुताम् = नियुत करे, नियुक्त करे (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुतो = नियुक्त (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, अलग करना)।

नियुत्भिः - नियुत्भिः = नियुत द्वारा, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त, जुड़े हुए द्वारा (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुत्वता = नियुत कर, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त कर (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुत्वा = नियुत कर, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त कर (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुत्वान् = नियुक्त किया, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त किया (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

नियुद्भिः - नियुद्भिः = नियुत द्वारा, निश्चित रूप से, निरन्तर युक्त, जुड़े हुए द्वारा (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, यु - मिलाना, युक्त करना, जोड़ना, अलग करना)।

निरधुक्षत = प्रदीप्त किया (निः - विना, बाहर, निश्चित, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धुक्ष - प्रदीप्त करना,

जलाना, जीना, श्रान्त होना या थक जाना)।

निरस्त = निरस्त, बाहर फेंका गया, बहिष्कृत, प्रिय (नि = निश्चित, रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, चखना, प्यार करना, निः-निर् - विना, बाहर, निश्चित, अस् - होना, फेंकना)।

निरस्तः = निरस्त, प्रिय, बाहर फेंका गया, बहिष्कृत (नि = निश्चित, रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, चखना, प्यार करना, निः-निर् - विना, बाहर, निश्चित, अस् - होना, फेंकना)।

निरिणाति = शब्द करता है, चूर्ण करता है (नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, रिण - शब्द करना, चूर्ण करना या होना, निः - विना, बाहर, निश्चित, इ - जाना, इण् - शब्द करना, बोलना)।

निरेके = निःशंक, शंकाहीन, विचारहीन (निः - विना, बाहर, निश्चित, नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, एक् - शंका करना, विचार करना, विमर्श करना)।

निर्ऋतिः = निर्ऋति, निरन्तर ऋतयुक्त (निः - निश्चित रूप से, निरन्तर, ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

निर्ऋतिम् = निर्ऋति को, निरन्तर ऋतयुक्त को (निः - निश्चित रूप से, निरन्तर, ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

निर्ऋते = हे निर्ऋता, निरन्तर ऋतयुक्त (निः - निश्चित रूप से, निरन्तर, ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, हिंसा करना)।

निर्ऋत्यै = निरन्तर प्रगतिशील के लिए (नि = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

निर्जल्पेन = अल्पबचन द्वारा (निः - विना, बाहर, निश्चित, नि - निश्चित रूप से, निरन्तर, जल्प् - बहुत बोलना)।

निर्णिजम् = निरन्तर शुद्ध-कर्ता को (नि - निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), निज्-निज् - शुद्ध करना, निर्मल करना)।

निर्णिजा = निरन्तर शुद्ध-कर्ता (नि - निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), निज्-निज्ज - शुद्ध करना, निर्मल करना)।

निर्णिजे = निरन्तर शुद्ध करने के लिए, निरन्तर शुद्ध करने में (नि - निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), निज्-निज्ज - शुद्ध करना, निर्मल करना)।

निर्बाधेन = निर्बाध द्वारा (नि = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

निर्भक्तः = असेवित (निः - विना, बाहर, निश्चित, भज् = सेवा, भजन, उपभोग करना, देना, पकाना, अलग करना)।

निर्वादिष्टम् = निर्वादी, निःशब्द (निः - विना, बाहर, निश्चित, वद - कहना, समझाना)।

निवचनानि = निवचनों को (नि - निश्चित, निरन्तर (अव्यय), वच् - बोलना, कहना, समझाना, जानना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

निवर्तयामि = कहता हूँ, वरण करता हूँ, वर्ताव करता हूँ (निः - विना, बाहर, निश्चित, वृत् = रहना, होना, वर्ताव करना, चमकना, बोलना, वरण करना, सेवा करना)।

निवर्त्तस्व = निवृत्त करो, निवर्तमान करो (वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

निविदः = विद्वान् (नि - निश्चित, विद् = जानना)।

निविदा = ज्ञान (नि - निश्चित, विद् = जानना)।

निविष्टाय = निविष्ट के लिए, विस्तृत के लिए (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना। विश = घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)।

निवेशनः = प्रवेश करने वाला, निवेश करने वाला (नि - निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)।

निवेशनम् = प्रवेश करने वाले को, निवेश करने वाले को (नि - निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)।

निवेशनी = निवेशनी, निवेश करने वाली (नि - निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)।

निवेशयन् = निवेश करते हुए, प्रवेश करते हुए (नि -

निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)।

निवेष्टम् = निवेष्ट को, निवेश योग्य को (नि - निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)।

नि-व्याधिन = नि-व्याधि (नि - निश्चित, वि - विशेष, अधि-इ - अध्ययन करना, व्यध - ताड़ना करना, पीड़ा करना, छेदना, हिंसा करना)।

निशीर्य = निशीर्य (नि - निश्चित, शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

निषङ्गधिः = निषङ्गधि, निषङ्ग को धारण करने वाला, प्राप्ति युक्त (निष - प्राप्त करना, ले जाना, गध् = मिल जाना, मिश्रित करना, मिलाना)।

निषङ्गिभिः = निषङ्गियों द्वारा (निष - प्राप्त करना, ले जाना)।

निषङ्गिणे = निषङ्गिण के लिए (निष - प्राप्त करना, ले जाना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

निषण्णाय = ले जाने वाले के लिए (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषत्तम् = प्राप्त हुआ (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषत्ता = निषत्त, प्राप्त हुआ (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषत्ते = निषत्त के लिए (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषत्तो = प्राप्त हुआ, निरन्तर स्थित, निरन्तर प्रगतिशील (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

निषदनम् = स्थान, प्राप्य, लक्ष्य (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषदम् = स्थान, प्राप्य, लक्ष्य (निष - प्राप्त करना, ले

जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषद्य = बैठकर, स्थान, प्राप्य, लक्ष्य (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषद्वरम् = निषद्-वर को, ले जाने वाले, प्राप्य को, स्थान, लक्ष्य (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषादेभ्यः = निषादों के लिए, ले जाने वालों के लिए, बैठे हुए लोगों के लिए (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषिक्तम् - निषिक्तम् = अभिषिक्त को (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, षिञ्च्-सिञ्च् - सेचन करना, सिञ्चन करना, सींचना, सिक्-सिङ्क् - ध्वनि करना)।

निषीद = बैठो (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषीदन् = स्थान, बैठे हुए (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निषेभ्यः = स्थानों, प्राप्यों, लक्ष्यों के लिए (निष - प्राप्त करना, ले जाना)।

निष्कर्ता = निष्कर्ता, निरन्तर कर्मशील (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, कृ- करना)।

निष्कृण्वानाः = निष्कृण्वान, निरन्तर कर्मशील, निरन्तर करने वाले (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, कृ- करना)।

निष्कृतम् = निष्कृत, निश्चित रूप से किया हुआ (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, कृ- करना)।

निष्कृतीः = निष्कृति (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, कृ- करना)।

निष्कृत्यै = निष्कृति के लिए (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, कृ- करना)।

निष्केवल्यः = निष्केवल्य, सतत सिंचक, निरन्तर सेवनीय, नि-सेव्य (नि = निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)।

निष्केवल्यम् = निरन्तर सेवनीय को, निरन्तर केवल्य

को (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)।

निष्क्रव्यादम् = निष्क्रव्य को खाने वाले को, अकरणीय को खाने वाले को (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, अद् = खाना, कृ = करना)।

निष्टतक्षतुः = प्राप्त आच्छादन, वाणी, प्राप्त किया, आच्छादित किया, बनाया (निष् - प्राप्त करना, ले जाना, तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

निष्टतक्षुः = प्राप्त आच्छादन, वाणी, प्राप्त किया, आच्छादित किया, बनाया (नि - निश्चित, निरन्तर, निष् - प्राप्त करना, ले जाना, तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)।

निष्टनिहि = निरन्तर विस्तार करो, ध्वनि करो (नि - निश्चित, निरन्तर, स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना, तन् - विस्तार करना)।

निष्टप्तम् = दहनशील, जल रहे को (तप् = सन्ताप, दहन, ऐश्वर्य होना)।

निष्टप्ता = सन्ताप युक्त, दहनयुक्तं, ऐश्वर्ययुक्त (तप् = सन्ताप, दहन, ऐश्वर्य होना)।

निष्ट्यायताम् = प्राप्त करो, शब्द करो (निष - प्राप्त करना, ले जाना, स्तयै - शब्द करना, ध्वनि करना)।

निष्ट्यो = निष्ट्य, प्राप्य, शब्द (निष - प्राप्त करना, ले जाना, स्तयै - शब्द करना, ध्वनि करना)।

निष्ठा = निष्ठा, निरन्तर स्थित (नि - निश्चित, निरन्तर, स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

निष्हमाणो = निरन्तर सहनशील, सामर्थ्यवान्, सहमान (नि - निरन्तर, निश्चित, सह = साथ, सहित, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

निसद्य = बैठो (निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)।

निहः = निह (नि - निश्चित रूप से, निष - प्राप्त करना, ले जाना, हु - देना, आदान-प्रदान करना)।

निहतस्य = निहत का (नि = निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। हन = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी

प्रकार समाप्त करना)।

निहारम् = निहार को (नि - निश्चित रूप से, ह = ले जाना, पहुँचाना)।

निहराणि = निहर समूह, ले जाऊँ (नि - निरन्तर, निश्चित, ह - हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

निहाक्या = त्याग द्वारा, त्याज्य द्वारा (नि - निरन्तर, निश्चित, हा = त्याग करना, चलना, जाना)।

निहितः = निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

निहितम् = निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

निहिता = निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

निहितान् = निहितों को, स्थितों को (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

निहितो = निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

निहवये = आह्वान में (नि - निरन्तर, निश्चित, हवे - आह्वान करना, शब्द करना, बुलाना)।

नीक्षणम् - नीक्षणम् = निरन्तर स्वाद लेने को, निरन्तर देखने को (नि - निरन्तर, निश्चित, इक्ष् स्वाद लेना, ईक्ष - देखना)।

नीचा = निम्न, चाकरी (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना)।

नीचीनवारम् = निम्न-वरण को, नीच का वरण करने वाले को (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, वृ - निवारण करना, हटाना, आच्छादन करना, ढकना, घेरना)।

नीडः = निवास (निड - निवास करना)।

नीथाविदो = विद्वान्, मार्गदर्शक (नी - ले जाना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

नीप्याय = नीप्य के लिए (नि - निरन्तर, निश्चित, अप

- पालन करना)।

नीयते = ले जाता है (नी - ले जाना)।

नीयसे = ले जाता है (नी - ले जाना)।

नीलग्रीवाः = नीलग्रीव (नील = रंगना, रंगाना, नीलरंग लगाना, गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

नीलग्रीवाय = नीलग्रीव के लिए (नील = रंगना, रंगाना, नीलरंग लगाना, गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)।

नीलङ्गोः = नीलङ्ग, नीलगामी (नील = रंगना, रंगाना, नीलरंग लगाना, गम् = जाना)।

नीलवान् = नील युक्त (नील = रंगना, रंगाना, नीलरंग लगाना)।

नीवाराः = विस्तार, पृथुल (नीव् = फैलना, पृथुल होना)।

नीविः = विस्तार, पृथुल (नीव् = फैलना, पृथुल होना)।

नीहारम् = नीहार को (नि - निश्चित रूप से, ह = ले जाना, पहुँचाना)।

नीहाराय = नीहार के लिए (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना, नि - निश्चित (अव्यय), निः - विना, बाहर, निश्चित (अव्यय), ह - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

नीहारेण = नीहार द्वारा (नी - ले जाना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

नृक्षसम् - नृक्षसम् = नरों को देखने वाले को (नृ- ले जाना, चक्ष - देखना)।

नृक्षसः = नरों के द्रष्टा (नृ - ले जाना, चक्ष - देखना)।

नृक्षसाम् - नृक्षसाम् = नरों को देखने वालों का (नृ- ले जाना, चक्ष - देखना)।

नृक्षः - नृक्षः = नरों को देखने वाले (नृ- ले

जाना, चक्ष - देखना)।

नृणाम् = नरों का (नृ- ले जाना)।

नृतमाः = नरों में उत्तम, श्रेष्ठजन (नृ - ले जाना)।

नृतमाय = नरों में उत्तम, श्रेष्ठजन के लिए (नृ - ले जाना)।

नृतुः = ले जाने वाले का, नाचने वाला (नृ- ले जाना, नृत - नाचना, नृत्य करना)।

नृत्ताय - नृत्ताय = नृत के लिए, नृत्य के लिए (नृत्- नृत्य करना, नाचना)।

नृत्याय = नृत्य के लिए (नृत्-नृत्य करना, नाचना)।

नृपतिः = नरों का पालक, ले जाने वालों का पालक (नृ - ले जाना, पा = रक्षा करना, पालन करना)।

नृभिः = नरों द्वारा (नृ - ले जाना)।

नृतमः = नृतम, आनयन, ले जाने का कार्य, नर, ले जाते हैं (नृ - ले जाना)।

नृतमणाः = नर, ले जाने वाले (नृ - ले जाना)।

नृतमनाः = नर, ले जाने वाले (नृ - ले जाना)।

नृतमादनः = नर को आनन्द देने वाला (नृ - ले जाना, मदी-माद् - हर्ष होना)।

नृतम्णम् = नर, ले जाने वाले को (नृ - ले जाना)।

नृतम्णा = नर, ले जाने वाले (नृ - ले जाना)।

नृतम्णानि = नर (नृ - ले जाना)।

नृतवत् = नर के समान (नृ - ले जाना)।

नृतवन्तः = नृतवन्त, नरों से युक्त, ले जाने वालों से युक्त (नृ- ले जाना)।

नृवाहसा = नरों का वहन करने वालों द्वारा (नृ - ले जाना, वह - वहन करना, ले जाना)।

नृषदे = नृषद (नृ - ले जाना, सद्-सीद-सद्ल - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना, बैठना, चढ़ाई करना, सूखना)।

नृषद्मा = नृषद् (नृ - ले जाना, सद्-सीद-सद्ल - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना,

बैठना, चढ़ाई करना, सूखना)।

नृषाः = नर, ले जाने वाले, दानी (नृ - ले जाना, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

नृषूतो = नृरो से प्रेरित, नृरो से उत्पन्न (नृ - ले जाना, सु = प्रेरणा देना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

नृन् = नरों (नृ - ले जाना)।

नु = निश्चय ही, शीघ्र ही (अव्यय)।

नु = ही, भी (निपात, अव्यय)।

नुद = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

नुदताम् = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

नुदन्ताम् = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

नुदस्व = भेजो (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

नुदाति = भेजता है (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

नुनुदे = भेजा, प्राप्त किया, गया (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)।

नूतनाः = नूतन, नवीन, नये (नु = स्तुति करना, प्रशंसा करना, निश्चय करना, नया करना, नवीन करना, नूतन होना)।

नूतनाय = नूतन के लिए, नवीन के लिए, नये के लिए (नु = स्तुति करना, प्रशंसा करना, निश्चय करना, नया करना, नवीन करना, नूतन होना)।

नूनम् = निश्चय ही (अव्यय)।

नेता = ले जाने वाला (नी = ले जाना)।

नेतुः = ले जाने वाले का (नी = ले जाना)।

नेदिष्ठः = अति निन्दक, अति निकट (निद = निन्दा करना, समीप जाना)।

नेदिष्ठतमाः = अत्यन्त निन्दक, अत्यन्त निकट (निद = निन्दा करना, समीप जाना)।

नेदिष्ठम् = अति निन्दक, अति निकट को (निद = निन्दा करना, समीप जाना)।

नेदीय = निन्दनीय, निकट रखने योग्य (निद = निन्दा करना, समीप जाना)।

नेदीयः = निन्दनीय, निकट रखने योग्य (निद = निन्दा करना, समीप जाना)।

नेनीयते = ले जाता है (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना)।

नेमधिता = मार्गदर्शक (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

नेमिः = ले जाने वाला, मार्गदर्शक (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना)।

नेमिम् = ले जाने वाले, मार्गदर्शक को (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना)।

नेष = प्राप्त करो, ले जाओ (निष् - प्राप्त करना, ले जाना)।

नेषि = प्राप्त (निष् - प्राप्त करना, ले जाना)।

नेष्टः = प्राप्त (निष् - प्राप्त करना, ले जाना)।

नेष्टरात् = प्राप्त (निष् - प्राप्त करना, ले जाना)।

नैगुतो = शब्द, मनन करने, अस्पष्ट बोलने वाला (निः = बिना, बाहर, निश्चित (अव्यय), गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

नैषादम् - नैषादम् = नैषाद को (नि - उपसर्ग, निष् - प्राप्त करना, ले जाना, सद्-षद् - बैठना, गति करना, काटना, नष्ट करना)।

नो = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)।

नोनुमः = स्तुति करते हैं (नु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

नोनुवुः = स्तुति करते हैं (नु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

नौ = हम दोनों।

न्यक् = ले जाने वाला (नी - ले जाना)।

न्यक्रमीत् = वृद्धि की, रक्षा की, बढ़ गयी (नि = निश्चित, निरन्तर (अव्यय) अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)।

न्यग्रोधः = ऊर्ध्वगामी, अग्रणी को धारण करने वाला (नि - निश्चित, निरन्तर। अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

न्यङ्कुः = न्यकु, सुपरिचित, सुगणक (नि - निश्चित, निरन्तर, अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

न्यङ्कून् = न्यकुओं को, सुपरिचितों को, सुगणकों को (नि - निश्चित, निरन्तर, अंक = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)।

न्यसादयन्त = निरन्तर स्थापित करें (नि - निश्चित, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना)।

न्यृण्वन् = निरन्तर प्रगतिशील (नि+ऋण्वन्, नि - निरन्तर, निश्चित, ऋणु - चलना, जाना, गमन करना, जानना, पाना, दुर्गति होना)।

न्योकाः = नियत निवास वाला (नि - निरन्तर, निश्चित, ओक - निवास करना)।

प

पक्तीः = पकाने वाले (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पक्वम् - पक्वम् = पक्व, पका हुआ, प्रकाश को (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पक्षतिः - पक्षतिः = पक्ष (पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

पक्षमाणि - पक्षमाणि = पक्षयुक्त (पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

पक्षा - पक्षा = पक्षयुक्त (पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

पक्षोभिः = पक्षों द्वारा (पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

पक्षौ - पक्षौ = पक्ष में (पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना,

किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

पक्ष्माणि = पक्षयुक्त (पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

पङ्क्ति - पङ्क्ति = पङ्क वाला, विस्तार वाला (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना)।

पङ्क्तिः - पङ्क्तिः = पङ्क वाला, विस्तार वाला (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना)।

पङ्क्तिः - पङ्क्तिः = पङ्क्ति, विस्तार (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना)।

पङ्क्तिम् - पङ्क्तिम् = पङ्क्ति को, विस्तार को (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना)।

पङ्क्तिराधसम् - पङ्क्तिराधसम् = पङ्क्तिराधन में समर्थ (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना, राध - सिद्ध होना, बढ़ना)।

पङ्क्त्य - पङ्क्त्य = पङ्क्ति योग्य, विस्तार योग्य (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना)।

पङ्क्त्या - पङ्क्त्या = पङ्क्ति द्वारा, पङ्क्ति योग्य, विस्तार योग्य (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना)।

पङ्क्त्यै - पङ्क्त्यै = पङ्क्ति के लिए, विस्तार के लिए (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना)।

पङ्भिः = पदों द्वारा (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पचत् = पचाता है (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचता = पकाने वाले (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचतेः = परिपक्व होने वाले का (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचन् = पकाने वाले (पच् = पकाना, व्यक्त करना,

प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचनम् = पाचन, पाक (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचन्तु = पकायें (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचनीभ्यः = पकाने वालों के लिए (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पच्यते = पकाता है (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पच्यन्ताम् = पकायें (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पच्यमानात् = पकाने वाले से (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पच्यस्व = पाचन करो, पकाओ (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पच्यैः = पकाने वालों द्वारा (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पज्रः - पज्रः = सञ्चय (पज् - सञ्चय करना)।

पञ्च = पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)।

पञ्चदशः = पन्द्रह (पञ्च - पाँच, दश - दस, संख्या)।

पञ्चदशभिः = पन्द्रह द्वारा (पञ्च = पाँच, दश - दस, संख्या)।

पञ्चदशम् = पन्द्रह को (पञ्च = पाँच, दश - दस, संख्या)।

पञ्चदशे = पन्द्रह में (पञ्च = पाँच, दश - दस, संख्या)।

पञ्चदशात् = पन्द्रह से (पञ्च = पाँच, दश - दस, संख्या)।

पञ्चदशाय = पन्द्रह के लिए (पञ्च = पाँच, दश - दस, संख्या)।

पञ्चधा = पाँच प्रकार से (पञ्च = पाँच, धा - धारण करना)।

पञ्चभिः = पाँच द्वारा (पञ्च = पाँच, संख्या)।

पञ्चभ्यः = पाँच (संख्या)।

पञ्चमे = पाँचवे में (पञ्च = पाँच, संख्या)।

पञ्चविंशः = पचीसवाँ (पञ्च = पाँच, विंश - बीस, संख्या)।

पञ्चविंशतिः = पचीस (पञ्च = पाँच, विंश - बीस, संख्या)।

पञ्चमी = पञ्चमी, पाँच (पञ्च = पाँच, संख्या)।

पञ्चसु = पञ्च में, पाँच में (पञ्च = पाँच, संख्या, पञ्च = व्यक्त करना, कहना, प्रकाश करना, विस्तार करना, व्यवहार करना)।

पञ्चानाम् = पाँच का (संख्या)।

पञ्चाविम् = पंचावि को, विस्तार को, पाँच के समवाय को, पाँच के समूह को (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना, पञ्च - पाँच, संख्या)।

पञ्चावयः = पांच अवयव, पंचावि, विस्तार, पाँच के समवाय, पाँच के समूह (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना, पञ्च - पाँच, संख्या)।

पञ्चाविः = पंचावि, विस्तार, पाँच के समवाय, पाँच के समूह (पञ्च = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना, पसारना, पञ्च - पाँच, संख्या)।

पङ्वीशम् = पङ्वीश को, व्यापक प्रगतिशील को (पट् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, वी = जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना)।

पङ्वीशात् = पङ्वीश से, प्रगतिशील, विद्वान्, प्रकाशमान से (पट् = जाना, जानना, पाना, गूथना, बोलना, चमकना, प्रकाश करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पट् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना। विष् = प्रवेश करना, भीतर जाना, विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

पणयो = पणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी (पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)।

पणिभिः = पणियों द्वारा, उद्योगों, स्तुतियों द्वारा (पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)।

पणीन् = पणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारियों को (पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)।

पणीनाम् = पणियों का, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारियों का (पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)।

पण्यमानः = स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी (पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)।

पत् = ऐश्वर्य (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत = ऐश्वर्य (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतङ्गम् = पतनगामी, ऐश्वर्यगामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतङ्गान् = पतनगामियों को, ऐश्वर्यगामियों को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतङ्गाय = पतनगामी, ऐश्वर्यगामी के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतति = गिरता है (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतत्री - पतत्री = पतनशील, ऐश्वर्यमान (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतत्रिणम् = पतनशील को, ऐश्वर्यमान को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतत्रिणीः - पतत्रिणी = पतनशील, ऐश्वर्यमान (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतत्रैः - पतत्रैः = पतनशीलों द्वारा, ऐश्वर्यमानों द्वारा (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतन्तम् = ऐश्वर्य, पराक्रम, गिरने को (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतन्ति = गिरते हैं, उड़ते हैं (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतन्तु = गिरायें, उड़ायें (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतय = पराक्रम करो, पतनशील, ऐश्वर्यमान हो (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतयः = ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतयते = पराक्रम करता है, गिरता है, उड़ता है, ऐश्वर्यमान होता है, पराक्रम के लिए, पतन के लिए, ऐश्वर्यमान के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतयन्तम् = ऐश्वर्यमान को, पराक्रम करो, पतनशील, ऐश्वर्यमान हो (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतयन्ति - पतयन्ति = पराक्रम करते हैं, पतनशील, ऐश्वर्यमान होते हैं (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतयिष्णु = पराक्रमी, ऐश्वर्यकामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतये = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतयो = ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतात् = ऐश्वर्य से, ऐश्वर्य होता है, जाता है, गिरता है (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतिः = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतिभ्यो = पतियों के लिए, ऐश्वर्यवान् स्वामियों के लिए, से (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतिम् = पति को, अधिपति, रक्षक, पालक (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतिवेदनम् = ऐश्वर्यवान् का बोध कराने वाले (पत् =

जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, विद् = जानना)।

पती = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पते = हे पति (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतेम = ऐश्वर्यवान् हों (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्तिणौ - पत्तिणौ = ऐश्वर्यवान् युगल (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्तीनाम् - पत्तीनाम् = पतियों का, ऐश्वर्यवानों का (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नी = ऐश्वर्यवती (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीः = ऐश्वर्यवती (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीभ्यः = पत्नियों के लिए, ऐश्वर्यवतियों के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीम् - पत्नीम् = ऐश्वर्यवती को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीभिः = पत्नियों द्वारा (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीवतः = पत्नीयुक्त (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीवन् = ऐश्वर्यवान् (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नीशालम् = पत्नीशाल को, पत्नीगृह को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, शल - जाना, जल्दी जाना, चुभना, आच्छादित करना, ढकना)

पत्नी-संयाजान् = पत्नी-संयाजों को, पत्नी के साथ यजन करने वालों को, पत्नी के लिए यजन करने वालों को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यज - देवपूजा करना,

स्वामी शरण

पदज्ञा - पदज्ञा = पदज्ञ, पद को जानने वाला (पद- जाना, चलना, ज्ञा - जानना)।

पदपङ्क्तिः = पदपङ्क्ति (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, पच्-पङ्क् - व्यक्त करना, प्रकाशित करना, व्यवहार करना)।

पदम् = पद को (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदवीः = पदवी, भूषण (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदा = पद, पद द्वारा (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदानि = पद (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदाय = पद के लिए (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदि = पद में, प्रगति में, विद्या में (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदे = पद में, प्रगति में, विद्या में (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदेषु = पदों में, प्रगति में, विद्या में (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पदैः = पदों द्वारा (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पद्भिः = पदों द्वारा, पदों के साथ, भूषण के साथ (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पद्भ्याम् = पदों द्वारा, पदों से, पदों के लिए (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पद्यस्व - पद्यस्व = चलो (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पद्ये = चलता हूँ, जाता हूँ, जानता हूँ (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पद्वतीभ्यः = पदयुक्तों से (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पनन्त = प्रशंसा करे, स्तुति करे (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनय = प्रशंसा करो, स्तुति करो (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनया = प्रशंसा द्वारा, स्तुति द्वारा (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनस्यते = प्रशंसा करे, स्तुति करे (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनस्यवे = प्रशंसा, स्तुति के लिए (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनायत = प्रशंसा करे, स्तुति करे (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनाय्यम् = प्रशंसा, स्तुति (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनिष्टये = प्रशंसा के लिए, स्तुति के लिए (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पनीयसे = प्रशंसा, स्तुति करने के लिए (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पन्था = मार्ग (पथ, पन्थ - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)।

पन्थाः = मार्ग (पथ, पन्थ - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)।

पन्थानम् = पन्थान को, पथ को, मार्ग को (पथ, पन्थ - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)।

पन्थाम् = पथ को, मार्ग को (पथ, पन्थ - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)।

पन्थिनो = पन्थिक (पथ, पन्थ - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)।

पन्यसे = स्तुति करने वाले के लिए, स्तुति करते हो (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पन्यांसम् = स्तुति करने योग्य, प्रशंसा योग्य (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पन्वस्व = प्रशंसा करो, स्तुति करो (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पपान = पान किया, रक्षण किया, प्राशन किया (पा -

रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

पपिवांसः = पालन करने वाले (पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पपृक्षे = सम्बन्धित हुआ (पृक् - मिलना, सम्बन्धित होना)।

पपुः = पालन करते हैं, रक्षण करते हैं (पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पपुरि = पालन, रक्षा, पूर्ण, तृप्त करने वाले (पृ-पूर - पालन करना, रक्षा करना, पूर्ण करना, तृप्त करना)।

पपौ = पालन किया, रक्षण किया (पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पप्तिम = प्राप्त करता हूँ (पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पप्तो = पालित, रक्षित (पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पप्ने = स्तुति करते हुए, स्तुत्य (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पप्रथत् = प्रसिद्ध किया, विस्तार किया (प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

पप्रथे - पप्रथे = प्रसिद्ध किया, विस्तार किया (प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

पप्राः = पूर्ण करते हैं (प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

पप्राथ = व्याप्त हुआ, प्रकट किया (पृथ - फैलना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

पप्रीम् - पप्रिम् = पोषक (पृ = पालन करना, पोषण करना)।

पय = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।

पयः = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।

पयसा = पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान

द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयसि = पयस् में, विस्तार में, गतिशील, प्रवाहमान में (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयसे = विस्तार, गतिशील, प्रवाहमान के लिए (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयसो = विस्तार का, गतिशील, प्रवाहमान का (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयस्या = विस्तार का, गतिशील, प्रवाहमान का (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयस्वती = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयस्वतीः = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयस्वन्तः = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयस्वान् = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयांसि = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)।

पयो = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।

पयोदुहम् = पय को दुहने वाला, ज्ञान-प्राप्त करने वाले, को (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना, दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना,

लेना, खींचना)।

पयोभिः = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमानों द्वारा (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पयोवृधम् = ज्ञान, रक्षण, प्रगति, प्रवाह द्वारा वर्द्धित को (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना, वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

पर = अन्य (सर्वनाम)।

परः = अन्य, पार, परे (अव्यय)।

परम् = परन्तु, फिर, परम् (अव्यय)।

परमम् = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)।

परमस्याः = अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम का, परम का (सर्वनाम)।

परमस्याम् = परम में, अति उत्कृष्ट में (सर्वनाम)।

परमा = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)।

परमाणि = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)।

परमात् = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)।

परमे = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम में (सर्वनाम)।

परमेण = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम द्वारा (सर्वनाम)।

परमेषु = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम में (सर्वनाम)।

परमेष्ठी = परम् में स्थित (परम् = परन्तु, फिर, परम् (सर्वनाम)।

परशुः = तीक्ष्ण, सन्तुष्ट करने वाला, हिंसा करने वाला, सिञ्चन करने वाला, दुःख देने वाला (पृ - तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, पृ - किसी कृत्य में आसक्त रहना, पृष - प्रोक्षण करना, सींचना, सहन करना, पीड़ा करना, दुःख देना, थकना, पीड़ित होना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

परस्तात् = पर से, अन्य से, परे या पृथक् (सर्वनाम)।

परस्पाय - परस्पाय = पालन करो, अन्य की रक्षा करने वाले के लिए (पर - अन्य, सर्वनाम, पृ - पूर्ण करना, भरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

परस्मात् = पर से, अन्य से (सर्वनाम)।

परस्याः = पर का, अन्य का (सर्वनाम)।

परस्वतः = परस्वतों को, परायों के समान (परः = परम, परे, विपरीत (अव्यय)।

परा = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)।

पराके = दूर (अव्यय)।

परागताः = परागता (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, गम् = जाना, जानना, पाना)।

पराचीना = दूसरी ओर (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय)।

पराजघ्नुः = नष्ट हो (परः = परम, परे, विपरीत (अव्यय)। जघ्न्-हन - मार डालना, समाप्त करना)।

पराददिः = महादानी (परा = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय), दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

परादानम् = परमदान को (परा - परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

परापत = परम ऐश्वर्य हो, परागति से ऊपर उठो (परः = परम, परे, विपरीत (अव्यय)। पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना, पाना, नीचे गति करना)।

परापुरः = मुख्यतः (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, पुर् = मुख्य होना, आगे जाना)।

परापुरो = मुख्यतः (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, पुर् = मुख्य होना, आगे जाना)।

परापूतम् = परम पवित्र (परा = परम, पू = पवित्र करना)।

परापूता = परम पवित्र (परा = परम, पू = पवित्र करना)।

परायन् = प्राप्त करता हुआ (परा = परम, अय् = जाना, जानना, पाना, यन् - उद्धार करना)।

पराद्धः = दूसरा आधा भाग, उत्तरार्द्ध (पर - अन्य, सर्वनाम, परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, अर्द्ध - अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना)।

परावतः = रक्षा करो, पालन करो (परावतः = पराया, लौटा हुआ, अव्यय, परा = परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)

अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

परावति = पराया, दूर, लौटा हुआ (अव्यय)।

परावतो = परा वाणी (परा = परम, वद्-वच्- बोलना)।

परावतो = परावत, परा के समान, पराया (अव्यय, सर्वनाम)।

परासः = पर, अन्य, परम् (सर्वनाम)।

परि = परे, सभी ओर, साथ (उपसर्ग)।

परि-ऊहामि = परिकल्पित करता हूँ, (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, ऊह - कल्पना करना, विचार करना, ऊहापोह करना)।

परिख्यन् = प्रख्याति, प्रसिद्धि (परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। ख्या = प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना, कहना, व्याख्यान करना)।

परिगृहीतम् = सम्प्राप्त, सब ओर से, सब प्रकार से ग्रहण किया हुआ (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, गृह - लेना, स्वीकार करना)।

परिगृह्णामि = परिग्रहण करता हूँ, पाता हूँ (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, गृह - लेना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, पाना)।

परिगृह्य = परिग्रहण कर, पाकर (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, गृह - लेना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, पाना)।

परिचक्ष्याणि = परिचक्ष्य, परिदर्शनीय, सभी ओर देखने, बोलने योग्य (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

परिचराय = परिचर के लिए (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, चर - चलना, विचरण करना, पाना)।

परिचितः = परिचित (परि = सभी ओर, उपसर्ग, चि - चुनना, चयन करना, संग्रहण करना, पाना)।

परि-जग्रभत् = परितः ग्रहण कर सका (परि = सभी ओर, उपसर्ग, ग्रह - लेना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, पाना)।

परिज्मानम् = सर्वतोमुख को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, जम् - खाना, भक्षण करना, निगलना, गति करना)।

परि-णीयते = ले जाता है (परि = सभी ओर, उपसर्ग,

नी - ले जाना)।

परिदधातु = सब ओर से धारण करें (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधत्ताम् = सब ओर से धारण करें (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधयः = परिधियाँ, परितः धारण (परि = सभी ओर, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधिः = परिधि, घेरा, सब ओर से धारण करने वाला, परितः धारण (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधिना = परिधि द्वारा, सब ओर से धारण द्वारा (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधिम् = परिधि को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधीन् = परिधियों को, सब ओर से धारण करने वालों को, परितः धारण को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परिधेयाः = परिधेय, परिधियोग्य, सभी प्रकार से धारण करने योग्य (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)।

परि-पन्थिनो = परिपन्थी, सब ओर से धारण करने वाले (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पन्थ् - जाना, घूमना)।

परिपरिणः = परिपरिण (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पृ- पूर्ण करना, भरना, पालन करना)।

परिपश्यन्ति = परितः देखते हैं (परि = सभी ओर, उपसर्ग, पश्य - देखना)।

परिपाणः = परिपालक, परिरक्षक (परि - सभी ओर, उपसर्ग, पा - रक्षा करना)।

परिपाणम् = परिरक्षण करने वाले को, परिपालक को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना, पा - पालन, रक्षण करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

परिपाहि = परिपालन करो (परि = सभी ओर, उपसर्ग, पा - पालन करना)।

परिपूतः = परिरक्षक, परिशुद्ध (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

परिप्लवेभ्यः = परिप्लवों के लिए (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), प्लु = जाना, उड़ना, तैरना, कूदना)।

परिबाधमानः = परिबाधित, सभी तरफ से बाधित करने वाला (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

परिभू = चारों तरफ हों, व्याप्त हों (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, भू = होना)।

परिभूः = सबसे बढ़कर, सर्वत्र रहने वाला (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, भू- होना)।

परिभूतम् = परिभूत को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

परिमर्षित = परिमर्द्धित किया, नष्ट किया (परि = सभी ओर, उपसर्ग, मृध - दबाना, मृध - मार डालना, दुःख देना, आर्द्र करना, गीला करना, गीला होना)।

परियन्ति = परियमन करते हैं, सभी ओर आच्छादन, आवरण, पोषण करते हैं (परि = सभी ओर (उपसर्ग), यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना)।

परियासि = सभी ओर जाते हो, जानते हो, प्राप्त होता है (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, यस् - प्रयास करना, या - जाना, जानना, पाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

परिवत् = पूर्ण करने वाले के समान, सभी ओर बोलने वाला (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पृ - भरना, पूर्ण करना, वद् = कहना, बोलना)।

परिवत्सरः = परिवत् चलने वाला, पूर्ण करने वाले के समान चलने वाला, सभी ओर चलने वाला (परि = सभी ओर, उपसर्ग, पृ - भरना, पूर्ण करना, वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)।

परिवत्सराय = परिवत्सर के लिए, परिवत् चलने वाले के लिए, परि के समान चलने वाले के लिए, पूर्ण करने वाले के समान चलने वाले के लिए (परि = सभी तरफ, उपसर्ग,

पृ - भरना, पूर्ण करना, वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)।

परिवाहिणीः = चारों ओर वहन करने वाली, चारों तरफ वहने वाली (परि = सभी ओर, उपसर्ग, वह् = वहन करना, ले जाना)।

परिवित्तम् = परिवित्त को, चारों ओर दान करने वाले को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, वित्त - दान करना)।

परिविदानम् = परिविदान को, चारों ओर दान करने वाले को, चारों ओर जानने वाले को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, वि - विशेष, विद् - जानना, दा - देना)।

परिविविदानम् = परिविविदान को, चारों ओर दान करने वाले को, चारों ओर जानने वाले को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, वि - विशेष, विद् - जानना, दा - देना)।

परिवेष्टारम् = परिवेष्टा को, परिव्याप्त को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)।

परिषद्यो - परिषद्यो = परिषद् योग्य (परि = सभी ओर, उपसर्ग, सद् = बैठना, चढ़ाई करना, सूखना)।

परिष्वजाना = प्रगाढ़ आलिंगन करना (परि = सभी ओर, उपसर्ग, स्वज - आलिङ्गन करना, गले लगाना)

परिषिच्यमानः = परिसिञ्चन करने वाला, सभी ओर सिञ्चन करने वाला (परि = सभी ओर, उपसर्ग, सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

परिषिच्यसे = परिसिञ्चन करता है, सभी ओर सिञ्चन करता है (परि = सभी ओर, उपसर्ग, सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

परिष्कन्दम् = परिष्कन्द को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, स्कन्द - चलना, सूखना, कन्द - आनन्द होना, सन्तोष होना, रोना)।

परिष्कृतम् = परिष्कृत, परिष्कार को (परि = सभी ओर, उपसर्ग, कृ - करना)।

परिष्कृतः = परिष्कृत, परिष्कार किया हुआ (परि = सभी ओर, उपसर्ग, कृ - करना)।

परिष्कृतस्य = परिष्कृत, परिष्कार किये हुए का (परि = सभी ओर, उपसर्ग, कृ - करना)।

परिष्कृताः = परिष्कृत, परिष्कार किया हुआ (परिः - परि = सभी ओर, उपसर्ग, कृ - करना)।

परिष्कृण्वन् = परिष्कृत करते हुए, परिष्कार करते हुए (परिः - परि = सभी ओर, उपसर्ग, कृ - करना)।

परिष्कृण्वन्ति = परिष्कृत करते हैं, परिष्कार करते हैं (परि = सभी ओर, उपसर्ग, कृ - करना)।

परिस्तुतिः = परिस्तुति, सभी ओर स्तुति (परिः-परि = सभी ओर, परितःउपसर्ग। स्तु- प्रशंसा करना, पूजा करना, स्तुति करना)।

परिस्तुभः = परिस्तुति, सभी ओर स्तुति, सब ओर प्रशंसित (परिः-परि = सभी ओर, परितःउपसर्ग। स्तु- प्रशंसा करना, पूजा करना, स्तुति करना)।

परिस्तोभन्त्या = परिस्तुति-कल्याण द्वारा, सभी ओर स्तुति-कल्याण द्वारा (परिः-परि = सभी ओर, परितःउपसर्ग। स्तु- प्रशंसा करना, पूजा करना, स्तुति करना)।

परिष्ठाः = सभी ओर स्थित (परिः-परि = सभी ओर, परितःउपसर्ग। स्था - स्थित होना, ठहरना)।

परिष्वजत् = चारों ओर से घेरते हुए, लपेटते हुए (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, स्वज - घेरना, लपेटना, आलिङ्गन करना, गले लगाना)।

परिस्पृधः = स्पर्धा करने वाले (परिः-परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। स्पृध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

परिस्त्रव = सर्वत्रगामी, सर्वत्र प्रवाहित, विद्वान् (परिः-परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। स्त्रु = जाना, बहना, जानना, पाना)।

परिस्त्रुत = सर्वत्रगामी, विद्वान् (परिः-परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। स्त्रु = जाना, बहना, जानना, पाना)।

परिस्त्रुता = सर्वत्रगामी, विद्वान् (परिः-परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। स्त्रु = जाना, बहना, जानना, पाना)।

परिस्त्रुतम् = सर्वत्रगामी को, विद्वान् को (परिः-परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। स्त्रु = जाना, बहना, जानना, पाना)।

परिस्त्रुतो = सर्वत्रगामी, विद्वान् (परिः-परि = सभी

ओर, परितः (उपसर्ग)। स्त्रु = जाना, बहना, जानना, पाना)।

परीणसम् = सब ओर से व्याप्त (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई - जाना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना)।

परीणसि = सब ओर से व्याप्त (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई - जाना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना)।

परीतः-परीतः = सब ओर से व्याप्त (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई - जाना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना)।

परीत्य = सब ओर से व्याप्त होकर (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई - जाना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना)।

परीवापः = परिवाप (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। वप - बीज बोना, बुनना, उत्पन्न करना, अन्नादि काटना)।

परीवापस्य = परिवाप का (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। वप - बीज बोना, बुनना, उत्पन्न करना, अन्नादि काटना)।

परीवृतः = परिवृत, आच्छादित (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

परुः = परु, रक्षक (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

परुषः = परुष (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

परुषा = परुष (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

परुष्णीषु = परुष्णियों में (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

परुंषि = परुंष में (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

परे = पर, परम, बाद में (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (उपसर्ग))।

परेण = पर, परम द्वारा (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (सर्वनाम))।

परेताः = परेता (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (उपसर्ग), ई - जाना, व्याप्त होना, प्रेरणा

करना)।

परेभ्यः = परायों के लिए, दूसरों से (सर्वनाम)।

परमणि = परिव्याप्त, परम शब्द में, परा वाणी में (परि - सब ओर, ई - जाना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना, मण् - शब्द करना)।

परेषाम् = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ (सर्वनाम)।

परैः = परायों द्वारा, दूसरों द्वारा, दूसरों के साथ (सर्वनाम)।

परो = पराया, परे (अव्यय)।

पर्जन्यः = पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पर्जन्यात् = पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य से (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पर्जन्याय = पोषण उत्पन्न करने वाले के लिए, पर्जन्य के लिए (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पर्जन्यो = पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पर्ण = पर्ण (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)।

पर्णकम् = पर्णक को (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)।

पर्णवीः = पर्णवी, पूर्ण रूप से व्याप्त, पूर्णता को प्राप्त होने वाला (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना, वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

पर्णशदाय = पर्णशद के लिए (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना, शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

पर्णाय = पर्ण के लिए (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)।

पर्णिनो = पर्ण वाले का (पर्ण - हरा करना, हरा होना,

पृ - पूर्ण करना, भरण करना)।

पर्णे = पर्ण में, हरीतिमा तथा पूर्णता में (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)।

पर्यद्रवत् = सर्वत्र प्रवाही, विद्वान् (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

पर्यधत्था = सब ओर से धारण किया (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। धा = धारण करना)।

पर्यपश्यत् = देखो (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। पश्-दृश् = देखना)।

पर्यायिणीम् = पर्यायिणी को (परि - आयिणी, परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। अय् - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

पर्यूहामि = परिकल्पित करता हूँ (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ऊह - कल्पना करना, विचार करना, ऊहापोह करना)।

पर्येता = सर्वत्रगामी (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई-अय् - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, शब्द करना, ध्वनि करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना, ए-अय - शब्द करना)।

पर्येति = सर्वत्रगमन करते हो (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई-अय् - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

पर्येषि = सर्वत्रगमन करते हो (परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। ई-अय् - गति, ज्ञान, प्राप्ति होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

पर्वणा = पर्व द्वारा (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतस्य = पर्वत, पर्वतों का (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वताः = पर्वत, पर्वतों ने (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतान् = पर्वतों को (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतासः = पर्वत, पर्वतों ने (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतासो = पर्वयुक्त, पर्वत, पर्वतों ने (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वती = पूर्ण, पूर्णता, क्रियाशीलता (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वते = पर्वत में, पर्वत पर (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतेन = पर्वत द्वारा (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतेभ्यः = पर्वत के लिए (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतेषु = पर्वतों में (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वभिः = पर्वों द्वारा (पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वि = पूर्ण करो (पु - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना)।

पर्शव्येन = पर्शव्य से (पृष् - सींचना, सहन करना, सरल होना, जाना, चलना, पर्ष - स्निग्ध होना, चिकना होना, तेल लगाना, पृ- पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना)।

पर्शाने = स्नेह, सरलता, गति, सिंचन में (पर्ष - स्निग्ध होना, स्नेह चिकना होना, तेल लगाना, पृष् - सींचना, सहन करना, सरल होना, जाना, चलना)।

पलक्षी = पलक्षी, प्रगतिशीलता (पल् - जाना)।

पलिक्नीम् = पलिक्नी को (पल् - जाना, फलित-पुष्पित होना, फल देना, काटना, गिराना, उढ़ाना, शुद्ध करना)।

पलितो = फलित-पुष्पित, शुद्ध (पल् - जाना, फलित-पुष्पित होना, फल देना, काटना, गिराना, उढ़ाना, शुद्ध करना)।

पल्पूलीम् = शुद्धि को (पल्पूल - शुद्ध करना)।

पव = पवित्र करो, पालन करो (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवत = पवित्र करो (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवताम् = पवित्र करो (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवते = पवित्र करता है, पालन करता है, रक्षा करता है (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवन्ताम् = पवित्र करें, पालन करें, रक्षा करें (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवन्ते = पवित्र करते हैं, पालन करते हैं, रक्षा करते हैं (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवमान = पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवमानः = पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवमानस्य = पवमान का, पवित्र करने वाले का, पालन-रक्षा करने वाले का (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवमानाय = पवित्र करने वाले, पालन-रक्षा करने वाले के लिए (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवमानासः = अनेक पवमान, पवित्र करते हुए, पालन-रक्षा करते हुए (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवमानो = पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवया = पवित्र द्वारा, पालन-रक्षण द्वारा (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

पवस = पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)।

दृश् = देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पशुभ्यः = पशुओं के लिए, बन्धन के लिए, दृष्टा के लिए (पश्-दृश् = देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पशुम् = पशु को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पशुमन्ति = पशु, दृष्टि, बन्धन वाले (पश्-दृश् = देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पशुवर्धनाय = दृष्टि-वृद्धि के लिए, पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने को बढ़ाने के लिए (पश् - देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना, वृद्ध = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

पशुसनि = पशुसेवा, पशुदान (पश् - देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना, सन् - सेवा करना, योग्य होना, पूजा करना, सत्कार करना)।

पशून् = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पशूनाम् = पशुओं का, दृष्टा का, बन्धन का (पश्-दृश् = देखना, पश् - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पश्चात् = पीछे या पश्चिम दिशा से।

पश्चात्सदः = पीछे बैठने वाला (पश्च - पीछे, सद् बैठना)।

पश्चात्सद्भ्यः = पीछे बैठने वालों के लिए (पश्च - पीछे, सद् बैठना)।

पश्चादोषाय = पश्चादोष के लिए, पश्चात् ऊष्मा के लिए, पश्चात् दाह के लिए (पश्च - पीछे, दुष् - दोष देना, ऊष् - दाह होना, ऊष्मा होना)।

पश्यसि = देखते हो (पश्-दृश् = देखना)।

पश्य = देखो (पश्-दृश् = देखना)।

पश्यत् = देखो, देखता है (पश्-दृश् = देखना)।

पश्यति = देखता है (पश् = देखना)।

पश्यन् = देखते हुए, देखने वाले (पश्-दृश् = देखना)।

पश्यन्त = देखते हैं, देखने वाले (पश् = देखना)।

पश्यन्ति = देखते हैं (पश् - देखना)।

पश्यन्तौ = देखते हुए (पश् = देखना)।

पश्यमानासः = अनेक दिखने वाले, अनेक देखने वाले (पश्-दृश् = देखना)।

पश्यसि = देखते हो (पश्-दृश् = देखना)।

पश्यामि = देखता हूँ (पश्-दृश् = देखना)।

पश्येम = देखें (पश्-दृश् = देखना)।

पष्ठवाट् = पष्ठवाज, पष्ठवाह (पष्ठ = जाना, बांधना, फांस लगाना। पष्ठ = धारण करना, घर्षण करना। वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

पष्ठवाड् = पष्ठवाज, पष्ठवाह (पष्ठ = जाना, बांधना, फांस लगाना। पष्ठ = धारण करना, घर्षण करना। वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

पष्ठवाहम् = धारित को वहन करने वाले को (पष्ठ = जाना, बांधना, फांस लगाना। पष्ठ = धारण करना, घर्षण करना। वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

पष्ठवाहो = पष्ठवाह, धारित को वहन करने वाला (पष्ठ = जाना, बांधना, फांस लगाना। पष्ठ = धारण करना, घर्षण करना, वह - वहन करना, ले जाना)।

पष्ठौही = पष्ठौही, बन्धन, धारण, घर्षण का परिकल्पन करने वाला (पष्ठ = जाना, बांधना, फांस लगाना। पष्ठ = धारण करना, घर्षण करना। ऊह् = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

पसो = गति, विनाश, बन्धन, घर्षण (पष्ठ-पंस = नष्ट करना, तहस नहस करना। जाना, बांधना, फांस लगाना। धारण करना, घर्षण करना)।

पस्त्यानाम् = गति, विनाश, बन्धन, घर्षणों का (पष-
पंस = नष्ट करना, तहस नहस करना, जाना, बांधना,
फांस लगाना, धारण करना, घर्षण करना)।

पाकारोः = पाचकों का, पकाने वाले का (पच =
पकाना)।

पाङ्क्तान् = पाङ्क्तों को, पङ्क्ति सम्बन्धी को, व्यक्त
करने वालों को, प्रसिद्ध करने वालों को, विस्तार करने
वालों को (पञ्च् = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार
करना)।

पाङ्क्ताय = पाङ्क्त के लिए, पङ्क्ति सम्बन्धी के
लिए (पञ्च् = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना)।

पाज = रक्षक से जन्मा हुआ (पा - रक्षा करना, पालन
करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाजः = रक्षक से जन्मा हुआ (पा - रक्षा करना, पालन
करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाजसा = रक्षक से जन्मे द्वारा (पा - रक्षा करना,
पालन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाजस्यम् = रक्षक से जन्मे को (पा - रक्षा करना,
पालन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाजांसि = रक्षक से जन्मे हुए (पा - रक्षा करना,
पालन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाजो = रक्षक से जन्मा हुआ (पा - रक्षा करना, पालन
करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाञ्च = व्यक्त करने वाला (पञ्च् - व्यक्त करना,
प्रसिद्ध करना, व्यवहार करना, प्रकाश करना)।

पाञ्चजन्यः = प्रसिद्ध जनों के योग्य, व्यक्त करने वालों
के योग्य (पञ्च् - व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, व्यवहार
करना, प्रकाश करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पाणिः = पाणि, शब्द, स्तुति, व्यापारी (पण् - शब्द
करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना,
व्यवहार करना)।

पाणिघ्नम् = पाणिघ्न को, पाणि, शब्द, स्तुति, व्यापारी
के हननकर्ता को (पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा
करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना, हन्-घ्न -
हिंसा करना, हनन करना)।

पाणिना = पाणि से, हाथ से (पण् - शब्द करना, स्तुति
करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना)।

पात् = पालन करो (पा = रक्षा करना, पालन करना)।

पात = पालन करो (पा = रक्षा करना, पालन करना)।

पातम् = रक्षा करो, पालन करो (पा = रक्षा करना,
पालन करना)।

पातवे = पालन करने वाले के लिए (पा = रक्षा करना,
पालन करना)।

पाता = पालन करने वाला (पा = रक्षा करना, पालन
करना)।

पाति = पालन करता है (पा = रक्षा करना, पालन
करना)।

पातु = पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना,
बचाना)।

पालीवतः = पत्नीयुक्त, ऐश्वर्ययुक्त (पत् = जाना, नीचे
जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पात्रम् = पात्र को, पालन, रक्षा करने वाले को (पत् -
ऐश्वर्य होना, निम्न गति होना, पा = पालन करना, बचाना,
रक्षा करना)।

पात्रस्य = पात्र का, पालन, रक्षा करने वाले का (पत्
- ऐश्वर्य होना, निम्न गति होना, पा = पालन करना,
बचाना, रक्षा करना)।

पात्रा = पात्र, पालन-रक्षा साधन (पत् - ऐश्वर्य होना,
निम्न गति होना, पा - पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

पात्राणि = पात्र, पालन-रक्षा साधन (पत् - ऐश्वर्य
होना, निम्न गति होना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा
करना)।

पात्रेण = पात्र द्वारा, पालन-रक्षा साधन द्वारा (पत् -
ऐश्वर्य होना, निम्न गति होना, पा = पालन करना, बचाना,
रक्षा करना)।

पात्रेषु = पात्रों में, पालन-रक्षा साधनों में (पत् - ऐश्वर्य
होना, निम्न गति होना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा
करना)।

पाथ = पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना,
त्यागना)।

पाथः = पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना, त्यागना)।

पाथसि = चलते हो, चलाते हो, मार्ग दिखाते हो (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना, त्यागना)।

पाथांसि = पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना, त्यागना)।

पाथो = पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना, त्यागना)।

पाथ्यः = पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना, त्यागना)।

पादम् = पाद को, चरण को (पद् - चलना, जाना, भूषित होना)।

पादा = पाद, चरण (पद् - चलना, जाना, भूषित होना)।

पादाः = पाद, चरण (पद् - चलना, जाना, भूषित होना)।

पादि = पाद में, चरण में, चलने में (पद् - चलना, जाना, भूषित होना)।

पादेषु = पादों में, चरणों में (पद् - चलना, जाना, भूषित होना)।

पादो = पाद (पद् - चलना, भूषित होना)।

पादौ = पादयुगल, दो पैर (पद् - चलना, भूषित होना)।

पानासो = रक्षण करने वाले, पान करने वाले (पा - रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

पान्तम् = रक्षण करते हुए, पीते हुए (पा - रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

पान्ति = पालन करते हैं (पा = रक्षा करना)।

पान्तु = पालन करें, (पा = रक्षा करना)।

पापत्वाय = पाप के लिए (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)।

पापम् = पाप को (पाप् - पाप करना, अपराध करना, दुष्ट आचरण करना)।

पाप्ने = पाप के लिए (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)।

पाप्मना = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)।

पाप्मने = पाप्मन् के लिए (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)।

पाप्मानम् = पाप्मान को (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)।

पायवे = पायु के लिए (पय् - चलना, जाना, रक्षा करना, पालन करना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

पायुः = पायु, गति, पालन, रक्षण (पय् - चलना, जाना, रक्षा करना, पालन करना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

पायुना = पायु, गति, पालन, रक्षण द्वारा (पय् - चलना, जाना, रक्षा करना, पालन करना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

पायुभिः = पालन-रक्षण द्वारा, पायु द्वारा (पय् - चलना, जाना, रक्षा करना, पालन करना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

पायुम् = पायु, गति, पालन, रक्षण को (पय् - चलना, जाना, रक्षा करना, पालन करना, पा = पालन करना, बचाना, रक्षा करना)।

पारम् = पार (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पाराय = पार के लिए, कार्य पूर्ण करने के लिए (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पारयन्ती = पार करती हुई, कार्य पूर्ण करने वाली (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पारयामसि = पार करते हो, कार्य पूर्ण करते हो (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पारयिष्णुः = पार करने का इच्छुक, कार्य पूर्ण करने का इच्छुक (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पारयिष्वः = पार करने का इच्छुक, कार्य पूर्ण करने का इच्छुक (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पाराय = पार करने के लिए, कार्य पूर्ण करने के लिए (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पारावतान् = परावाणी वालों को (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, वद - कहना, समझाना, अव = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

पारुष्णान् = पारुष्णों को, पूर्ण करने वालों को (पृ = पूर्ण करना, भरना। पा = रक्षा करना, पालन करना। पर्व = पूरा करना, भरना)।

पार्जन्य = पार्जन्य, पोषण उत्पन्न करने वाले (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पार्जन्याः = पार्जन्य, पोषण उत्पन्न करने वाले, पार्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

पार्थिवः - पार्थिवः = पार्थिव, पृथ्वी का (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवम् - पार्थिवम् = पार्थिव को, पृथ्वी को (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवा = पार्थिव, पृथ्वी का (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवस्य = पार्थिव का, पृथ्वी का (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवानि - पार्थिवानि = पार्थिव (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवासो - पार्थिवासो = पार्थिव (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवे - पार्थिवे = पार्थिव में, पृथ्वी में (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्थिवेभ्यः - पार्थिवेभ्यः = पार्थिवों के लिए (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)।

पार्याः - पार्याः = पूर्ण करने योग्य (पार - कार्य पूर्ण

करना)।

पार्याय - पार्याय = पार्य के लिए, कार्य पूर्ण करने योग्य के लिए, पालन-पोषण-प्रेम के योग्य के लिए (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना)।

पार्ये = पार के लिए, पूर्णता के लिए (पार - कार्य पूर्ण करना)।

पार्वतेयी - पार्वतेयी = पूर्ण से उत्पन्न (पर्व = पूरा करना, भरना, विभाजन करना)।

पार्श्वतः - पार्श्वतः = पार्श्व से, निकट से (सर्वनाम)।

पार्श्वम् - पार्श्वम् = पार्श्व को, निकट को (सर्वनाम)।

पार्श्वयोः - पार्श्वयोः = पार्श्व का, निकट का (सर्वनाम)।

पार्श्वे - पार्श्वे = पार्श्व में, निकट, बगल में (सर्वनाम)।

पार्श्व्यम् - पार्श्व्यम् = पार्श्व्य को, पार्श्व्य को, पार्श्व्योग्य को, निकट योग्य को (सर्वनाम)।

पाष्यर्था = पाष्यर्था द्वारा, प्रगतिशील योग्य, अभिसिञ्चन योग्य (पृष = जाना, सरल होना। पृष = प्रोक्षण करना, सींचना, सहन करना, पीड़ा करना, दुःख देना, थकना, पीड़ित होना)।

पावक - पावक = पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावकः = पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावकम् = पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाले को (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावकया = पावक द्वारा, पवित्रकर्ता द्वारा, पवित्र करने वाले द्वारा (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावकवर्चाः = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

पावकवर्ण - पावक-वर्ण = पावक-वर्ण वाले, पवित्रता का वर्ण करने वाले (पू - पवित्र करना, पवित्र होना, वर्ण - वर्णन करना, विस्तृत करना, प्रसंसा करना, प्रकाशित होना, वृ - वर्ण करना)।

पावक-वर्णम् = पावक-वर्ण वाले को, पवित्रता का

वरण करने वाले को (पू - पवित्र करना, पवित्र होना, वर्ण - वर्णन करना, विस्तृत करना, प्रसंसा करना, प्रकाशित होना, वृ - वरण करना)।

पावक-वर्णाः = पावक-वर्ण वाले, पवित्रता का वरण करने वाले (पू - पवित्र करना, पवित्र होना, वर्ण - वर्णन करना, विस्तृत करना, प्रसंसा करना, प्रकाशित होना, वृ - वरण करना)।

पावकशोचिषः = पावक पवित्रता वाले (पू - पवित्र करना, पवित्र होना, शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)

पावकशोचिषम् = पावक पवित्रता वाले को (पू - पवित्र करना, पवित्र होना, शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

पावका = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावकाः = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावकायै = पवित्रकारक के लिए, पावक के लिए, पवित्रकर्ता के लिए, पवित्र करने वाले के लिए (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावको = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावभ्यः = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाले के लिए, पालक-रक्षक के लिए (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, पा = पालन करना, रक्षा करना)।

पावमानीः = पवमान युक्त, पवित्रता युक्त, पवित्र करने वाले, पालक-रक्षक (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, पा = पालन करना, रक्षा करना)।

पावा = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाले, पालक-रक्षक (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, पा = पालन करना, रक्षा करना)।

पाशम् = पाश को, दिखाने वालों को, बन्धन को (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पाशान् = पाशों को, दिखाने वालों को, बन्धनों को (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना,

फांस लगाना, जाना)।

पाशिनः = पाश वाले, पाश वालों का, दिखाने वालों का, बन्धन का (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पाशेन = पाश द्वारा, दिखाने वालों द्वारा, बन्धन द्वारा (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पाशैः = पाशों द्वारा, दिखाने वालों द्वारा, बन्धनों द्वारा (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)।

पाष्योः = बन्धन योग्य, धारण योग्य (पाष - बांधना, फांस लगाना, पाष - धारण करना, सहना)।

पांसव्याय = पांसव्य के लिए, विनाश के लिए, विनाश-योग्य के लिए (पांस - विनाश करना, नष्ट करना)।

पांसुरे = विनाश किया (पांस - विनाश करना, नष्ट करना)।

पाहि = पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)।

पाहु = पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)।

पिकः = गतिशील, ज्ञानी (पि - चलना, जाना, जानना, पाना)।

पिङ्गाक्षम् - पिङ्गाक्षम् = पिङ्गाक्ष को (पिङ्क् - पिङ्ग् - रंगना, चमकीला करना, शब्द करना)।

पिजाय = गतिजनित के लिए, ज्ञान-जनित के लिए, गति-ज्ञान से उत्पन्न के लिए (पि - चलना, जाना, जानना, पाना)।

पिणक् = शब्द (पिण् - शब्द करना)।

पिण्डानाम् = पिण्डों का (पिण्ड - एकत्र करना, राशि करना, ढेर करना)।

पितरः = गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितरम् = पितर को, पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितरा = पिता, ज्ञानी, पालन करने वाला (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितरा-मातरा = पिता-माता, ज्ञानी, पालन करने वाले, मान करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना, मा - मानना, मान करना, मापना)।

पितरो = पितर, पालन करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितरौ = पितर युगल (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पिता = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितामहाः = महत् पिता, महत् पालन करने वाले, पितामह (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितामहेभ्यः = महत् पिताओं के लिए, महत् पालन करने वालों के लिए, पितामहों के लिए (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

पितृकृतस्य = पितृ-कृत का, पिता द्वारा किये गये का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना, कृ - करना)।

पितृणाम् = पितरों का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृताम् = पितृता को, पितृत्व को, पालन-रक्षणीयता को, गतिशीलता को (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृन् = पितरों को, पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृभिः = पितरों द्वारा (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृभ्यः = पितरों के लिए, पूर्वजों-अग्रजों के लिए (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृभ्यः = पिताओं के लिए, पितरों के लिए, पूर्वजों-अग्रजों के लिए (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृभ्यो = पितरों के लिए, पूर्वजों-अग्रजों के लिए (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितृमते = पितृमान (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पितृमन्तम् = पितृमान को (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पितृश्रवणम् = पितृश्रवण को (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

पितृषदनम् = पितृसदन को (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना, सद् - बैठना, जाना)।

पितृषदनाः = पितृसदन (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना, सद् - बैठना, जाना)।

पितृसदनम् = पितृसदन को = पितृसदन को (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना, सद् - बैठना, जाना)।

पितृणाम् = पितरों का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।

पितुः = पिता का, गति, ज्ञान का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि = गति करना, जाना, जानना, पाना)।

पितुम् = पितु को, पालन-रक्षण को, प्रगति को (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पितेव = पिता के समान (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना, इव - की तरह, समान, भाँति)।

पित्तम् = पित्त को (पि = जाना, जानना, पाना)।

पित्तेन = पित्त द्वारा (पि = जाना, जानना, पाना)।

पित्रा = पिता द्वारा (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पित्रे = पितृ के लिए (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पित्रोः = पिता का (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पित्वः = पालन कर, रक्षण कर (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)।

पिद्धो = पिद्ध, प्रगतिशील (पि = जाना, स्थानान्तर करना)।

पिनाकम् = जानने वाले, शब्द करने वाले (पि = जाना, जानना, पिण् - शब्द करना)।

पिनाकावसः = जानने वाले, शब्द करने वाले का रक्षण करने वाले, वसने वाले (पि = जाना, जानना, पिण् - शब्द करना, अच् - रक्षा करना, वस् - वसना, वास करना)।

पिन्व = चलो, जानो, शब्द करो, सेवा करो, गति, ज्ञान, प्राप्ति करो (पि = गति करना, जाना, जानना, पाना, पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना, पिण् - शब्द करना)।

पिन्वमानः = सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिन्वमानम् = सिञ्चन, सेवा करने वाले को (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिन्वमाना = सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिन्वमानाः = सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिन्वसे = सिञ्चन करते हो, सिञ्चन-सेवा के लिए (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिन्वस्व = सिञ्चन-सेवा करो (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिन्विरे = सेवा करते हैं (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)।

पिपति = पूर्ण किया (पृ-पूर्ण करना, भरना)।

पिपर्तु = पूर्ण करें (पृ-पूर्ण करना, भरना)।

पिपासति = रक्षण, पीने की इच्छा करता है (पा - रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

पिपीषति = पीसता है, चूर्ण करता है (पिष् - पीसना, चूर्ण करना)।

पिपीषते = पीने की इच्छा करता है (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना, पिष् - पीसना, चूर्ण करना)।

पिपृग्धि - पिपृग्धि = मिलाता है, मिश्रित करता है

(पृक् - सम्पर्क करना, संसर्ग करना, मिलना, मिलाना)।

पिपृत = पूर्ण करें (पृ - पूर्ण करना, भरना)।

पिपृतम् = पूर्ण करो, भरो (पृ - पूर्ण करना, भरना)।

पिपृता = पूर्ण करें (पृ - पूर्ण करना, भरना)।

पिपृताम् = पूर्ण करें (पृ - पूर्ण करना, भरना)।

पिप्पका = पिप्पक, पीने वाला (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिप्पलका = गति, ज्ञान, प्राप्ति, शब्द, सेवा करने वाले (पिप्पल् = गति करना, जाना, जानना, पाना, सेवा करना, चाकरी करना)।

पिप्यतम् = पान करो (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिप्यु = पीते हैं (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिप्युषी = पान करने इच्छा, संरक्षण करने की इच्छा (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिप्युषीः = पान करने इच्छा वाली, संरक्षण करने की इच्छा वाली (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिप्युषीम् = पान करने इच्छा, संरक्षण करने की इच्छा को (प्याय-प्यायी-प्यै - बढ़ना, बड़ा होना, फूलना, प्याय-प्यै - भूख लगना, प्यास लगना)।

पिप्ये = बढ़ता है (प्याय-प्यायी-प्यै - बढ़ना, बड़ा होना, फूलना, प्याय-प्यै - भूख लगना, प्यास लगना)।

पिप्रतः = पूर्ण करने वाले (पृ - पूर्ण करना, भरना)।

पिप्रती = पूर्ण करती हुई (पृ - पूर्ण करना, भरना)।

पिब = पी लो (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबत = पी लो (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबतम् = पियो, पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबताम् = पियो, पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबति = पीता है, पान करता है (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबतु = पियो, पान करो (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबध्वै = पीने के लिए (पा-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबन्तम् = पान करने वाले को (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबन्ति = पीते हैं (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबन्तु = पियें, पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबा = पियो, पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबात् = पीता है (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिबाथः = पियो, पान करो (पा-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिब्वनः = पीने वाले, पान कराने वाले (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पियारुम् = पियारु को, प्रगतिशील को (पि - जाना, स्थानान्तर करना। पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पिलिप्पिला - पिलिप्पिला = प्रयाण करने, प्रेरणा करने वाले (पिल् - चलना, प्रयाण करना, प्रेरणा करना)।

पिशङ्गम् = प्रकाशगामी, विखण्डन करने वाला, टुकड़े करने वाला (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिशङ्गरूपम् = प्रकाशगामी रूप को (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

पिशङ्ग-सन्दृशम् = प्रकाशगामी-सम्यक् दृष्टि को (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दृश् - देखना)।

पिशङ्गान् = प्रकाशगामी, विखण्डन करने वालों को,

टुकड़े करने वालों को (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिशङ्गिला = प्रकाशभोजी, विखण्डन कर खाने वाला (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना, जाना, बोलना, गिल् - खाना, निगलना)।

पिशङ्गौ = प्रकाशगामी, विखण्डन करने वाला, टुकड़े करने वाला (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिशाचाः = प्रकाशगामी, विखण्डन करने वाला, टुकड़े करने वाला (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिशाचेभ्यः = पिशाच के लिए, विखण्डन करने वाले के लिए, टुकड़े करने वाले के लिए (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिशाचेभ्यो = पिशाच के लिए, विखण्डन करने वाले के लिए, टुकड़े करने वाले के लिए (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिशुनम् = पिशुन को, प्रकाशगामी, विखण्डन करने वाले, टुकड़े करने वाले को (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

पिष्ट = पिसा हुआ, पीसा हुआ, चूर्ण किया हुआ (पिष् - पीसना, चूर्ण करना)।

पिष्टतमया = पिष्टतम द्वारा, अत्यन्त पिष्ट द्वारा (पिष् - पीसना, चूर्ण करना)।

पीठसर्पिणम् - पीठसर्पिणम् = पीठसर्पिण को (पीठ - प्रतिष्ठा होना, बैठना, आसन बनाना। सृप् जाना, सरकना, सरकाना)।

पीतये = पान के लिए (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीताः = पिये हुए, पान किये हुए, पी चुके (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीतिः = पान, पीने का कार्य (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीतिम् = पीने को, पान को (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीत्वा = पीकर (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीत्वी = पीकर (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीपिवांसम् = पीने वाले को, संरक्षण करने वाले को, प्रगतिशील विद्वान् को (पि - जाना, जानना, पाना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीपिहि = जाओ, प्राप्त करो, पीओ, पान करो, संरक्षण करो (पि - जाना, जानना, पाना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीयति = पीता है, पान करता है (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीयन्वे = प्राशन के लिए, पान करने के लिए (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीयूषः = पीयूष (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीयूषम् = पीयूष को (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीवः = सेवा करने वाला, सिंचन करने वाला, बीज बोने वाला, प्रकाश करने वाला (पिव् - सेवा करना, सिंचन करना, बीज बोना, प्रकाश करना, पीव - पुष्ट होना, मोटा होना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीवरीम् = सेवा, सिञ्चन, वपन, प्रकाश करने वाले को (पिव् - सेवा करना, सिंचन करना, बीज बोना, प्रकाश करना, पीव - पुष्ट होना, मोटा होना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीवानम् - पीवानम् = पीवान को (पिव् - सेवा करना, सिंचन करना, बीज बोना, प्रकाश करना, पीव - पुष्ट होना, मोटा होना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पृक्षः = सम्पर्क, संयोग, सम्बन्धित (पृक् - मिलना, सम्बन्धित होना)।

पृक्षु = सम्पर्क, संयोग, सम्बन्धित (पृक् - मिलना)।

पृङ्क्त = सम्पर्क, संयोग, सम्बन्धित (पृक् - मिलना)।

पृचानः = संयमी, तपस्वी, स्पर्श करता हुआ (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)।

पृच्छत = पूछता है, पूछा (पृश्-पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

पृच्छम् = पूछ को, पूछने वाले को (पृश्-पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

पृच्छमानाः = पृच्छमान, प्रश्न पूछने वाला (पृश्-पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

पृच्छसे = पूछते हो (पृश्-पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

पृच्छात् = पूछता है, पूछा (पृश्-पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

पृच्छामि = पूछता हूँ (पृश्-पृच्छ - पूछना, प्रश्न करना)।

पृच्यताम् = स्पर्श करो (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)।

पृच्यते = स्पर्श करता है (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)।

पृच्यन्ताम् = जोड़ो, स्पर्श करो (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)।

पृञ्चन् = संयम, तपस्या, स्पर्श करता हुआ (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)।

पृञ्चन्तम् = संयम, तपस्या, स्पर्श, योग करने वाले को (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)।

पृण = पूर्ण करो (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृणक्तु = पूर्ण करो (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृणक्षि = पूर्ण करो (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृणत् = पूर्ण करो, पालन करो (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृणते = पूर्ण करता है (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृणध्वम् = पूर्ण करो, पालन करो (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृणन्ति = पालन, पूर्ण करते हैं (पृ - पूर्ण करना, पालन करना)।

पृणस्व = पूर्ण करो (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना)।

पृणातु = पूर्ण करो (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना)।

पृणानः = पूर्ण करता हुआ (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना)।

पृतनाः = व्यापक, बल वाले (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतनानाम् = पृतनों का, व्यापकों, बल वालों का (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतनायतः = व्यापक, बल वाले (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतनाषहम् = व्यापक शक्तिमान, समर्थ बलवान् (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। 300

पृतनाषाट् = व्यापक शक्तिमान, समर्थ बलवान् (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतनाषाण् = व्यापक शक्तिमान, समर्थ बलवान् (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतना-षाह्याय = व्यापक शक्तिमान, समर्थ बलवान् के लिए (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना, सह - सहना, सहन करना, सक्षण होना, समर्थ होना)।

पृतनासु = व्यापक, बलों में (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतन्यतः = व्यापक, बलात् निकालने वाले (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतन्यति = व्यापक होते हैं, बल-पूर्वक करते हैं (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना)।

पृतन्यवः = व्यापक शक्तिमान, समर्थ बलवान् (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतन्यात् = व्यापक बनो, व्यापक हो, शक्तिमान, समर्थ बलवान् बनो (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतन्यून् = व्यापकों को (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृतसु = पूर्णता में, जीवन में (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)।

पृथः = पूर्ण करने वाला (पृथ् = व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, पृ = पूर्ण करना)।

पृथक् = अलग (अव्यय)।

पृथङ् = अलग (अव्यय)।

पृथिवि = विस्तार में, पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भोजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिवी = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भोजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिवीभ्याम् = पृथ्वी के लिए, विस्तृत भूमि के लिए, (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भोजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिवीम् = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भोजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्य = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भोजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्या = पृथ्वी योग्य, पृथिवी द्वारा (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भोजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्याः = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार

करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्याम् = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्यै = पृथ्वी के लिए (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथु = विस्तार, विस्तृत (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथुजयम् = व्यापक विजेता, विस्तृत गति वाले, जीतने वाले (पृथ्, प्रथ् - विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना, जि - जीतना, जय पाना, न्यून होना, वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

पृथुप्रगामा = विस्तृत-प्रगाथा, प्रकृष्ट प्रगतिशील (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

पृथुबुधः = विस्तृत बोध वाले (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना, बुध् = बोध होना, जानना)।

पृथुम् = विस्तार, विस्तृत को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथुष्टुके = विस्तृत स्तुति वाली (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना, स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

पृथ्वी = पृथ्वी (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृदाकुः = पूर्ण करने वाले (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)।

पृशनायुवः = सरल, गतिशील (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना, यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)।

पृशने = प्रश्न में (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)।

पृशिनः = प्रश्नकर्ता (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)।

पृशनयः = अभिसिञ्चक, सहनशील, प्रश्नकर्ता (पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृश्निः - पृश्निः = प्रश्नकर्ता (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)।

पृश्निगर्भाः - पृश्निगर्भाः = प्रश्न को गर्भ में रखने वाले, अभिसिञ्चन को धारण करने वाले (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)।

पृश्निमातरः = प्रश्निमाता, प्रश्नकर्ताओं का मान करने वाले (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना। मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

पृश्न्यः = प्रश्नयोग्य (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।

पृषत् = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।

पृषतः = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।

पृषतान् = पृषतों को, सींचने वालों को, अभिसिञ्चकों

को (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।

पृषती = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।

पृषतीः = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृषदाज्यम् = पृषद् तथा आज्य (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना, अज् - स्थापन, गमन, प्रक्षेपण करना)

पृषन्तः = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्टो = अभिसिञ्चित, पूछा गया (पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्ठम् = पृष्ठ को (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)।

पृष्ठवाट् = पृष्ठ, संगठन, प्रवचन (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना, वट् = घेरना, एकत्र करना, परिभाषण करना, ग्रन्थ बनाना, गूँथना, वह् - वहन करना, ले जाना)।

पृष्ठस्य = पृष्ठ का (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्ठात् = पृष्ठ से (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न

करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्ठानि = पृष्ठ (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्ठे = पृष्ठ पर (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्ठेन = पृष्ठ से, पृष्ठ द्वारा (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पृष्ठेषु = पृष्ठों में (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

पुच्छम् = पुच्छ को (पुच्छ् - विभाग करना)।

पुच्छे = पुच्छ में (पुच्छ् - विभाग करना)।

पुञ्जिकस्थला - पुञ्जिकस्थला = पुञ्जिक स्थल युक्त, सामूहिक स्थल (पुञ्ज् - समूह बनाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना)।

पुञ्जिष्टेभ्यः = पुञ्जिष्टों के लिए, समूह के लिए (पुञ्ज् - समूह बनाना)।

पुण्यम् = पुण्य को (पुण् - सहायता करना, शुभ करना, समूह बनाना, एकत्र करना, राशि करना, ढेर करना)।

पुण्यान् = पुण्यों को (पुण् - सहायता करना, शुभ करना, समूह बनाना, एकत्र करना, राशि करना, ढेर करना)।

पुत्रः - पुत्रः = पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पुत्रकाः = अनेक पुत्रक (पु - रक्षा करना, श्वास लेना,

- पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धा: = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)।

पुरुप्रशस्त = पुरुप्रशस्त (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

पुरुप्रशस्तम् = पुरुप्रशस्त को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

पुरुप्रियम् = पुरुप्रिय को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, प्री = प्रिय होना)।

पुरुप्रियो = पुरुप्रिय (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, प्री = प्रिय होना)।

पुरुभू = पुरुभू, अग्रणी, अग्रगामी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

पुरुभोजसः = पुरु-भोज, अग्रणी संरक्षक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

पुरुभोजसम् = पुरु-भोज को, अग्रणी संरक्षक को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

पुरुमीढ = पुरुमीढ, अग्रगामी विद्वान्, सिञ्चन-प्रोक्षण

करने वाला (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मिह - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

पुरुमेधाः = अग्रणी मेधा वाले, अत्यन्त मेधावी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, मेधा - शीघ्र समझना, मेध - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

पुरुखा = अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, रा = दान करना, र्व - जाना, प्रकाश करना)।

पुरुखावणः = अग्रगामी, अग्रणी, दानी प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, रा = दान करना, र्व - जाना, प्रकाश करना)।

पुरुखाव्यो = प्रमुख, अग्रगामी, अग्रणी, दानी प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, रा = दान करना, र्व - जाना, प्रकाश करना)।

पुरु-रूपम् = अग्रगामी, अग्रणी रूप वाले को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)।

पुरु-रूपाय = पुरु-रूप के लिए, अग्रगामी-अग्रणी रूप के लिए (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

पुरुवसुम् = पुरुवसु को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, वस् = वसना, रहना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

पुरुवारम् = पुरुवार, पुरु-वरणीय, अग्र-वरणीय को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, वर - इच्छा करना,

चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

पुरुवारो = पुरुवार, पुरु-वरणीय, अग्र-वरणीय (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

पुरुवीरम् = पुरुवीर को, अग्रणी वीर को, अग्रगामी पराक्रमी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

पुरुव्रतो = पुरुव्रती, अग्रणी व्रतधारी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

पुरुष = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषः = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषता = पुरुषता, परिपूर्णता (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषन्त्योः = पुरुषार्थियों का, पुरुषार्थियों में (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषम् = पुरुष को, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पु - पूर्ण करना, भरना, पालन

स्वामी शरण

पुरुणाम् = पुरुओं का, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी जनों का (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुणि = परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुतमम् = अत्यन्त अग्रगामी, अग्रणी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)।

पुरुरवा = अग्रगामी, अग्रणी, दानी, प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, रा = दान करना, र्व - जाना, चलना, प्रकाश करना)

पुरुरुणा = बहुत-बहुत, बहुत आगे (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)।

पुरुरुचम् = अधिक रुचि को, बहुत प्रकाश को (पुरुः = बहुत (सर्वनाम), रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

पुरुवसुः = अग्र-वसन वाले, अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, रा = दान करना, र्व - जाना, प्रकाश करना, वस् - वसना, वास करना)।

पुरुवसो = हे अग्र-वसन वाले, अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, रा = दान करना, र्व - जाना, प्रकाश करना, वस् - वसना, वास करना)।

पुरो = पहले (पुरो = पहले, अव्यय)।

पुरो = पहले (पुरो = पहले, अव्यय, पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)।

पुरोगवः = पुरोगामी, पुरोवाची, दानी, प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, गम् = जाना, जानना, पाना, गु - शब्द

करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

पुरोगाः = अग्रगामी, अग्रणी, दानी, प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, गम् = जाना, जानना, पाना)।

पुरोजिती = पुरोजित, अग्र विजेता (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

पुरोडाशम् = पुरोडाश को, अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशक को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, दश् - देखना, दिखाना, दशना, डसना, दाँत से काटना)।

पुरोडाशान् = पुरोडाशों को, अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशकों को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, दश् - देखना, दिखाना, दशना, डसना, दाँत से काटना)।

पुरोडाशन = पुरोडाश द्वारा, अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशक द्वारा (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, दश् - देखना, दिखाना, दशना, डसना, दाँत से काटना)।

पुरोडाशैः = पुरोडाशों द्वारा, अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशकों द्वारा (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, दश् - देखना, दिखाना, दशना, डसना, दाँत से काटना)।

पुरोयुधा = अग्रगामी, अग्रणी दानी प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, युध् = युद्ध करना)।

पुरोहितः = पुरोहित (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना)।

पुरोहितम् = पुरोहित को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना)।

पुरोहितो = पुरोहित (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना)।

पुर्वणीक = बहुत प्राणवान्, निवासी, बुलाने वाला (पुरु - बहुत, सर्वनाम, अन् - प्राण होना, जीवन होना, पुर्व - रहना, निवास करना, आमन्त्रण करना, पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)।

पूर्यस्तुतिः = पूर्व स्तुति (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, स्तुज् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

पुलस्त्य = पूज्य (पुल् - पूज्य होना, उच्च होना, राशि होना, ढेर होना, बढ़ना, जाना, चलना, जाना, जानना, पाना, बनाना, निर्माण करना)।

पुंश्चली = पुंश्चली, रक्षा, वृद्धि करने वाले (पु - गति करना, रक्षा करना, चलना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, पुंस् - बढ़ना, बढ़ाना, चल् - चलना, कम्पन करना, खेलना, पालना, बढ़ाना)।

पुंश्चलूम् = पुंश्चली, रक्षा, वृद्धि करने वाले (पु - गति करना, रक्षा करना, चलना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, पुंस् - बढ़ना, बढ़ाना, चल् - चलना, कम्पन करना, खेलना, पालना, बढ़ाना)।

पुषम् = पुष्ट को (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुषा = पुष्ट करने वाला (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुषेयम् = पुष्ट करूँ, पुष्ट करने योग्य को (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्करसादः = पुष्टिकारी, पोषण करने वाला (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना, साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

पुष्कर-रजम् = पुष्टरचना को, पुष्ट रचना करने वाले को (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, सृज् = रचना करना)।

पुष्करात् = पुष्कर से (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, कृ

= करना)।

पुष्करे = पुष्कर में (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, कृ = करना)।

पुष्टः = पुष्ट, पोषित (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टम् = पुष्ट, पोषित को (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टानाम् = पुष्टों का, पोषितों का (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टावन्तो = पुष्ट, पोषित (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टिः = पुष्टि, पोषण (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टि = पुष्टि, पोषण (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टिम् = पुष्टि को, पोषण को (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टिमान् = पुष्टियुक्त, पोषणयुक्त (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टिवर्धनः = पोषण बढ़ाने वाला, पुष्टि को बढ़ाने वाला (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, वृध् - वृद्धि करना)।

पुष्टिवर्धनम् = पुष्टि बढ़ाने वाले को (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टीः = पुष्टि, पोषण (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टुः = पुष्टिकारी, पोषण करने वाला (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टे = पुष्ट में, पोषित में (पुष् = पालन-पोषण करना,

धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टैः = पुष्टों, पोषितों द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्ट्यै = पुष्टि के लिए (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्पवतीः = पुष्पवती, पुष्पयुक्त (पुष्प = पुष्पित होना, विकसित होना, गति करना)।

पुष्पिणीः = पुष्पिणी, पुष्पवती, पुष्पयुक्त (पुष्प = पुष्पित होना, विकसित होना, गति करना)।

पुष्पेभ्यः = पुष्पों के लिए (पुष्प = पुष्पित होना, विकसित होना, गति करना)।

पुष्यन् = पुष्ट, पोषित करते हुए (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्यसि = पुष्ट करते हो (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्यसे = पुष्ट करते हो (पुष् = पोषण करना)।

पुष्यात् = पुष्ट, पोषित करे (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्यास्म = पुष्ट, पोषित करता हूँ (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्येम = पुष्ट करें (पुष् = पोषण करना)।

पुंसः = अभिवर्धन (पुंस = बढ़ना, बढ़ाना)।

पूतः = पवित्रता युक्त, रक्षित (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूतदक्षसा = पवित्र दक्षता द्वारा (दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूतभृत् = पवित्रता युक्त, रक्षित (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, भृ - भरण करना)।

पूतम् = पवित्रता युक्त, रक्षित को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूतस्य = पवित्रता युक्त, रक्षित का (पु - रक्षा करना,

श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूताय = पवित्रता युक्त, रक्षित के लिए (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूतासः = पवित्रता युक्त, रक्षित (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूयते = पवित्र करता है, रक्षा करता है (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूयमानः = पवित्रता युक्त, रक्षित करता हुआ (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूयमानाः = पवित्रता युक्त, रक्षित करते हुए (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूरुम् = अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पूरुषः = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पूरुषम् = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पूर्णतरम् = पूर्णतर को (पृ - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

पूर्णम् = पूर्ण को (पृ - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

पूर्णबन्धुरः = पूर्णतः बाँध लेने वाला (पृ - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना, बन्ध = बाँधना)।

पूर्णा = पूर्ण (पृ - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

पूर्तम् = पूर्त को, पूरित को, पूर्ण को (पृ - पूर - पूर्ण

करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

पूर्धि = पूर्ण करो (पृ - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

पूर्थेथाम् = पूर्ण करो (पृ - पूर - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)।

पूर्व = पूर्व, पहले (सर्वनाम)।

पूर्वः = पूर्व (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्व-कृत् = पूर्व करने वाला, पूर्ण करने वाला (पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, कृ - करना)।

पूर्वचितः = पूर्वचित, पूर्व चेतन, पूर्व चुना हुआ (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, चित् - विचार करना, चिन्तन करना)।

पूर्वचितिम् = पूर्वचित, पूर्व चेतन, पूर्व चुना हुआ (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, चि - चयन करना, चुनना, एकत्र करना, चित् - विचार करना, चिन्तन करना)।

पूर्वचित्तये = पूर्वचित, पूर्व चेतन, पूर्व चुने हुए के लिए (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, चित् - विचार करना, चिन्तन करना)।

पूर्वचितिः = पूर्वचित, पूर्व चेतना, पूर्ण चेतना (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, चि - चयन करना, चुनना, एकत्र करना, चित् - विचार करना, चिन्तन करना)।

पूर्वजाय = पूर्वज के लिए (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, जन् - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना)।

पूर्वथा = पूर्व की भाँति (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वपा = पूर्व-पा, पूर्व पान वाले, पूर्व-रक्षक (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, पा - रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

पूर्वपीतये = पूर्वपीत, पूर्व पान के लिए (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, पी-पिब - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पूर्वम् = पहले (सर्वनाम)।

पूर्वम् = पूर्व को (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वया = पूर्व द्वारा (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वसद्भ्यो = पूर्व-प्रतिष्ठित के लिए, पूर्व-गन्तव्यों के लिए (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

पूर्वस्य = पूर्व का (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वहृति = पूर्व आह्वान (पूर्व - पहले (अव्यय), पूर्व - पूर्व होना, प्रथम होना, पूर्ण करना, भरना, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, ग्रहण करना, हु-हवे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

पूर्वा = पूर्वा, पहले (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम)।

पूर्वा = पूर्व (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वासः = पूर्व (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पूष्णो = पोषण करने वाला, पोषणकर्ता (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पेत्वः = पीने वाला, पान करने वाला, पानकर्ता (पी = पीना, पान करना)।

पेयात् = पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पेशः = पेश, प्रकाश, प्रगति (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना)।

पेशलम् = पेशल, पेश, प्रकाश, प्रगति को (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना)।

पेशसा = पेश, प्रकाश, प्रगति द्वारा (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना)।

पेशस्कारीम् = पेशस्कारी को, पेश, प्रकाश, गति कर्ता को (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना, कृ - करना)।

पेशस्वतीः = पेशस्वती, पेशयुक्त, प्रकाश, गति युक्त (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना)।

पेशितारम् = प्रकाश, प्रगति कर्ता को (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना)।

पेष्कारीम् = प्रकाश, प्रगति कर्ता को (पिश् - जाना, लगना, प्रकाश करना, व्यवस्था करना, चीरना, टुकड़े करना)।

पैङ्गराजो = पिङ्गराज, प्रदीप्त (पिङ्ग् - रंगना, चमकीला करना, शब्द करना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

पोता = पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पोषम् = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पोषस्य = पोषण करने वाले का (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पोषाय = पोषण के लिए (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पोषे = पोषण में, पोषण करने वाले में (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पोषेण = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पोषैः = पोषणों द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पौञ्जिष्ठम् = पौञ्जिष्ठ को, समूह-निष्ठ को (पुञ्ज - पुञ्ज बनाना, समूह बनाना, एकत्र होना)।

पौरः = पूर्ण करने वाले (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पौरुषेभ्याः = पौरुष के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी के लिए (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पौरुषेयः = पौरुषेय, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी का (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पौरो = पूर्ण करने वाले (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पौल्कसम् = पौल्कस को, पूज्य को (पुल् - महत्व होना, पूज्य होना, राशि करना, ढेर करना, गति करना, बनाना)।

पौष्णः = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पौष्णाः = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पौष्णो = पौष्ण, पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पौंस्यम् = बढ़ाने वाले को (पुंस - बढ़ना, बढ़ाना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पौंस्या = बढ़ाने वाले (पुंस - बढ़ना, बढ़ाना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पौंस्यानि = बढ़ाने वाले (पुंस - बढ़ना, बढ़ाना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

प्यायताम् = बढ़ायें, आप्यायित हो (प्याय् = बढ़ना)।

प्यायध्वम् = बढ़ायें, आप्यायित हो (प्याय् = बढ़ना)।

प्यायय = बढ़ाओ (प्याय् = बढ़ना)।

प्यायस्व = बढ़ाओ, बढ़ो, बढ़े बनो (प्याय् = बढ़ना)।

प्यासिषीमहि = बढ़ाते हैं, बढ़ायें (प्या-प्यै = बढ़ाना, भूख-प्यास लगना)।

प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)।

प्र अश्नामि = खाता हूँ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, अश् = भोजन करना)।

प्र आहुः = कहा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, ह्वे = बुलाना, पुकारना)।

प्र एतु = प्राप्त हो, आर्यें (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, आ - समन्तात्, सम्यक्, पूर्णतः, इ - जाना, जानना, पाना)।

प्र औक्षन् = सींचते हैं (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, उक्ष् - सिंचन करना, स्वच्छ करना)।

प्रकरितारम् = प्रकरिता को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, कृ - विक्षेप करना, करना)।

प्रकामाय = प्रकाम के लिए, प्रकृष्ट कामना के लिये (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, काम् - कामना करना, चाहना)।

प्रकामोद्याय = प्रकामोद्य के लिए, प्रकृष्ट कामना से उच्च गमन के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, काम् - कामना करना, चाहना, उत् - ऊपर, उच्च, इ-अय् - जाना, जानना, पाना)।

प्रकाशेन = प्रकाश द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, काश् - प्रकाश करना, चमकना)।

प्रक्रीडेन = प्रक्रीडा द्वारा, प्रकृष्ट खेल द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, क्रीड - खेलना, विहार करना, उपहास करना, मन बहलाना)।

प्रकेतो = प्रकेत, आमन्त्रण, ज्ञान, निवास वाला (प्र -

प्रकृष्ट, अधिक, केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

प्रकेतेन = प्रकेत द्वारा, आमन्त्रण, ज्ञान, निवास द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

प्रक्षे = निवास, क्षति, क्षय में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

प्रखिदते = प्रखिदत के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, खद्-खाद् - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना)।

प्रगाथा = प्रगाथा, प्रकृष्ट गाथा (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

प्रगायत = प्रकृष्ट गाते हैं, गायन करते हैं (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

प्रघासिनः = उत्तम भोजियों का (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, घस् = खाना)।

प्रघासी = उत्तम भोजी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, घस् = खाना)।

प्रचक्राणम् = प्रकृष्ट चक्रण करने वाले को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चक्र = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)।

प्रचरा = प्रकृष्ट आचरण वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चर = आचरण करना)।

प्रचेतन = प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेतय = प्रकृष्ट चेतन हो, विचार करो (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेतसः = प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेतसम् = प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेतसा = प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले द्वारा (प्र -

प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेतसे = प्रकृष्ट चेतना के लिए, विचार वाले के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेतसौ = प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले युगल (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचेताः = प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले (चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)।

प्रचोदयन् = प्रेरित करते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चुद् = प्रेरणा देना)।

प्रचोदयन्ता = प्रेरित करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चुद् = प्रेरणा देना)।

प्रचोदयन्ताम् = प्रेरित करें (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चुद् = प्रेरणा देना)।

प्रचोदयात् = प्रेरित करे (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चुद् = प्रेरणा देना)।

प्रच्छत् = आच्छादित करे (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, छद् = ढकना, आच्छादित करना)।

प्रच्छिदम् = प्रच्छिद (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, छिद् - छेदना, काटना, टुकड़े करना)।

प्रच्यवध्वम् = जाओ (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), च्यु - जाना, गिरना, गिर पड़ना, भटकना)।

प्रच्यवस्व = जाओ (च्यु - जाना)।

प्रजननम् = प्रजनन को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजननाय = प्रजनन के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजनयन् = प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजया = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजा = सन्तति, प्रजा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजाः = प्रजा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजानन् = प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजानाम् = प्रजाओं का (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजापतये = प्रजापति के लिए, प्रजा के रक्षक, पालक के लिए (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजापतिः = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजापतिम् = प्रजापति को, प्रजा के रक्षक को, पालक को (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजा-पते = हे प्रजा का पालन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजापतेः = प्रजा का पालन करने वाले का (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजापतौ = प्रजापति में, प्रजा का पालन करने वाले में (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजापत्याः = प्रजा का पालन करने वाले का (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजाभिः = प्रजाओं-सन्तानों द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजाभ्यः = प्रजा के लिए (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजाभ्यो = प्रजा के लिए (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजाम् = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजायाः = प्रजा का (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रजायाम् = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजावत् = प्रजा के समान (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् -

उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजावती = प्रजायुक्त, सन्तान वाली (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना)।

प्रजावतीः = प्रजायुक्त, सन्तान वाली (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना)।

प्रजावन्तः = प्रजावान्, प्रजायुक्त, सन्तान वाले (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना)।

प्रजासनि = प्रजासेवी (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना, सन् - सेवा करना, योग्य होना, पूजा करना, सत्कार करना)।

प्रजासु = प्रजाओं में, प्राणियों में (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना)।

प्रजीवसे = जीवन के लिए (प्र - प्रकृष्ट अधिक, जीव = जीना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रज्ञानम् = विशेष ज्ञान, मेधाशक्ति विवेक को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, ज्ञा = जानना)।

प्रज्ञानाय = विशेष ज्ञान, मेधाशक्ति विवेक के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, ज्ञा = जानना)।

प्रणङ् - प्रणङ् = प्रणाम, नमन (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नम् - नमस्कार करना, नमना)।

प्रणपात् = अधिक प्राप्त किया (प्र - प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), पा - पालन करना, रक्षा करना, नप - पहुँचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)।

प्रणवैः = प्रणवों द्वारा, विद्वानों द्वारा (नु-नव - शब्द करना, निश्चय करना)।

प्रणिनाय = ले जाने के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रणीतः = ले जाया गया (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रणीता = ले जाने वाला, ले जायी गयी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रणीती = ले जाने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रणीतो = ले जाने वाला, ले जायी गयी (प्र - प्रकृष्ट,

अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रणीयते = प्रणीत होता है, ले जाता है (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रणुदाति = प्रेरणा करता है (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, णुद् - नुद् = प्रेरणा करना, भेजना, जाना)।

प्रणेतः = ले जाने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रतक्वा = प्रतक्वा, हँसने वाला, उपहास करने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तक् - हँसना, उपहास करना)।

प्रतनोषि = प्रकृष्ट, विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करते हो (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

प्रतरणः = तारने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)।

प्रतरणाय = तारने वाले के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)।

प्रतराम् = तारने वाले को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)।

प्रतरीता = तारने वाले, तैरने वाले, तरने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)।

प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)।

प्रति-उष्टम् = दहनशील (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, उष् = दहन, हिंसा करना)।

प्रतिकामम् = प्रतिकाम को, प्रत्येक कामना को (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय), कम - चाहना, इच्छा करना)।

प्रतिक्षियन्तम् = निवास करने वाले को, क्षति, क्षय करने वाले को (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय), क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

प्रतिगृभ्णानु = भीतर धारण करो (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृभ्, गर्भ् = गर्भ होना, धारण करना)।

प्रतिगृह्णामि = ग्रहण करता हूँ (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृह् = ग्रहण करना)।

प्रतिग्रीता = ग्रहण किया हुआ (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृह = ग्रहण करना)।

प्रतिग्रीत्र = ग्रहण करने वाले (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृह = ग्रहण करना)।

प्रतिग्रीत्रे = ग्रहण करने वाले में (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृह = ग्रहण करना)।

प्रतिदधानेभ्यः = धारण करने के लिए, (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

प्रतिदोषम् = प्रतिदोष को, प्रतिदोहन को (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, दुष - दुष्टाचरण करना, दुष्ट रीति से वर्तना, दूषित होना, दोहन करना, दुहना)।

प्रति-पत् = प्रत्येक पद, पद-पद, प्रत्येक ऐश्वर्य (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना, पाना, नीचे गति करना)।

प्रतिधर्त्ता = प्रत्येक धारणकर्ता, धारण करने वाला (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

प्रतिधायि = धारण करता है (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, धृ = धारण करना)।

प्रतिधिना = प्रसन्नता द्वारा, प्रतिधारणा द्वारा (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, धि - धारण करना, धिन, धिन्व = सन्तुष्ट होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, समीप होना, समीप जाना, समीप आना)।

प्रति-पदे = प्रत्येक पद में, पद-पद में, प्रत्येक ऐश्वर्य में (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना, पाना, नीचे गति करना)।

प्रतिप्रथे = सम्बन्ध में प्रसिद्ध किया, विस्तार किया (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रतिप्राशः = प्रतिपाश को, प्रति-गामी को (प्रति - प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)।

प्रतिभूषथ = भूषित हों (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, भूष् - भूषित होना, सजाना)।

प्रतिमन्वानो = प्रतिमन्वान्, विचारशील (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

प्रतिमा = प्रतिमा, प्रति-मान (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, मा - मापना, तुलना करना)।

प्रतिमाम् = प्रतिमा को, प्रति-मान (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, मा - मापना, तुलना करना)।

प्रति-मुञ्चमानाः = बोलने, छोड़ने, देने वाले (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, मुञ्च = बोलना, कहना, छोड़ना, प्रसन्न होना, देना)।

प्रतिरवेभ्यः = प्रतिरवों के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, ऋ - जाना, फैलाना, रव - गति करना, प्रकाश करना)।

प्रतिवेदयन् = प्रतिवेद करते हुए, प्रतिज्ञान करते हुए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

प्रतिवेशा = प्रवेशी, प्रतिष्ठित (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)।

प्रतिश्रवाय = प्रतिश्रव के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

प्रतिश्रुत्काया = प्रतिश्रुत्का के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, श्रु - सुनना)।

प्रतिश्रुत्कायै = प्रतिश्रुत्का के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, श्रु - सुनना)।

प्रतिष्ठ = प्रतिष्ठा दें (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठा = प्रतिष्ठा, प्रकृष्ट स्थिति (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठाया = प्रतिष्ठा के लिए, प्रकृष्ट स्थिति के लिए

(प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठायै = प्रतिष्ठा के लिए, प्रकृष्ट स्थिति के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठितः = प्रतिष्ठित, प्रकृष्ट स्थिति (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठिता = प्रतिष्ठित, प्रकृष्ट स्थिति में (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठित्यै = प्रतिष्ठित के लिए, प्रकृष्ट स्थिति के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठिम् = प्रतिष्ठित को, प्रकृष्ट स्थिति को (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ - स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठे = प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा में (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ-स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)।

प्रतिसदृक्षास = प्रतिसदृक्ष (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, दृक्ष-दृश् -देखना)।

प्रतिसदृङ् = प्रतिसदृङ्, प्रत्येक में समान देखना (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, अव्यय, दृक्ष-दृश् - देखना)।

प्रतिसरः = प्रतिसर, प्रगतिशील (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना)।

प्रतिसर्याय = प्रतिसर्य के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना)।

प्रतिहिताः = प्रतिहित, प्रतिष्ठित (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, हि - जाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

प्रतीकः = प्रतीक, प्रगति (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तिक्-तीक् - जाना)।

प्रतीकम् = प्रतीक को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तिक्-तीक्

- जाना)।

प्रतीची = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम (सर्वनाम)।

प्रतीचीनम् = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम (सर्वनाम)।

प्रतीच्यै = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम (सर्वनाम)।

प्रतीव्याम् = प्रत्येक में व्याप्त (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय) वी - जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

प्रतूर्तम् = तीव्रगति को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

प्रतूर्तिः = तीव्रगति (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

प्रतूर्तिषु = तीव्रगतियों में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

प्रतूर्तन् = तीव्रगति वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

प्रत्न = पुरातन (अव्यय)

प्रत्नः = प्रसिद्ध करने वाले, प्रकृष्टता से, पूर्व की भांति (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नथा = प्रसिद्ध करते हैं, प्रसिद्ध करने वाले, प्रकृष्टता से, पूर्व की भांति (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नम् = प्रसिद्ध करने वाले, प्रकृष्टता से, पूर्व की भांति (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नमित् = प्रसिद्ध, प्रकृष्टता, विस्तार ही (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नवत् = प्रसिद्धि, प्रकृष्टता से युक्त (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नस्य = प्रसिद्ध का, प्रकृष्टता को (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नाम् = प्रसिद्ध करने वाले को (प्रथ् = प्रसिद्ध होना)।

प्रत्नासः = प्रसिद्ध करने वाले, प्रकृष्टता से, पूर्व की भांति (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्नेन = पुरातन द्वारा (प्र+त्न+इत्, प्र - प्रकृष्ट, अधिक (विशेषण))।

प्रत्नो = प्रसिद्ध करने वाले, प्रकृष्टता से, पूर्व की भांति (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

प्रत्यङ् = प्रत्येक (अव्यय)।

प्रत्यञ्चम् = प्रत्यञ्च को, तिरछे को (अव्यय)।

प्रत्यञ्चम् = प्रत्यञ्च को (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, अञ्च् = गति करना, चलना, जाना, झुकना, चाहना, मांगना, पूजा करना, मान करना, प्रकट करना, प्रति-अञ्च् - पीछे या पश्चिम की ओर झुकना या जाना)।

प्रत्याश्रावो = सम्बन्ध में सम्यक् सुनने वाले (प्रति+आ+श्रावो, प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। श्रु = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

प्रत्येति = प्राप्त होता है (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, इ-ए - जाना)।

प्रथताम् = विस्तार करे (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथते = विस्तार करता है (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमाना = प्रथमान, विस्तार करने वाले विस्तार करते हुए (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथन्ताम् = विस्तार करे (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथन्तु = विस्तार करो (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमः = प्रथम, पहला, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमजम् = प्रथम उत्पन्न को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमजा = प्रथम उत्पन्न (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

प्रथमजाः = प्रथम उत्पन्न (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

प्रथमजान् = प्रथम उत्पन्नों को (प्रथ् = विस्तार होना,

प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

प्रथमजाम् = प्रथम उत्पन्न को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

प्रथमम् = प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमा = प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमानम् = प्रथमान को, विस्तार करते हुए को, विस्तार करने वाले को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमानाः = प्रथमान, विस्तार करने वाले, विस्तार करते हुए (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमानाम् = प्रथमों को, प्रथमाना को, विस्तार करते हुए को, विस्तार करने वाले को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमानि = प्रथम, विस्तार (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, विस्तार करना, फैलना, फैलाना)।

प्रथमाय = प्रथम के लिए, विस्तार करने वाले के लिए (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमे = प्रथम में, प्रसिद्ध में, विस्तार करने वाले में (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमो = प्रथम, आदि, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथमौ = प्रथम, आदि, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथयस्व = विस्तार करो (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथस्वतीम् = प्रथस्वती को, विस्तार युक्त को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथा = विस्तार, प्रसिद्धि (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथाः = विस्तार, प्रसिद्धि (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथिमा = विस्तार, प्रसिद्धि (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रथिष्ठम् = अत्यन्त प्रसिद्ध, अत्यन्त विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रदिशः = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रदिश = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रदिशम् = प्रदिश को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रदिशा = प्रदिशा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रदिशि = प्रदिश में (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रदिशो = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रदेव्येतु = प्रकृष्ट दिव्य बनायें (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिव्, देव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जानना)।

प्र-नूनम् = निश्चय ही।

प्रपथ्याय = प्रकृष्ट पथ्य के लिए (प्र - प्रकृष्ट, पथ, पन्थ - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)।

प्रपद्ये = जाता हूँ, प्राप्त होता है (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पद - स्थानान्तर करना, जाना, जानना, प्राप्त होना)।

प्रपितामहेभ्यः = प्रपितामहों के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना, मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

प्रपित्वे = जाने पर (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पि = जाना, जानना, पाना)।

प्रपीता = पान किये गये (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पी- पीना, प्राशन करना)।

प्र-पीनाम् = पान किये गये को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पी- पीना, प्राशन करना)।

प्रफर्व्यम् = गमनीय को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, फर्व - जाना, जानना, पाना)।

प्रमायिनाम् = प्रकृष्ट माया वालों का (प्र - प्रकृष्ट,

अधिक, मय - जाना, कठिन कार्य करना)।

प्रवीरया = प्रकृष्ट वीर द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वीर् - वीरता दिखाना, वीर होना)।

प्रबुद्धाय = प्रबुद्ध के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, बुध् = जानना, समझना)।

प्रबुधे = प्रबोध में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, बुध् = जानना, समझना)।

प्रभङ्गी = प्रभञ्जन करने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भञ्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, नष्ट करना)।

प्रभञ्जन् = प्रभञ्जन करने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भञ्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, नष्ट करना)।

प्रभरे = धारण करता हूँ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भृ = धारण, पोषण करना, पूर्ण करना)।

प्रभाया = प्रभा द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, भा - कान्ति, शोभा होना)।

प्रभायै = प्रभा के लिए (प्र - प्रकृष्ट, भा - कान्ति, शोभा होना)।

प्रभृतः = परिपूर्ण (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भृ - भरण करना)।

प्रभृतम् = परिपूर्ण को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भृ - भरण करना)।

प्रभृतस्य = परिपूर्ण का (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भृ - भरण करना)।

प्रभृतो = परिपूर्ण (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भृ - भरण करना)।

प्रभु = अधिक होने वाला, प्रकृष्ट होने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

प्रभुः = अधिक होने वाला, प्रकृष्ट होने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

प्रभू: = अधिक होने वाला, प्रकृष्ट होने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

प्रभूवरी: = अधिक होने वाला, प्रकृष्ट होने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

प्रभूवसो = हे प्रभूवसु (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

प्रभूषत: = प्रभूषित होने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भूष् - भूषित होना, सजाना)।

प्रभो: = प्रभु का, अधिक होने वाले का, प्रकृष्ट होने वाले का (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

प्रमदे = प्रमद के लिए, प्रकृष्ट आनन्द के लिए, प्रकृष्ट आनन्द में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मद् - आनन्द करना)।

प्रमन्दते = प्रकृष्ट आनन्द, हर्ष-स्तुति, तुष्टि, प्रकाश करता है (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मन्द - आनन्द करना, हर्ष-स्तुति, तुष्टि, प्रकाश होना, चमकना)।

प्रमा = प्रमा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मा - मान करना)।

प्रमादम् = प्रमाद को, आनन्द को, प्रसन्नता को, हर्ष को (मद्-माद् - हर्ष होना, प्र - प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)।

प्रमृणन्तम् = प्रमृणन्त को, हिंसक को, छिद्र करने वाले को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)।

प्रमृणन् = प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)।

प्रमृणो = प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)।

प्रमृशाय = प्रमृश के लिए, विचार-विमर्श के लिए, स्पर्श के लिए, दृष्टि के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना)।

प्रमुञ्चन् = मुक्त करते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

प्रमुदा = प्रमुद, अत्यन्त हर्षित (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुद - हर्ष होना)।

प्रमुदित: = प्रमुदित, अधिक हर्षित (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुद - हर्ष होना)।

प्रमुदे = प्रमुद के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुद - हर्ष होना, आनन्द होना)।

प्रमोदा: = प्रमोद, अधिक हर्षित (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुद - हर्ष होना)।

प्रमोषी: = चुरायें (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुष् = चुराना)।

प्रम्लोचन्ती = प्रमुख विद्वान्, प्रगतिशील (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, म्लुच् - जाना, जानना, पाना)।

प्रयच्छ = प्रदान करो (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यच्छ = देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

प्रयज्यो = प्रमुख यजनीय, पूजनीय (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

प्रयत् = प्रयत्न करने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयता = प्रयत्न करने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयतानि = प्रयत्न किये हुए, प्रयत्न करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयति = प्रयत्न में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयन् = जाते हुए (या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

- प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयन्त = उद्धार करो (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयन्तो = जाता हुआ, उद्धार कर्ता, यत्न कर्ता (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयस्वन्तो = प्रयत्नवान्, प्रयास करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यस - उपक्षय करना, वास करना, चलना, यत्न करना)।

प्रयाजेभिः = प्रयाजों द्वारा, प्रकृष्ट यजन द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

प्रयाणम् = प्रयाण को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयांसि = प्रयाणों को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

प्रयुग्म्य = प्रयुग् के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, युज् - एकाग्रचित्त होना, तपस्या करना, मिलना, जोड़ना, घृणा करना)

प्रयुच्छसि = असावधान होते हो (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, युच्छ - प्रमाद करना, असावधान होना)।

प्रयुजम् = प्रयुज को, समाधि को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, युज् = समाधि होना, चित्त-मन का अवरोध करना)।

प्रयुजे = समाधि के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, युज् = समाधि होना, चित्त-मन का अवरोध करना)।

प्रयुतम् = प्रयुत को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, युज् = समाधि होना, चित्त-मन का अवरोध करना, यु = मिलाना, अलग करना)।

प्रयोभिः = प्रयो द्वारा, मिलाने, अलग करने द्वारा, प्रयास द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, पृथक् पृथक् करना)।

प्रागाद् = आती है (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), गम् = जाना अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)।

प्रराध्यम् = उत्कृष्ट राध्य को, सिद्ध करने वाले को, सिद्धयुक्त को, पूर्णयुक्त को (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

प्ररोहन्ती = प्रकृष्ट रोहण करती हुई (प्र - प्रकृष्ट, रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

प्रवक्तः - **प्रवक्तः** = प्रवक्त, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

प्रवक्ष्यामो = प्रवक्ष्याम, हम कहेंगे, बोलेंगे (प्र+वच्+ष्यामः, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

प्रवतः = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)।

प्रवता = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)।

प्रवते = अधिक होता है, चलता है, गमन करता है (प्रु - अधिक होना, जाना, हिलना)।

प्रवन्त = प्रवन्त (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

प्रवया = प्रकृष्ट गति, व्याप्ति, रचना द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

प्रवसन् = प्रवास करते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वस् =

रहना, निवास करना)।

प्रवाच्यम् = प्रकृष्ट वाणी को, प्रकृष्ट विद्वान् को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

प्रवाहणो = प्रवाहण, प्रवाही (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वह - बहना, वा - जाना, पवन सा चलना)।

प्रवाह्य = प्रवाह्य के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वह - बहना, वा - जाना, पवन सा चलना)।

प्रविद्म = प्रविद्म, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)

प्रविद्वान् = प्रकृष्ट विद्वान् (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, विद - समझना, जानना, समझाना, रहना, वास करना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)।

प्रविशत् = प्रवेश करते हैं (प्र - प्रकृष्ट, विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।

प्रविशन्ति = प्रवेश करते हैं (प्र - प्रकृष्ट, विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।

प्रविष्टः = प्रविष्ट (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, विश् = घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारो ओर फैलना)

प्रवीता = व्याप्त (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना)

प्रवीरः = प्रवीर (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

प्रवृत् = प्रवृत् (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

प्रवृत्ते = प्रवृत्त में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

प्रवृद्ध = प्रवृद्ध (प्र - प्रकृष्ट, वृध् - बढ़ना)।

प्रवोचम् = कहें (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना)।

प्रवोचेत् = कहे, प्रवचन करे (प्र - प्रकृष्ट, वच्-वद् - कहना)।

प्रशव्येन = प्रशव्य द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, श्व = जाना, चलना, आना, जानना, बदले में देना, विकार होना)।

प्रशंसन्ति = प्रशंसा, स्तुति करते हैं (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्त = प्रशस्त (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्तम् = प्रशस्त (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्तयः = प्रशस्तियाँ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्तये = प्रशस्ति के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्ता = प्रशस्त (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्तिभिः = प्रशस्तियों द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्तिम् = प्रशस्ति को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशस्तिषु = प्रशस्तियों में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा करना)।

प्रशंस्यम् = प्रशंसनीय को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शंस - चाहना, इच्छा करना, शंस - स्तुति, प्रशंसा करने वाला)।

प्रशास्त्रोः = प्रशास्त्रों का, प्रशासन करने वालों का (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शास्-शस् - अनुशासन करना, इच्छा करना, आशीर्वाद देना, शस् - काटना, मारना, हिंसा

करना)।

प्रशिषम् = प्रशिष को, प्रयोजन को, अनुशासन को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

प्रशिषा = प्रशिष द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

प्रश्नविवाकम् = प्रश्नविवाक को, प्रश्नों का विवेचन करने वाले को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पृष्-पृश् - पूँछना, प्रश्न करना, प्रस् - विस्तार करना)।

प्रश्निनम् = प्रश्निन को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पृष्-पृश् - पूँछना, प्रश्न करना, प्रस् - विस्तार करना)।

प्रश्निम् = प्रश्नि को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पृष्-पृश् - पूँछना, प्रश्न करना, प्रस् - विस्तार करना)।

प्रसद्य = प्रगति कर (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

प्रसर्पथ = प्रगति करो (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

प्रसवः = उत्पत्ति, उत्पन्न करने वाला (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसवाय = उत्पत्ति के लिए, उत्पन्नकर्ता के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसवित्रा = उत्पन्नकर्ता, उत्पन्न करने वाला (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसवे = उत्पन्नकर्ता में, उत्पन्न करे (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसवेन = प्रसव द्वारा, उत्पादक, ऐश्वर्य द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसाधनम् = प्रसाधन को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

प्रसारयाव = प्रसार करें (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सार - कृश होना, लघुकाय होना, दुर्बल होना, सू- जाना, सरकना)।

प्रासावीत् = ऐश्वर्यमय हुआ या किया, उत्पन्न किया

(प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

प्रसितिः = सम्बन्ध (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सिन् = बांधना, गूँथना, फन्दे से पकड़ना)।

प्रसितिम् = सम्बन्ध को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सिन् = बांधना, गूँथना, फन्दे से पकड़ना)।

प्रसित्यै = बन्धन के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सि = बांधना, गूँथना, फन्दे से पकड़ना)।

प्रसुव = उत्पन्न करो (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसुवन् = उत्पन्न करते हुए, उत्पन्न करने वाला (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसूः = उत्पन्न करने वाला (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसूतः = उत्पन्न (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसूता = उत्पन्न हुई, उत्पन्न करने वाली (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रसूवरीः = उत्पन्न हुई, उत्पन्न करने वाली (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

प्रस्तरेण = प्रस्तर द्वारा, प्रकृष्ट आच्छादन द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्तृ = आच्छादित करना, ढकना)।

प्रस्तरेष्ठा = प्रकृष्ट आच्छादन में स्थित (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्तृ = आच्छादित करना, ढकना, स्थ = स्थित होना, ठहरना)।

प्रस्तुत्य = प्रस्तुति योग्य, प्रस्तुत्य (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

प्रस्थानः = प्रस्थान, प्रकृष्ट स्थान (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्थ = स्थित होना, ठहरना)।

प्रस्थानः = प्रस्था के समान, प्रकृष्ट स्थिति के समान

(प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), स्थ = स्थित होना, ठहरना)।

प्रस्थिताः = प्रस्थित, प्रकृष्ट स्थिति वाले (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्थ = स्थित होना, ठहरना)।

प्रस्नापयन्ते = शुद्ध करते हैं (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्ना - स्नान करना, नहाना, शुद्ध होना)।

प्रस्यन्दते = सींचता है (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्यन्द = टपकना, झरना, सींचना, छींटा देना, जाना)।

प्रस्रवणेषु = प्रस्रवणों में (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्रु = जाना, जानना, पाना)।

प्रहाय्याः = प्रकृष्ट गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)।

प्रहेतारम् = प्रकृष्ट गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणाओं को (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)।

प्रहोषिणः = प्रहोषिण, आदान-प्रदान करने वाले (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

प्राः = पालन करने वाले, पूर्ण करने वाले (प्रा - पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राक् = पहले, पूर्व दिशा (अव्यय)।

प्राङ् = प्राक्, पहले, पूर्व दिशा (अव्यय)।

प्राची = प्राची, पूर्व दिशा (सर्वनाम)।

प्राचीनम् = प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन (अव्यय)।

प्राचीम् = प्राची को, पूर्व दिशा को (सर्वनाम)।

प्राच्यै = प्राची के लिए, पूर्व दिशा के लिए (प्राक् = पहले, (सर्वनाम)।

प्राजापत्य = प्रजापति से उत्पन्न, पालन करने वाले से उत्पन्न (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्राजापत्याः = प्राजापत्य (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्राञ्चम् = प्राञ्चम्, तिरछे (सर्वनाम)।

प्राणः = प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणथेन = प्राणथ द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, नथ - कम्पन करना)।

प्राणदा = प्राण देने वाले (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणपाः = प्राण-पालक (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

प्राणम् = प्राण को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणस्य = प्राण का (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणाः = प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणात् = प्राण से (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणान् = प्राणों को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणापानौ = प्राण-अपान में (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, अप - निम्न)।

प्राणाय = प्राण के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणायनः = प्राणायन (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, इ- अय् - जाना, जानना, पाना)।

प्राणायनो = प्राणायन (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, इ- अय् - जाना, जानना, पाना)।

प्राणेन = प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणेभ्यः = प्राणों के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणेषु = प्राणों के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन-जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्रातः = प्रातः (अव्यय)।

प्रातः = पूर्ण, तृप्त (प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राध्वने = प्राध्वनि के लिए (प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, ध्वन - शब्द करना, ध्वनि करना)।

प्राभिः = पूर्ण द्वारा, तृप्ति द्वारा (प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्रायणाय = प्रमुख अयन के लिए, प्रगति के लिए, विद्वान के लिए (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः। आय - शब्द करना, शासन करना, अय-ई - जाना)।

प्रायणीयस्य = प्रायणीय का, प्रमुख अयन का, प्रगति का, विद्वान का (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आय - शब्द करना, शासन करना, अय-ई - जाना)।

प्रायश्चित्तै = प्रायश्चित्त के लिए (प्रा - पूर्ण होना, पूर्ण करना, तृप्त करना, चित् - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

प्रायासाय = प्रायास के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, आ - समन्तात्, पूर्णतः, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, यस् - यत्न करना)।

प्रारिणा = व्याप्त होते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, अर्- ऋ- गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिण- शब्द करना, अल्प होना, चूर्ण होना)।

प्रार्चता = प्रकृष्ट पूजा करो, सम्मान करो, सेवा करो (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

प्रार्पणः = प्रभूत अर्पण करने वाले (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर्प = अर्पण करना)।

प्रार्पयतु = प्रभूत अर्थात् बहुत अधिक अर्पण करें (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर्प = अर्पण करना)।

प्रावणेभिः = प्रकृष्ट रक्षणों द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर् - रक्षा करना)।

प्रावन्तु = प्रकृष्ट रक्षा करें (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर् -

रक्षा करना)।

प्राविता = प्रकृष्ट रक्षक (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर् - रक्षा करना)।

प्रावीः = प्रकृष्ट रक्षक (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अर् - रक्षा करना)।

प्रावीविपत् = प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विप - प्रेरित करना)।

प्रावृतस्य = प्रमुख आच्छादनकर्ता का (प्र+आ+वृतस्य, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

प्रावृता = प्रावृत (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

प्रावृषा = प्रकृष्ट पराक्रमी (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), वृष - विशिष्ट होना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

प्राशृङ्गा = प्राशृङ्ग, बहुश्रुत (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, पहुंचना, पाना, शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

प्राशूः = शीघ्रगामी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)

प्रियः = प्रिय (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)।

प्रियंगवः = प्रियगामी, प्रियवक्ता, प्रियवादी (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, गम् - जाना, गु - शब्द करना)।

प्रियपतिम् = प्रियपति को (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)।

प्रियम् = प्रिय को (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)।

स्वामी शरण

प्रेत्यै = प्रेत्य के लिए, प्रकृष्ट गमन, प्राप्त, विगत, पूर्ण करने वाले के लिए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इ - जाना, जानना, पाना, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

प्रेषा = प्रेषित, भेजा हुआ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)।

प्रेषितः = प्रेषित, भेजा हुआ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)।

प्रेष्ठः = भेजने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)।

प्रेष्ठम् = भेजने वालों को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)।

प्रेहि = प्रगति करो, जाओ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इ - जाना, जानना, पाना)।

प्रेतु = प्राप्त हो, आये (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इ - जाना, जानना, पाना, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

प्रेरयत् = प्राप्त, पूर्ण करें (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इ - जाना, जानना, पाना, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

प्रेषान् = भेजने वालों को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)।

प्रेषेभिः = भेजने वालों द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)।

प्रो = पूर्ण, तृप्त (प्रा - पूर्ण करना, भरना, प्रा - तृप्त करना)।

प्रोक्षणीः = दृढ़, निर्मल, अभिसिञ्चनी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, उक्ष = स्वच्छ करना, सींचना, भेजना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

प्रोक्षामि = अभिसिञ्चन करता हूँ, निर्मल करता हूँ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, उक्ष = सींचना, भेजना, निर्मल करना, स्वच्छ करना)।

प्रोक्षितम् = अभिसिञ्चित को, निर्मल को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, उक्ष = निर्मल करना, स्वच्छ करना)।

प्रोक्षिता = अभिसिञ्चित, निर्मल (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, उक्ष = निर्मल करना, स्वच्छ करना)।

प्रोतः = अधिक, वृद्धिगत (पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

प्रोथः = व्याप्त, अधिक, वृद्धिगत (पुथ - शरण लेना, व्याप्त होना, पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

प्रोथत् = व्याप्त हुआ (पुथ - शरण लेना, व्याप्त होना, पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

प्रोथते = व्याप्त होता है (पुथ - शरण लेना, व्याप्त होना, पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

प्रोथाय = व्याप्त के लिए (पुथ - शरण लेना, व्याप्त होना, पु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

प्रोहामि = विचार करता हूँ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, ऊह = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

प्रोह्यमाणः = विचारशील (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, ऊह = परिकल्पना करना, तर्क करना)।

प्लवो = प्लवनकारी, तैरने वाला, प्रगतिशील (प्लु = जाना, उड़ना, तैरना, कूदना)।

प्लाशिः = प्लाशी (प्र+अशि, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना। प्लु = जाना, उड़ना, तैरना, कूदना। पल = जाना, भागना। पल = काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना, उड़ना। पल = रक्षा करना)।

प्लाशिभिः = प्लाशियों द्वारा (प्र+अशिभिः, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना। प्लु = जाना, उड़ना, तैरना, कूदना। पल = जाना, भागना। पल = काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना, उड़ना। पल = रक्षा करना)।

प्लीहा = प्लीहा (प्ली = जाना)।

प्लीहा-कर्णः = प्लीहा-कर्ण, अविचल श्रोता (प्ली = जाना। कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

प्लीहना = प्लीह द्वारा (प्ली = जाना)।

प्लुषीन् = प्लुषों को, स्नेहियों को, अभिसिंचकों को, पूर्ण करने वालों को (प्लुष = स्निग्ध होना, चिकना होना, स्निग्ध करना, प्रोक्षण करना, सींचना, पूर्ण करना, भरना। प्लुष = जलाना, भूँजना)।

प्सरस्तमः = अत्यन्त भोक्ता, अत्यन्त संरक्षक (प्सा - भक्षण करना, संरक्षण करना, पष - जाना, बांधना, फांस लगाना, पष - धारण करना, घर्षण करना)।

प्सरो = भोक्ता, संरक्षक (प्सा - भक्षण करना, संरक्षण करना, पष - जाना, बांधना, फांस लगाना, पष - धारण करना, घर्षण करना)।

प्स्या = भोक्ता, संरक्षक द्वारा (प्सा - भक्षण करना, संरक्षण करना)।

फ

फलम् = फल को (फल - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)।

फलवत्यो = फल युक्त, फलवान् (फल - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)।

फलिनीः = फल युक्त (फल - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)।

फलेभ्यः = फलों के लिए (फल - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)।

फल्यूः = फल्यू, फल युक्त (फल - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)।

फाला = फल युक्त (फल - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)।

फेनेन = फेन द्वारा, वृद्धि द्वारा (स्फी-फेय्-स्फाय= बढ़ना, मोटा होना, स्थूल होना)।

फेन्याय = बढ़ने के लिए, बढ़ना (स्फी-फेय्-स्फाय= बढ़ना, मोटा होना, स्थूल होना)।

ब

बट् = सत्य ही, निश्चय ही (अव्यय, निपात्)।

बदरम् = स्थिर को, स्वस्थ को (बद् - स्थिर होना, स्वस्थ होना)।

बदरैः = स्थिरों द्वारा, स्वस्थों द्वारा (बद् - स्थिर होना, स्वस्थ होना)।

बद्धः - बद्धः = बाँधा हुआ (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बधान = बाँधा (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बधिरम् = बधिर को (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बध्नन् = बाँधते हुए (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बध्नामि = बाँधता हूँ (बध् - बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बध्नीताम् = बाँध दें (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बध्यते = बाँधा जाता है (बध् - बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बन्धनात् = बन्धन से (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बन्धनानि = बन्धन (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बन्धम् = बन्धन को (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बन्धानाम् = बन्धनों का (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बन्धुः = बन्धु, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बप्सतः = भक्षण करने वाले, संरक्षण करने वाले (प्सा - भक्षण करना, संरक्षण करना)।

बभूथ = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)।

बभूयात् = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

बभूव = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)।

बभूविथ = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)।

बभूविम् = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)।

बभ्रः = भरण-पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रवः = भरण पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रवो = भरण पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रुः = भरण-पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रुकान् = भरण पोषण करने वालों को (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रुनीकाश = बभ्रुनी-प्रकाश (भृ = भरण-पोषण, धारण करना, कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना, काश = चमकना)।

बभ्रुम् = बभ्रु को, भरण-पोषण करने वाले को (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रूणाम् = भरण पोषण करने वालों का (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रवै = भरण पोषण करने वाले के लिए (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रो = भरण-पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रुशाय = बभ्रुश के लिए, प्रगतिशील, दानी के लिए (भल् = जाना, काटना, स्वीकार करना, धारण करना, दान करना, हिंसा करना, भ्लाश = दीप्त होना, प्रकाशित होना, चमकना)।

बभ्रारिः = भरण पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बभ्रारे = भरण पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

बर्हणा = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना,

शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बर्हय = बढ़ाओ (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बर्हया = बढ़ाओ (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बर्हिः = बढ़ा हुआ, महान् (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बर्हिषः = बढ़ा हुआ, महान् का (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बर्हिषदः = श्रेष्ठ (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, षद्-सद् - बैठना)।

बर्हिषदम् = श्रेष्ठ जन को, महान् बैठने वाले को (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, षद्-सद् - बैठना)।

बर्हिषदाम् = बर्हिषदों का, महासभा में बैठने वालों को, श्रेष्ठ आसीन को (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना, सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

बर्हिषदे = श्रेष्ठ आसन पर (बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह -

करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बलविज्ञायः = बलविज्ञ के लिए (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना, वि - विशेष, ज्ञा - जानना)।

बलस्य = बल का (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बला = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बलाका = बल वाला (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बलाकारः = बल करने वाला, बल का आकार (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बलाय = बल के लिए (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बलास्य = बल का (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बले = बल में (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बलेन = बल द्वारा (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बष्किहान् = बष्किहों को, प्रगतिहन्ताओं को, वाणीहन्ताओं को (बष्क = जाना, बोलना। हन् - मारना)।

बस्तो = प्रगतिशील, याचक (बस्त = जाना, मांगना, मार डालना, दुःख देना)।

बहवः = बहुत (सर्वनाम)।

बहिर्धा = बाहर धारण करने वाला (बहिः = बाहर, धा धारण करना, पहनना)।

बहुः = बहुत (सर्वनाम)।

बहुधा = बहुत प्रकार से (सर्वनाम)।

बहुभिः = बहुतों द्वारा (सर्वनाम)।

बहुभ्यः = बहुत के लिए (सर्वनाम)।

बहुम् = बहुत को (सर्वनाम)।

बहुरूपा = बहुत रूपवाला (बहुः = बहुत (सर्वनाम)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

बहुलम् = बहुल को (सर्वनाम)।

बहुलाम् = बहुल वाले को (सर्वनाम)।

बहुले = बहुल में (सर्वनाम)।

बहुवादिनम् = बहुवादी को, बहुत बोलने वाले को (बहु - बहुत, वद् - बोलना)।

बहोः = बहुत का, बहने वाले का (बह - बहना, बहु - बहुत, सर्वनाम)।

बह्वीः = बहुत, बहने वाले, बहुविधि (बह - बहना, बहु - बहुत, सर्वनाम)।

बह्वीनाम् = बहने वालों का, बहुविधि वालों का (बह - बहना, बहु - बहुत, सर्वनाम)।

बह्व्यः = बहने योग्य, बहुयोग्य (बह - बहना, बहु - बहुत, सर्वनाम)।

बाणवान् = बाणयुक्त, शब्दयुक्त, वाणी युक्त (बण् शब्द करना)।

बाणाः = बाण, शब्द, वाणी (बण् शब्द करना)।

बाधताम् = बाधित करे (बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधते = बाधित करता है, दुःख देता है (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधध्व = बाधित करे (बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधध्वे = बाधित करे (बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधमानः = बाधित करने वाला, दुःख देने वाला (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधमानाः = बाधित करने वाले, दुःख देने वाले (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधसे = बाधित करते हो (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधस्व = बाधित करो (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधामहे = बाधित करते हैं (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बाधो = बाधित (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

बार्हताय = महान्, बड़ा, विराट्, बृहत् के लिए (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बार्हस्पत्यः = बृहस्पति सम्बन्धी, बृहत् के पति सम्बन्धी (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - गिरना, ऐश्वर्य होना)।

बार्हस्पत्याः = बृहस्पति सम्बन्धी, बृहत् के पति सम्बन्धी (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - गिरना, ऐश्वर्य होना)।

बाहवः = प्रयास करने वाले (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाहवा = बाहु का, प्रयास करने वाले (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाहुः = प्रयास करने वाले (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाहुभ्याम् = दोनों बाहुओं द्वारा, के लिए, दोनों बाहुओं के लिए, प्रयासों के लिए, प्रयास करने वालों के लिए (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाहुम् = बाहु को, प्रयास करने वाले को (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाहु-शर्धी = बाहु-विजेता, बाहु-शर्धी (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना, शृङ्घ - सहन करना, जीतना, शक्ति होना, सामर्थ्य होना)।

बाहू = बाहु, भुजा, हाथ, प्रयास करने वाले युगल (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाह्यतः = बाह्य से, बाहर से (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाह्यम् = बाह्य को, बाहर को (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाहवोः = बाहु का, बाह्य, बाहर (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

बाह्वोजसा = बाहु-ओज द्वारा, प्रयास के ओज द्वारा (बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना, ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

बिदलकारीम् = बिदलकारी को (वि - उपसर्ग, दल् - टुकड़े करना)।

बिभर्ति = भरण, धारण करता है (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

बिभर्तु = भरण, धारण करे (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

बिभर्षि = भरण, धारण करते हो (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

बिभीत = डरा, डर गया, डरो (भी = भय होना, डरना)।

बिभृत = भरण, धारण किया (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभृताम् = भरण करें, पोषण करें (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभेद = भेदन किया (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना)।

विभ्रत् = भरण, धारण करता हुआ (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभ्रत - विभ्रत = भरण, धारण किया (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभ्रतः = भरण, धारण करते हुए (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभ्रतम् = भरण, धारण करने वाले को (भृ - भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभ्रतीः = भरण, धारण करती हुई (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभ्रते = भरण, धारण करने के लिए (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विभ्रतौ = भरण, धारण करते हुए (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)।

विलम् = भेद, आच्छादन, आवरण (बिल् - आच्छादन करना, जाना, छेद करना, भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

विल्मिने = भेद, आच्छादन, आवरण करने वाले (बिल् - आच्छादन करना, जाना, छेद करना, भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

बीजम् = बीज को (बिज्-बीज् - उगना, अंकुरण करना)।

बीभत्सायै = बीभत्स के लिए, द्वेषी के लिए (बीभत्स - द्वेष करना, अनादर करना, तिरस्कार करना, भी - डरना)।

बृबद् = महान् (अव्यय)।

बृबदुक्थम् = महान् वाणी, स्तुति, वचन को (बृबद् = महान् (अव्यय), बद् - स्थिर होना, स्वस्थ होना, उक् - उच्-वद् - कहना, समझना)।

बृहत् = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहतः = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना,

बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहता = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहती = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहतीः = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहतीम् = महान्, बड़ा, बृहत् को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहते = महान्, बड़ा, बृहत् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहतो = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहत्या = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहत्यै = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहद् = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहद्गाय = बृहत् गायन, ज्ञान के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

बृहद्भाः = महान्, बृहत् प्रकाश (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द

करना, जानना, समझना)।

बुध्याः = बोधमय, बोधयुक्त (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बुध्याय = बोधमय, बोधयुक्त के लिए (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बुध्यः = बोधयोग्य, बोधमय, बोधयुक्त (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बुध्यस्व = बोधमय, बोधयुक्त करो (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बुध्येम = बोध हो, बोध करें, जानें (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बुन्दम् = जानने, समझने वाले को (बुन्द- जानना, समझना, बूझना, सूक्ष्म दृष्टि से जानना)।

बैन्दम् = बैन्द को (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोध = बोध (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोधतम् = जानो, समझो, बोध करो (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोधय = बोध करो (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोधयत = जानो, समझो (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोधा = बोध, बोधयुक्त, जानता हूँ (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोधि = जानता है (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

बोध्य = बोधयोग्य, जानने योग्य, समझने योग्य (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

ब्रध्नः = बृद्धि करने वाला (बृध् - बढ़ना, वृद्धि होना, बृद्धि करना)।

ब्रध्नम् = बृद्धि को (बृध् - बढ़ना, वृद्धि होना, बृद्धि करना)।

ब्रध्नस्य = ब्रध्न का, बृद्धि का (बृध् - बढ़ना, वृद्धि होना, बृद्धि करना)।

ब्रवाम = बोलें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रवाणि = बोलें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रवावहै = बोलते हैं (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रवीतन = बोलो, कहो (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रवीतु = बोलो (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रवीमि = कहता हूँ। (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रह्म = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मकृतः = ब्रह्मकृत (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, कृ = करना)।

ब्रह्मकृते = ब्रह्मकृत, शब्दकर्ता के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, कृ = करना)।

ब्रह्मचोदना = ब्रह्म की प्रेरणा देने वाले युगल, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, चुद् - प्रेरणा करना)।

ब्रह्मज्यस्य = प्रगतिशील ब्रह्म का, ब्रह्म-वृद्धि का, ब्रह्मजित का (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, जि - जीतना)।

ब्रह्मणः = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मणो = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मणस्पतिः = बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

ब्रह्मणस्पतिम् = ब्रह्मणस्पति को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि

करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

ब्रह्मणस्पते = हे बृह्मणस्पति (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

ब्रह्मणा = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मणे = ब्रह्म के लिए, महान् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मद्विषम् = ब्रह्मद्वेषी को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

ब्रह्मद्विषो = ब्रह्म द्वेष को, विराट्, महान् द्वेष को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

ब्रह्मन् = ब्रह्म, महान्, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मम् = ब्रह्म को विराट्, महान् को बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मयुजा = ब्रह्मयुक्त, महान् युक्त, दीर्घ युक्त, विराट् युक्त, बृहत् युक्त (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

ब्रह्मराजभ्याम् = ब्रह्म-राज के लिए, विराट्, महान् प्रकाश के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, राज - चमकना, प्रकाशित होना, दीप्त होना)।

ब्रह्म-लोकम् = ब्रह्म-लोक को, बृहत् दृष्टि को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, लोक - देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

ब्रह्मवनि = ब्रह्म की सेवा, ब्रह्म से याचना (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, वन् = शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, याचना करना)।

ब्रह्म-वर्चसम् = ब्रह्म-वर्चस, ब्रह्म तेज, ब्रह्म तेज युक्त को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

ब्रह्म-वर्चसी = ब्रह्म-वर्चस वाले, ब्रह्म तेज वाले, ब्रह्म तेज युक्त (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

ब्रह्मवाहसः = ब्रह्म-वाहन, ब्रह्म-वाह, वृद्धि-वाहक (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

ब्रह्मसंशिते = ब्रह्मसंशित के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

ब्रह्महत्यायै = ब्रह्महत्या के लिए, महान् की हत्या के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, बढ़ा होना, जानना, हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना)।

ब्रह्मा = ब्रह्म, महान्, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्माणम् = ब्रह्ममय को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्माणि = ब्रह्मन् में (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना,

उद्योग करना, बोलना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्माणे = ब्रह्माण में, वृद्धिशील में, उद्यमशील में, बढ़ते हुए में (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्माणो = ब्रह्माण, वृद्धिशील, उद्यमशील, शब्दकर्ता (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मीः = ब्रह्म, वृद्धिशील, उद्यमशील (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मणम् = ब्राह्मण को, वृद्धिशील, उद्यमशील को (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मणानाम् = ब्राह्मणों का, वृद्धिशीलों, उद्यमशीलों का (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मणासः = ब्राह्मण, वृद्धिशील, उद्यमशील जन (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मणे = ब्राह्मण में, वृद्धिशील, उद्यमशील में (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मणेषु = ब्राह्मणों में, वृद्धिशीलों, उद्यमशीलों में (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मणो = ब्राह्मण, वृद्धिशील, उद्यमशील (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मम् = ब्राह्म को, वृद्धिशील, उद्यमशील को (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्राह्मये = ब्राह्म, ब्रह्म, वृद्धिशील, उद्यमशील के लिए (बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रुवते = कहते हैं, बोलते हैं (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रुवन् = कहते हुए, बोलते हुए (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रुवन्तु = कहें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रुवाणो = कहता हुआ, बोलता हुआ (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रुवे = कहें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रूतात् = कहें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रूताद् = कहें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रूहि = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)।

भ

भक्तेन = सेवित द्वारा (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

भक्तो = सेवा करने वाला (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

भक्षः - भक्षः = भक्षण करने वाला (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षम् - भक्षम् = भक्ष को (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षमाणो = भक्षण करता हुआ (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षयति = भक्षण करता है (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षयामि - भक्षयामि = भक्षण करता हूँ (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षान् - भक्षान् = भक्षों को (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षि - भक्षि = भक्षण करो, ग्रहण करो (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षितस्य - भक्षितस्य = भक्षित का (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षीत = भक्षण करो, ग्रहण करो (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)।

भक्षीय - भक्षीय = भक्षण करो, ग्रहण करो (भक्ष -

करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

भजन्त = सेवा करो, सेवा में लगाओ (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

भजसे = सेवा, भजन, सेवन करते हो (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

भजेमहि = सेवा, भजन, सेवन करते हैं (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

भज्जतीनाम् = प्रभज्जन करने वालों का (भज्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, भज्जन करना, नष्ट करना)।

भज्जन् = भज्जन करने वाला (भज्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, भज्जन करना, नष्ट करना)।

भद्र - भद्र = कल्याणकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रः - भद्रः = कल्याण करने वाला, कल्याणकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रम् - भद्रम् = कल्याणकारी को (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रया = भद्र, कल्याणकारी द्वारा (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्र-शोचे = हे भद्रशोचि, कल्याणकारी पवित्रकर्ता (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रस्य - भद्रस्य = भद्र का, कल्याणकारी का (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रा - भद्रा = कल्याणकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्राः = भद्र, कल्याणकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्राय = भद्र के लिए, कल्याणकारी के लिए (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रे - भद्रे = कल्याण में (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रेण - भद्रेण = भद्र द्वारा, कल्याणकारी द्वारा (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रो = कल्याण करने वाला, कल्याणकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भद्रौ = कल्याण करने वाला, कल्याणकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भन्त्स्यामि = कल्याण करूँगा (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भन्ददिष्टये = कल्याण, सुख, शुभ कर्म के लिए (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भन्दना = कल्याणकारी, सुखकारी (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भन्दनानाम् = कल्याणकारियों का (भदि-भन्द = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भयमानः = भयभीत (भी - भय होना, डर होना, डराना)।

भयमानो = भयभीत (भी - भय होना, डर होना, डराना)।

भयामहे = भयभीत होते हैं (भी - भय होना, डर होना, डराना)।

भर = पोषण करो, भरो, पूर्ण करो (भृ = धारण-पोषण करना, पूर्ण करना)।

भरत् = भरण करने वाले, भरण करते हुए (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरतस्य = भरण करने वाले का (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरता = पोषण करो, भरो, पूर्ण करो (भृ = धारण-पोषण करना, पूर्ण करना)।

भरति = भरण करता है, पोषण करता है, पूर्ण करता है (भृ = भरण करना, धारण-पोषण करना, पूर्ण करना)।

भरतेभ्यः = भरण करने वालों के लिए (भृ = पूर्ण

करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरद्वाज - भरद्वाज = भरण करने वाले विद्वान् (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना, वज् - जाना, चलना, गति करना, जानना, पाना, संस्कार करना, शस्त्र बनाना)।

भरद्वाजः - भरद्वाजः = भरण करने वाले विद्वान् (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना, वज् - जाना, चलना, गति करना, जानना, पाना, संस्कार करना, शस्त्र बनाना)।

भरध्वम् = पूर्ण करो, धारण करो, भरण करो (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन् = भरण करने वाले, भरण करते हुए (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन्त = भरता है (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन्तः = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन्तम् = भरण करने वाले को (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन्ति - भरन्ति = धारण-पोषण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन्तु = भरण करो (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरन्तो = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरम् = भरण करने वाले को, पोषण करने वाले को (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरमाणाः = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरमाणो = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरहूतो = भरण के आह्वान में (भृ - भरण करना, ह्वे - आह्वान करना)।

भरा = पोषण करो, भरण करो (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भराम = भरण करें (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरामः = भरण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरामसि = भरण करते हो (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरामहे = भरण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरामि = धारण करता हूँ, भरण करता हूँ (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भराय = पोषण के लिए, भरण के लिए (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरासः = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरिभ्रत् - भरिभ्रत् = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरिष्यन्ती = भरण करने वाले (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरिष्यामः = भरण करेंगे (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरीमभिः = भरण करने वालों द्वारा (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरे = भरण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भरेषुजाम् = भरण-पोषण करने वालों में उत्पन्न होने वाले (भृ = धारण, पोषण करना, पूर्ण करना, जन - उत्पन्न होना)।

भर्गो - भर्गो = भर्ग, प्रकाश, भरण-पोषण (भृज्-भर्ज = चमकना, प्रकाशित होना, भूजना, तलना, पकाना। भृ = पूर्ण करना, भरना, भरण-पोषण करना, धारण करना)।

भर्त्तवे = भरण, पोषण, भरण-पोषण के लिए (भृ = भरण, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, धारण करना)।

भर्मणि = भरण, पोषण, धारण, भरण-पोषण में (भृ = भरण, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भव = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवन्ति - भवन्ति = होते हैं (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भविष्यत् = होने वाला, होना है (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भविष्यति = भविष्य, होगा (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवीयसी = होते हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवेम = हों, बने रहें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवेयम् = होते हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भव्यस्य = भव्य का, होने वाले का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भषम् = भष को, वचन को (भष् - बोलना, कहना, घोषणा करना, निन्दा करना)।

भसत् = भोजन करें (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

भस्म = भस्म, प्रकाश, भोजन (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

भस्मन् = भस्म, प्रकाश, भोजन (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

भस्मना = भस्म द्वारा, प्रकाश, भोजन द्वारा (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

भस्मसा = भस्म द्वारा, प्रकाश, भोजन द्वारा (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

भस्मान्तम् = भस्म, भोजन से चेतन रहने वाला, अन्त में भस्म हो जाने वाला (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना, अन् - चेतन होना, जीवन होना, प्राण होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना, अन्त - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)।

भाः = प्रकाश (भा - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर दीखना)।

भाग = भाग, सेवा (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)।

भागः = भाग (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)।

भागदाः = भाग देने वाले (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना, दा - देना)।

भागदुघम् = भागदुघ को (भज्-भग् - सेव करना, दान करना, अलग करना, दु - जाना, सुगन्ध करना, जलना, जलाना, दुःख होना, दुह - दुहना)।

भागम् = सेवा, दान, भोजन, भाग को (भज् = सेवा करना, दान करना, भोजन पकाना, भज - अंश या भाग होना)।

भागा = भाग (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)।

भागे = भाग में (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)।

भाजयत = सेवन करायें, भाग दें (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)।

भाति = प्रकाशित होता है (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानवः = प्रकाशमान (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानवे = प्रकाशमान के लिए (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानवो = प्रकाशमान (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानुः = प्रकाशमान (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानुना = भानु द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानुभिः = भानु द्वारा, प्रकाशमानों द्वारा (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानुम् = प्रकाशमान को (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भानो = प्रकाशमान (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भान्तः = प्रकाशमान (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भामः = प्रकाशमान, प्रकाश (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भामम् = भाम को, प्रकाशमान को (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भामिनः = प्रकाशमान (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भामिनो = प्रकाशमान, प्रकाशित करने वाले (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भायै = प्रकाश के लिए (भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भारती = प्रकाशमान, पोषक, भरण-पोषण करने वाला (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भारभृत् = भार को भरण करने वाला, भार को पूर्ण करने वाला (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भारम् = भार को, भरे हुए को, प्रकाशमान, पोषक, भरण-पोषण करने वाले को (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

भाव्यम् = उत्पन्न होने वाले को (भू - होना, उत्पन्न होना)।

भाषथाः = बोलें (भाष् - बोलना)।

भासदौ = प्रकाशमान (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भासन् = प्रकाशमान (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भासा = प्रकाशमान (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भासि = प्रकाश करते हो, प्रकाशित होते हो (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भासे = प्रकाश में (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भास्वतीम् = प्रकाशमान को (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भाहि = प्रकाश करो, प्रकाशित हो (भास् - प्रकाशित होना, चमकना)।

भिक्षमाणः - **भिक्षमाणः** = भिक्षमाण, भिक्षा मांगने वाला (भिक्ष - याचना करना, मांगना)।

भित्थाः = भेदन करने वाले (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भिनदत् = भेदन किया (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भिन्त = भिन्त, भिन्न, भेदित, भेदन किया हुआ (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भिन्दन् = भेदन करने वाले (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भिन्दन्तः = भेदन करने वाले (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भिन्दुः = भेदन करने वाले (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भियः = भयभीत (भी - भय होना, डर होना, डराना)।

भियसम् = भय को (भी - भय होना, डर होना, डराना)।

भियसाने = भयभीत (भी - भय होना, डराना)।

भिषक् = चिकित्सक (भिषज - चिकित्सा करना)।

भिषजम् = भिषज को, चिकित्सक को (भिषज - चिकित्सा करना)।

भिषजा = चिकित्सक (भिषज - चिकित्सा करना)।

भिषजाम् = चिकित्सक का (भिषज - चिकित्सा करना)।

भिषज्यतः = चिकित्सा की (भिषज - चिकित्सा करना)।

भिषज्यन् = चिकित्सा करते हुए (भिषज - चिकित्सा करना)।

भीमः = भयंकर (भी - डरना)।

भीमम् = भयंकर को (भी - डरना)।

भीमलम् = भीमल को, भयंकर सामर्थ्य वाले को (भी-भय होना)।

भीमानि = भीम, भयंकर (भी - डरना)।

भीमाय = भीम के लिए, भयंकर के लिए (भी - डरना)।

भृगवः = पोषण करने वाले, भृगुगण (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना, भृग् = चमकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृगवो = भृगुगणों ने, प्रकाशमानों ने, भरण करने वालों ने (भृज्-भ्रज् = चमकना, तेज होना, जानना, भृ - भरण-पोषण, धारण करना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृगुः = भृगु (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् = चमकना, तेज होना, जानना, भूँजना, तलना, सेंकना। गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृगुणाम् = भृगुओं का (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, भृग् = चमकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृगुभिः = भृगुओं द्वारा (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, भृग् = चमकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृगूणाम् = भृगुओं का (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, भृग् = चमकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृङ्गः = भृंग (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, चमकना, तेज होना, जानना, गम् - जाना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भृतम् = भरण-पोषण करने को (भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

भृता = भरण-पोषण करने वाला (भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

भृष्टिः - भृष्टिः = चमक, ज्योति (भृज् = चमकना, भूँजना, तलना, सेंकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

भुज = पालन-रक्षण करो, भक्षण करो, भोग करो (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भुज्युः = भक्षण करो, भोग करो (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भुज्जती = भक्षण, भोग, पालन करती हुई (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भुज्जीथा = भक्षण करो, भोग करो (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भुरणन्तम् = धारण -पोषण करने वाले (भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भुरण्यवः = धारण -पोषण करने वाले (भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भुरण्यवो = धारण-पोषण करने वाले (भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भुरण्युः = धारण -पोषण करने वाले (भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भुरण्युम् = धारण - पोषण करने वाले को (भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भुरिषाट् = घर्षण, गति करने वाले (भु - जाना, घर्षण करना)।

भुवः = होने वाला (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवत् = होता हैं (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवन = हो रहा, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवनपतये = सृष्टि के ऐश्वर्य के लिए (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, पत् = ऐश्वर्य होना)।

भुवनम् = हो रहा, वर्तमान को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवनस्य = भुवन का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवना = हो रहा, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवनानाम् = भुवनों का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवनानि = भुवन, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवनेषु = भुवनों में (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना,

भूरे: = भूरि का, गति का, उत्पत्ति का (भूरि = बहु, बहुत, अव्यय-सर्वनाम, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भूर्णयः = धारण-पोषण करने वाले (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना। भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भूर्णिम् = धारण-पोषण करने वाले को (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना। भुरण - पालन करना, धारण करना)।

भूर्यासुतिः = बहुत ऐश्वर्यवान् (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना। भूरि = बहु, बहुत, अव्यय-सर्वनाम, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना, सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

भूर्योजा = मिलाने वाले प्रगतिशील, अत्यन्त बलशाली (भूरि+ओजा, भू+युजा, भूरि = बहु, बहुत, अव्यय-सर्वनाम, भू = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

भूष = भूषित करो (भूष् - भूषित होना, सजाना)।

भूषत = भूषित हो, भूषित करो (भूष् - भूषित होना, सजाना)।

भूषतम् = भूषित हों, भूषित करो (भूष् - भूषित होना, सजाना)।

भूषति = भूषित होता है (भूष् - भूषित होना, सजाना)।

भूषथः = भूषित होते हो (भूष् - भूषित होना, सजाना)।

भूषन् = भूषित होता हुआ, भूषित करता हुआ (वि - विशेष, भूष् - भूषित होना, सजाना)।

भूषन्ति - भूषन्ति = भूषित होते हैं, भूषित करते हैं (भूष्

- भूषित होना, सजाना)।

भे: = भय करो (भी - डरना, घबराना)।

भेकुरयः = भयंकर (भी - डरना, घबराना)।

भेजानासः = संरक्षण करने वाले, पालन करने वाले, चिकित्सा करने वाले (भी - डरना, भज - देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भाज - देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना)।

भेत्ता = भेदन करने वाले, भय (भिद् - भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना। भी - डरना, घबराना)।

भेद = भेद (भिद् - भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना)।

भेदि = भेदन करने वाले (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

भेम = डरो, भयभीत हो (भी - डरना, घबराना)।

भेषजम् = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भेषजा = भेषज, औषधि (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भेषजाय = भेषज के लिए, औषधि के लिए (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भेषजी = औषधि युक्त (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भेषजैः = भेषज द्वारा, औषधि द्वारा (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भेषजो = भेषज, औषधि (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भेषेण = भेष द्वारा (भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भैषज्येन = भैषज द्वारा, चिकित्सा द्वारा, चिकित्सक द्वारा (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

भोगम् = भक्षण को, भोग को (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भोगैः = भक्षण द्वारा, भोग द्वारा (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भोजनम् = भोजन को (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भोजनानि = भोजन (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भौमाः = भूमि-सम्बन्धी, भूमिज, भूमि से उत्पन्न (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भौमी = भूमि-सम्बन्धी, भूमिज, भूमि से उत्पन्न (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भौवनाय = भौवन के लिए, भुवन-सम्बन्धी के लिए (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भौवायनः = भौवायन, भुवन-युक्त (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भ्यसात् = भयभीत हुए (भ्यस - डरना)।

भ्रजः - भ्रजः = पोषण करने वाले, भूतने वाले (भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना)।

भ्रमासः = भ्रमणशील (भ्रम - भ्रमण करना, भ्रान्त होना, भ्रमित होना, भ्रमित करना)।

भ्रशत् - भ्रशत् = पतित हुए (भृश्-भ्रश - पतित होना, गिरना, भ्रष्ट होना)।

भ्राज = प्रकाश (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना। भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना,

सेंकना)।

भ्राजः = प्रकाशमान (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना। भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना)।

भ्राजदृष्ट्या - भ्राजदृष्ट्या = प्रकाशित दृष्टिद्वारा (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना। भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना। दृश् - देखना)।

भ्राजन्तः - भ्राजन्तः = प्रकाशमान (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना। भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना)।

भ्राजन्ती - भ्राजन्ती = प्रकाशयुक्त (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना। भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना)।

भ्राजन्ते - भ्राजन्ते = प्रकाशित होते हैं (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्राजम् - भ्राजम् = प्रकाश को (भ्राज् = चमकना, प्रकाश होना)।

भ्राजमानो - भ्राजमानो = भ्राजमान, प्रकाशित (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्राजसा - भ्राजसा = दीप्ति द्वारा, प्रकाश द्वारा (भ्राज् - चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्राजा = प्रकाश (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्राजाय - भ्राजाय = प्रकाश के लिए (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्राजिष्ठ - भ्राजिष्ठ = अत्यन्त प्रकाशमान (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्राजो = प्रकाशमान (भ्राज - चमकना, प्रकाशित होना)।

भ्रातव्यस्य - भ्रातव्यस्य = भ्रातव्य का (भृ = भरण करना)।

भ्राता - भ्राता = भ्राता (भृ = भरण करना)।

भ्रातृभिः - भ्रातृभिः = भ्राताओं द्वारा (भृ = भरण करना)।

भ्रातृव्य = भ्रातृव्य, भरण-निवास योग्य (भृ = भरण करना)।

भ्रातृव्य-क्षयणम् = भ्रातृव्य-क्षयण को, भरण-निवास

को (भृ - भरण करना, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

भ्रातुः = भ्राता का (भृ = भरण करना)।

भ्रियमाणा - भ्रियमाणः = भ्रियमाण (भ्री = डरना, भय करना, भरण-पोषण-धारण करना, पालन करना, रक्षा करना)।

भ्रियासम् - भ्रियासम् = भ्रियस् को, भयभीत को, पालक-रक्षक को (भ्री = डरना, भय करना, भरण-पोषण-धारण करना, पालन करना, रक्षा करना)।

भ्रुवि - भ्रुवि = भ्रुवि, भय, पालन, रक्षण (भ्री = डरना, भय करना, भरण-पोषण-धारण करना, पालन करना, रक्षा करना, भृ = भरण करना)।

भ्रूभ्याम् - भ्रूभ्याम् = भ्रू के लिए, भय, पालन, रक्षण के लिए (भ्री = डरना, भय करना, भरण-पोषण-धारण करना, पालन करना, रक्षा करना, भृ = भरण करना)।

म

मकरः = मकर (मक् - हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, स्थानान्तर करना)।

मक्षः = मक्ष, मक्षिका, डसने वाला (मक्ष - डसना)।

मक्षिका - मक्षिका = मक्षिका, डसने वाला (मक्ष - डसना)।

मक्षू = मक्षू, मक्षिका, डसने वाला (मक्ष - डसना, मच - गर्व करना, दुराचारी होना, बोलना, पीसना, कूटना)।

मक्षूतमेभिः = अत्यन्त डसने वालों द्वारा (मक्ष - डसना)।

मखम् = मख को (मख - जाना, स्थानान्तर करना)।

मखस्य = मख का (मख - जाना, स्थानान्तर करना)।

मखस्यते = प्रगति करते हैं (मख - जाना, स्थानान्तर करना)।

मखस्यसे = प्रगति करते हो (मख - जाना, स्थानान्तर करना)।

मखस्युवः = प्रगतिशील युवा (मख - जाना, स्थानान्तर करना, युव - बल होना, तरुण होना, युवा होना, यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना)।

मखाय = मख के लिए (मख - जाना, स्थानान्तर करना)।

मखो = मख, प्रगतिशील (मख - जाना, स्थानान्तर करना)।

मघम् = मघ को, धन को, ऐश्वर्य को (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघवत् = धनवान्, ऐश्वर्यवान्, मघ के समान (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघवद्भ्यः = धनवान्, ऐश्वर्यवान्, मघ के लिए (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघवन् = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघवा = मघवान्, ऐश्वर्यवान्, धनवान् (मघ् = ऐश्वर्य होना, धन होना)।

मघवानः = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघवानो = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघोनः = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघोनम् = धनवान्, ऐश्वर्यवान् को (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघोनाम् = मघों का, धनवानों का, ऐश्वर्यवानों का (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मघोनो = धनयुक्त (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मङ्गल = मङ्गल, प्रगतिशील (मङ्ग - जाना)।

मच = गर्व करने वाला (मच् = गर्व करना, ऋण देना, बोलना, पीसना, कूटना, दुराचरण करना, दुराचारी होना)।

मजभ्यः = शब्दकर्ताओं के लिए (मज् - शब्द करना, ध्वनि करना, कामातुर शब्द करना)।

मज्जभ्यः = मज्ज के लिए, शुद्धि के लिए (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)।

मज्जा = मज्जा, शुद्ध (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)।

मज्जानम् = शुद्ध करने वाले को, स्नान करने वाले को (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)।

मज्मना = शब्दकर्ता (मज् - शब्द करना, ध्वनि करना,

कामातुर शब्द करना)।

मणिः = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)।

मणिकारम् - मणिकारम् = मणिकार को, शब्दकर्ता को (मण् - शब्द करना)।

मणिवालः = मणिवाल, शब्द-विस्तारक, वाणी का विस्तार करने वाले (मण् - शब्द करना, वल् - विस्तार करना, आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

मण्डूकः = मण्डूक, भूषक, विभाजक (मण्ड् - भूषित करना, विभाजन करना, लपेटना)।

मण्डूकान् = मण्डूकों को, भूषकों को, विभाजकों को (मण्ड् - भूषित करना, विभाजन करना, लपेटना)।

मण्डूकि = मण्डूक, भूषक, विभाजक (मण्ड् - भूषित करना, विभाजन करना, लपेटना)।

मत् = मुझसे (सर्वनाम)।

मतयः = मतियाँ, मननशक्ति (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मतस्नाभ्याम् = मतस्नों द्वारा, मननशीलों द्वारा (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मतस्ने = मननशील (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, स्ना - स्नान करना, नहाना, शुद्ध होना)।

मतिः = मति, मननशक्ति (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मतिभिः = मति द्वारा, मनन द्वारा (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मतिम् = मति को (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मती = मति वाले (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मतीः = मतियुक्त (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मतीनाम् = मतियों के (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मती-विदे = मति को जानने वाले (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

मतेः = मति का, मनन का (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मत्यः = मति (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मत्यैः = मतियों द्वारा (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मत्सत् = विचारशील हो, आनन्दित हो, हर्षित हो, तृप्त हो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मत्सति = आनन्दित होता है, हर्षित, तृप्त, विचारशील होता है, कामना करता है, स्तुति करता है (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, स्तुति करना, कामना करना)।

मत्सथा = हर्षित हो, तृप्त हो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मत्सरः = आनन्दगामी हो, आनन्दकारी हो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

मत्सरम् = आनन्दगामी, आनन्दकारी को (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

मत्सरासः = आनन्ददायक (मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

मत्सरासो = आनन्ददायक (मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

मत्सरिन्तमः = अत्यन्त आनन्दगामी, अत्यन्त आनन्दकारी (मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

मत्सि - मत्सि = तृप्त होते हो, हर्षित होते हो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मत्स्यः = मत्स्य (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मत्स्यान् = मत्स्यों को (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मत्स्व = हर्षित हो, तृप्त हो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मत्स्वा = हर्षित हो, तृप्त हो, तृप्त करो, हर्षित करो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मथ्यमानः = मन्थन करते हुए, मन्थन करने वाले (मथ - मथना, विलोडन करना, विचार करना)।

मदः = मद, हर्ष, तृप्ति (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मद-च्युतः = आनन्द-सिंचित (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, च्युत - सींचना, भिगोना, बहना)।

मदच्युतम् = आनन्द-सिंचित को (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, च्युत - सींचना, भिगोना, बहना)।

मदति = मद, हर्ष, तृप्त करता है (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदन्त = हर्षित हो, तृप्त हो (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदन्तः = हर्षित, तृप्त (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदन्ति - मदन्ति = आनन्दित करते हैं, हर्षित होते हैं, तृप्त होते हैं (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदन्तु = आनन्दित हों, हर्षित हों, तृप्त हों (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदम् = मद को, हर्ष को, तृप्ति को (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदस्व = हर्षित, तृप्त (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदाः = मद, हर्ष, तृप्ति (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदानाम् = मदों का, तृप्ति का (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, समाधान करना)।

मदामसि = मद, हर्ष, तृप्ति, आनन्दित करते हो (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदामो = मद, हर्ष, तृप्त करते हैं (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदाय = हर्ष के लिए, तृप्ति के लिए (मद - हर्षित होना, तृप्त करना, समाधान करना)।

मदिन्तम = अत्यन्त आनन्दित करने वाले (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदिन्तमः = अत्यन्त आनन्दित करने वाले (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदिन्तमस्य = प्रकृष्ट आनन्द, प्रकृष्ट हर्ष-स्तुति, तुष्टि, प्रकाश देने वाले का (मद् - आनन्द करना, स्तुति करना, तुष्ट करना, प्रकाशित होना, चमकना, प्रकाश करना, उन्मत्त होना, विनाश करना)।

मदिन्तमानाम् = अत्यन्त आनन्दित करने वालों का (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदिन्तरम् = अति आनन्दित करने वाले को (मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदिरम् = आनन्दित को (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदिरो = आनन्दित (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदिष्ठया = अत्यन्त आनन्दित द्वारा (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मदे = मद के लिए, आनन्द के लिए, मद में, आनन्द

मधुमत्तरः = अधिक मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमन्तः = मधुरता युक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमन्तम् = मधुरता युक्त को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमाध्वीभ्याम् = मधु-माध्वी के लिए (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमान् = मधुरता युक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुवाहनो = मधु-वाहन (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, वह् = वहन करना, ले जाना, ढोना, ढो ले जाना)।

मधुशाखः = मधुरता युक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, शाख् - व्याप्त होना, फैलना, शाखा होना)।

मधुश्चुतम् = मधुश्चुत को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, श्चुत् - टपकना, झरना, सींचना)।

मधुश्चुतो = मधुश्चुत (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, श्चुत् - टपकना, झरना, सींचना)।

मधूनि = मधुओं को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधोः = मधु का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधौः = मधु का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधौ = मधु में (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मध्य = मध्य (सर्वनाम)।

मध्यतः = मध्य से (सर्वनाम)।

मध्यन्दिने = मध्य दिन में (मध्य - मध्य (सर्वनाम), दी

= क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना)।

मध्यम् = मध्य को (सर्वनाम)।

मध्यमम् = मध्यम को (सर्वनाम)।

मध्यमशीः = मध्यमशी (मध्यम् = मध्य को (सर्वनाम), शी = स्वप्ने - निद्रायाम्। सोना, शयन करना)।

मध्यमस्थाः = मध्यम (मध्यम् (सर्वनाम)। स्था-तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

मध्यमाः = मध्यम (सर्वनाम)।

मध्यमाय = मध्यम के लिए (सर्वनाम)।

मध्यमासः = मध्यम, मध्य-मास, बीच का मास (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मध्यमेषु = मध्यमों में (सर्वनाम)।

मध्यमेस्थाः = मध्यमस्थ, मध्यम स्थित (मध्यम (सर्वनाम)। स्था-तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)।

मध्या = बीच, मध्य (सर्वनाम)।

मध्यात् = मध्य से (सर्वनाम)।

मध्ये = मध्य में (सर्वनाम)।

मध्येन = मध्य द्वारा (सर्वनाम)।

मध्वः = मधुरता का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)।

मध्वा = मधु द्वारा (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)।

मध्वो = मधुरता का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)।

मनः = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मननाः = मननशील (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनवः = मननशील (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनुष्यान् = मनुष्यों को (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल

मनोयुजः = मनन से युक्त (मन् = जानना, समझना,

होना, रुकना)।

मन्युम् = मन्यु को, गर्व को (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मन्युषाविणम् = विचारशील सृजनकर्ता को, विचार सामर्थ्य वाले (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, सु - उत्पन्न करना, आसवन करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्यवान्)।

मन्ये = मानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मन्ये = मानता हूँ, जानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मंससे = मनन करते हो, मनन करो (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मम = मेरा (सर्वनाम)।

ममत्तु = आनन्द दे (मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

ममदः = आनन्द, हर्षित प्रसन्न रहो (मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

ममद्धि = आनन्दित हों, हर्षित हों (मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

ममाद = आनन्दित किया, हर्षित किया (मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

ममिरे = मान किया (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

ममे = परिमाण करता है (मा - शब्द करना, नापना,

तौलना, समाना)।

मयः = गति, ज्ञान (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयन्दम् = गति, ज्ञान (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयस्कराय = गति, ज्ञान करने वाले के लिए (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मया = मेरे द्वारा (सर्वनाम)।

मयि = मुझमें (सर्वनाम)।

मयुः = गतिशील, ज्ञानी (मय् - जाना, जानना, पाना)

मयुम् = गतिशील, ज्ञानी को (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयूखैः = मयूखों द्वारा (मय - जाना, स्थानान्तर करना)।

मयूरः = मयूर, गतिशील, ज्ञानी (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयूररोमभिः = मयूर-रोमों द्वारा, प्रगतिशील विद्वानों द्वारा (मय् - जाना, जानना, पाना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

मयूरशेप्या = ज्ञान से क्षरण योग्य (मय् - जाना, जानना, पाना, शिप = क्षरण होना, काटने योग्य होना)।

मयूरान् = मयूरों को, गतिशीलों को, ज्ञानियों को (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयोभु = गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयोभुवः = विद्वान्, गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयोभुवम् = विद्वान्, गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले को (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयोभुवा = विद्वान्, गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयोभूः = गति-ज्ञान-स्वरूप, गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना)।

मयोभून = प्रगति, ज्ञान को धारण करने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

मरीचयः = मरीचिगण, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरीची: = मरीची, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत् = मरुत्, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुतः - मरुतः = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुताम् - मरुताम् = मरुतों का, मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुतो - मरुतो = मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वः - मरुत्वः = मरणशीलता (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वतीयम् - मरुत्वतीयम् = मरुत्वतीय को, मरणशील को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वतीयाः - मरुत्वतीयाः = मरुत्वतीय, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वते - मरुत्वते = मरुत्वत् के लिए, मरणशील युक्त के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वन् = हे मरुत्व! (मृ - मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वन्तम् = मरुत्वान्, मरुतों से युक्त, मरणशील से युक्त (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुत्वान् - मरुत्वान् = मरुत्वान्, मरुतों से युक्त, मरणशील से युक्त (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुद्गण - मरुद्गणः = मरणशीलों का समूह, मरुतों का समूह (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुद्भिः - मरुद्भिः = मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुद्भ्यः - मरुद्भ्यः = मरणशीलों के लिए, मरुतों के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुद्भ्यो = मरणशीलों के लिए, मरुतों के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मरुभिः - मरुभिः = मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्क - मर्कः = लेने वाला, ग्राही, मरणशील (मर्क - लेना, ग्रहण करना, कूदना, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्कटः - मर्कटः = लेने वाला, ग्राही (मर्क - लेना,

ग्रहण करना, कूदना, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्काय - मर्काय = लेने वाले के लिए, ग्राही के लिए (मर्क - लेना, ग्रहण करना, कूदना, मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्जयध्वम् = शुद्ध करने को (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना। मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्जयन्त = शुद्ध करते हैं (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्जयन्तो = शुद्ध करते हुए (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना। मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्जयसि = शुद्ध करते हो (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्जयामसि = शुद्ध करते हो (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्ज्यः = मार्जनीय, शोधनीय, शुद्धतायुक्त, पवित्रतायुक्त (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्ज्यम् = मार्जनीय, शुद्धतायुक्त, पवित्रतायुक्त को (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्डिता - मर्डिता = सुखी, प्रसन्न (मृड् - सुखी होना, सुखी करना, प्रसन्न होना)।

मर्तः - मर्तः = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्तम् = मरणशील को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्तस्य = मरणशील का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्तासः = मरणशील (मृ - मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्तास = मरणशील (मृ - मरना, देहत्याग करना)।

मर्तासो = मरणशील (मृ - मरना, देहत्याग करना)।

मर्तो = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्तः - **मर्त्तः** = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यः - **मर्त्यः** = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यकृतम् - **मर्त्यकृतम्** = मर्त्य-कृत को, मरणशील द्वारा किये हुए को (मृ = मरना, देहत्याग करना, कृ - करना)।

मर्त्यम् - **मर्त्यम्** = मरणशील को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यस्य - **मर्त्यस्य** = मरणशील का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यात् = मर्त्य से, मरणशील से (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यान् - **मर्त्यान्** = मर्त्यों को, मरणशीलों को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यानाम् - **मर्त्यानाम्** = मर्त्यों का, मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्याय - **मर्त्याय** = मर्त्य के लिए, मरणशील के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्येषु - **मर्त्येषु** = मरणशीलों में (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्त्यैः = मरणशीलों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्द्धतः = हिंसा करते हैं, आर्द्र करते हैं (मृध - दबाना, मृध - मार डालना या दुःख देना, आर्द्र करना, गीला करना, गीला होना)।

मर्धिष्टम् - **मर्धिष्टम्** = हिंसित करो (मृध - दबाना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, गीला करना)।

मर्मृजानः = शुद्ध किया जाता हुआ, पवित्र किया जाता हुआ (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्मृज्यन्ते = अत्यन्त शुद्ध करते हैं, अत्यन्त पवित्र करते हैं (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्मृज्यमानः = शुद्ध किया जाता हुआ, पवित्र किया जाता हुआ (मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना, मृज -

स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना)।

मर्माणि - **मर्माणि** = मर्म को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्म्यः = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्म्यश्रीः = मर्म्य, मरणशील का आश्रय, सेवा (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्म्याः - **मर्म्याः** = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्म्यादायै - **मर्म्यादायै** = मर्म्यादा के लिए (मर्म्याद् - सीमा बनाना, मर्म्यादा होना या करना, मृ - मरना, दा - देना)।

मर्म्यो = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्म्यतम् - **मर्म्यतम्** = मर्म्य के लिए, मरणशील के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मर्मम् = मृष्ट, सहनशील, क्षमाशील, विचारशील (मृष्ट - सहन करना, क्षमा करना, मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना)।

मलम् = मल को (मल = धारण करना, घर्षण करना)।

मलात् = मल से (मल = धारण करना, घर्षण करना)।

मलिम्लवः = मल को काटने वाला (मल = धारण करना, घर्षण करना, लू - काटना, चीरना)।

मलिम्लुचाय = मलिम्लुच के लिए, मल को जाने वाले के लिए, जानने वाले के लिए (मल = धारण करना, घर्षण करना, म्लुच् - जाना, जानना, पाना)।

मलिम्लून् = मल को काटने वाला (मल = धारण करना, घर्षण करना, लू - काटना, चीरना)।

मशकान् = मशकों को (मश् = शब्द करना, रोष करना)।

मसूराः = मसूर (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मस्तिष्केण - **मस्तिष्केण** = मस्तिष्क द्वारा (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना, मस्त् - धारण करना, सहना, सहन करना, समर्थ होना)।

मंस्थाः = मन में स्थित (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द

महान्तम् = महान् को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

महाम् = बड़े, पूज्य, महान् को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

महामनसाम् = महान् मन वाले को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

महामहिष्रतम् = महान् व्रती को, महाव्रती को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

महारथो = महारथी (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना। रम् = रमना, क्रीडा करना)।

महावीरस्य = महावीर का (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

महा-वैश्व-देवः = महा-वैश्वदेव, सभी महान् देवगण (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

महांसि = महत्ताओं को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

महाहस्ती = महाहस्ती, महान् हाथ वाला (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

महि = महत् को, पूज्य, महान्, पूजते हैं (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिक्षत्रो = महि और क्षत्र (मह - पूजा करना, पूज्य

होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना, क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

महित् = महित्, पूज्य, महान्, पूजते हैं (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महित्वना = महिमा द्वारा (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महित्वम् = महित्व को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महित्वा = महित्व द्वारा, महत् होकर (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिना = महि द्वारा, महानता द्वारा (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिने = महानता में (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिमा = महिमा, महत्व, महानता (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिमानः = महिमावान्, महत्व से युक्त (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिमानम् = महिमावान् को, महत्व से युक्त को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिम्नः = महिमावान् का, महान् का (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार

करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिम्ने = महिमावान्, महत्त्व से युक्त, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्त्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिब्रतः = महिब्रत, महान व्रत वाले (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना, वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

महिघ्रत = हे महान् घ्रत वाले (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

महिषः = महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित
(मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान
करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना,
बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिषम् = महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित
को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान
करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना,
बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिषस्य = महिष का, महिमावान् का, महान् का (मह
- पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना,
सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना,
बोलना, कहना)।

महिषाः = महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित
(मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान
करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना,
बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिषा = महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित
(मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान

मंहिष्ठो = महान्तम, सर्वाधिक प्रकाशित, सबसे बड़ा
(मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान

करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

मही: = मही, महिमावान्, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

मही = मही, महिमावान्, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महीनाम् = पूजनीयों का, महिमावानों का (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महीपते = महीपति, महिमावान् पति, महान् पति (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

महीभि: = महानों द्वारा (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महीम् = पूजनीय, मही को, महिमावान्, महान् को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महीयुव: = पूजनीय युव, महीयुव, महिमावान् युव (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना, यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)।

महे = पूजा करने के लिए, हे महान्, पूज्य, महिमावान्, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महेमा = महान्, पूज्य, महिमावान्, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना,

कहना)।

महो = बढ़े, महिमावान्, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महोनाम् = महान् का (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महोभि: = महिमावानों द्वारा, महानों द्वारा (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महना = पूज्य, महिमावान्, महान् द्वारा (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

मह्यम् = मेरे लिए (सर्वनाम)।

मह्या = पूज्या, महिमावान्, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

मह्यै = पूज्य के लिए, महिमावान्, महान् के लिए (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

मा = नहीं, मत (अव्यय)।

मा = मुझे (मा-माम् - सर्वनाम)।

माकि: = कोई नहीं (अव्यय)।

मागध: - **मागध:** = मागध (मग् - लेना, मगध - घेरना, चाकरी करना)।

मागधम् = मागध को (मग् - लेना, मगध - घेरना, चाकरी करना)।

माघशंस: = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

मात: = माता (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मातर: = माता (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना

समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मानुषेभ्यः = मानुषों के लिए, मननशीलों के लिए (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मानुषेषु = मानुषों, मननशीलों में (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मान्थालः = मान्थाल, मननशील, मान्य (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मान्दाः = मननशील, मान देने वाले, आनन्दित होने वाले, विनाश करने वाले (मन्द् - आनन्द करना, स्तुति करना, तुष्ट करना, प्रकाशित होना, चमकना, प्रकाश करना, उन्मत्त होना, विनाश करना, मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मान्दार्यस्य - मान्दार्यस्य = मान्दार्य का, मननशील, मान देने वाले, आनन्दित होने वाले, विनाश करने वाले का (मन्द् - आनन्द करना, स्तुति करना, तुष्ट करना, प्रकाशित होना, चमकना, प्रकाश करना, उन्मत्त होना, विनाश करना, मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मान्यस्य = मान्य का (मन् - जानना, समझना, विचार करना, मान - ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा करना, शोध करना)।

माम् = मुझको (सर्वनाम)।

मामकाः = मेरे (सर्वनाम)।

मामकानाम् = मेरे (सर्वनाम)।

मामहन्ताम् = पूजनीय को, महान् को (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

मामहानः = बड़े, पूज्य, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

मामृजे = शुद्ध किया जाता है, पवित्र किया जाता है (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

मायया = माया द्वारा (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

माया = माया (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मायाम् = माया को (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मायायै = माया के लिए (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मायाविनो = मायावी (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना)।

मायिनः = माया वाले (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मायिनाम् = माया वालों का (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मायोः = माया वाले का (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मारीचिः = मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मारुत = हे मारुत, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मारुतः - मारुतः = मारुत् का, मरणशील का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मारुतम् - मारुतम् = मारुत को, मरणशील को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मारुताः - मारुताः = मारुतगण, मरणशील (मृ =

मरना, देहत्याग करना)।

मारुते - मारुते = मारुत में, मरणशील में (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मारुतो = मारुत, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मार्गारम् - मार्गारम् = मार्गार को, मार्गी को, अन्वेषी को, संस्कारी को (मार्ग - अन्वेषण करना, खोजना, संस्कार करना, स्वच्छ करना)।

मार्जालीयः - मार्जालीयः = मार्जालीय, शाब्दिक, शुद्धकर्ता (मार्ज - शब्द करना, शुद्ध करना)।

मार्जम् - मार्जम् = शब्द करता हूँ, शुद्ध करता हूँ (मार्ज - शब्द करना, शुद्ध करना)।

मार्ष्टु - मार्ष्टु = शुद्ध करो (मृष् - सहना, असत्य बोलना, सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, हर्ष होना, हँसना, जीतना, घबराना, मृज् = शुद्ध करना, मार्ज = शब्द करना)।

मार्डीकम् = सुखकारी को (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मावते = मेरे समान, सम्मान युक्त (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मांश्चत्वः = ज्ञान की याचना करने वाला, मान का क्षरण करने वाला, मान का प्रोक्षण करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)।

मांश्चत्वे = ज्ञान की याचना करने वाला, मान का क्षरण करने वाला, मान का प्रोक्षण करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)।

माषाः = हिंसक (मष् - हिंसा करना)।

मांसभिक्षाम् = मांस-भिक्षा को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना, भिक्ष - याचना करना, मांगना)।

मांसम् = मांस को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासरम् = मासर को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासरेण = मासर द्वारा, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले द्वारा (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासरैः = मासरों द्वारा, रूपान्तरण करने, मापन करने वालों द्वारा (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासा = मास, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासाः = मास, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासान् = मासों को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासाम् = मासा को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मासेभ्यः = मासों के लिए (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

मांसेभ्यः = मांसों के लिए (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)।

माँस्पचन्या = मांस-पचाने वाले (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना, पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

माहि = मान करो (मा - नापना, तौलना, समाना)।

माहिनः = पूज्य, महान् (मह - पूजा करना, पूज्य होना)।

माहिनम् = पूज्य, महान् को (मह - पूजा करना, पूज्य होना)।

माहेन्द्रा = महेन्द्र का (मह - पूजा करना, पूज्य होना, इन्द्र - परम ऐश्वर्य होना, वा - गति करना, बहना, वे - बुनना, रचना करना)।

मितः = मित, मानित, मित्र (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना। मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, नरम होना, मृदुल होना)।

मितासः = मित, मानित, मित्र (मिद् - स्निग्ध होना,

समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)।

मिथु = मिथु, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी (मिथु - समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)।

मिथुनासो = अनेक मिथु, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी (मिथु - समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)।

मिथू = मिथू, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी (मिथू - समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)।

मिथो = मिथ, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी (मिथ - समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)।

मिदम् = मिद को, प्रेमी को (मिद - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)।

मिनाति = प्रक्षेपण करता है, स्थापन करता है, रक्षा करता है (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना)।

मिनोतु = प्रक्षेपण करें, स्थापन करे, रक्षा करे (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, फेंकना, फैलाना)।

मिमते = गति, शब्द, मान, रक्षा करता है (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मीम - जाना, शब्द करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मिमन्ति = गति करते हैं, शब्द करते हैं, रक्षा करते हैं (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मीम - जाना, शब्द करना)।

मिमाथाम् = प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा, मान करो (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मिमानः = प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा करता हुआ (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान

करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मिमाना = प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा करता हुआ (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मिमानाः = प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा करता हुआ (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मिमिक्षतम् - मिमिक्षतम् = सिंचन करें (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मिह - गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना)।

मिमिक्षताम् - मिमिक्षताम् = सिंचन करें (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मिह - गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना)।

मिमिक्षतुः = सिंचन करते हैं (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मिह - गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना)।

मिमिक्षे - मिमिक्षे = सिंचन करते हैं (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मिह - गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना)।

मिमिती = मान, गति, रक्षा, सिञ्चन करते हैं (मा-मि - नापना, तौलना, मान करना, परिमाण करना, शब्द करना)।

मिमिहि = मान करो, गति करो, रक्षा करो, सिञ्चन करो (मा-मि - नापना, तौलना, समाना, मीम - जाना, शब्द करना, मिह-मीढ - गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना)।

मिमेति = शब्द करता है, गति करता है, रक्षा करता है (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मीम - जाना, शब्द करना)।

मियेध्य - मियेध्य = गतिशील करो (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना)।

मिश्राः - मिश्राः = मिश्र (मिश्र - मिश्रित करना, एकत्र करना)।

मिषतः = सिञ्चन, प्रोक्षण, विवाद करने वाला (मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना)।

मिषेण = सिञ्चन, प्रोक्षण, विवाद द्वारा (मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना)।

मीदुषः = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाला (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीदुषे = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले में (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीदुषो = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाला (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीदुष्टम् = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले को (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीदुष्टम् = हे अत्यन्त सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीदुष्टमाय = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले के लिए (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीद्वः = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाला (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीद्वान् = सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मीवता = स्थूलता (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मीव् = स्थूल होना, मोटा होना)।

मृक्षतम् - मृक्षतम् = एकत्र करे (मृक्ष - एकत्र करना)।

मृगः = मृग, अन्वेषी (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृगयम् = मृगय को, अन्वेषी को (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृगयुभ्यः = मृगय के लिए, अन्वेषी के लिए (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृगयुम् = मृगयु को, अन्वेषी को (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृगाः = मृग, अन्वेषी (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृगाणाम् = मृगों का, अन्वेषियों का (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृगो = मृग, अन्वेषी (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)।

मृजन्ति = शुद्ध करते हैं, पवित्र करते हैं (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

मृजानो = शुद्ध करता हुआ, पवित्र करता हुआ (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

मृज्यते = शुद्ध करता है, पवित्र करता है (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

मृज्यसे = शुद्ध करता है, पवित्र करता है (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

मृज्यमानो = मृज्यमान, अलंकृत करता हुआ (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)।

मृड = सुख (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडय = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडयन्तः = सुखकारी (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडयन्तु = सुख करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडयाति = सुखी करता है (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडयासि = सुखी करता है (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडात = सुखी करें (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडातः = सुख से (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडाति = सुखी करता है (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृडीकम् = सुखकारी (मृड - सुखी होना, सुख देना)।

मृद्वम् = प्रसन्न करो, सुख करो (मृड - आनन्द करना, सन्तोष पाना, सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना)।

मृणासि = मारते हो (मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)।

मृणीहि = मार दो (मृड - सुखी होना, सुख देना, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)।

मृत्तिका - मृत्तिका = मृत्तिका (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृत्यवे - मृत्यवे = मृत्यु के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृत्युः = मृत्यु (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृत्युम् = मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृत्यो = मृत्य, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृत्योः - मृत्योः = मृत्यु का (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृदम् = मृद को (मृद = पीसना, कूटना, चूर्ण करना, कोमल बनाना)।

मृद्वीम् - मृद्वीम् = कोमल को, पीसने, कूटने वाले को, चूर्ण को (मृद = पीसना, कूटना, चूर्ण करना, कोमल बनाना)।

मृधः = हिंसक, आद्र (मृध - दबाना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, आद्र करना, गीला करना, गीला होना)।

मृन्मयीम् = हिंसामय को (मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)।

मृश्रे - मृश्रे = विचार में (मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना)।

मृषे = सहनशील, क्षमाशील, विचारशील के लिए (मृष - सहन करना, क्षमा करना, मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना)।

मृष्टो = मृष्ट, सहनशील, क्षमाशील, विचारशील (मृष - सहन करना, क्षमा करना, मृश - विचार करना, स्पर्श

करना, देखना)।

मृषे = सहन, क्षमा, विचार, मार्जन करता हूँ (मृष - सहन करना, क्षमा करना, मार्जन करना, शुद्ध करना)।

मुक्षीय - मुक्षीय = एकत्र करें, छुड़ायें (मुक्ष = राशि करना, सञ्चित करना, एकत्र करना, छूटना)।

मुक्षीया - मुक्षीया = एकत्र करें, छुड़ायें (मुक्ष = राशि करना, सञ्चित करना, एकत्र करना, छूटना)।

मुख = मुख (मुख् - जाना, खाना, मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुखः = मुख (मुख् - जाना, खाना, मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुखतः = मुख से (मुख् - जाना, खाना, मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुखम् - मुखम् = मुख को (जाना, खाना, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुखा = मुख (मुख् - जाना, खाना, मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुखात् = मुख से (जाना, खाना, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुग्धाय = मुग्ध के लिए, मोहित के लिए (मुह - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना)।

मुच् = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)।

मुच्यध्वम् = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)।

मुच्यन्ताम् = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)।

मुच्ये = मुक्त करें, खोलें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)।

मुञ्च = मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

मुञ्चतम् = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

मुञ्चति = मुक्त करता है (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

मुञ्चतु = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

मुञ्चन्तु = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

मुञ्चमाना = मुक्त करने वाले (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)।

मुञ्चामि = कहता हूँ, (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)।

मुदः = प्रसन्न करने वाले (मुद् - आनन्द करना, मिश्रित करना, मिलना, एकत्र करना, प्रसन्न होना)।

मुद्गाः = प्रसन्न करने वाले (मुद् - आनन्द करना, मिश्रित करना, मिलना, एकत्र करना, प्रसन्न होना, गम् - जाना)।

मुनीनाम् = मुनियों का (मुण - प्रण करना, वचन देना, शब्द करना, सीचना। मु - बाँधना, मू - बाँधना, जकड़ना)।

मुमुक्तम् = मुक्त किया (मुच् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)।

मुमुग्धि = मुग्ध करो (मुह - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना)।

मुमुचानः = मुक्त करने वाले (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)।

मुष्कौ = मुष्क (मुष्क् - जाना, घर्षण करना, मुष् - चुराना)।

मुष्टिः = मुष्टि (मुष् - चुराना, मुश् - खण्डन करना, तोड़ना, छेदना)।

मुष्टिम् - मुष्टिम् = मुष्टि को (मुष् - चुराना, मुश् - खण्डन करना, तोड़ना, छेदना)।

मुष्णताम् = चुरायें (मुष् - चुराना, मुश् - खण्डन करना, तोड़ना, छेदना)।

मुहयन्तु = मोहित हों, मोहित करें (मुह - मोहना,

मोहित होना, मुग्ध होना)।

मुहुः = प्रायः, बार- बार (अव्यय)।

मूकम् = मूक को, मुक्त करने वाले को, बोलने वाले को (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना, मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना)।

मूजवतः = वाणी युक्त (मुज् = शब्द करना)।

मूजवतो = वाणी युक्त (मुज् = शब्द करना)।

मूत्रम् - मूत्रम् = मूत्र को (मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना, मूत्र = जल गिरना, मूत्र त्याग करना)।

मूत्रात् - मूत्रात् = मूत्र से (मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना, मूत्र = जल गिरना, मूत्र त्याग करना)।

मूरैः = घेरों से, द्वारा (मूर् - घेरना, लपेटना)।

मूरो = घेरा, घेरने वाले (मूर् - घेरना, लपेटना)।

मूर्द्धन् - मूर्द्धन् = मूर्द्धा पर स्थित (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूर्द्धा - मूर्द्धा = उच्च (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूर्द्धानम् - मूर्द्धानम् = मूर्द्धा को (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूर्धा - मूर्धा = उच्च (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूर्धानम् - मूर्धानम् = उच्च (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूर्धनः - मूर्धनः = उच्च (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूर्ध्ना - मूर्ध्ना = उच्च (मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध - उच्च होना)।

मूलम् - मूलम् = मूल को (मूल् = बोना, उगना, उत्पन्न होना)।

मूलेभ्यः = मूल के लिए (मूल् = बोना, उगना, उत्पन्न होना)।

मूषिका = मूषिका (मूष् = चुराना, मूसना, चोरी करना)।

मे = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)।

मेध्याय = विद्वान्, सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले के लिए (मेध् = समझना, जानना, हिंसा करना)।

मेडिम् = गति, प्रगति को (मी - समझना, जानना, जाना)।

मेद्वरम् = विद्वान्, सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले को (मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)।

मेथेते = हिंसा करता है, जानता है (मेथ - समझना, जानना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना)।

मेदः = मेद, स्नेह (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)।

मेदसः = मेद की, स्नेह की (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)।

मेदसाम् = मेदों का, स्नेहों का, मित्रों का (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)।

मेदस्तः = मेद, स्नेह (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)।

मेदोभ्यः = मेद के लिए, स्नेह के लिए (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)।

मेद्ध्यः = मेद, स्नेह (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)।

मेधम् = मेध को (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधया = मेधा से (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधसातये = मेधावी-सेवाभावी के लिए (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना, सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

मेधसाता = मेधावी-सेवाभावी (मेधा - शीघ्र समझना,

मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना, सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

मेधसातौ = मेधावी और सेवाभावी (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना, सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

मेधस्य = मेध का (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधाः = मेधा (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधाकारम् = मेधाकार को (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना, कृ - करना)।

मेधाभिः = मेधावियों द्वारा (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधाम् = मेधा को (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधाय = मेधा के लिए (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधायै = मेधा के लिए (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधाविनम् = मेधावी को (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधाविनः = मेधावी (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधिरो = मेधावान् (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेधी = मेधावान् (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेध्यः = मेधावी (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेध्यातिथे = हे मेध्य अतिथि (मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना, अत् - सतत गमन करना)।

मेध्याय = मेधावी के लिए (मेध् - समझना, जानना,

सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेध्यासः = मेधावी (मेध - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)।

मेनका = मेनका (मी-मे - ग्रहण करना, प्रतिदान लेना, शीघ्र समझना)।

मेम्यत् = ग्रहण किया (मी-मे - ग्रहण करना, प्रतिदान लेना, शीघ्र समझना)।

मेषः = मेष (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषम् = मेष को (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषस्य = मेष का (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषाः = मेष (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषाय = मेष के लिए (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषी = मेष (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषेण = मेष द्वारा (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेषैः = मेषों द्वारा (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेष्यः = मेष्य, सिञ्चन करने वाला, प्रोक्षण करने वाला (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेष्यै = मेष्य के लिए (मिष- सींचना, प्रोक्षण करना)।

मेहना = सिञ्चन करने वाले (मिह - सिञ्चन करना, घर्षण करना, दबाना)।

मैघीः = सिञ्चन करने वाले (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मिह - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, दबाना)।

मैत्रः - मैत्रः = मैत्र (मिद - स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, प्रीति करना, प्यार करना)।

मैत्राः = मैत्र (मिद - स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, प्रीति करना, प्यार करना)।

मैत्रावरुण्यः = मैत्र-वरुण, मित्र-वरुण (मिद - स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, प्रीति करना, प्यार करना, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

मैत्रावरुण्यो = मित्र और वरुण्य (मिद - स्निग्ध होना,

पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, नरम होना, मृदुल होना, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

मैत्र्यः = मैत्र (मिद - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, नरम होना, मृदुल होना)।

मैनालम् = मैनाल को (मी - जाना, जानना, हिंसा करना)।

मो = बन्धन (मू = बाँधना)।

मोघम् = मोघ को, बन्धन को, विस्मरण को (मु - बाँधना, मुह - पागल होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)।

मोचि = मोचित करता है, छोड़ता है, प्रसन्नता देता है (मुच - बोलना, कहना, पीसना, ठगना, मुच - छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना)।

मोदः = आनन्द (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)।

मोदध्वम् = आनन्द करो (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)।

मोदमानः = आनन्द करते हुए (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)।

मोदमानाः = आनन्द करते हुए (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)।

मोदाः = आनन्द (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)।

मोदाय = आनन्द के लिए (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)।

मोषीः = मोषक (मूष् = चुराना, मूसना, चोरी करना)।

मोहः = मोह, भूल, भ्रम (मुह - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)।

मोहयन्ती = मोहती हुई, मोहित करती हुई (मुह - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)।

मौक् = मुक्त करें (मुच्, मुक् = मुक्त करना)।

मृदसम् - म्रदसम् = म्रद (म्रद् - मर्दन करना, पीसना, कूटना)।

मृदा - म्रदा = म्रद (म्रद् - मर्दन करना, पीसना, कूटना)।

मरियसे - म्रियसे = मरते हो (मृ-म्री - मरना, प्राण त्यागना)।

य

यः = जो (सर्वनाम)।

यकः = यक (या - जाना, जानना, पाना। यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यकृत - यकृत् = यकृत् (या - जाना, जानना, पाना, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना। कृ = करना)।

यक्किष - यक्किष = यक्किष (या - जाना, जानना, पाना। यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना। कृ = करना)।

यक्ना = यक्न से, यक्न द्वारा (या - जाना, जानना, पाना, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना। कृ = करना)।

यक्ष्णाम् - यक्ष्णाम् = यक्षों का (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्षत् - यक्षत् = पूजा की (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्षते = पूजा, सत्कार करता है (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्षम् = पूज्य को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्षम् = पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्ष्मस्य - यक्ष्मस्य = यक्ष्म का (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्ष्माणाम् = यक्ष्माण को, यक्ष्मो का (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्ष्मात् - यक्ष्मात् = यक्ष्मा से (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्ष्यते - यक्षयते = पूजता है (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्ष्यते = यक्षते हैं (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्ष्व - यक्ष्व = पूजा करो (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यक्षि - यक्षि = पूजा करो (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

यच्छ = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)।

यच्छत = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)।

यच्छतम् = प्रदान करें (यच्छ = देना)।

यच्छतु = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)।

यच्छन्ताम् = दो (यच्छ = देना)।

यच्छन्ति - यच्छन्ति = देते हैं (यच्छ = देना)।

यच्छसे = प्रदान करते हो, देते हो (यच्छ = देना)।

यच्छस्व = प्रदान करो (यच्छ = देना)

यच्छात् = प्रदान करे (यच्छ = देना)।

यच्छामि = प्रदान करता हूँ (यच्छ = देना)।

यज = यजन करो (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजत = यजन करो (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजतः = यजन करो (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजतस्य = यजनकर्ता का (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजताम् = यजन करो (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजति = यजन करता है (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजते = यजन करता है (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजत्र - **यजत्र** = यजन के पालक-रक्षक (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, त्रै - पालन करना)।

यजत्रम् = यजन के पालक-रक्षक को (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, त्रै - पालन करना)।

यजत्रा = यजन के पालक-रक्षक (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, त्रै - पालन करना)।

यजत्राः - **यजत्राः** = यजनपालक, यजन के पालक-रक्षक (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजत्रैः = यजन के पालक-रक्षकों द्वारा (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, त्रै - पालन करना)।

यजथाय = यजन के लिए, यजनकर्ता के लिए (यज् - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजध्वै = यजन के लिए (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजन् = यजन करता हुआ, यजन करने वाले (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजनम् = यजन को (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजने = यजन में (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजन्ति - **यजन्ति** = यजन करते हैं (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजन्ते = यजन करते हैं (यज् - देवपूजा, संगति, दान करना)।

यजमानः = यजमान, यजनकर्ता (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजमानम् = यजमान को, यजनकर्ता को (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजमानस्य = यजमान का (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजमानाः = यजमान (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजमानाय = यजमान के लिए (यज् = देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजमाने = यजमान में, यजन करने वाले में (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजसि = यजन करते हो (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजस्व = यजन करो (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजहात् = यजन करो (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजा = यजन करो (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजामहाः = यजामह, यजन करते हैं, महान् यजनकर्ता (यज् = पूजा करना, देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

यजामहे = यजन करते हैं (यज् = पूजा करना, देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजासि = यजन करते हो (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजिष्ठः = यजिष्ठ, अतिशय यजन करने वाला, यजनकर्ता (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजिष्ठम् = यजिष्ठ को, अतिशय यजन करने वाले को, यजनकर्ता को (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजिष्ठेन = यजिष्ठ द्वारा, अतिशय यजन करने वाले को, यजनकर्ता द्वारा (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजिष्ठो = यजिष्ठ, अतिशय यजन करने वाला (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजीयान् = यजन करो (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजुः = यजन करने वाला, यजुर्वेद (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)।

यजुर्भिः = यजुर्षों द्वारा (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजुर्भीः = यजुर्षों द्वारा (यज् - देवपूजा करना, अर्पण

करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यजुर्भ्यः - यजुर्भ्यः = यजुः के लिए (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजुषा = यजुष् द्वारा (यज् = देवपूजा, संगतिकरण)।

यजुषे = यजुष् में (यज् = देवपूजा, संगतिकरण)।

यजुषे-यजुषे = प्रत्येक यजुष में (यज् = देवपूजा, संगतिकरण)।

यजूंषि = यजुष्, यजुर्वेद के मन्त्र (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजे = यजन करता है (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यज्ज - यज्ञ = यजन (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्जः - यज्ञः = यजन (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जन्यम् - यज्ञन्यम् = यजन करने वाले को (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)

यज्जपतिः - यज्ञपतिः = यज्ञपति, यजन का स्वामी, रक्षक (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

यज्जपतिम् - यज्ञपतिम् = यजनपति को, दिव्यगुण सम्पन्न यजनपति को (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

यज्जप्रीः - यज्ञप्रीः = यजनप्रेमी (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना। प्री - प्रेम करना)।

यज्जम् - यज्ञम् = यजन को (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)।

यज्ञ-वाहसम् = यजनवाहक को (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना, वह - बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

यज्जा = यजन (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जवाहसि - यज्ञ-वाहसि = यजनवाहक (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना, वह - बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

यज्जसा - यज्ञसा = यजन द्वारा (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जस्य - यज्ञस्य = यजन का (यज्ञ = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्जात् - यज्ञात् = यज्ञ से, यजन से (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञान् = यज्ञों को, यजनों को (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञानाम् = यज्ञों का, यजनों का (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्ञाम् = यज्ञों को, यजनों को (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञाय = यजन के लिए (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञायज्ञियम् = यजन ही यजनकर्ता को (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञिय = यजनीय, यजनकर्ता (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्जियः - यज्ञियः = यजनीय, यजनकर्ता (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जियम् - यज्ञियम् = यजनीय को, यजनकर्ता को (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जियस्य - यज्ञियस्य = यजनीय का, यजनकर्ता का (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जिया - यज्ञिया = यजनीय (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जियानाम् - यज्ञियानाम् = यजनीय का, यजनकर्ता का (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्जियाय - यज्ञियाय = यजनीय के लिए, यजनकर्ता के लिए (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञियासः = यजनीय, यजनकर्ता (यज् देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जियासो - यज्ञियासो = यजनीय, यजनकर्ता (यज देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जियेभ्यः - यज्ञियेभ्यः = यजनीयों के लिए, यजनकर्ता के लिए (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञियेभ्यो - यज्ञियेभ्यो = यजनीयों के लिए, यजनकर्ता के लिए (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्जे - यज्ञे = यज्ञ में, यजन में, देवपूजा, संगतिकरण, दान कर्म में (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)।

यज्जेन - यज्ञेन = यज्ञ द्वारा (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)।

यज्जेषु - यज्ञेषु = यजनों में (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यज्जैः - यज्ञैः = यज्ञों द्वारा (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)।

यज्जो - यज्ञो = यजन (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्यः = यजनीय (यज - देवपूजा करना, देना, संगतिकरण, दान करना)।

यज्यवे = यजनीय के लिए (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)।

यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)।

यतः = जिससे (सर्वनाम)।

यतते = यत्न करता है (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यतध्वम् = यत्न करो (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यतन्ते = यत्न करते हैं (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यतस्व = यत्न करो (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यति = यत्न करने वाला (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यतीः = यत्न करने वाला (या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना, यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय

करना, ठहराना)।

यते = यत्न करने वाला (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यतेभ्यः = यत्न करने वाले के लिए (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यतो = जिससे, जैसे (सर्वनाम)।

यतो-यतो = जैसे-जैसे (सर्वनाम)।

यतोजाः = यत्न करने वाले (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यत्र - यत्र = जहाँ (अव्यय)।

यत्रा = यत्र, जहाँ, यत्न करने वाले (यत्र = जहाँ (सर्वनाम)। यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यत्राम् = यत्र, जहाँ, यत्न करने वाले (यत्र = जहाँ (सर्वनाम)। यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार।

यथाभागम् = भाग के अनुसार (भग्-भज् = देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना)।

यथायथम् = यथावत्, जैसा-जैसा भी है (अव्यय)।

यथावशम् = यथावश, जैसा भी वश है (अव्यय)।

यथासत् = यथावत्, जैसा-जैसा भी है (अव्यय)।

यद् = जो (सर्वनाम)।

यदा = जब (अव्यय)।

यदि = यदि (अव्यय)।

यदी = यदि (अव्यय)।

यदुम् = यदु को (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यत्वा = यत्न करके (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

यत्वा = जिसे, जो, यद्यपि (अव्यय)।

यद्वा = यद् वा, जो भी, यद्यपि (अव्यय)।

यन् = उद्धार करता हुआ (या - जाना, प्राप्त होना,

करने वालों के लिए (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमयन्ति = यमन करते हैं (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमयिष्णवः = नियमन करने वाले, पोषण करने वाले (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यमराज्यम् = यमराज्य को (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना, राज् - चमकना, प्रकाश करना)।

यमराज्ये = यम-राज्य में (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना, राज् - चमकना, प्रकाश करना)।

यमसूम् = नियमन-नियन्त्रण, पोषण को उत्पन्न करने वाले (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना, सु-सू - उत्पन्न करना)।

यमसे = यम के लिए (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमस्य = यम का (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमाय = यम के लिए (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमेन = यम द्वारा (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमो = यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना,

रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यम्या = यम्य (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यम्यै = यम्य के लिए (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यय = प्राप्त करो (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यया = जिससे (सर्वनाम)।

यया = पृथक् किया (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।
यु = मिलाना, अलग करना)।

ययिवान् = प्रगतिवान् (या - जाना, जानना, पाना)।

ययुः = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)।

ययोः = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)।

यवम् = यव को (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवमत् = संयुक्त (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवमन्तः = पृथक् करने वाले (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवय = मिश्रित करो, पृथक् करो (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवस-प्रथमानाम् = यवस में प्रथम, मिलाने अलग करने वालों में प्रथम, समाप्त करने वालों में प्रथम (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना, प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

यवसम् = सम्बन्धी को (यु = मिलाना, अलग करना, बन्धन करना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवसे = मिश्रित करो, पृथक् करो (यु = मिलाना, अलग करना, बन्धन करना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवसेन = यवस से, मिलाने, अलग करने से, उपसंहार, समापन से (यु = मिलाना, अलग करना, बन्धन करना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवाः = यव (यु = मिलाना, अलग करना, बन्धन

करना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवानाम् = यवों का (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवाशिरः = यवाशिर (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना। शिर् - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)।

यवाशिरम् = यवाशिर को (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना। शिर् - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)।

यविष्ठ = हे यविष्ठ, अत्यन्त मिलनशील (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यविष्ठम् = यविष्ठ को (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यविष्ठा = यविष्ठ, अत्यन्त मिलनशील (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यविष्ट्य = सर्वाधिक मिलाने व अलग करने योग्य (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवैः = यवों द्वारा (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवो = यव, मिलन, पृथक्-करण (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यव्या = यव्य, यव योग्य, मिलाने योग्य, अलग करने योग्य (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यव्याभिः = यव्यों द्वारा (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यव्ये = यव्य में (यु = मिलाना, अलग करना, बाँधना। यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यशः = यश, कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशसः = यश, कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशसम् = यश, कीर्ति को (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशसा = यशवानों द्वारा, कीर्तिमानों द्वारा (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशसाम् = यशवानों का, कीर्तिमानों का (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशसे = यश, कीर्ति के लिए (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशस्तरो = अति यश, कीर्ति वाले (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशस्वतः = यशवान्, यश युक्त (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशा = यश, कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशे = यश, कीर्ति में (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशेः = यश, कीर्ति का (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशो = यश, कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशोभगिन्यै = यशभागी के लिए, यशसेवी के लिए (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना, भग्-भज् = देना, दान करना, सेवा करना, पकाना, सिद्ध करना)।

यंसत् = नियमन करते हैं (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यंसद् = नियमन करते हैं (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यंसन् = दो, प्रदान करो (यम - आवरण करना, अपने

अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यस्मात् = जिससे (सर्वनाम)।

यस्मिन् = जिसमें (सर्वनाम)।

यस्मै = जिसके लिए (सर्वनाम)।

यस्य = जिसका (सर्वनाम)।

यस्या = जिसका (सर्वनाम)।

यस्याः = जिसका (सर्वनाम)।

यस्याम् = जिसमें (सर्वनाम)।

यस्यै = जिसके लिए (सर्वनाम)।

यहो = पूज्य, सम्मानित (यह-मह = पूजा करना, सम्मान करना)।

यह्व = महान् (यह-मह = सम्मान करना, पूजा करना)

यह्वा = महान् (यह्व-मह = सम्मान करना, पूजा करना)।

यह्वो = महान् (यह्व-मह = सम्मान करना, पूजा करना)।

या = जो (सर्वनाम)।

याः = जो (सर्वनाम)।

याचन् = याचना करता हुआ (याच - याचना करना, मांगना, देने की चाहना करना)।

याचिषत् = याचना करते हैं (याच - याचना करना, मांगना, देने की चाहना करना)।

याज्याः = यजनीय (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

याज्याभिः = यजनीयों द्वारा (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

यात = प्राप्त, गत (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यातम् = प्राप्त, गत, गया हुआ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यातयन् = प्राप्त करते हुए, जाते हुए, प्रयत्न करते हुए (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना)।

यातवे = प्राप्ति के लिए, प्रगति के लिए, यत्न के लिए (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना)।

याता = प्राप्त करो (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

याति = जाता है (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यातु = प्राप्त हो, जाये (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यातुधान-क्षयणम् = यातुधान-क्षय को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

यातुधानम् = यातुधान को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना) 385

यातुधानाः = यातुधान (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)।

यातुधानानाम् = यातुधानों का (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)।

यातुधानान् = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)।

यातुधानेभ्यः = यातुधानों के लिए (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)।

यातुधान्य = यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)।

यातुधान्यो = यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)।

याथातथ्यतो = ठीक-ठीक, यथा-तथ्य, तथ्य के अनुसार (यथा - जैसे, जिस प्रकार, तथा - वैसे, उसी प्रकार, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यादसे = यादस के लिए, प्रयास के लिए, उद्यम के लिए (यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना, दुःख देना, रोकना, एकत्र करना, या - जाना, जानना, पाना, अद् - खाना, नष्ट करना)।

यान् = जाता हुआ (या - जाना)।

यानान् = यानों को (या - जाना)।

यानि = जो (सर्वनाम)।

याभिः = जिसके द्वारा (सर्वनाम)।

याभ्याम् = जिसके लिए (सर्वनाम)।

याम् = जिसको (सर्वनाम)।

याम = याम (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामन् = यमन करता हुआ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामय = पोषण, नियमन करो (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामयन्ति = प्राप्त, पोषण, नियमन करते हैं (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामा = प्राप्त, पोषण, नियमन करने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामाः = प्राप्त, पोषण, नियमन करने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामि = जाता हूँ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना,

नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यामे = याम में, प्राप्त, पोषण, नियमन में (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

याम्याय = याम्य के लिए (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यायान् = जाने वालों को (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यावत् = जितना, जब तक (सर्वनाम)।

यावतः = गति, ज्ञान, प्राप्त (या - जाना, जानना, पाना)।

यावती = जितना, जब तक (सर्वनाम)।

यावभिः = गति, ज्ञान, प्राप्ति करवालों द्वारा, चलने वालों द्वारा (या - जाना, जानना, पाना)।

यावाणो = गति, ज्ञान, प्राप्ति करने वाले (या - जाना, जानना, पाना)।

यावानो = गति, ज्ञान, प्राप्ति करने वाले (या - जाना, जानना, पाना)।

यासत् = प्रयास किया (यस् - प्रयास करना, या - जाना, जानना, पाना)।

यासि = प्राप्त होते हो, जाते हो, जानते हो (यस् - प्रयास करना, या - जाना, जानना, पाना)।

यासीष्ट = जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें (यस् - प्रयास करना, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यासिष्ठाः = यासिष्ठ, अत्यन्त प्रयास करने वाले, प्रगतिशील, गमनशील (यस् - प्रयास करना, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यासिसीष्ठाः = प्रयास करो, अत्यन्त प्रयास करने वाले, प्रगतिशील, गमनशील (यस् - प्रयास करना, उपक्षय करना, वास करना, चलना, यत्न करना)।

यासु = जिनमें (सर्वनाम)।

युगे-युगे = सभी युगों में (यु - मिश्रित करना, मिलाप

युजे = युक्त करते हो (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)॥

युञ्जन्तु = नियोजित करें, जोड़ें (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, यज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र

युनक्त = नियुक्त करता है (युङ्क् - मिलाप करना, एकत्र करना, जुड़ना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र

करना, चित्त स्थिर करना, मन को रोकना, मन एकाग्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना, यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

युनक्ति = नियुक्त करता है (युङ्क् - मिलाप करना, एकत्र करना, जुड़ना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना, चित्त स्थिर करना, मन को रोकना, मन एकाग्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना, यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

युनज्मि = जोड़ता हूँ (यु = बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

युम् = मिलन को (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना)।

युयुजे = जोड़ते हैं, मिलाते हैं, सम्बन्धित करते हैं (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

युयोजते = जोड़ते हैं, मिलाते हैं (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

युयोतु = अलग करे, मिलाये (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु- पृथक् पृथक् करना)।

युयोधि = युद्ध किया, बद्ध किया, अलग किया, दूर करो (युध् = युद्ध करना, यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु- पृथक् पृथक् करना)।

युवजानिः = मेल, मिलन को उत्पन्न करने वाले (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु- पृथक् पृथक् करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

युवतिभिः = युवतियों द्वारा, मिलाने वालों द्वारा (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु- पृथक् पृथक् करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

युवद्रिक् = युवा (युव - तुम दोनों (सर्वनाम), यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु - पृथक् पृथक् करना)।

युवम् = तुमको (सर्वनाम)।

युवम् = युव को (यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)।

युवसे = युवस् के लिए (यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)।

युवा = युवा (यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)।

युवानः = युवा (युव् - बल होना, तरुण होना, युवा होना, यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना)।

युवानम् = युवा को (युव् - बल होना, तरुण होना, युवा होना, यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना),

युवाना = युवा (युव् - बल होना, तरुण होना, युवा होना, यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना)।

युवानो = युवा (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना)।

युवानौ = युवा युगल (युव् - बल होना, तरुण होना, युवा होना, यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना)।

युवाम् = तुम दोनों ने, तुम दोनों को (सर्वनाम)।

युवोः = तुम दोनों में, तुम दोनों में (सर्वनाम)।

युष्माः = तुम्हें (सर्वनाम)।

युष्माकम् = तुम्हें (सर्वनाम)।

यूथा = यूथ (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

यूथे = यूथ में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

यूथेन = यूथ द्वारा (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

यूथ्यो = यूथ्य (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

यूपः = यूप, जागरण, जागरूक (युप = जागना, जागरण होना, जागरूक होना)।

यूपवाहाः = यूप को वहन करने वाला, जागरण, जागरूक को वहन करने वाला (युप = जागना, जागरण होना, जागरूक होना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना। पा = पालन करना,

बचाना, रक्षा करना, वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)

यूपव्रस्का = यूप-व्रस्का, घबराहट को काटने वाला (युप = जागना, जागरण होना, जागरूक होना। व्रश्च = कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

यूपेन = विकलता द्वारा (युप = जागना, जागरण होना, जागरूक होना)।

यूयम् = तुम दोनों (सर्वनाम)।

यूष्णा = यूष द्वारा, हिंसकों द्वारा, पीडकों द्वारा (यूष = मारना, दुःख देना, पीड़ा करना)।

ये = जो।

येन = जिससे, जिसके द्वारा।

येना - येना = जिस।

येभिः = जिनसे (सर्वनाम)।

येभ्यो = जिनके लिए।

येमाणः = यमन करते हुए, जाते हुए (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना। या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

येमाणो = यमन करते हुए, जाते हुए (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना। या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

येमानो = यमन करते हुए, जाते हुए (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना। या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

येमिरे = यमन किया, संयुक्त किया, मिलाया (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना। या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)।

येषाम् = जिनका।

येषु = जिनमें।

यो = जो।

योः = मिलने वाला (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

योक्तारम् = सम्बन्ध को, मेल करने, अलग करने वाले को (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योक्षे = नियोजित करता है, जोड़ता है (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज्ज-युज् - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

योग-क्षेमो = योग-क्षेम (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना। क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)।

योगाय = योग के लिए, सम्बन्ध के लिए (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योगे = योग में, सम्बन्ध में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योगेयोगे = योग-योग में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योधा = समूह, मिलाने वाला, एकत्र करने वाला, सम्बन्ध वाला (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, निन्दा करना, दोष लगाना, अपमान करना)।

योजते = जोड़ते हैं, मिलाते हैं, सम्बन्ध करते हैं (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योजना = योजना, सम्बन्ध (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योजने = योजन में (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योजनेन = योजन द्वारा (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योजा = योग करो, समाधिस्थ हो, सम्बन्धी हो (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

योधी = युद्ध करो (युध - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

योनि = बन्धन, मिलन, सम्बन्ध (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)।

योनिभ्यः = योनि के लिए, सम्बन्ध के लिए (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)।

योनिम् = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)।

योने = योनि का, सम्बन्ध का (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)।

योनौ = योनि में, मिलाने में, अलग करने में, बन्धन में, सम्बन्ध में, सम्बन्धियों में (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)।

योन्याम् = योनि में, मिलाने में, अलग करने में, बन्धन में, सम्बन्ध में, सम्बन्धियों में (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)।

योपयामसि = घबरा जाते हो, मिलाप करते हो, सम्बन्धित

करते हो (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना, युप - चित्त वैकल्य होना, घबरा जाना)।

युयुवतीनाम् = युवतियों का, मिलाने वालों का (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु- पृथक् पृथक् करना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

योषणाम् = योषों का, योषणा को, हिंसकों का, हिंसा को (युष = हिंसा करना,)।

योषणे = योषण में (युष = हिंसा करना)।

योषणो = योषण, हिंसा (युष = हिंसा करना)।

योषति = हिंसा करता है (युष = हिंसा करना)।

योषा = हिंसक, मारने वाले (युष = हिंसा करना)।

योषाः = हिंसक, मारने वाले (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना, युष = हिंसा करना)।

योषाम् = हिंसक, मारने वाले को (शत्रुओं को) मारने वाले को (युष = हिंसा करना)।

योषितम् = योषित, हिंसक को (युष = हिंसा करना)।

यौ = जो दोनों (सर्वनाम)।

यौमि = संयुक्त करता हूँ, मिलाता हूँ, सम्बन्धित करता हूँ (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)।

र

रक्ष = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष = रक्षा करना, बचाना)।

रक्षः - रक्षः = रक्षक, रक्षा करो (रक्ष - रक्षण करना, बचाना)।

रक्षतात् = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षति = रक्षा करता है, बचाता है (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षतु = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षध्वम् = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षन्ति - रक्षन्ति = रक्षा करते हैं, बचाते हैं (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षन्तु = रक्षा करो (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षमाणः - रक्षमाणः = रक्षा करते हुए, रक्षा करने वाले (रक्ष = रक्षा करना, बचाना)।

रक्षसः - रक्षसः = रक्षा करने वाले, रक्षस् (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षसाम् - रक्षसाम् = रक्षकों का (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षसो = रक्षा करने वाला, रक्षस् (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षस्व - रक्षस्व = रक्षा करो (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षा = रक्षा करो (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षाम् - रक्षाम् = रक्षा को (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षांसि - रक्षांसि = रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षितारः - रक्षितारः = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षित् = रक्षा करे (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षुः - रक्षुः = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षो - रक्षो = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।

रक्षोहणम् - रक्षोहणम् = रक्षा का विचार करने वाले को, रक्षकों का हनन करने वाले को (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना, ऊह - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना)।

रक्षोहणो - रक्षोहणो = रक्षा का विचार करने वाले, रक्षकों का हनन करने वाले (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना, ऊह - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना)।

रक्षोहणौ - रक्षोहणौ = रक्षा का विचार करने वाले, रक्षकों का हनन करने वाले (रक्ष - रक्षण करना, पालन

करना, ऊह - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना)।

रक्षोहा = रक्षा का विचार करने वाले, रक्षकों का हनन करने वाले (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना, ऊह - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना)।

रघुद्रुव = प्रगति, शासन में प्रवाहमान (रघु = जाना, चलना, शासन करना, आस्वादन करना, द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

रघुद्रुवः = प्रगति, शासन में प्रवाहमान (रघु = जाना, चलना, शासन करना, आस्वादन करना, द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

रघुयामा = शासन करने वाला (रघु - स्वाद लेना, रुचि लेना, शासन करना, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - स्वाधीन रखना, पोषण करना, नाश करना)।

रजः = रज (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजतनाभी = रजतनाभि, कण-कण में विद्यमान (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना, नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

रजताः = रज (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजयित्रीम् - रजयित्रीम् = रजयित्री को (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसः = लोक का, रजस् का (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसा = रजस् से (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसि = रजस् में (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसी = रजस् में (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसो = रजस् का (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजस्तुरम् = रजातुर को, विलीनता के लिए आतुर को (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना, तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

रजस्याय = रजस्य के लिए (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजांसि = लोकों को, रजः को (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजिष्ठम् = रजिष्ठ को, अत्यन्त रज को (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रज्जुः = रज्जु (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रज्जुसर्जम् = रज्जुसर्जक को (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रण = रण (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।

रणन्ति = रण, शब्द करते हैं (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।

रणा = रण (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।

रणाय = रण, शब्द के लिए (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।

रणे = रण में, शब्द में (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।

रणे-रणे = रण में, शब्द में (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।

रण्वसंदृशम् = रण-संदर्शन को, रमणीय-सम्यक् दृष्टि को (रण्व (रवि) - जाना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दृश् - देखना)।

रताः - रताः = रत रहने वाले, लेखन, विदारण करने वाले (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना। रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना)।

रत्नधा = रत्न को धारण करने वाला, लेखन, विदारण को धारण करने वाला (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना। धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना)।

रत्नधाः = रत्न को धारण करने वाला, लेखन, विदारण को धारण करने वाला (रद् - लिखना, खोदना, चीरना,

विदारण करना। धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना)।

रत्नधातमम् = रत्न को धारण करने वाले को, लेखन, विदारण को धारण करने वाले को (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना। धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना)।

रत्नधामभिः = रत्नधामों द्वारा (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना। धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना)।

रत्नधाम् = रत्न को धारण करने वाले को, लेखन, विदारण को धारण करने वाले को (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना। धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना)।

रत्नम् = रत्न को, लेखन, विदारण को (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना)।

रत्ना = रत्न, लेखन, विदारण (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना)।

रत्नानि = रत्न, लेखन, विदारण (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना)।

रत्सि = लेखन, विदारण करते हो (रद् - लिखना, खोदना, चीरना, विदारण करना)।

रथ = रमणीय, रथ (रम - रमना, रमण करना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथः = रथ (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथकारम् = रथकार को (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, कृ - करना)।

रथकारेभ्यः = रथकार के लिए (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, कृ - करना)।

रथगृत्सः = रमणीय वाणी वाला (रम् = रमना, रमण करना, गृ-गृण् = शब्द करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, जानना, समझना, निगलना, बहिर्गमन करना, गृ - शब्द करना)।

रथन्तरम् = रथन्तर को (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथन्तरे = रथन्तर में, रमणीय को तरने वाले में (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथन्तरेण = रथन्तर द्वारा (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, अन् = प्राणवान् होना, अन्तर = इतर, अन्य (अव्यय), अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

रथप्राग् = रथ को पूर्ण करने, भरने वाले (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, प्रा - पूर्ण करना, तृप्त करना)।

रथप्रोतः = रथप्रोत, रथ की गति (रम् = रमना, रमण करना, प्रु - अधिक होना, गति करना, हिलना)।

रथम् = रथ को (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथया = रथ द्वारा (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथयावाना = रथगामी (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, या - जाना, जानना, पाना)।

रथर्यति = रमणीय बनाता है (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथवाहनम् = रथवाहन को (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

रथसंगे = रथ-संगमन में (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)।

रथस्य = रमणीय का, रथ का (रम - रमना, रमण करना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथस्वनः = रथ-ध्वनि (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, स्वन = शब्द करना, आवाज करना)।

रथानाम् = रथों का (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथासः = रथ (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथिनो = रथी (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथिभ्यो = रथी के लिए, रथवाले के लिए (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथिरासः = अनेक रथी, रथवान् (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथिरो = रथी, रथवान् (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथीः = रथी, रथवाला (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथीतमः = अत्यन्त रथी, महारथी (रम् - रमना, रमण करना)।

रथीतमम् = अत्यन्त रथी को, महारथी को (रम् - रमना, रमण करना)।

रथीतरो = उत्तम रथी (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथीनाम् = रथियों का (रम् - रमना, रमण करना)।

रथे = रथ में (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथेचित्रः = रथ में चित्र, रथ में आश्चर्य (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, चित्र = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

रथेन = रथ द्वारा (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथेना = रथ द्वारा (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथेभिः = रथों द्वारा (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथेष्ठाम् = महारथी को (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथौजाः = रथ के ओजयुक्त (रम् = रमना, रमण करना, ओज् - ओज होना, बल होना)।

रथ्यम् = रथ्य को, रथयोग्य को, रथी को (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथ्यो = रथ्य, रथयोग्य, रथी (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रदावसो = हे वसुदाता, वसु को देने वाले (रद - विदारण करना, चीरना, खोदना, लिखना, देना, वस-वस्त्र पहिरना, ओढ़ना, पोशाक धारण करना, वसति करना, टिकना, निवास करना)।

रन्तिः = रन्ति, रमण, प्रसन्न (रन् = अलग करना, मिलाना। रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना)।

रन्ती = रन्ती, रमण, प्रसन्न (रन् = अलग करना, मिलाना। रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना)।

रन्त्यम् = रमण, प्रसन्न (रन् = अलग करना, मिलाना। रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना)।

रन्धयन् = हिंसा करता है (रन् = अलग करना, मिलाना, रन्ध - पूरा करना, समाप्त करना, अपकार करना, मार डालना या दुःख देना, पक्व होना, पकना, शुद्ध होना, निर्दोष होना, भूल न करना)।

रपः = वाणी (रप - स्पष्ट बोलना)।

रपांसि = रपों को, स्पष्ट वाणी को (रप - स्पष्ट

बोलना)

रप्सुदा - रप्सुदा = स्पष्ट वाणी देने वाले (रप - स्पष्ट बोलना)

रभध्वम् - रभध्वम् = आनन्दित हो, उपक्रम करो (रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

रभसम् = आनन्दित हो, उपक्रम करो। (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

रभसो = आनन्दित, उपक्रम (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना, आरम्भ करना)।

रभस्व = आनन्दित हो, उपक्रम करो। (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

रभीयस = रभने वाले, आनन्द वाले (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

रभे = आनन्दित होते हैं, प्रसन्न होते हैं (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

रमताम् = रमण करो (रम् = रमना, क्रीडा करना)।

रमध्वम् = रमण करो (रम् = रमना, क्रीडा करना)।

रमन्ताम् = रमण करें (रम् = रमना, क्रीडा करना)।

रमय = रमण करो (रम - रमना, क्रीडा करना, खेलना)।

रमस्व = रम जाओ (रम - रमना, क्रीडा करना, खेलना)।

रमेथाम् = रमण करो (रम् - रमना, प्रिय होना, प्रसन्न करना)।

रम्णातु = रम जायें (रम - रमना, क्रीडा करना, खेलना)।

रयिः = विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रयिन्तमो = अत्यन्त विद्या, ज्ञान वाला (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रयिम् = विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रयिमान् = विद्वान्, विद्या, ज्ञान युक्त (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रयिवः = रयवान्, धनवान् ज्ञानवान् (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रयीणाम् = विद्या, गतिशीलता का (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रय्य = विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रय्या = विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रय्यै = विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रराटम् = रराट को, सम्भाषण को (रट् = बोलना, सम्भाषण करना)।

रराटे = रराट में, सम्भाषण में (रट् = बोलना, सम्भाषण करना)।

रराणः = दानी, शब्द करता हुआ (रा - देना, मिल जाना, रण - शब्द करना, जाना, रन् - अलग करना, मिलाना)।

ररास्व = दान दो, शब्द करो (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

ररिमा = देते हैं (रा = देना, लेना, ग्रहण करना, मिल जाना)।

ररवम् = रव को, प्रकाश को, ध्वनि को (रव् - जाना, जानना, पाना, प्रकाश करना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

ररशना = रश्मि द्वारा, किरण द्वारा (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

ररशनाभिः = रश्मियों द्वारा, रश्मियों का केन्द्र (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

ररशनाम् = रश्मियों का (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

ररश्मयः = रश्मियाँ (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

ररश्मये = रश्मि के लिए (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

ररश्मयो = रश्मियाँ (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मिः - रश्मिः = किरण (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मिना - रश्मिना = रश्मि द्वारा (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मिभिः - रश्मिभिः = किरणों द्वारा (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मिभ्यः = रश्मियों के लिए (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मिषु = रश्मियों में, किरणों में (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मीन् - रश्मीन् = रश्मियों को (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रश्मीवतीम् = रश्मिवती को, किरण युक्त को (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

रसः = रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रसम् = रस को (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रसया = रस द्वारा (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रसस्य = रस का (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रसा = रसयुक्त (रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, स्नेह होना)।

रसाः = रसयुक्त (रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, स्नेह होना)।

रसात् = रस से (रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

रसाम् = रसों का (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रसाय = रस के लिए (रस् = चखना, प्यार करना, शब्द करना)।

रसाय्यः = रस लेने योग्य (रस् = चखना, प्यार करना, शब्द करना)।

रसिनः = रसयुक्त, रसयुक्तों का (रस - स्वाद लेना,

चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रंसिषम् = रमन करूँ (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना)।

रसेन = रस द्वारा (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)।

रसेव = रस के समान (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)।

रसो = रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रंहमाणः = प्रगतिशील, प्रकाशमान (रंह = चलना, वेग से जाना, रंह = चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना)।

रंह्या = प्रगतिशील, प्रकाशमान द्वारा (रंह = चलना, वेग से जाना, रंह = चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना)।

राजति = प्रकाशित होता है (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजथः = प्रकाशमान हो (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजन् = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजन्तम् = प्रकाशमान को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजन्यः = प्रकाशयोग्य, राजकर्म (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजन्यम् = प्रकाशयोग्य को, राजन्य को, राजकीय कर्मियों को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजभ्यो = प्रकाश के लिए, राजा के लिए (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राज-यक्ष्मात् = प्रकाशपूजन से, राज-यक्ष्म से (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। यक्ष - पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)।

राजसि = प्रकाशमान होते हो, प्रकाश करते हो (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना,

जीतना)।

राजसु = राजाओं में, प्रकाशमानों में (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजसे = राजस् के लिए, प्रकाश के लिए (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजा = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजानः = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजानम् = राजा को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजानौ = राज-युगल (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजासन्द्यै = राज-आसन्दी के लिए (राज्+आ+सद्, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

राजेव = राजा के समान (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राज्ञः = प्रकाशित होने वाला, राजा का (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राज्ञा = राजा द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राज्जाम् - राज्ञाम् = प्रकाशमान को, राजा को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राज्ञी = प्रकाशमती, राज्ञी, रानी (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राट् = सम्यक् भाषणकर्ता, प्रकाशमान, दानी, (रट् - ध्वनि करना, सम्भाषण करना)। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना। रा - देना, मिल जाना)।

राड् = सम्यक् भाषणकर्ता, प्रकाशमान, दानी, (रट् - ध्वनि करना, सम्भाषण करना)। राज् - दीप्त होना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना। रा - देना, मिल जाना)।

रातम् = अनुदान को (रा - देना, मिल जाना)।

रातयः = अनुदान (रा - देना, मिल जाना)।

रातहव्य = दिया गया हवि, दान किया हुआ हवि, दान किया हुआ देय, प्रदत्त दान। (रा - देना, मिल जाना, हु = देना, आदान-प्रदान करना)।

रातहव्यम् = दिया गया हवि को, दान किया हुआ हवि को, दान किया हुआ देय, प्रदत्त दान को। (रा - देना, मिल जाना, हु = देना, आदान-प्रदान करना)।

रातहव्या = रातहवि द्वारा, दिये गये हवि द्वारा, दान किये हुए हवि द्वारा, प्रदत्त दान द्वारा। (रा - देना, मिल जाना, हु = देना, आदान-प्रदान करना)।

रातिः = अनुदान (रा - देना, मिल जाना)।

रातिम् = राति को, अनुदान को (रा - देना, मिल जाना)।

रात्रि = रात्रि, अनुदान (रा - देना, मिल जाना)।

रात्रिम् = रात्रि को, अनुदान को (रा - देना, मिल जाना)।

रात्री = रात्री, दानी, अनुदान (रा - देना, मिल जाना)।

रात्रीः = रात्री, दानी, अनुदान (रा - देना, मिल जाना)।

रात्रीम् = रात्री को, दानी को, अनुदान को (रा - देना, मिल जाना)।

रात्रौ = रात्रि में, दानी में, अनुदान में (रा - देना, मिल जाना)।

रात्र्या - रात्र्या = रात्रि द्वारा, दानी द्वारा, अनुदान द्वारा (रा - देना, मिल जाना)।

रात्र्यै = रात्रि के लिए, दानी के लिए, अनुदान के लिए (रा - दान करना, ग्रहण करना)।

राथन्तराय = राथन्तर के लिए (रथ = जाना, ले जाना, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, अन् = प्राणवान् होना, अन्तर = इतर, अन्य (अव्यय), अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)।

राध = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना,

सिद्ध होना)।

राधः = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधसः = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करने वालों का, दान, वृद्धि का (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधसस्पते = हे राधस-पति, शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करने वालों का पति, दान, वृद्धि का पति (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

राधसा = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि द्वारा (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधसाम् = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि को (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधसे = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करते हो (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधानाम् = राधों का, आराधों-आराधनाओं का, शुद्ध, निर्दोष, निर्णय, वृद्धियों का (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधांसि = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधिषि = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, सिद्ध करतें हो

राया = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, दान करना, रय् = गति करना, जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)।

रायाम् = गति, विद्या, वाणी को (रा-देना, दान करना, रय् = गति करना, जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)।

राये = विद्या, गतिशीलता में, प्राप्ति के लिए, शब्द अर्थात् वाणी में (रै = शब्द करना, रय् = गति करना, जाना, रा - देना, दान करना, लेना, ग्रहण करना)।

रायो = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, दान करना, लेना, ग्रहण करना, रय् = गति करना, जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)।

रारण = दान, रण, शब्द, प्रगति किया (रण - शब्द करना, जाना, रा - देना, दान करना, मिल जाना)।

रास्पत् = दान, शब्द किया (रा - देना, दान करना, मिल जाना, स्प - स्पष्ट बोलना)।

राव्यो = प्रगतिशील, प्रकाशक, शब्दशील (रव - जाना, प्रकाश करना, रु - शब्द करना, ध्वनि करना)।

राष्ट्रम् = राष्ट्र को (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राष्ट्रे = राष्ट्र में, शब्द में, प्रकाश में (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

रासत् = प्रदान करे (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

रासभः = दान दो (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

रासभस्य = रासभ का, दान-दाता को (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

रासीय = प्रदान करूँ, ग्रहण करूँ (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

रास्ना = स्नेहमय वाणी (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

रास्व = दान दो (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)।

रिणन् = शब्द करते हुए (रिण- शब्द करना, अल्प होना, चूर्ण होना)।

रितो = प्रगतिशील, विद्वान (रि = हिंसा करना, जानना, री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना)।

रिपुः = हिंसक (रि = हिंसा करना, जानना)।

रिपुणा = हिंसक द्वारा (रि = हिंसा करना, जानना)।

रिप्तम् = रिप्त को, प्रगतिशील को (रिप = जाना)।

रिप्स् - रिप्स् = श्रुति को, प्रगतिशील को, हिंसक को (रिप = जाना। रि = हिंसा करना, जानना। री = सुनना)।

रिप्स्वाहः - रिप्स्वाहः = रिप्स्वाह। (रिप = जाना। रि = हिंसा करना, जानना। री = सुनना। वह - वहन करना, ले जाना)।

रिरिक्षे = रिक्त करता है (रिक्-रिणक्-रिच - रिक्त करना, मल शुद्धि होना, गर्भपात कराना, गर्भ गिराना)।

रिरीहि = दान, स्तुति करें (रिह = कहना, प्रशंसा करना, दान करना)।

रिशादसः = हिंसानाशक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना, अद् = नष्ट करना, खाना, दा - देना)।

रिशादसम् = हिंसा-भक्षकों को, हिंसानाशक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना, अद् = नष्ट करना, खाना, दा - देना)।

रिशादसा - रिशादसा = हिंसक, हिंसा-भक्षक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना, अद् = नष्ट करना, खाना, दा - देना)।

रिषः = हिंसक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिषण्यत = हिंसक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिषत् = हिंसा करता है (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिषन् = हिंसक, हिंसा करते हुए (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिषाम् = हिंसक को (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिषो = हिंसक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिष्यसि = हिंसा करते हो (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिष्याति = हिंसा करता है (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिष्येम = हिंसा करें (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रिहन्ति - रिहन्ति = स्तुति, दान करते हैं (रिह - कहना, प्रशंसा करना, दान करना, युद्ध करना, निन्दा करना, हिंसा करना)।

रिहाणा = स्तुति, दान करने वाले (रिह = कहना, प्रशंसा करना, दान करना)।

रीतिम् = रीति को, प्रवाह को (री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना)।

रीत्यापः = प्रवाह करने वाले, बरसाने वाले (री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना)।

रीत्यापा = प्रवाह करने वाले, बरसाने वाले (री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना)।

रीयते = बहता है, चलता है, सुनता है (री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना)।

रीयमाणाः = श्रवण करते हुए (री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना)।

रीरधतम् = पूर्ण करो (रिध - पूरा करना, समाप्त करना, अपकार करना, मार डालना या दुःख देना, पक्व होना,

पकना, शुद्ध होना, निर्दोष होना, गलती न करना)।

रीरिषत = मारो (रिष - मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रीरिषो - रीरिषो = हिंसक (री - जाना, बहना, झरना, चूना, टपकना, गिरना, नीचे आना, सुनना, रिष - मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रुक्म = रुचि, प्रकाश (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुक्मम् = रुक्म को, रुचि, प्रकाश को (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुक्मिभिः = रुक्मियों द्वारा, रुचि, प्रकाश द्वारा (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुक्मो = रुचि, प्रकाश (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुग्णम् = रुग्ण (रुज् - रोग होना, कष्ट होना, हिंसा करना)।

रुचः = रुच (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुचम् = रुच को (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुचा = रुच द्वारा (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुचानः = रुच को (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुचाय = रुचि कराने वाले (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुचे = रुचि के लिए, प्रकाश के लिए, रुचि में, प्रकाश में (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुचो = रुचि (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुजः = रोग, हिंसा करने वाले (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)।

रुज = हिंसा करो, रुग्ण करो (रुज् - हिंसा करना,

रोग होना, कष्ट होना, टूटना)।

रुजन् = हिंसा करते हुए, रुग्ण करते हुए (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)।

रुतस्य = रुत का, शब्द, प्रगति का (रु - शब्द करना, ध्वनि करना, रु = जाना, चलना, मार डालना, दुःख देना, बोलना, सम्भाषण करना, क्रोध करना)।

रुद्र = हे रुद्र, करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रः - **रुद्रः** = करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रम् - **रुद्रम्** = करुणाशील को, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले को (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रवते - **रुद्रवते** = रुद्रवान् के लिए (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रवर्तनी = रुद्रवर्तनी (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना। वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

रुद्रस्य = रुद्र, करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले का (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रहृतये - **रुद्रहृतये** = रुद्रहृत के लिए (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रा = करुणाशील, रोने, रुलाने वाले (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्राः - **रुद्राः** = रोने, रुलाने वाले (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्राणाम् = करुणाशीलों का (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रान् = रुद्रगण, करुणामय (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्राय - **रुद्राय** = रुद्र के लिए (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रेभ्यः - **रुद्रेभ्यः** = रुद्रों के लिए (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रैः - **रुद्रैः** = रुद्रों द्वारा, रुद्रों से (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुद्रो = रुद्र (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)।

रुध्यसे = रोधते हो (रुध् - रोकना, बढ़ना, चाहना, रोना, दया करना)।

रुमे = वाणी, प्रगति, वृद्धि, प्राप्ति में (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रुक्वान् = प्रकाशमान, प्रगतिशील, विद्वान् (रु - शब्द करना, ध्वनि करना, रु - जाना, चलना, मार डालना या दुःख देना, बोलना, सम्भाषण करना, क्रोध करना, गुस्सा करना, रुच - चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, उत्साह करना, रुचना)।

रुक्क्षणिम् = रुक्ष को, कठोर वाणी वाले को, नष्ट करने वाले को (रुक्ष - कठिन होना, रुक्ष होना, कठोर वचन बोलना, नीरस होना, शुष्क होना, सूखना)।

रुक्च = रुचा (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

रुक्हुः = बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रुरूः = रुरू, विद्वान्, प्रगतिशील (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रुरून् = रुरूं को, विद्वानों को, प्रगतिशीलों को (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रुरोजिथ = भङ्ग कर देता है, रुग्ण कर देता है, हिंसा करता है (रुज - मारना, दुःख देना, रुज - दुःख से या रोग से पीड़ित होना, वक्र होना, बांका होना, टेढ़ा होना, टूट जाना)।

रुशत् = प्रकाशमान, हिंसक (रुश् - हिंसा करना, रुंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशता - **रुशता** = प्रकाशमान, हिंसक (रुश् - हिंसा

करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशती = प्रकाशमान, हिंसक (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशतीम् = प्रकाशमान को, हिंसक को (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशद् = प्रकाशमान, हिंसक (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशद्-वत्सा = प्रकाश-वत्स, प्रकाशमान वाणी, हिंसक वाणी (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, वद् = कहना, बोलना)।

रुशदस्य - **रुशदस्य** = प्रकाशमान, हिंसक का (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशन्तम् = प्रकाशमान, हिंसक को (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशन्तीः = प्रकाश, हिंसा करती हुई (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुशमे = प्रकाश, हिंसा में (रुश् - हिंसा करना, रंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)।

रुहः = चढ़ने वाले, बढ़ने वाले (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रुहत् = चढ़ते हुए, बढ़ते हुए, बढ़ा, चढ़ा (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रुहाणा = चढ़ने वाले, बढ़ने वाले (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रुहेम - **रुहेम** = चढ़े, बढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रूपम् - **रूपम्** = रचना, आकार, रूप को (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

रूपा = रचना, आकार, रूप (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

रूपाणि - **रूपाणि** = रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

रूपाय - **रूपाय** = रचना, आकार, रूप के लिए (रूप - रूप बनाना, आकार बनाना)।

रूपेण = रचना, आकार, रूप द्वारा (रूप - रूप बनाना, आकार बनाना)।

रूपैः = रचना, आकार, रूपों द्वारा (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

रेक्णसा = रेचन द्वारा, शंका द्वारा (रिङ्क्-रिणक्-रिच = रिक्त करना, मल शुद्धि होना, गर्भपात कराना, गर्भ गिराना। रेक = शंका करना, संदिग्ध होना)।

रेजन्त = प्रकाशित करते हैं (रेज् - चमकना, प्रकाशित होना)।

रेजमाने - **रेजमाने** = प्रकाशमान में (रेज् - चमकना, प्रकाशित होना)।

रेणु = रेणु, गति, ज्ञान, वाणी (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेत = रेतस्, विद्या, प्रगति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतः = रेतस्, विद्या, प्रगति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतसा = रेतस्, विद्या, प्रगति द्वारा (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतसे = रेतस्, विद्या, प्रगति के लिए (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतसो = रेतस्, विद्या, प्रगति का (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतांसि - **रेतांसि** = रेतस्, विद्या, प्रगति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतो = रेतस्, विद्या, प्रगति, ज्ञान (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतोधा = रेतस्, विद्या, प्रगति, ज्ञान को धारण करने वाला (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतोधाः = रेतस्, विद्या, प्रगति, ज्ञान को धारण करने वाला (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेतोधाम् = रेतस्, विद्या, प्रगति, ज्ञान को धारण करने वाले को (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेभन् = शब्द करते हुए (रेभ - शब्द करना)।

रेभम् = रेभ को, शब्द को (रभ - आनन्द होना, आरम्भ करना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेभाः = रेभ, शब्द (रभ - आनन्द होना, आरम्भ करना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेभासो = शब्द करने वाले (रेभ - शब्द करना)।

रेभो = शब्दकर्ता (रेभ - शब्द करना)।

रेरिहत् = स्तुति, दान करते हैं (रिह - कहना, प्रशंसा करना, दान करना, युद्ध करना, निन्दा करना, हिंसा करना)।

रेवत् = प्रवाह, वाणी, शब्द (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेवति = प्रवाहित होता है (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेवती = प्रवाह (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेवतीः = गतिशीलता (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति

करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेवतो = प्रगतिशील, विद्वान् (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेवन्तम् = रेवन्त, प्रगतिशील, विद्वान् को (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

रेवान् = प्रगतिशील, विद्वानों को (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना, रै = शब्द करना)।

रेष्माणम् = रेष्माण को, हिंसक को (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

रोङ् = रोक् (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना। रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना। रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचते = रुचता है, प्रकाश करता है (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचनम् - रोचनम् = रुचि को, प्रकाश को (रुच् - रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचन = रुचि, प्रकाश करने वाले! (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना)।

रोचनात् = रुचि, प्रकाश (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचनानि = रुचि, प्रकाशमान (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचने = रुचि, प्रकाश के लिए (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचन्ते = रुचि, प्रकाश करते हैं (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचमानो = रुचि, प्रकाशमान हुआ (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचयन् = रुचि, प्रकाशित करते हुए (रुच् = रुचना,

प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचसे = रुचि, प्रकाशमान के लिए (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचस्व - रोचस्व = रुचि, प्रकाश करो (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचिषा = रुचि, प्रकाश द्वारा (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोचिष्णू = रुचिकर, प्रकाशमान (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)।

रोदसी = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रोदस्योः - रोदस्योः = रोदसी का (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रोम = रोम, वाणी, शब्द, प्रगति (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रोमभिः = रोमों द्वारा, वाणी, शब्द, प्रगतिशीलों द्वारा (मय् - जाना, जानना, पाना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रोरवीति = वाणी, शब्द करता है, चलता है, प्रगति करता है (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना, र्व् - जाना, जानना, पाना, प्रकाश करना)।

रोराभ्याम् = वाणी, शब्द द्वारा, विद्वानों द्वारा, प्रगतिशीलों द्वारा (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रोरुवत् = शब्द करते हुए (रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

रोषति = हिंसा करता है, क्रोध करता है (रुष - मार डालना या दुःख देना, मार डालने का यत्न करना, रुष - क्रोध करना)।

रोह = चढ़ें, बढ़ें (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहतः = बढ़ते हैं, चढ़ते हैं (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना,

जन्म लेना)।

रोहन्ति = बढ़ते हैं, चढ़ते हैं (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहम् = वृद्धि को (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहयत् = बढ़ता हुआ, चढ़ता हुआ (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहयो = बढ़ता हुआ, चढ़ता हुआ (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहिणीः = रोहिणी, आरोहण करने वाली (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहिणीषु = रोहिणियों में, आरोहिणियों में (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहिण्यः = रोहिण्य, रोहिणी सम्बन्धी (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)।

रोहित = रोहित, बढ़ा, चढ़ा (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)।

रोहितम् = रोहित को, बढ़े को, चढ़े को (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)।

रोहितस्य = रोहित का, बढ़े का, चढ़े का (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)।

रोहिताग्निः = रोहित प्रकाश, प्रकट प्रकाश, उत्पन्न प्रकाश (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना, लू = काटना, कतरना, चीरना, लुम-लोम - लोम होना, अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाश होना)।

रोहिताय = रोहित के लिए (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म

होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)।

रोहितो = रोहित (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)।

रोहिदश्व = रोहिदश्व, रोहण करने वाले, चढ़ने वाले, बढ़ने वाले अश्व, व्यापक (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना। अश् - व्याप्त होना, फैलना, पहुँचना, पाना)।

रोहेम = चढ़ते रहें, बढ़ते रहें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना)।

रौद्रः = रौद्र (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना)।

रौद्रा = रौद्र (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना)।

रौद्रेण - रौद्रेण = रौद्र द्वारा (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना)।

रौद्रो = रौद्र (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना)।

ल

लक्ष्मीः - लक्ष्मीः = लक्ष्मी, दृष्टि, विचार (लक्ष् - देखना, विचार करना)।

लबान् = लाभों को (लभ = प्राप्त होना, मिलना)।

लभते - लभते = लाभ करते हैं, प्राप्त करते हैं (लभ् - पाना)।

लयः = लय, विलय, मिलन (ली = कष्ट होना। ली = युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना। ली = पतला करना, गलाना)।

लाङ्गलम् = लाङ्गल को, दान को, ग्रहण को (ला = लेना, ग्रहण करना, देना, दान देना)।

लाजाः = लाज (लज = लज्जित होना, मुंह छिपाना। लज = भूँजना, तलना, भूनना, अपमान करना, धिक्कारना। लज = प्रकट होना, स्पष्ट होना। लज = ढांकना, छिपाना, दूर करना। लज = चमकना, बोलना। लाज = भूनना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

लाजीन् = लाजियों को (लज = लज्जित होना, मुंह छिपाना। लज = भूँजना, तलना, भूनना, अपमान करना,

धिक्कारना। लज = प्रकट होना, स्पष्ट होना। लज = ढांकना, छिपाना, दूर करना। लज = चमकना, बोलना। लाज = भूनना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

लाजैः = लाजों द्वारा (लज = लज्जित होना, मुंह छिपाना। लज = भूँजना, तलना, भूनना, अपमान करना, धिक्कारना। लज = प्रकट होना, स्पष्ट होना। लज = ढांकना, छिपाना, दूर करना। लज = चमकना, बोलना। लाज = भूनना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

लिप्यते = लिप्त होता है (लिप - लीपना, पोतना, विलेपन करना, बढ़ाना, अधिक करना)।

लेखीः = लिखो (लिख - लिखना)।

लेभिरे = प्राप्त किया (लभ् - पाना, प्राप्त करना, ली = प्राप्त होना, मिलना)।

लोकः = लोक (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोककृत् = लोककृत, लोगों द्वारा किया हुआ (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना, कृ = करना)।

लोककृत्नुम् = लोककृत, लोगों द्वारा किया गया (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना, कृ = करना)।

लोकम् = लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोकसनि = लोकसेवा, लोकदान (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना, सन् - सेवा करना, योग्य होना, पूजा करना, सत्कार करना)।

लोका = प्रकाशवान् (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोकाः = लोकों (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोकात् = लोक से (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोकान् = लोकों को (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोकाय = लोक के लिए (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोके = लोक में (लोक = देखना, प्रकाशित होना,

बोलना)।

लोकेभ्यः = लोकों के लिए (लोक = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोपाशः = लोपाश, लोप होने वाला (लुप = लुप्त होना, मतिभ्रंश होना, चूकना, मतिभ्रंश कराना, चूक कराना)।

लोप्याय = लोप्य के लिए (लुप = लुप्त होना, मतिभ्रंश होना, चूकना, मतिभ्रंश कराना, चूक कराना)।

लोभयन्ती = लोभ करते हुए (लुभ - आशा करना, चाहना, लोभ करना, मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना, दीन होना)।

लोमभ्यः = लोमों के लिए (लू = काटना, कतरना, चीरना, लुम-लोम - लोम होना)।

लोमश-सक्थौ = लोमश और सक्थ (लू = काटना, कतरना, चीरना, लुम-लोम - लोम होना, सक्त - भूना, पकाना, पीसना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

लोमानि = लोमों ने, लोमों को (लू = काटना, कतरना, चीरना, लुम-लोम - लोम होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

लोहम् = लोह को (लू = काटना, कतरना, चीरना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)।

लोहित = लोहित (लुभ - आशा करना, चाहना, लोभ करना, मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना, दीन होना, लू = काटना, कतरना, चीरना, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

लोहिताय = लोहित के लिए (लुभ - आशा करना, चाहना, लोभ करना, मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना, दीन होना, लू = काटना, कतरना, चीरना, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

लोहितेन = लोहित द्वारा (लुभ - आशा करना, चाहना, लोभ करना, मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना, दीन होना, लू = काटना, कतरना, चीरना, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

व

वः = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम

सबको, तुम सबके लिए।

वक्ता = वक्ता, बोलने वाला (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वक्वा = वक्वा, वचनों द्वारा, वक्ताओं द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वक्षणा = वक्षना, पालन, रक्षा (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

वक्षत् = रक्षण करो, पालन करो (वक्ष = पालन करना, रक्षा करना। वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना)।

वक्षत = रक्षण करो, पालन करो (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

वक्षतु = रक्षा करे, पालन करे (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

वक्षयो = रक्षा करे, पालन करे, क्रोध करे (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

वक्षि = पालन करो, क्रोध करो (वक्ष - क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष - पालन करना, रक्षा करना)।

वक्ष्यतः = पालन करने वाले, रक्षा करने वाले (वक्ष = पालन करना, रक्षा करना, वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना)।

वक्ष्यन्ति = पालन करते हैं, रक्षा करते हैं (वक्ष = पालन करना, रक्षा करना, वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना)।

वक्ष्यामि = पालन-रक्षण करता हूँ (वक्ष = पालन करना, रक्षा करना, वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना)।

वग्नुः = वाणीयुक्त, विद्वान् (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वग्नुना = वाणीयुक्त द्वारा, विद्वान् द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वग्नुम् = वाणीयुक्त, विद्वान् को (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वग्वनुम् = वग्वनु को, वाणी-सेवायुक्त को (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त

होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

वङ्क्रीः = वक्री, टेढ़ा (वङ्क - वक्र होना, टेढ़ा होना, दुष्टता करना, नमन करना, वक्र करना, टेढ़ा करना, नमाना, टेढ़ा जाना)।

वचः = वचन (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वचनानि = वचनों को (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वचसः = वचन का (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वचसा = वचन द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वचसे = वचन के लिए (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वचस्या = वचन (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वचो = वचन को (वच् - बोलना, कहना, समझाना)।

वचोभिः = वचनों द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना)

वचो-युजा = वचन-युक्त, वाणी-युक्त (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

वचोविदः = वचनों को जानने वाले (वच् - बोलना, कहना, समझाना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

वच्यन्ते = बोलते हैं, अध्ययन करते हैं, जानते हैं (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वच्यस्व = बोलो, अध्ययन करो, जानो (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वज्र = वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त

- देना, लेना, ग्रहण करना)।

वज्रः = वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

वज्रदक्षिणम् = वज्र में दक्ष को, गति में दक्ष को (वज् - गति करना, जाना, दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

वज्रबाहुः = वज्रबाहु, वज्र है बाहु में जिसके, वह (वज् - गति करना, जाना, बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

वज्रबाहुम् = वज्रबाहु को, वज्र है बाहु में जिसके, उसको (वज् - गति करना, जाना, बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

वज्रम् = वज्र, गतिमान को (वज् - गति करना, जाना)।

वज्रहस्त = वज्रहस्त, गतिग्राही, वज्र ग्रहण करने वाले, हाथ में वज्र वाले (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

वज्रिणम् = वज्रयुक्त, गतिमान, प्रगतिशील को (वज् - गति करना, जाना)।

वज्रिणे = वज्र, गतिमान के लिए (वज् - गति करना, जाना)।

वज्रिन् = वज्रयुक्त, गतिमानयुक्त (वज् - गति करना, जाना)।

वज्री = वज्री, वज्र युक्त, गतिमान (वज् - गति करना, जाना)।

वज्रेण = वज्र, गतिमान द्वारा (वज् - गति करना, जाना)।

वज्चति = वज्चता है, जाता है (वज्च = ठगना, फंसाना, जाना, वज्चना करना)।

वज्चते = वज्चत के लिए, (वज्च = ठगना, फंसाना, जाना, वज्चना करना)।

वताम् = बोलने वाले को (वद् - वच् - बोलना)।

वर्त्तस्व = वर्तमान हो, व्यवहार करो (वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार

करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

वत्सः = बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)।

वत्सम् = बोलने वाले को (वद् -वच्- बोलना)।

वत्सरः = वाणी से चलने वाला (वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)।

वत्सराः = वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)।

वत्सराय = वत्सर के लिए, वाणी से चलने वाले के लिए (वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)।

वत्सरे = वत्सर में (वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)।

वत्सतयौ = वत्स-तय (वद् -वच्- बोलना, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

वत्सा = वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)।

वत्सासो = अनेक वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)।

वत्सेन = वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)।

वत्सो = वत्स (वद् = कहना, बोलना)।

वत्सौ = दो वत्स (वद् = कहना, बोलना)।

वद = बोलो (वद - कहना, समझाना)।

वदत = बोलो (वद - कहना, समझाना)।

वदतम् = बोलो (वद - कहना, समझाना)।

वदति = बोलता है (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।

वदन् = बोलते हुए, कहते हुए (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।

वदन्ति = बोलते हैं (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।

वदामसि = बोलते हो (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।

वदेम = कहें (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना,

समझाना)।

वदो = बोलने वाला (वद - कहना, समझाना)।

वधः = वध करने वाला (वध्-हन् = मारना)।

वधत्रे = वधत्र में (वध्-हन् = मारना)।

वधम् = वध को (वध्-हन् = मारना)।

वधस्नुम् = गतिशीलता से झरने वाले को (वध्-हन् - मारना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना, स्नु - भाप से टपकना, झरना, चूना)।

वधाय = वध के लिए (वध्-हन् = मारना)।

वधीः = वध करने वाला (वध्-हन् = मारना)।

वधीत् = वध करता है (वध्-हन् = मारना)।

वधेत् = वध करे (वध्-हन् = मारना)।

वधो = वध (वध्-हन् = मारना)।

वध्यासम् = मारें, नष्ट करें (वध्-हन् = मारना)।

वध्वर = वध करने वाला (वध्-हन् = मारना)।

वनः = वन (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

वनतम् = शब्द करो, सेवा करो (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

वनताम् = शब्द करे, सेवा करे (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

वनते = शब्द करता है (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

वनथः = सेवा, सहायता, शब्द करते हो (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

वनपम् = वनप को, वन पालक को (वन - शब्द करना,

सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

वने = वाणी में, वनों में (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदग्रस्त होना, अलग करना,

वन्धुरायुः = विद्वानों से मिलाने वाले, विद्वानों को देने वाले (वन - शब्द करना, सेवा करना, चाकरी करना,

सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, वन - स्मरण करना, वन - बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना)।

वन्ध्याय = वन्ध के लिए (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

वन्धताम् = वाणीयुक्तों का, स्तुति करे, सेवा करे (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

वन्धन् = स्तुति करते हुए, सेवा करते हुए (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

वन्धानासः = स्तुति करने वाले, सेवा करने वाले (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

वपति = बोता है (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपतु = बोओ (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपन्तु = बोओ (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपम् = वपन करने वाले को (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपाः = वपन करने वाले (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपाया = वपन द्वारा (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपाम् = वपा को (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपामि = बोता हूँ, उत्पन्न करता हूँ (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपावान् = वपावान्, वपन युक्त (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपुः = वपु (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वपुषे = वपुष के लिए (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वभूव = हुआ (भू - होना)

वम्र = वम्र (वम - वमन होना)।

वम्रो = वम्र (वम - वमन होना)।

वमर्यो - वमर्यो = वमर्य, वमनशील (वम - वमन होना)।

वय = वय, रचना (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वयः = वय, रचना (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वयति = बुनता है, रचता है (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वयन्ति = बुनते हैं, रचते हैं (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वयन्ती = बुनते हुए, रचते हुए (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वयोधाम् = वय या रचना को धारण करने वाले को (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना, धा - धारण करना)।

वरिमा = वरण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा)

वरीयः = वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरुत्तरीम् - वरुत्तरीम् = वरणीय, वरण करने वाला (वर

- इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरूथम् - वरूथम् = वरणीय, वरूथ (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरूथिने - वरूथिने = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरूथ्यः - वरूथ्यः = वरण करने योग्य (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरूथ्ये = वरणीय में (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरे = वर में (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरेण्यः = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरेण्यम् = वरणीय, वरण योग्य को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरेण्यस्य = वरणीय का, वरण करने योग्य का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरो = वर (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, रुचि करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वर्क = स्वीकार करें, मान्य करें (वृक - लेना, मान्य करना, स्वीकार करना)।

वर्गम् = वर्ग को, वरण को (वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

वर्चः - वर्चः = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चसा - वर्चसा = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चसाय - वर्चसाय = प्रकाश के लिए (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चसे - वर्चसे = प्रकाश के लिए, तेज के लिए (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चस्यम् - वर्चस्यम् = प्रकाशमान को, वर्चस्य को (वर्च = प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चस्वत् - वर्चस्वत् = वर्चस्वत् (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चस्वान् = वर्चस्वान् (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)

वर्चो - वर्चो = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्चोदा - वर्चोदा = प्रकाश देने वाले (वर्च = प्रकाशित होना)।

वर्चोदाः - वर्चोदाः = प्रकाश देने वाले (वर्च = प्रकाश होना, दा = देना)।

वर्चोधाम् - वर्चोधाम् = प्रकाश धारण करने वाले को (वर्च = प्रकाशित होना, चमकना)।

वर्च्चः - वर्चः = प्रकाश (वर्च = प्रकाश होना, दा = देना)।

वर्णः - वर्णः = वर्ण (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भोजना, रंगना)।

वर्णम् - वर्णम् = वर्ण को (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भोजना, रंगना)।

वर्णाय - वर्णाय = वर्ण के लिए (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा

वर्द्धयति - वर्द्धयन्ति = बढ़ाते हैं (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्द्धयामसि - वर्द्धयामसि = वृद्धि करते हो, बढ़ते हो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्द्धनेन - वर्द्धनेन = बढ़ने से (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्द्धयन्तु - वर्द्धयन्तु = बढ़े (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्द्धसे - वर्द्धसे = बढ़ते हो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।
वर्द्धस्व = बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्द्धासे - वर्द्धासे = बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्द्धिषीमहि - वर्द्धिषीमहि = वृद्धि करते हैं (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धनः = बढ़ाने वाले (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धन्तु = बढ़ाओ, बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धन्तो = बढ़ाता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धमानः - वर्द्धमानः = बढ़ता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धमानम् - वर्द्धमानम् = बढ़ते हुए, वृद्धि करते हुए को (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धय - वर्धय = बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धयमान = बढ़ता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धति = बढ़ता है, बढ़ाता है (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धते = बढ़ता है, बढ़ाता है (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धनम् = वृद्धि को (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धना = बढ़ाने वाले (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धन्ति = बढ़ते हैं, बढ़ाते हैं (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धन्तु = बढ़ें (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धमानो = बढ़ता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धय = बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धयन् = बढ़ाता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धयस्व = बोलो, बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धस्व = बोलो, बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धा = बढ़ाये, वृद्धि करे (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धिता = बढ़ाने वाला (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धिषीमहि = बढ़ें (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धेते = बढ़ाते हैं (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धथाम् = बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्पणीतिः - वर्षणीतिः = विविध रूपधारी (वर्ष - विविध रूप धारण करना, नी - ले जाना)।

वर्पसा = विविध रूपों द्वारा (वर्ष - विविध रूप धारण करना)।

वर्म = वर्म, आच्छादन (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढंकना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)।

वर्मणा = आच्छादन द्वारा (वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

वर्मिणे = आच्छादित के लिए (वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

वर्षतु - वर्षतु = बरसो, वर्षा करो (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षते = बरसता है, वर्ष करने वाले के लिए (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षम् = वर्ष को (वर्ष = गीला होना, वर्षा होना)।

वर्षवृद्धम् = वर्षा को बढ़ाने वाला (वर्ष = गीला होना, वर्षा होना, वृध् = बढ़ना)।

वर्षाः = बरसो, वर्षा करो (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षाभिः = वर्षाओं द्वारा (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)

वर्षाभ्यः = वर्षा के लिए (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षाभ्यो = वर्षा के लिए (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षिमा = वर्षि द्वारा (वर्ष = गीला होना, भीगना। वृष = बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना। वृष = गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना। वृ = पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढकना)।

वर्षिष्ठम् = परम पराक्रमी को (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षिष्ठा - वर्षिष्ठा = परम पराक्रमी (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षिष्ठाय - वर्षिष्ठाय = वर्षिष्ठ के लिए (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षिष्ठे - वर्षिष्ठे = परम पराक्रमी (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षीयसे = वर्षा करते हो (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्ष्मन् - वर्ष्मन् = पराक्रम (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वर्षस्य = वर्षा योग्य का (वर्ष = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

वलगम् = वलग को, आच्छादनगामी को, प्रसार-विस्तार करने वाले को (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना)।

वलगहनः = वलग का हनन करने वाला, वल की

गहनता वाला (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना। गह - गहन होना, घना होना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)।

वलगहनम् = वलगहन को (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना। गह - गहन होना, घना होना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)।

वलगहनौ = वलगहन द्वय (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना। गह - गहन होना, घना होना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)।

वल्गते = प्रगतिशील के लिए (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना)।

वल्मीकान् = वल्मीकों को (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

ववक्षत् = पालन किया, रक्षा की (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

ववक्षिथ = पालन, रक्षा किया (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

ववक्षे = पालन करता है (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

ववर्तत् = वर्तमान रहता है, व्यवहार करता है (वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

ववर्थ - ववर्थ = वरण किया (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

ववर्त = वर्तमान रहने वाला (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

ववर्ध = बढ़ा (वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

ववार = दूर किया, विवृत किया, आच्छादित किया (वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

ववृत्याम् = वरण किया, आच्छादित किया (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

ववृत्स्व = दूर करो (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

ववृमहे = वरण करते हैं (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)।

ववृषे = वरण, आशा, अमानवी पराक्रम, वर्षण करते हैं (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वव्रिवांसम् = नियोजित, आच्छादित करने वाले (वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, व्री = ढूँढ़ के निकालना, पसन्द करना, बीनना, आच्छादन करना, ढकना)।

वंशनर्त्तिनम् - वंशनर्त्तिनम् = वंशनर्त्तिन को, वंशनर्त्तक को (वंश् - बढ़ना, ऊँचा होना, उठना, ऊपर चढ़ना, नृत्य - नाचना, नृत्य करना)।

वशा = इच्छाएँ (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वशाः = इच्छाएँ (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वशान् = इच्छाओं को (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वशाम् = इच्छा को (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वशिम् = इच्छा को (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वशी = वश, इच्छा (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वशे = वश में, इच्छा में (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)।

वषट् = वषट्, इच्छा, वास (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वषट्कारा = वषट्-कार, वशकार, इच्छाकार (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, कृ - करना)।

वषट्-कारान् = वषट्-कारों को, वशकारों को, इच्छाकारों को (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, कृ - करना)।

वषट्कारैः = वषट्-कारों द्वारा, वशकारों द्वारा, इच्छाकारों द्वारा (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, कृ - करना)।

वषट्कृतम् = वषट्-कृत को, वश-कृत, इच्छा-कृत को, वास-कृत को, वहन-कृत को (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, कृ - करना)।

धारण करना, कतरना, लेना)।

वसु = वसु, निवास करने, वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुः = वसु, निवास करने, वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुत्तये = वसु, निवास करने, वास देने वाले के लिए (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुत्त्वनाय = वसु, निवास करने के लिए (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुदाम् = वसु-दाता को, वास देने वाले दानी को
(वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

वसुधितिम् = वसु को धारण करने वाले को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)।

वसुधिति = वसु को धारण करने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि , प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

वसुधेयस्य = वसु को धारण करने वाले का (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना,

निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)।

वसुना = वसु द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुनीथ = वसु को ले जाने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, नी - ले जाना)।

वसुभिः = वसुओं द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुभी = वसुओं द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुभ्यः = वसुओं के लिए (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुम् = वसु को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसुमती = वसुमान् (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वहताम् = वहन करें (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहति = वहन करता है (वह - वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहतु = वहन करें (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहतुम् = वहन करने वाले को (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहन्तः = वहन करते हुए (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहन्तम् = वहन करते हुए को, वहन करने वाले को (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहन्ति - वहन्ति = वहन करते हैं (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहन्तीः - वहन्तीः = वहन करने वाले (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहन्तु = वहन करें (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहमानाः = वहन करने वाले (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहसि = वहन करते हो (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहसे = वहन करते हो (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहा = वहन करो, ले जाओ (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहान् = वहन करने वालों को (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहेन = वहन करने वाले द्वारा (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्नयः = वहन करने वाला (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्निः - वह्निः = वहन करने वाला (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्नितमः - वह्नितमः = अत्यन्त वहन करने वाला

(वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्नितमम् - वह्नितमम् = अत्यन्त वहन करने वाले को (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्निम् = वहन करने वाले को (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्निभिः - वह्निभिः = वहन करने वालों द्वारा (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वह्ने = हे वहन करने वाले (वह = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वा = अथवा (अव्यय)।

वाः - वाः = प्रवाहमान, प्रगतिशील (वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वाक् = वाणी (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाकाः = वाणीयुक्त (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाक्पतिः - वाक्पतिः = वाणी के स्वामी (वच - बोलना, कहना, समझाना, पत् = ऐश्वर्य होना, स्वामी होना)।

वाग् = वाक्, वाणी (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाघतः = उत्थान से (वघ् - रुकना, उठना, उत्थान करना)।

वाघद्भिः = उत्थानों द्वारा (वघ् - रुकना, उठना, उत्थान करना)।

वाचः = वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाचम् = वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाचस्पति = वाणी का रक्षक, पालक (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

वाचस्पतिः = वाणी का रक्षक, पालक (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

वाचा = वाणी से (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाचि = वाणी में (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाचे = वचन के लिए (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाचो = वाक्, वाणी (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाच्यः = वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाच्याय = वाणी के लिए (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाजः = विद्या, गति, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वाज = विद्या, गति (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वाजकर्मभिः = वाज कर्म द्वारा (वाज् - गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, कृ - करना)।

वाजगन्ध्यम् = वाज-गन्धी को, विद्या-भासित, गति-शोभी को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। गन्ध् =

गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)।

वाजजित् = विद्याजयी, गतिजयी (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। जि-जय् - जीतना, जय करना)।

वाजजितः = विद्याजयी, गतिजयी (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। जि-जय् - जीतना, जय करना)।

वाजजितम् - वाजजितम् = वाजजित् को, विद्याजयी, गतिजयी को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। जि-जय् - जीतना, जय करना)।

वाजजिद् = विद्याजयी, गतिजयी (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। जि-जय् - जीतना, जय करना)।

वाजद्रविणासो = वाज-द्रविण, विद्या-द्रवणशील, प्रगतिशील विद्वान् (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

वाजनी = विद्यायुक्त, गतिमय (वाज् = जानना, जाना, पहुँचना, पाना, तैयार करना, वा - गति करना, बहना)।

वाजपतिः = वाजपति (वाज् = जानना, जाना, पहुँचना, पाना, तैयार करना, वा - गति करना, बहना। पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

वाजम् = विद्या को, गति को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना। वा - गति करना, बहना)।

वाजयन् = प्रगति करते हुए, बलवान् होते हुए (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

वाजयन्तः = गतिमान, बलवान (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजयन्तम् = गतिमान, बलवान को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजयन्ति = प्रगति करते हैं, बलवान् होते हैं (वाज् =

वाजिनः = बलशाली, वेगवान, तीव्र गति वाले = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनम् = वाजयुक्त को, विद्यायुक्त को, गतियुक्त को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिना = बलशाली, वेगवान, तीव्र गति वाले = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनानि = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनाम् = वाजयुक्तों का, विद्यायुक्तों का, गतियुक्तों का (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनी = बलवती, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनीम् = बलवती, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनीवति – **वाजिनीवति** = बलों से युक्त, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनीवती = बलवती, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजिनी-वसू = बलवान् वसु, बलवान् वास देने वाले, बलवान् निवासी (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वस् = वसना, वास करना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, कतरना, लेना)।

वाजिनेषु = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजी = बलों से युक्त, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त

(वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वाजे = वाज के लिए, विद्या-गति के लिए (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजेध्यायै = बल, विद्या से चमकने के लिए (वाज् + इध्यायै, वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना। इध् = चमकना, दीप्त होना)।

वाजेभिः = वाजों द्वारा (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजेषु = वाजों में (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजैः = वाजों द्वारा, विद्या-गति द्वारा (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजो = विद्या, गति, वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाञ्छन्तु = वाञ्छा करें, इच्छा करें, चाहें (वाञ्छ् = इच्छा करना, चाहना)।

वाट् = संगठन, प्रवचन, सुख, सेवा (वट् = घेरना, एकत्र करना, परिभाषण करना, ग्रन्थ बनाना, गूँथना, वात् - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना)।

वाणम् = वाणी को (वण् - बोलना, भीड़ होना)।

वाणाः = वाणियाँ (वण् - बोलना, भीड़ होना)।

वाणिजम् = वाणिज को (वण् - बोलना, भीड़ होना)।

वाणिजाय = वाणिज के लिए (वण् - बोलना, भीड़ होना)।

वाणीः = वाणी (वण् - बोलना, भीड़ होना)।

वातः = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात -

वाला (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना, उप - समीप (उपसर्ग), धू - कम्पन करना, कम्पित करना, हिलाना, क्षोभित करना)।

वात्याय = वात्य के लिए (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)।

वादिष्टम् = वादिष्ट को, अत्यन्त वाणी युक्त, कुशल वक्ता, उत्तम वक्ता (वद् - बोलना, कहना, समझाना)।

वानस्पत्यः = वनस्पतिजन्य (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

वाम् = तुम दोनों को (सर्वनाम)।

वामजाताः = वाम से उत्पन्न, सुगन्ध, विद्या, गति-ज्ञान, प्राप्ति से उत्पन्न (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, वम् - वमन होना, जन् - उत्पन्न होना, जन्म लेना, उत्पन्न करना)।

वामदेव्यम् = वामदेव्य को, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति की दिव्यता को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, वम् - वमन होना)।

वामनः = वामन, सुगन्धित मन, प्रवाहमान मन (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, वम् - वमन होना)।

वामनम् = वामन को, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वम् - वमन होना, मन् - मानना, विचार करना)।

वामम् = वाम को, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)।

वामनाः = वामन, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना,

जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, मन् - मानना, विचार करना)।

वामनाय = वामन के लिए, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)।

वामभाजः = सुगन्ध, विद्या, गति-ज्ञान की सेवा (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, भज् - सेवा करना)।

वामम् = वाम को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)।

वामस्य = वाम का (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)।

वायः = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वायव = गतिशील, रचनाशील (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वायवः = गतिशील, रचनाशील (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वायवस्थ = गतिशीलता, रचनाशीलता में स्थित (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की

वायव्यानि = गतिशील, रचनाशील (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित

वायू: = वायु, प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना,

करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारयन्ते = वरण करते हैं, निवारण करते हैं (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन् -उद्धार करना)।

वारवन्तम् = वारवन्त को, वरणों को, वरणीय, वरण करने वालों को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारा = वरणीय, प्रिय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वाराणि = वरण, वरणीय, वरण करने वाले (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वाराम् = वरणीय, प्रिय को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारि = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारितीनाम् = वारतीयों का, वरणीय, वरण करने वालों का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारिवः = वरणीय, वरण करने वाले (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारुणः = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारुणाः - वारुणाः = वरणीय, वरण करने वाले (वर -

इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारै = वार में, वरण में, इच्छाओं में (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारण = वार द्वारा, वरणीय, वरण करने वाले द्वारा (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारैभिः = वारों द्वारा, वरणों द्वारा, इच्छाओं द्वारा (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वारैः = वारों द्वारा, वरण, इच्छाओं द्वारा (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्जिनम् - वार्जिनम् = त्याग, वर्जना को (वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)।

वार्णम् = वर्ण को, विस्तार को, प्रकाश को (वर्ण - वर्णन करना, विस्तृत करना, फैलाना, प्रशंसा करना, चमकना, प्रकाशित होना)।

वार्धनसः = बढ़ाने वाले (वृध् = बढ़ना, अधिक होना, काटना, चीरना, भरना, पूर्ण करना, चमकना, बोलना। वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्यः = प्रगतिशील के लिए (वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वार्यम् = वार्य, वरणीयों को, वरण को (वर - इच्छा

करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्यस्य = वार्य का, वरणीयों का, वरण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्या = वार्या, वरणीय, वरण करने योग्य (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्याणाम् = वार्यों का, वरणीयों, वरण करने योग्यों का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्याणि - वार्याणि = वार्य, वरणीयों को, वरण करने योग्य (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वार्षिकौ - वार्षिकौ = पराक्रमी युगल (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना)।

वार्षी - वार्षी = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना)।

वालः = वाल (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

वावदत् = बोले, बोलते हुए (वद् - बोलना)।

वावदीति = बोलता है (वद् - बोलना)।

वावशानः = इच्छुक, इच्छा करने वाले (वश् = इच्छा करना, चाहना)।

वावसे = वर्तमान हैं (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वावृते = वर्तमान है (वृ - वरण करना, आच्छादन

करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

वावृधानः = वृद्धि करने वाले (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

वावृधानम् = वृद्धि करने वाले (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

वावृधुः = वृद्धि करते हुए (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

वावृधे = वृद्धि की (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

वावृधेन्यम् = वृद्धि योग्य को (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

वावृध्वासम् = वृद्धि करने वाले को (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

वावृषस्व = वर्षा करो (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वाशः = प्रकाश, इच्छा करने वाले (वश - प्रकाश करना, इच्छा करना, चाहना)।

वाश्राः = प्रगतिशील, व्याप्त करते हुए, व्याप्त होते हुए, प्रकाश करते हुए (वश - प्रकाश करना, इच्छा करना, चाहना, वा - गति करना, बहना। श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)।

वासः = घर, निवास (वस् = रहना, निवास करना)।

वासन्तिकौ = वासयोग्य, वासमय, वास किया हुआ, वास्य (वस् = रहना, निवास करना)।

वासन्ती = वासयोग्य, वासमय, वास किया हुआ, वास्य (वस् = रहना, निवास करना)।

वासयामः = वास करते हैं, आच्छादन करते हैं, धारण करते हैं (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वासयिष्यसे = वसाओगे, वास करोगे, आच्छादन करोगे (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा

होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वासरम् = वासर को, निवास को (वस् = रहना, निवास करना)।

वास्तव्याय = वासयोग्य, वास्तव्य के लिए (वस् = रहना, निवास करना)।

वास्तुपाय = वास्तु-पालक के लिए, वास्तु-रक्षक के लिए (वस् = रहना, निवास करना)।

वास्तोष्पते = वास्तोष्पत के लिए (वस् = रहना, निवास करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

वास्यम् = वासयोग्य, वासमय, वास किया हुआ, वास्य को (वस् = रहना, निवास करना)।

वाहणो = वहन करने वाले (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहनः = वहन करने वाले (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहम् = वहन करने वाले को (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहसम् = वहन करने वाले को (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहसा = वहन करने वाले (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहा = वहन करने वाले (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहान् = वहन करने वालों को (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहि = वहन करें (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहिष्ठम् = अत्यन्त वहन करने वाले (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वाहैः = वहन करने वालों द्वारा (वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)।

वि अकल्पयन् = विशेष कल्पना करते हैं (वि - विशेष, कल्प - कल्पना करना)।

वि अक्रामत् = विशेष रूप से प्राप्त हुआ (वि - विशेष, क्रम् - चलना, निर्भयता से जाना, रक्षा करना)।

वि अदधुः = विशेष रूप से धारण करते हैं (वि - विशेष, धा - धारण करना)।

विकस्तम् = विकस्त को (वि - विशेष, कस = हिलना, कांपना। कस = जाना, नष्ट करना, आज्ञा करना, दण्ड देना, शासन करना। कस्त = गन्धने, अल्पीभावे।

विकृन्तन्तम् = विकृन्तन करने वाले को (वि - विशेष, कृन्त् - काटना)।

विकृन्तम् = विकृन्तन करने वाले को (वि - विशेष, कृन्त् - काटना)।

विकृन्तानाम् = विकृन्तन करने वालों का (वि - विशेष, कृन्त् - काटना)।

विक्त = विक्त, पृथक्, विवेक, तारतम्य (विक्- विज् = अलग करना, या होना, टूटना, छूटना, विवेक करना, तारतम्य देखना)।

विक्रमणम् - विक्रमणम् = विक्रम को, पराक्रम को (वि = विशेष, विना, विलोम, क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)।

विक्रमणेषु = विक्रमों में (वि + क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)।

विक्रमस्व - विक्रमस्व = पराक्रम करो (वि = विशेष, विना, विलोम, क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)।

विक्रान्तम् - विक्रान्तम् = विक्रान्त को, पराक्रम को (वि = विशेष, विना, विलोम, क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)।

विक्रीणावहा = आदान-प्रदान करते हैं, विक्री करते हैं (क्री- खरीदना, बदले में लेना)।

विक्षिणत्केभ्यो = विहिंसक, अहिंसक (वि = विशेष, विपरीत, क्षिणु - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना)।

विक्षिपः - विक्षिपः = विक्षिप (वि - विशेष, क्षिप - फेंकना, उड़ाना, भेजना, रखना, धरना, मार डालना, दोष लगाना, नष्ट करना)।

विक्षु - विक्षु = विवेकशीलों में (विक्ष - विवेक करना, तारतम्य देखना, पृथक् करना, पृथक् होना)।

विख्याय = प्रख्यात करने वाले, खाने वाले, संचयी, भ्रमणशील (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। खै - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना, खोदना, ख्या - प्रसिद्ध करना, कहना, व्याख्यान करना)।

विघनिना = हनन करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। घन्-हन् - मारना, हिंसा करना)।

विघ्नन् = विशेष हनन करते हुए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। घन्-हन् - मारना, हिंसा करना)।

विघ्नन्तो = विशेष हननकर्ता (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। घन्-हन् - मारना, हिंसा करना)।

विचक्रमाणः = विक्रमशील, पराक्रम करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। कृ - करना, चक-तृप्त होना, चकमा देना, सन्तुष्ट होना)।

विचक्रमे - विचक्रमे = रचना की (वि = विशेष, कृ - करना, क्रम् - चलना, निर्भयता से जाना, रक्षा करना)।

विचक्षणः = विशेष दृष्टि, विशेष वाणी वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

विचक्षणो = विशेष दृष्टि, विशेष वाणी (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

विचक्षाणो = विशेष दृष्टि, विशेष वाणी वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

विचरन् = विचरण करते हुए (वि = विशेष, विना, विलोम, चर् = चलना, जाना, विचरण करना, संशय होना, विचार करना, संशय रहित होना)।

विचर्षणिः - विचर्षणिः = विशेष विचार करने वाले (चर्ष - संशय होना, विचार करना, संशय रहित होना)।

विचर्षणे = हे विशेष विचार करने वाले! (चर्ष-चर - संशय होना, विचार करना, संशय रहित होना)।

विचिकित्सति = संशयग्रस्त होता है (वि = विशेष, विपरीत, चिकित् - जानना, वि-चिकित् - संशय होना, भ्रम होना)।

विचितः = विशेष चेतना (वि = विशेष, विपरीत, चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)

वि चिन्वन्तु = बढ़ायें, वृद्धि करें (वि = विशेष, विपरीत, चिन्व = बढ़ाना)।

विचृताय = विशेष प्रकाशित करने के लिए (वि - विशेष, चृत् - प्रकाशित करना, एकत्र करना, गूँथना, हिंसा करना)।

विचृत्य = विशेष रूप से प्रकाशित कर (वि - विशेष, चृत् - प्रकाशित करना, एकत्र करना, गूँथना, हिंसा करना)।

विच्छन्दाः = विशेष छन्द (वि - विशेष, छन्द - आच्छादन करना, ढकना)।

विजर्जराम् - विजर्जराम् = विजर्जरा को, विशेष जर्जर को (वि - विशेष, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)।

विजातो = विशेष उत्पन्न (वि - विशेष, जन् - जन्म लेना, उत्पन्न होना)।

विजानतः = विशेषकर जानता है (वि - विशेष, ज्ञा - जानना)।

वि जायते = विशेषकर जन्म लेता है (वि - विशेष, जन् - जन्म लेना, उत्पन्न होना)।

विजावा = विशेष, विविध उत्पत्तिकर्ता (वि - विशेष, विविध, जन् - उत्पन्न करना)।

विजृम्भमाणाय = विजृम्भमाण के लिए, वृद्धों के लिए, विजयशील के लिए (जृम्भ = विकसित होना, प्रकाशित होना)।

विज्ञातम् = विशेष जान लिया, विद्वान् को (वि - विशेष, ज्ञा - जानना)।

विज्ञाताय = विज्ञात के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। ज्ञा = जानना)।

विज्ञानम् = विज्ञान को (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। ज्ञा = जानना)।

विज्यम् = विज्य को (वि - विशेष, जि - जय होना, जीतना)।

विट्-विड् = शब्द, परिहास करने वाला, शाप देने वाला (विट् = शब्द करना, परिहास करना, शाप देना)।

वित् = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना,

जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विततः = विस्तृत (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना)।

विततम् = विस्तृत को (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना, वित्त - देना, दान करना, धर्म में व्यय करना)।

वितता = विस्तृत (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना, वित्त - देना, दान करना, धर्म में व्यय करना)।

विततो = विस्तृत, वर्णन-विस्तार (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना)।

वितरम् = वितर को, विशिष्ट तारने वाले को (वि - विशेष, तृ - पार जाना, जल पर तैरना, जीतना, नौकादि साधन से जल के पार जाना)।

वितस्थिरे - वितस्थिरे = वितस्थ हुए (वि - विशेष, तस् - स्थापन करना, रक्षा करना)।

वितिष्ठन् = प्रतिष्ठित, स्थित, ठहरा, खड़ा (वि - विशेष, तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)।

वितिष्ठसे = प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (वि - विशेष, तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)।

वित् - वित्त = वित्त (वित् - दान करना, धर्म में व्यय करना)।

वित्तधम् = वित्त धारण करने वाले को (वित् - दान करना, धर्म में व्यय करना, धा - धारण करना)।

वित्तम् - वित्तम् = वित्त को (वित् - दान करना, धर्म में व्यय करना)।

वित्तात् - वित्तात् = वित्त से, दान करे (वित् - दान करना, धर्म में व्यय करना)।

वित्तायनी = वित्तायनी, दानी (वित् - देना, दान करना, धर्म में व्यय करना)।

वित्तिः - वित्ति = वित्ति, दान (वित् - दान करना, धर्म में व्यय करना)।

वित्वा = जानकर (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदः = विद्वान् (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदत् - विदत् = जानें (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदद्वसः = लब्धवस, वास को जानने वाले (विद - समझना, जानना, समझा कर कहना, रहना, वास करना, स्थिर रहना, प्राप्त करना, सम्पादित करना। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विदथस्य = विद्वान् का (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदथा = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदथानि = विद्याएं, विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदथे = विदथ में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदथेषु = ज्ञान प्राप्ति में, ज्ञानियों में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)।

विदथ्यम् = ज्ञानी को, जानकार को (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)।

विदधत् = विधान करता हुआ, विशेष धारण करता हुआ (वि - विशेष, दध - धारण करना, पालन करना)।

विदधातु = धारण करें, विधान करें (वि - विशेष, दध - धारण करना, पालन करना)।

विदन् = जानते हुए, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना,

वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदयते = विशेष देते हैं (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), दय - दान करना, पालन करना, गति करना, हिंसा करना)।

विदा = जानने वाले, ज्ञान कराओ, विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदाथ = विद्वान्, दानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)।

विदानः = विद्वान्, दानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)।

विदाने = विद्वान् में, दानी में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)।

विदाम् = विद्वान् को, दानी को (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)।

विदित्वा = जान कर (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)।

विदिद्युतानो = विशेष प्रकाशमान (वि = विशेष, विना, द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)।

विदुः = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदुषे = विद्वान् के लिए (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदे = जानता है, विद्वान् में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदेत् = जाने (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधर्त्ता - विधर्त्ता = विशेष धारण करने वाले (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधर्मणि = विधर्म में, विशेष धारण करने में (वि - विशेष, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

विधर्मन् = विधर्म, विशेष धारण (वि - विशेष, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

विधाता = विधान करने वाला, विशेष धारण करने वाला (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधाभिः = विधान द्वारा, विशेष धारण द्वारा (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधारयः = विशेष धारण करने वाला (वि - विशेष। धृ - धारण करना। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधारे = विशेष धारण करने वाला (वि - विशेष। धृ - धारण करना। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधृतम् = विशेषतया धारण करने वाले को (वि - विशेष। धृ - धारण करना)।

विधृतिः - विधृतिः = हे विधृति, विशेषतया धारण करने वाले (वि - विशेष। धृ - धारण करना)।

विधृतिम् = विधृति को, विशेषतया धारण करने वाले को (वि - विशेष। धृ - धारण करना)।

विधूताय = विशेष धृत के लिए, विशेष कम्पन के लिए (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, धून = कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

विधून्वानाय = विशेष धून्वान के लिए, विशेष कम्पन करने वाले के लिए (धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित

करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, धून = कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)।

विधेम = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विध्य = वेधन योग्य, वेधन करके (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।

विध्यत = वेधन करो, विधान करो (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।

विध्यताम् = विधान करें, वेधन करें, वेध करें (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।

विध्यतु = वेधन करो, विधान करो (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।

विध्यद्भ्यः = विध्य के लिए (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।

विनिंशिन = विनाशी (वि - विशेष, नश् - नष्ट होना, खो जाना, दिखाई न देना)।

विनाशम् = विनाश को, विशेषतः नष्ट हो जाने को (वि - विशेष, नश् - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

विनाशेन = विनाश द्वारा (वि - विशेष, नश् - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

विन्दते = प्राप्त करता है (विन्द - लाभ होना, प्राप्त करना, सम्पादित करना)।

विन्दसे = प्राप्त करते हो (विन्द - लाभ होना, प्राप्त करना, सम्पादित करना)।

विपः = विशेष रक्षक, पालक (वि = विशेष, विना, विलोम। विप् = प्रेरणा करना। पा - पालन करना)।

विपक्षसा - विपक्षसा = विशेष पक्ष से (वि = विशेष, विना, विलोम, पक्ष - पक्ष होना, एक पक्ष में होना, पक्ष करना)।

विपन्यया = विशेष अर्चना से (वि = विशेष, विना, विलोम, पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

विपन्यवो = विशेष व्यवहार, स्तुति करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम, पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

विपन्युभिः = विशेष व्यवहारों, स्तुति करने वालों द्वारा (वि = विशेष, विना, विलोम, पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

विपन्युवः = विशेष व्यवहार, स्तुति करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम, पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

विपर्वम् - विपर्वम् = विशेष पर्व को, विशेष पूरा करने को, विपर्व को (वि = विशेष, विना, विलोम। पर्व - पूरा करना, भरना, सन्धि-विभाग होना)।

विपश्चित् = मेधावी, विशेष दृष्टियुक्त (वि = विशेष, विना, विलोम, विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना)।

विपश्चितः - विपश्चितः = मेधावी, विशेष दृष्टियुक्त (वि = विशेष, विना, विलोम, विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना)।

विपश्चिता - विपश्चिता = विशेष दृष्टियुक्त, विद्वानों से (वि = विशेष, विना, विलोम, विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना)।

विपश्चिते = मेधावी, विशेष दृष्टियुक्त के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम, विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना)।

विपश्चितो = विशेष दृष्टियुक्त (वि = विशेष, विना, विलोम, विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना)।

विपा = विशेष रक्षक, पालक (वि = विशेष, विना, विलोम। विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना। पा - पालन करना)।

विपानम् = विपान को, विशेष रक्षक को (वि = विशेष, विना, विलोम। विप् = प्रेरणा करना। पश् = देखना। पा = रक्षा करना। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

विपाम् = विशेष रक्षक, पालक को (वि = विशेष, विना, विलोम। विप् = प्रेरणा करना। पा = रक्षा करना। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

विपिपानस्य = विशेष पान कराने वाले का (वि = विशेष, विना, विलोम। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

विपिपानाः = विशेष पान कराने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

विपृक्त = विपृक्त (वि = विशेष, विना, विलोम। पृक् - मिलना)

विप्रः - विप्रः = विशेष पूर्ण करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम। प्रा - पूर्ण करना)।

विप्रजूतः = विप्रजूत, विशेष प्रगतिशील (वि = विशेष, विना, विलोम। प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।

विप्रम् = विशेष पूर्ण करने वाले को (वि = विशेष, विना, विलोम, प्रा - पूर्ण करना)।

विप्रवचसः = विशेष उत्तम वचन वाले (वि = विशेष, विना, विलोम। प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

विप्रस्य - विप्रस्य = विप्र का (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

विप्रा - विप्रा = विप्र (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

विप्राः - विप्राः = विशेष पूर्ण करने वाले (वि - विशेष, प्रा - पूर्ण करना)।

विप्राणाम् = विशेष पूर्ण करने वालों का (वि - विशेष, प्रा - पूर्ण करना)।

विप्राय = विप्र के लिए (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, भरना)।

विप्रासः - विप्रासः = विप्रगण (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, पूर्ण होना, तृप्त करना)।

विप्रासो - विप्रासो = विप्रगण (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, पूर्ण होना, तृप्त करना)।

विप्रुङ्भिः = विशेष अधिकता द्वारा (वि = विशेष, प्रु - अधिक होना, हिलना, चलना, जाना)।

विप्रेण = विप्र द्वारा, विशेष पूर्ण, तृप्त करने वाले द्वारा (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, पूर्ण होना, तृप्त करना, भरना)।

विप्रेभिः = विप्रों द्वारा (वि = विशेष, प्रा - पूर्ण करना, पूर्ण होना, तृप्त करना, भरना)।

विप्रो - विप्रो = विप्र, विशेष पूर्ण, तृप्त करने वाले (वि

= विशेष, प्रा - पूर्ण करना, पूर्ण होना, तृप्त करना, भरना)।

विवलम् = विशेष बल (वि = विशेष, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

विबाधध्व = विबाधा करो, बाधा मुक्त करो (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

विभक्ता = विभाग करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भज् - सेवा करना, दान करना, वि-भज् - विभाजन करना, बाँटना)।

विभक्तारम् - विभक्तारम् = विभाग करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भज् - सेवा करना, दान करना, वि-भज् - विभाजन करना, बाँटना)।

विभर्ति - विभर्ति = भरण करता है (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भृ - भरण पोषण, धारण करना)

विभाति - विभाति = विशेष प्रकाशित होता है (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

विभावरी = विशेष प्रकाश युक्त, विभावरी (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

विभावसुम् = विशेष प्रकाशित को, विभावसु को (वि - विशेष, भा - चमकना, प्रकाशित होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विभावसो = विशेष प्रकाशित होता है, वसु का, वासस्थान तथा वास करने वाले लोगों का (वि - विशेष, भा - चमकना, प्रकाशित होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विभासहम् = विशेष प्रकाश में समर्थ को (वि - विशेष, भा - चमकना, प्रकाशित होना, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

विभिः = प्रगति, व्यापक, प्रेरणा, इच्छा द्वारा (वि =

विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। वी = गति करना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना, इच्छा करना। भी - डरना, भय होना। भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

विभिन्नति = विशेष भेदन, भाग करते हैं (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। वी = गति करना, व्याप्त होना, प्रेरणा करना, इच्छा करना। भी - डरना, भय होना। भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

विभृत = विशेष भरण करने वाला (वि - विशेष, भृ - भरण करने वाला)।

विभृतम् = विशेष भरण करने वाला (वि - विशेष, भृ - भरण करने वाला)।

विभृता = विशेष भरण करने वाला (वि - विशेष, भृ - भरण करने वाला)।

विभृत्वा = विशेष भरण करके (वि - विशेष, भृ - भरण करने वाला)।

विभू = विभू (वि - विशेष, भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभुम् = विभू को (वि - विशेष, भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभुमद्भ्योः = विभू आनन्द के लिए (वि - विशेष, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, मद - हृष्ट होना, हर्षित होना, तृप्त करना, समाधान करना)।

विभुवे = विभु के लिए (वि - विशेष, भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभूः = विभू, विशेष रूप से हुआ (वि + भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभूतिः = विभूति (वि + भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभूतरातिम् = विभूत-राति को, विभूतदानी को (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), भू - होना, पाना, चिन्तन करना, रा - देना, मिल जाना)।

विभून् = विभूओं को (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभूवसुः = विभूवसु (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। भू = होना, पाना, चिन्तन करना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विभूषन् = विभूषित होता हुआ, विभूषित करता हुआ (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भूष् - भूषित होना, सजाना)।

विभोः = विभु का (वि - विशेष, भू - होना, उत्पन्न होना, होना, प्राप्त होना, एकत्र करना, कल्पना करना)।

विभ्यम् = विशिष्ट चिन्तन को, विभ्य को (वि - विशेष, भी - भय होना, डरना, भू = होना, पाना, चिन्तन करना)।

विभ्राड् = विशेष प्रकाशमान् (भ्राज् - चमकना, प्रकाशित होना)।

विभ्राजम् = विशेष भ्राज, विशेष प्रकाशित को (वि - विशेष, भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

विभ्राजमानः = विशेष प्रकाशित (वि - विशेष, भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना)।

विभ्राष्टिम् = विशेष प्रकाशित को (वि - विशेष, भ्रास - चमकना)।

विभ्वम् - विभ्वम् = विभु को (वि = विशेष, विना, विलोम, भू - होना, उत्पन्न होना, होना, प्राप्त होना, एकत्र करना, कल्पना करना)।

विभ्वा = विभु, विशेष होने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम, भू - होना, उत्पन्न होना, होना, प्राप्त होना, एकत्र करना, कल्पना करना)।

विम् = विम, व्याप्त को, गतिवान् को (वी - जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना)।

विमना = विमन, विशेष मन वाले (वि = विशेष, विना, विलोम, मन = जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

विममे = विमान किया, निर्माण किया, बनाया (वि = विशेष, विना, विलोम, मा - नापना, तौलना, मान करना, शब्द करना, समाना, वि-मा -विशेष मान करना, बनाना)।

विमानः = विशेष मान वाला (वि = विशेष, विना, विलोम, मान - मान करना, पूजा करना, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा करना, शोध करना, सत्कार करना, मनाना, तोलना, तुलना करना, मापना)।

विमाने - विमान में, विशेष मान में (वि = विशेष, विना, विलोम, मान - मान करना, पूजा करना, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा करना, शोध करना, सत्कार करना, मनाना, तोलना, तुलना करना, मापना)।

विमुञ्चति = कहता है, छोड़ता है (वि = विशेष, विना, विलोम, मुञ्च्, मुञ्च् = बोलना, कहना, त्याग करना)।

विमोक्तारम् = विमुक्त करने वाले को (वि = विशेष, विना, विलोम, मुच् - मुक्त करना)।

वियत् = वियत्, विशेष प्रयत्न, विशेष, आदेश, विशेष, एकत्रीकरण (वि = विशेष, यत् = दुःख देना, मारना, ठोकना, चपेटना, आज्ञा करना, एकत्र करना, मना करना, रोकना, यत् = यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

वियासाय = वियास के लिए, विशेष प्रयास के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम, यस् - यत्न करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

वियौष्म = मिलें, अलग हों (यु = मिलाना, अलग करना)।

विरप्तिन् = स्पष्ट वक्ता (वि = विशेष, विना, विलोम, रप् = स्पष्ट बोलना)।

विरप्ती = स्पष्ट वक्ता (वि = विशेष, विना, विलोम, रप् = स्पष्ट बोलना)।

विराज = विराजमान, प्रकाशमान (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना)।

विराजः = विराजमान, प्रकाशमान (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना)।

विराजति = प्रकाशित होता है (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना)।

विराजम् = विराज को, प्रकाशित को (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना)।

विराजा = प्रकाशित (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना)।

विराजे = प्रकाशित होता है (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना)।

विराजो = विराज, प्रकाशित (वि - विशेष, राज् - चमकना, शोभित होना, तेज होना)

विराट् = विराट्, प्रकाशित, विशेष वक्ता (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना, रट् - शब्द करना, बोलना, सम्भाषण करना)।

विरिष्टम् = विरिष्ट को, विशेष दुःखदायी को (वि - विशेष, रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

विरुक्मता = विशेष प्रकाश, प्रदीप्ति (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

विरुरुचुः = प्रकाशित किया (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

विरूपान् = विरूपों को (वि - विशेष, विविध, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

विरूपे = विरूप में, भिन्न भिन्न रूप में (वि - विशेष, रूप - आकार बनाना, रचना करना, रूप बनाना)।

विरूपेभ्यः - विरूपेभ्यः = विरूपों के लिए (वि - विशेष, विविध, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

विरोचयन् = विशेष प्रकाशित होते हुए, विशेष रुचते हुए (वि - विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)

विरोह = रोहण करो (वि = विशेष, विना, विलोम, रुह - बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना)

विरोहसि = रोहण करते हो (वि = विशेष, विना, विलोम, रुह - बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

विलायकः = विलायक (वि = विशेष, विना, विलोम, ली = मिलना, लय होना, लय करना)।

विलिष्टम् = विलिष्ट को, अत्यल्प को, प्रगति को (वि

= विशेष, विना, विलोम, लिश् = अल्प करना, न्यून करना, जाना, जानना, पाना)।

विलोहितः = विलोहित, विकर्तक (वि = विशेष, विना, विलोम, लू = काटना, कतरना, चीरना, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

विवः = विशेष व्याप्त हुआ, विशेष वास हुआ (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वा - जाना, पवन सा चलना, वी - जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना)।

विवक्ति = विशेष उक्ति, कथन, बोलता है, कहता है (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

विवक्तिम् = विशेष बोलता हूँ, कहता हूँ (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

विवक्षणस्य = विशेष क्रोध, एकत्र, पालन-रक्षण का (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

विवक्षत = विवक्षा की, विशेष क्रोध, एकत्र, पालन-रक्षण किया (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

विवक्षसे = विवक्षा के लिए, विवक्षा करते हो (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)।

विवर्तनम् = विवर्तन को, विशेष वर्ताव को (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

विवर्तमानाय = विशेष वर्तमान के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

विवर्ते = विवर्तन के लिए, विशेष वर्ताव के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। वृत् - वर्तन करना, वर्ताव

करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

विवर्त्तो = विशेष वर्त्तन, व्यवहार (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

विवष्टु = विशेष चाहने वाले, निवास (वि = विशेष, विना, विलोम, वश - इच्छा करना, चाहना, वस - निवास करना)।

विवस्वत् = विशेष वास (वि = विशेष, विना, विलोम। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विवस्वते = विवस्वत् के लिए, विशेष वास के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विवस्वतो = विशेष वास वाले (वि = विशेष, विना, विलोम। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विवस्वन् = विशेष वास युक्त (वि = विशेष, विना, विलोम। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विवस्वभिः = विशेष वास द्वारा (वि = विशेष, विना, विलोम। वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

विवावृधे = विशेष वृद्धि करता है (वि = विशेष, विना, विलोम, वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)।

विवासति = विशेष वास करता है (वि = विशेष, विना, विलोम, वास - वासित करना, सुगन्धित करना, धूपित करना, धूप देना, वस - निवास करना)।

विवासन्ति = विशेष वास करते हैं (वि = विशेष, विना, विलोम, वास - वासित करना, सुगन्धित करना, धूपित करना, धूप देना, वस - निवास करना)।

विविक्त्यै = विविक्ति के लिए, विवेक के लिए, तारतम्य के लिए (वि - उपसर्ग, विक् - विवेक होना, तारतम्य देखना, अलग करना)

विविड्ढि = शब्द करो (वि - विशेष, विड्-विट् = शब्द करना, परिहास करना, शाप देना)।

विविध्यन्तीभ्यः = विशेष रूप से धारण कर्ताओं के लिए, विधानकर्ताओं के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा - धारण करना)।

विविनक्तु = विनक्त करो, शुद्ध करो (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। विनक् = शुद्ध करना)।

विवृत् = विशेष वृत् के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

विवृताय = विशेष वृत् के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

विवृते = विशेष वृत् के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

विवेद = विशेष वेद, विशेष ज्ञान, विशेष ज्ञाता, जाना (वि - विशेष, विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

विवेदिथ = विद्वान्, जानते हुए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

विवेश = प्रविष्ट हुआ, प्रवेश किया (सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)।

विवेशा = प्रवेश करो (वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)।

विवेशिथ = विवेशित, प्रवेशित (वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)।

विव्यक्थ = व्याप्त (वि - विशेष, व्यच - व्यापना, ठगना, फसाना, जाना)।

विव्याच = व्याप्त हुआ (वि - विशेष, व्यच - व्यापना, ठगना, फसाना, जाना)।

विश = व्याप्त, प्रविष्ट, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, धंसना)।

विशः = व्याप्त, प्रविष्ट, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, धंसना)।

विशत = प्रविष्ट हो (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)।

विशतात् - विशतात् = प्रविष्ट हो (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)।

विशती = प्रवेशी (विश् - घुसना भीतर जाना, चारों ओर फैलाना)।

विशन्ति - विशन्ति = प्रवेश करते हैं (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।

विशन्तिः - विशन्तिः = प्रवेशी (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।

विशन्तु = प्रवेश करें (विश् - घुसना भीतर जाना, चारों ओर फैलाना)।

विशम् = प्रवेशी को (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।

विशस्ता = विशस्त, विहिंसक, प्रवेशी, विशेष शस्त्र वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। शस् - काटना, हिंसा करना, विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)।

विशस्व = प्रवेश करो (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।

विशा = विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)।

विशाखा = विशाखा (वि - विशेष, विपरीत, शाख - शाखा फैलना, डालें पैदा होना)।

विशाम् = प्रवेशी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)।

विशालम् = विशाल को, प्रवेशी को, प्रशंसक को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना। शल् - गति करना, प्रशंसा करना)।

विशि = विश में, प्रवेशी में (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)।

विशिखाः = अनेक विशिख, विशिखा (वि - विशेष, विपरीत, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना, शाख = शाखा फैलना, डालें पैदा होना)।

विशिखासः = अनेक विशिख (वि = विशेष, विपरीत, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। शी = सोना, शयन करना। शाख = शाखा फैलना, डालें पैदा होना)।

विशे = विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)।

विशेविशे = सभी विशों में, प्रतिष्ठितों में, प्रवेशियों में (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)।

विशो = विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)।

विशोविशो = सभी विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)।

विशपतिः = विश के स्वामी, रक्षक, सूचना, प्रेरणा, अन्तर्गमन करने वालों के रक्षक, स्वामी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, पत् = ऐश्वर्य होना, रक्षक-स्वामी होना)।

विशपतिम् = विश के स्वामी को, रक्षक, सूचना, प्रेरणा, अन्तर्गमन करने वालों के रक्षक, स्वामी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, पत् = ऐश्वर्य होना, रक्षक-स्वामी होना)।

विशपती = विश के स्वामी, सूचना, प्रेरणा, अन्तर्गमन करने वालों के रक्षक, स्वामी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, पत् = ऐश्वर्य होना, रक्षक-स्वामी होना)।

विश्वपते = हे विश्व के स्वामी, रक्षक, सूचना, प्रेरणा, अन्तर्गमन करने वालों के स्वामी (विश्व - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, पत् = ऐश्वर्य होना, रक्षक-स्वामी होना)।

विश्वेषु = विश्वों में, प्रवेश्यों में (सर्वनाम)।

विश्वरुताय- विश्वताय = विशेष सुने के लिए (वि - विशेष, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

विश्वः = सभी।

विश्वकर्म = विश्वकर्म, सभी कर्म करने वाले (विश्व - सभी, कृ - करना)।

विश्वकर्मणः = विश्वकर्मा का, सभी कर्म करने वाले का (विश्व - सभी, कृ - करना)।

विश्वकर्मणा = विश्वकर्मा द्वारा, सभी कर्म द्वारा, सभी कर्म करने वाले द्वारा (विश्व - सभी, कृ - करना)।

विश्वकर्मणे = विश्वकर्मा के लिए, सभी कर्म के लिए, सभी कर्म करने वाले के लिए (विश्व - सभी, कृ - करना)।

विश्वकर्मन् = विश्वकर्मा, सभी कर्म, सभी कर्म करने वाले द्वारा (विश्व - सभी, कृ - करना)।

विश्वकर्मा = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला (विश्व = सभी, कृ = करना)।

विश्वकर्माणम् = विश्वकर्मा को, सभी कर्म करने वाले को (विश्व - सभी, कृ - करना)।

विश्वचक्षः = विश्वचक्ष, सबको देखने वाले (विश्व = सब, चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

विश्वचर्षणिः = सबको आनन्द देने वाले, विश्व चेतनशील (विश्व - सभी, चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।

विश्वचर्षणे = सबको आनन्द देने वाले, विश्व चेतनशील में, के लिए (विश्व - सभी, चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।

विश्वजनस्य = विश्व जन का (विश्व = सब, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

विश्वजित् = विश्व को जीतने वाला (विश्व = सब, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

विश्वतः = सबसे, विश्व से (सर्वनाम)।

विश्वतूः - विश्वतूः = सबको गति, ज्ञान, वृद्धि पूर्ण करने वाले (विश्व - सब, सभी, तू - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

विश्वतूर्तिः = सर्व शीघ्रकारी (विश्व - सभी, तुर - शीघ्र चलना, तीव्र गति से चलना, शीघ्रता करना)।

विश्वथा = सब प्रकार से (सर्वनाम)।

विश्वदर्शतम् = देखा, दर्शनीय को, देखने वाले को (विश्व = सब, दृश् - देखना)।

विश्वदेवा = विश्वदेव, सभी देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना)।

विश्वदेवेभिः = विश्वदेवों द्वारा, सभी विद्वानों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

विश्वदेव्यः = विश्वदेव्य (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वदेव्यम् = विश्वदेव्य को (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वदेव्यावती = विश्वदेव्यावती (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वदेव्यावतीः = विश्वदेव्यावती समस्त दिव्यताओं से युक्त (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वदेव्यावते = विश्वदेव्यावत के लिए (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वधा = सबको, विश्व को धारण करने वाला (विश्व - सब कुछ, सभी, धा - धारण करना)।

विश्वधाया = सम्पूर्ण को धारण करने वाले (विश्व - सब कुछ, धा - धारण करना)।

विश्वधायाः = विश्वधा का, सम्पूर्ण को धारण करने वाले का (विश्व - सब कुछ, धा - धारण करना)।

विश्वपतिम् = विश्वपति को, सबके अधिपति को, विश्व-

पालक को (विश्व - सब, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

विश्वभरा = सबका भरण-पोषण करने वाले, सबका भरण-पोषण करो (विश्व - सब, भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

विश्वभेषजो = विश्वभेषज, सभी औषधियाँ (विश्वः = सभी। भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।

विश्वभोजसा = सबका पालन करने वाले द्वारा (विश्वः = सभी, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

विश्वभ्राज् = विश्व-प्रकाशक, सबको प्रकाशित करने वाला (विश्व = सब, भ्राज - चमकना, प्रकाशित होना)।

विश्वम् = सबको, विश्व को (विश्व - सब कुछ)।

विश्वरूपः - विश्वरूपः = विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

विश्वरूपम् - विश्वरूपम् = विश्वरूप को (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

विश्वरूपी - विश्वरूपी = सभी रूपों वाला (विश्व - सब कुछ, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना)।

विश्वरूपे - विश्वरूपे = विश्वरूप में (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

विश्वरूपेभ्यः - विश्वरूपेभ्यः = विश्वरूप के लिए (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

विश्वसौभागः = विश्व-सौभाग्य (विश्वः = सभी, सु - अच्छा, उत्तम, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)।

विश्ववार = सबके लिए वरणीय (विश्व - सब, वृ - वरण करना)।

विश्ववारः = सबके लिए वरणीय (विश्व - सब, वृ - वरण करना)।

विश्ववारम् = सबके लिए वरणीय को (विश्व - सब, वृ - वरण करना)।

विश्ववारा = सबके लिए वरणीय (विश्व - सब, वृ - वरण करना)।

विश्ववित् = सर्वज्ञ, सबको जानने वाला (विश्व - सब, विद् - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विश्ववेदसः = सर्वज्ञ, सबको जानने वाले (विश्व - सब, विद् - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विश्ववेदसम् - विश्ववेदसम् = सर्वज्ञ, सबको जानने वाले को (विश्व - सब, विद् - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विश्ववेदाः = विश्ववेद, सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाले (विश्व - सब, विद् - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विश्वव्यचाः = विश्वव्यचा, विश्वव्यापी, सर्वव्यापी (विश्वः = सभी, व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

विश्व-शम्भुवः = विश्व कल्याण भावना (शम् = शमन करना, शान्त होना, सुख होना, कल्याण होना)।

विश्वशम्भुवौ = विश्व कल्याण भावना वाले (शम् = शमन करना, शान्त होना, सुख होना, कल्याण होना)।

विश्वशम्भू = विश्व कल्याण भावनायुक्त (शम् = शमन करना, शान्त होना, सुख होना, कल्याण होना)।

विश्वसामा = विश्वसाम, सभी सामयुक्त (विश्वः = सभी। साम - शान्त करना, समाधान करना, सात्त्वना देना)।

विश्वस्मात् = विश्व से, सब से (सर्वनाम)।

विश्वस्मै = विश्व, सभी, सब के लिए (सर्वनाम)।

विश्वस्य = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)।

विश्वहा = सभी का हनन करने वाले (विश्व = सब, सर्वनाम, हन् - मारना)।

विश्वा = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)।

विश्वाः = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)।

विश्वाः = प्रवेशी (विश् = भीतर जाना, सभी तरह फैलना)।

विश्वाचीः = विश्वाची, सबका आदर करने वाला (विश्व

= सब, अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना)

विश्वाच्या = सबका आदर करने वाला, सम्पूर्ण याचना (विश्व = सब, अच् - जाना, चलना, आदर करना, मांगना)।

विश्वात् = विश्व, सभी, सब से (सर्वनाम)।

विश्वान् = सभी को (विश् = भीतर जाना, सभी तरह फैलना)।

विश्वानरः = विश्व नर, सबको ले जाने वाला (विश्व = सब, नृ = ले जाना)।

विश्वानराय = विश्व-नर के लिए (विश्व = सब, नृ = ले जाना)।

विश्वानि = सभी (सर्वनाम)।

विश्वाभिः = सभी द्वारा (सर्वनाम)।

विश्वाभुवे = सब भुवों के लिए (विश्व - सब, भू - होना)

विश्वाभ्यः = सभी के लिए (विश्व = सब, सर्वनाम)।

विश्वाभ्यो = विश्व के लिए, सबके लिए, विश्व से अलग (सर्वनाम)।

विश्वामित्रः - विश्वामित्रः = विश्व का मित्र (विश्व = सब, सर्वनाम, मिद् = स्नेह करना)।

विश्वाय = विश्व के लिए, सबके लिए (सर्वनाम)।

विश्वायुः - विश्वायुः = सम्पूर्ण आयु (विश्व + आयुः, विश्व - सभी, सर्वनाम, अय - जाना)।

विश्वायुपोषसम् = सम्पूर्ण आयु का पोषण करने वाले (विश्व + आयुः, विश्व - सभी, सर्वनाम, अय - जाना, पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

विश्वावसुः - विश्वावसुः = सब में वास करने वाले, सभी वसने वाले (वस् = निवास करना, स्नेह करना)।

विश्वासाम् = सभी का (सर्वनाम)।

विश्वासाहम् = विश्व को सहन करने में समर्थ (विश्व - सभी, सह - सहन करना, समर्थ होना)।

विश्वासु = सभी में (सर्वनाम)।

विश्वाहा = सभी, सबका हनन करने वाला (विश्व = सब, (सर्वनाम)। हन् - मारना, हिंसा करना)।

विश्वे = सभी (सर्वनाम)।

विश्वेदेवाः = विश्वदेव, सभी देव गण। (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वेभिः = सबके द्वारा (सर्वनाम)।

विश्वेभ्यः = विश्व के लिए, सभी के लिए (सर्वनाम)।

विश्वेभ्यो = विश्व के लिए, सभी के लिए (सर्वनाम)।

विश्वेषाम् = सभी का, विश्व का (सर्वनाम)।

विश्वैः = विश्व द्वारा, सभी द्वारा, सभी के साथ (सर्वनाम)।

विश्वोदेवस्य = विश्वदेव का, सभी देव गण का (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विषमेभ्यः = विषमों के लिए (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना। विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना। सम् - समान होना, बाँटना, श्रम करना, थकना, परिणाम होना)।

विषमेभ्यो = विषमों के लिए (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना। विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना। सम् - समान होना, बाँटना, श्रम करना, थकना, परिणाम होना)।

विसर्जने = विसर्जन में (वि + सृज् = छोड़ना)।

विषुरुपे = विषुरूप में (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

विषूचिका = विषूचिका, विसिंचक (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना)।

विषूचीः = विसूची (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना। सु - उत्पन्न करना)।

विषूचीनान् = विषूचियों को, विसूचियों को (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना)।

विषूवतो = व्यापक (विष् - अलग करना, अभिषेक

करना, सींचना, व्याप्त होना)।

विष्कभिते - विष्कभिते = विस्तृत (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्टपम् = विस्तृत (विष्-विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्टपाय = विस्तृत के लिए, विष्टप के लिए (विष् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, पा - पालन करना)।

विष्टपि = विशेष व्याप्ति में, विशेष सिञ्चन में, विष्टप में (विष् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)।

विष्टपे = विस्तृत, विष्टप में (विष् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, पा - पालन करना)।

विष्टम्भः = स्थापित करने वाला, स्तम्भित करने वाला (वि - विशेष, स्तम्भ = स्तम्भित करना, स्थित करना, स्थापित करना)।

विष्टम्भनीम् = स्थापित-स्तम्भित करने वाली को (वि - विशेष, स्तम्भ = स्तम्भित करना, स्थित करना, स्थापित करना)।

विष्टम्भेन = विस्तम्भ द्वारा, विशेष स्थापना द्वारा, विशेष स्थित द्वारा (वि - विशेष, विपरीत, स्तम्भ - स्थित करना, स्थापित करना)।

विष्टाय = विस्तृत के लिए (विष् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)।

विष्टिभिः = विस्तृतों द्वारा, व्यापकों द्वारा, विष्टियों द्वारा (विष् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)।

विष्टीमिनम् = विस्तृत को (विष् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)।

विष्टुतीः = विशेष स्तुति, विशेष प्रशंसा (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्तुज् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

विष्टाः = विशेष स्थिति (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्था - स्थित होना, ठहरना)।

विष्टितम् = विशेष स्थित को (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्टिता = विशेष स्थित (वि - विशेष, स्था - स्थित होना)।

विष्टिताः = विशेष स्थित (वि - विशेष, स्था - स्थित होना)।

विष्णव = विस्तृत (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्णवि = विस्तृत, व्यापक (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्णवे = व्यापक के लिए (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)।

विष्णुः = व्यापक, विष्णु ने (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, वी = जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना। सम - घेरना, घेर लेना, लपेटना)।

विष्णुना = विष्णु द्वारा (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्णुपत्न्यै = विष्णुपत्नी के लिए (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

विष्णुम् = विष्णु को (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्णू = व्यापक, विष्णु (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्णो - विष्णो = हे विष्णु, हे सर्वव्यापी (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त

होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्णोः = विष्णु का, सर्वव्यापी का (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्पन्दमाने = विष्पन्दन करने वाला (वि - विशेष, स्पन्द = स्पन्दन करना)।

विष्पर्द्धाः = विष्पर्द्धा, विषेश स्पर्धा (वि = विशेष, विपरीत, स्पर्ध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

विष्यामि = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), सो - अन्त करना, नष्ट करना)।

विष्वक् = विश्व, व्याप्त (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्वङ् - विष्वङ् = विश्व, व्याप्त (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विष्वज्जम् = विश्व को, सभी को (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

विसर्जनम् = विसर्जन को (वि + सृज् = छोड़ना)।

विसृपो = विशेष गतियुक्त (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), सृ-सृप् - जाना, सरकना, हटना)।

विस्फुरन्ती = विस्फुरित होती हुई (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्फुर - हिलना, स्फुरित होना, जाना, फैलना, सूझना)।

विहव्यः = विहव्य, विशेष देय (वि - विशेष, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

विहाया = विहाय, विशेष गति, विशेष त्याग (वि - विशेष, हय - जाना, पूजा करना, सेवा करना, शब्द करना, हा - त्याग करना, चलना, जाना)।

वि-होत्रा = विहोत्र, विशेष दानी (वि - विशेष, हु = दान करना, आदान करना, लेना)।

विहृतम् = विशेष ग्रहण, लज्जित (वि = विशेष, विना,

विलोम उपसर्ग, हू = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना, ह्री = लज्जा करना, लज्जित होना)।

विह्वयामहे = विशेष आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (वि = विशेष, विना, विलोम उपसर्ग, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

विहव्येन = विशेष हव्य द्वारा, विशेष दान द्वारा (वि - विशेष, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

वीक्षिताय = विशेष ईक्षित के लिए, विशेष दृष्टिगत के लिए, विशेष देखने वाले के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), ईक्ष - देखना, अवलोकन करना)।

वीडयस्व = स्थिर कीजिए, दृढ़ कीजिए (वि = विशेष, वीड - स्थिर होना, संस्तम्भन करना, दृढ़ होना)।

वीडवः = वीडव, विशेष स्तुति योग्य (वि = विशेष, ईड् = स्तुति करना, वीड - स्थिर होना, संस्तम्भन करना, दृढ़ होना)।

वीडु = वीडु (वीड् - स्थिर होना, संस्तम्भन करना, दृढ़ होना)।

वीडु = वीडु, दृढ़ (वीड् - संस्तम्भन करना, दृढ़ होना)।

वीडुम् = वीडु को, दृढ़ को (वीड् - स्थिर होना, संस्तम्भन करना, दृढ़ होना)।

वीडौ = विशेष स्तुति कीजिए, दृढ़ कीजिए (वि = विशेष, ईड् = स्तुति करना, वीड - स्थिर होना, दृढ़ होना)।

वीड्वङ्गो = विशेष स्तुति करने वाला, विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (वि = विशेष, ईड् = स्तुति करना, वीड - स्थिर होना, दृढ़ होना, अङ्गः = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

वीड्वीः = वीड्वी, विशेष स्तुति योग्य (वीड् - स्थिर होना, संस्तम्भन करना, दृढ़ होना)। वि = विशेष, ईड् = स्तुति करना, वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीणावादम् = वीणावादक को (वीण - जानना, समझना, चिन्तन करना, सूक्ष्म दृष्टि से देखना, सुनना, बद् - बोलना,

स्पष्ट करना, समझाना),

वीतपृष्ठः = वीतपृष्ठ, प्रकाशक (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना। पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

वीतम् = वीत को, प्रकाशमान को (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीतय = व्याप्त हो, प्रकाश करो (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीतये = प्रगति के लिए, व्याप्ति के लिए, प्रकाश के लिए (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीताम् = प्रगति, व्याप्ति, प्रकाश को (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीति = प्रगति, व्याप्ति, प्रकाश (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीति-होत्रम् = व्यापक आदान-प्रदान, दान को (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, हु = दान करना, आदान-प्रदान करना)।

वीतिहोत्रा = व्यापक आदान-प्रदान, दान करने वाले (वी - जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, हु = दान करना, आदान-प्रदान करना)।

वीते = गति, व्याप्ति, प्रकाश में (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीध्याय = प्रगति, व्याप्ति, प्रकाश के लिए (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीर = पराक्रमी, वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरतमो = अत्यन्त पराक्रमी, वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरम् = पराक्रमी, वीर को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरयध्वम् = पराक्रम करो, वीरता करो (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरयस्व = पराक्रम करो, वीरता करो (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरया = पराक्रम करो, वीरता करो (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरयुः = वीरता युक्त (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरवत् = वीर के समान (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरवतीः = वीरवती, वीरयुक्त (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरवतीम् = वीरवती को, वीरयुक्त को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरहणम् = वीरहण को, वीरों का हनन करने वाले को, वीरतापूर्वक हनन करने वाले को (वीर् - वीरता दिखाना, वीर होना, हण् - शब्द करना, कलह करना, हन् - चलना, गति करना, हिंसा करना)।

वीरहणौ = वीरों का हनन करने वाले, वीरतापूर्वक हनन करने वाले (वीर् - वीरता दिखाना, वीर होना, हण् - शब्द करना, कलह करना, हन् - चलना, गति करना, हिंसा करना)।

वीरहा = वीरों का हनन करने वाले, वीरतापूर्वक हनन करने वाले (वीर् - वीरता दिखाना, वीर होना, हण् - शब्द करना, कलह करना, हन् - चलना, गति करना, हिंसा करना)।

वीराः = वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरान् = वीरों को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीराय = वीर के लिए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरुधः = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरेभिः = वीरों द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरैः = वीरों द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

पराक्रम करना)।

वीरो = वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्यम् = पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्यवान् = पराक्रम युक्त, वीरता युक्त (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्यस्य = पराक्रम का, वीरता का (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्याणि = वीरकर्मों को, पराक्रमों को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्याय = पराक्रम, वीरता के लिए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्येण = पराक्रम से, सामर्थ्य द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्यैः = पराक्रमों के साथ, वीरता द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्येभिः = पराक्रमों द्वारा, वीरों द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीर्यम् = पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीहि = व्याप्त हो (वी - जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वृकः = हिंसक, लुटेरे (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृकम् = वृक को, हिंसक को, (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृकस्य = हिंसक, लुटेरे का (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृकाः = हिंसक, लुटेरे (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृकाभ्याम् = हिंसकों के लिए, लुटेरों के लिए (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृक्काभ्याम् = वृक्कयुगल द्वारा, के लिए (वृक - लेना,

स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना)।

वृक्त = हिंसक, लुटेरे (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृक्तबर्हिषः = वृक्तों में श्रेष्ठ, स्वीकृतों में श्रेष्ठ (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना, बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

वृक्तबर्हिषे = वृक्तों में श्रेष्ठ के लिए, स्वीकृतों में श्रेष्ठ के लिए (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना, बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

वृक्षः - वृक्षः = वृक्ष (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षम् = वृक्ष को (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षस्य - वृक्षस्य = वृक्ष का (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षाः - वृक्षाः = वृक्ष (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षाणाम् - वृक्षाणाम् = वृक्षों का (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षे - वृक्षे = वृक्ष में (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षेभ्यः - वृक्षेभ्यः = वृक्षों के लिए (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृक्षेषु - वृक्षेषु = वृक्षों पर (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)।

वृङ्ग्धि = वर्जित करो, हटाओ, छोड़ो (वृज = छोड़ना, वर्जित करना)।

वृजनम् = वृजन, त्याग, वर्जना (वृज = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)।

वृत्रहा = वृत्र (हिंसा) का हनन करने वाले (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना, हन् - हिंसा करना)।

वृद्धाय = वृद्ध के लिए, वर्द्धित के लिए, बढ़ने के लिए
(वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

स्वामी शरण

अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृष्णिना - वृष्णिः = पराक्रमी द्वारा (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृष्णे = उच्च पराक्रम के लिए (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृष्णो = वर्षा करने वाला, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृष्ण्यम् = वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृष्ण्या = वर्षा करने वाले, पराक्रमी द्वारा (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृष्ण्यानि = वर्षा करने वाला, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृहद् = उद्यमी (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)।

वृहदम् = उद्यमी को (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)।

वुरीत = वरण करें (वृ = वरण करना)।

वेः = बनाते हो, जानते हो (वे = बुनना, वी = जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना)।

वेट् = वाणी, परिहास (विट् = शब्द करना, परिहास करना, हास्य शब्द करना)।

वेङ् = वाणी, परिहास (विट् = शब्द करना, परिहास करना, हास्य शब्द करना)।

वेतसः = जानने वाले, विद्वान् (विद् = जानना, विद्यमान होना, विचार करना)।

वेतसे = जानने वाले, विद्वान् के लिए (विद् = जानना, विद्यमान होना, विचार करना)।

वेतसो = जानने वाले, विद्वान् को (विद् = जानना, विद्यमान होना, विचार करना)।

वेति = उत्पन्न, प्रकाशित, व्याप्त करते हो (वे = बुनना, वी-वे = जाना, जानना, व्यापना)।

वेतु = जानें, व्याप्त हों (वे = बुनना, वी-वे = जाना, जानना, व्याप्त होना)।

वेत्तु = जानें (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेत्थ = जानें, जानते हो। (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेद = ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदः = वेद, ज्ञान (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदति = ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदनम् = वेदना को, ज्ञान को (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदम् = वेद को, ज्ञान को (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदमाता = वेद-माता, वेदरूपी माता (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

वेदसाम् = वेदज्ञों का, ज्ञानियों का (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदा = वेद, ज्ञान (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदिः = विद्वान् (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदिषत् = वेदयुक्त हुए, ज्ञान प्राप्त किया, जाना (विद्

= जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदिषदः = विद्वान् (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदेन = वेद द्वारा, ज्ञान द्वारा (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदो = वेद, ज्ञान (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेद्यम् = वेद-योग्य, ज्ञान-योग्य, जानने योग्य को (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेद्या = वेद-योग्य, ज्ञान-योग्य, जानने योग्य (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेद्याम् = वेद-योग्य, ज्ञान-योग्य, जानने योग्य को (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेद्यै = वेद-योग्य, ज्ञान-योग्य, जानने योग्य के लिए (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेधः = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)।

वेधसः = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)।

वेधसे = विधान करते हो, वेधस् के लिए, विधान करने वाले के लिए (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)।

वेधसो = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)।

वेधस्या = विधान, वेधस्, विधान करने वाले द्वारा (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेधा = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)।

वेधो = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)।

वेनः = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)।

वेनतः = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग

करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)।

वेनात् = विद्वान्, कान्तिमान् से (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)।

वेनो = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)।

वेपध्वम् = काँपो, कँपाओ (वेप् = काँपना)।

वेपय = काँपो, कँपाओ (वेप् = काँपना)।

वेविषत् = व्याप्त हुआ (वि - विशेष। विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वेषाय = वेष के लिए, अनुपयोगी होने पर अलग करने के लिए, सींचने के लिए (विष् = विलग करना, प्रयोग न होने से निकाल देना, विष = सींचना, व्यापना)।

वेषिषो = व्याप्त होने वाला, व्याप्त करने वाला, व्यापक, सिंचक (विष् = विलग करना, प्रयोग न होने से निकाल देना, विष = सींचना, व्यापना)।

वेष्यो = व्यापकता, अभिसिञ्चन (विष् = व्यापक होना, सींचना)।

वेहत् = प्रयत्न, निश्चय (वेह = यत्न करना, निश्चय करना, ठहराना)।

वेहतम् = प्रयत्न, निश्चय किया (वेह = यत्न करना, निश्चय करना, ठहराना)।

वैद्युताः - वैद्युताः = जानने वाले, विद्वान् (विद् = जानना, विद्यमान होना, विचार करना)।

वैनम् = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)।

वैनंशिनाय = वैनंशिन के लिए, विनाशशील के लिए,

विद्वान्, कान्तिमान् को तीक्ष्ण करने वाले के लिए (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना, वि - विशेष, नश् - नष्ट होना, खो जाना, दिखाई न देना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना)।

वैन्दम् = वैन्द को (विन्द - लाभ होना, प्राप्त होना)।

वैराजम् = वैराज को, विशेष राज को (वि - विशेष, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

वैराजाभ्याम् = द्वय-वैराज द्वारा, द्वय-वैराज के लिए, द्वय-वैराज से (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), रज् - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

वैराजेन = वैराज द्वारा, विशेष राज द्वारा (वि - विशेष, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

वैरूपम् = विरूपों को (वि - विशेष, विविध, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

वैरूपेण = विरूप द्वारा (वि - विशेष, विविध, रूप - आकार बनाना, रचना करना)।

वैशन्ताभ्यो = वैशन्त के लिए, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाले के लिए (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)।

वैशन्ताय = वैशन्त के लिए सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाले के लिए (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)।

वैश्यः = वैश्य, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाला (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)।

वैश्यम् = वैश्य को, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाले को (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)।

वैश्व = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)।

वैश्वकर्मणः = विश्वकर्मा का, सभी कर्म करने वाले का (विश्व - सभी, कृ - करना)।

वैश्वकर्मणम् - वैश्वकर्मणम् = विश्वकर्मा को, सभी कर्म करने वाले को (विश्व - सभी, कृ - करना)।

वैश्वदेवः = वैश्वदेव, सभी देवगण (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

वैश्वदेवम् = विश्वदेव को (दिव् = तेजस्वी होना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

वैश्वदेवाः = वैश्वदेव, सभी देवगण (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

वैश्वदेवी = वैश्वदेवी, सभी दिव्यताएं (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

वैश्वदेवौ = वैश्वदेव, सभी देवगण (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

वैश्वदेव्यः = वैश्वदेवी, सभी दिव्यताएं (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न करना)।

वैश्व-व्यचसम् = सर्वव्यापी (विश्व - सभी, व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

वैश्वानरः = विश्वनायक (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानरज्योतिः = विश्वनायक प्रकाश (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना, ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

वैश्वानरम् = विश्वनायक को, विश्वजन को, वैश्वानर को (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानरस्य = विश्वनायक का (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानराः = विश्वनायक (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानरात् = विश्वनायक से (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानराय = विश्वनायक के लिए (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानरीम् = वैश्वानरी को, सबको ले जाने वाली को (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैश्वानरो = सबको ले जाने वाला, विश्वनर, वैश्विक भावना वाला नर (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

वैष्णवः = विष्णु सम्बन्धी (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णवम् = विष्णु सम्बन्धी (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णवा = वैष्णवगण, विष्णु सम्बन्धी, वैष्णवों ने (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णवाः = वैष्णवगण, विष्णु सम्बन्धी, वैष्णवों ने (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णवान् = वैष्णवों को, विष्णु सम्बन्धी को (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णवी = विष्णु सम्बन्धी (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णवीम् = वैष्णवी को, विष्णु सम्बन्धी को (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

वैष्णव्यौ - वैष्णव्यौ = व्यापक तत्वों को (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, आवरण होना)।

वो = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)।

वोचः = वाणी, बोलो (वच् - बोलना, कहना)।

वोचत = बोलो, कहो (वच् - बोलना, कहना)।

वोचति = बोलता है (वच् - बोलना, कहना)।

वोचासि = बोलते हो (वच् - बोलना, कहना)।

वोचेः = बोलता है (वच् - बोलना, कहना)।

वोचेत् = बोले (वच् - बोलना, कहना)।

वोचेम = बोलें, उच्चारण करें (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना)।

वोढम् = प्राप्त करने वाले को, वहन करने वाले को (वह - वहन करना, बहना, झरना, ढोना)।

वोढवम् = प्राप्त करने वाले को, वहन करने वाले को (वह - वहन करना, बहना, झरना, ढोना)।

वोढवे - वोढवे = प्राप्त करने के लिए, वहन करने के लिए (वह - वहन करना, बहना, झरना, ढोना)।

वोढा = प्राप्त करने वाला, वहन करने वाला (वह - वहन करना, बहना, झरना, ढोना)।

व्यक्तः = व्यक्त (वि - विशेष, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, वि-अक् - व्यक्त होना, स्पष्ट करना)।

व्यक्तम् = व्यक्त को (वि - विशेष, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, वि-अक् - व्यक्त होना, स्पष्ट करना)।

व्यक्रंस्त = रक्षा की (वि - अक्रंस्त, वि - विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), क्रम् = निर्भयता से चलना, रक्षा करना)।

व्यक्षरत् = क्षरित हुआ (वि - विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), अ - नहीं, उपसर्ग, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षर - संचलन होना, टपकना, झरना, बहना, क्षरण होना, अनुपयुक्त होना)।

व्यख्यत् = व्याख्यान किया (वि - विशेष, अख्यन्, ख्या = कहना, व्याख्यान करना)।

व्यख्यन् = कहता हुआ (वि - विशेष, अख्यन्, ख्या = कहना, व्याख्यान करना)।

व्यचः = व्याप्त (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यचसम् = व्याप्त को (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यचस्वती = व्यापकतायुक्त (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना,

आदर करना, याचना करना)।

व्यचस्वतीः = व्यापकतायुक्त (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यचस्वतीम् = व्यापकतायुक्त को (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यचिष्टम् = अत्यन्त व्यापक को (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यच्यमानम् = व्यापक को, व्याप्त होते हुए को (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यञ्जते = विशेष स्वच्छ किया जाता है, विशेष प्रकाश किया जाता है (वि - विशेष, अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

व्यत = व्याप्त करता है (वी - जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना)।

व्यथिः = व्यथित, व्यथा वाला (व्यथ - व्यथित होना, दुःखी होना)।

व्यथितात् = व्यथित से (व्यथ - व्यथित होना, दुःखी होना)।

व्यथिषत् = व्यथित हुआ (व्यथ - व्यथित होना, दुःखी होना)।

व्यदथात् = धारण कर लिया (वि - विशेष, व्यथ - व्यथित होना, दुःखी होना, व्यध् - मारना, छेदना, पीड़ा देना, हिंसा करना, दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

व्यनत् = प्राणवान्, समर्थ, विद्वान् (वि - विशेष, अन्तु, अन् = जीना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

व्यन्तः = प्राणवान्, समर्थ, विद्वान् (वि - विशेष, अन्तु, अन् = जीना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

व्यन्ताम् = प्राणवान् हों, समर्थ हों, विद्वान् हों (वि - विशेष, अन्तु, अन् = जीना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

व्यन्तु = प्राणवान् हों, समर्थ हों, विद्वान् हों (वि - विशेष, अन्तु, अन् = जीना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

व्ययस्व = व्यय करो (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)।

व्ययामसि = व्यय करते हो (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)।

व्ययेयम् = व्यय करें, समाप्त करें (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)।

व्यवर्तयत् = विवर्तन किया (वि - विशेष, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृत् = वर्तना, वर्तमान होना)।

व्यवसाययात् = व्यवसाय प्रदान किया (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना, सि = उद्योग करना, व्यवसाय करना, सम्यक् कार्य करना)।

व्यश्नुविने = विशेष अश्नुविने के लिए, व्याप्त, व्यापक, प्राप्त के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

व्यश्नुही = विशेष व्याप्त हो, विशेष पोषक हो (व्यश्नुहि, वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

व्यस्यन् = व्यस्यन् (वि - विशेष, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेंकना, उड़ाना, विखेरना)।

व्यस्थिरन् = विशेष स्थित होते हुए (वि - विशेष, स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

व्याघ्रम् = व्याघ्र को, पापी, अपराधी को (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूँघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)।

व्याघ्रा = व्याघ्र, विशेष घ्राणयुक्त (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूँघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)।

व्याघ्रो = पापी, अपराधी (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूँघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)।

व्यातम् = सतत गतिशील को (वि - विशेष, आ - समन्तात्, सम्यक्, अत् - सतत चलना, खाना, नष्ट करना)।

व्यातम् = सतत गतिशील को (वि - विशेष, आ - समन्तात्, सम्यक्, अत् - सतत चलना, खाना, नष्ट करना)।

व्याधिने = व्याधी के लिए, अधिक विशेष अध्ययनशील, अति हिंसक के लिए (अति - अधिक, बहुत, वि - विशेष, अधि-इ - अध्ययन करना, व्यध - ताडना करना, पीडा करना, छेदना, हिंसा करना)।

व्याधी = व्याधि वाला, विशेष अध्ययनशील, अति हिंसक (अति - अधिक, बहुत, वि - विशेष, अधि-इ - अध्ययन करना, व्यध - ताडना करना, पीडा करना, छेदना, हिंसा करना)।

व्यान = व्यान (वि - विशेष, अन् = प्राण होना, जीवन होना)।

व्यानदा = व्यान देने वाला (वि - विशेष, अन् = प्राण होना, जीवन होना)।

व्यानम् = व्यान को (वि - विशेष, अन् = प्राण होना, जीवन होना)।

व्यानशी = विशेष प्राणवान्, व्यापक, विनाशक (वि - विशेष। आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, आगम। अन् = प्राण होना, जीवन होना। नश् - नष्ट होना, समाप्त होना)।

व्यानाय = व्यान के लिए (वि - विशेष, अन् = प्राण होना, जीवन होना)।

व्यासरत् = चलता है, जाता है, आता है (वि - विशेष, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, आगम, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

व्युच्छ = विशेष पूर्ण करो, समाप्त करो (वि = विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़

कर बांधना)।

व्युच्छति = विशेष पूर्ण करता है, समाप्त करता है (वि = विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)।

व्युच्छन्ती = पूर्ण करती हुई, समाप्त करती हुई (वि - विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)।

व्युच्छन्तु = पूर्ण करें (वि - विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)।

व्युच्छा = पूरा करने वाला, समाप्त करने वाला (वि = विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)।

व्यूद्ध्या - व्यूद्ध्या = विशेष ऋद्धि के लिए (वि = विशेष, ऋध् - बढ़ना)।

व्युन्दनम् = अभिसिञ्चन करने वाला (वि + उन्दनम्, वि = विशेष। उन्द् = गीला होना, आर्द्र, रससिक्त होना)।

व्युप्तकेशाय = व्युप्तकेश के लिए (वि - विशेष, उप-वप - बीज बोना, बुनना, उत्पन्न करना, अन्नादि काटना। किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)।

व्युषि = विशेष ताप में, प्रभात, उषा में (वि - विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। उषस् - प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

व्युष्ट्यै = विशेष ताप के लिए, उषा, हिंसा के लिए (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

व्युष्टौ = विशेष ताप, उषा, विशेष प्रभात, विहिंसित (वि = विशेष, ऋध् - बढ़ना, उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

व्यूर्णते = विशेष आवरण-आच्छादन करता है (वि = विशेष, ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)।

व्योम = व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ओ - बुलाना, आह्वान करना)।

व्योमन् = व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

व्योमनि = व्योम में, विशेष शब्द में, ध्वनि में, रक्षक में (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ओ - बुलाना, आह्वान करना)।

व्योमसत् = व्योमसद्, व्योम में स्थित (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, सद् - बैठना, जाना, स्थित होना)।

व्योमसद् = व्योमसद्, व्योम में स्थित (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, सद् - बैठना, जाना, स्थित होना)।

व्योमा = व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)।

व्यौच्छः = पूरा करने वाला, समाप्त करने वाला (वि = विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बाँधना)।

व्यौच्छो = पूरा करने वाला, समाप्त करने वाला (वि = विशेष, उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बाँधना)।

व्रजक्षितः = व्रजक्षित, गति में वास करने वाला, पूर्णता में वास करने वाला, त्याग, वर्जना में वास करने वाला (व्रज् = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना, तैयार करना, घूमना, वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना, क्षि - जाना, चलना, निवास करना, रहना, बसना)।

व्रजत = ले चलो (व्रज - जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)।

व्रजनम् - व्रजनम् = प्रगतिशील, पूर्ण सिद्ध को (व्रज = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)।

व्रजम् = प्रगतिशील, पूर्ण सिद्ध को (व्रज = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)।

व्रजे = व्रज में, व्रज के लिए (व्रज् = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना, तैयार करना, घूमना, वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)।

व्रज्याय - व्रज्याय = व्रज्य के लिए, गम्य के लिए, गमनीय के लिए, पूर्ण सिद्धि के लिए (व्रज = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)।

व्रतः = व्रती, व्रतधारी (वृत् - रहना, होना, वरण करना,

चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

व्रतपते - व्रतपते = हे व्रतपति (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, पत- रक्षा करना)।

व्रतपा - व्रतपा = व्रत के रक्षक (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

व्रतपाः - व्रतपाः = व्रतों के पालक (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, पा - रक्षा करना, पालन करना)।

व्रतम् - व्रतम् = व्रत को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

व्रता - व्रता = व्रत वाला (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

व्रतस्य = व्रत का (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

व्रतानि - व्रतानि = व्रतों को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

व्रताय = व्रत के लिए (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

वरते - व्रते = वरण करने के लिए, व्रत के लिए, व्रत में (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

वरतेन - व्रतेन = व्रत द्वारा (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

वर्धिषीमहि - वर्धिषीमहि = वृद्धि करते हैं (वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

व्रन् = व्रण, वरण (व्रण् - शब्द करना, घाव करना। वृ - पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, सेवा करना, परिचर्या करना, चुनना, छांटना रंगना, पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढंकना, हटाना, ढकना, घेरना)

व्राः = वरणीय, वरण करने वाले (वृ - पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, सेवा करना, परिचर्या करना, चुनना, छांटना रंगना, पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढंकना, हटाना, ढकना, घेरना)।

व्रातम् = व्रात को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रातासः - व्रातासः = व्रात गण (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रातेभ्यः - व्रातेभ्यः = व्रातों के लिए (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रात्यम् - व्रात्यम् = व्रात्य को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रात्य = हे व्रात्य, व्राती (वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रात्याय = व्रात्य के लिए (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रीहयः = व्रीह (व्री = ढूँढ़ के निकालना, रुचना, बीनना, आच्छादन करना, ढकना)।

व्रीशीनाम् = वरण करने वालों का (वृश् - वरण करना, आच्छादन करना)।

श

शकपिण्डैः = शक पिण्डों द्वारा, शक्तिशाली पिण्डों द्वारा (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना, पिण्ड - एकत्र करना, राशि करना, ढेर करना)।

शका = सक्षम, समर्थ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकुनः = सक्षम, समर्थ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकुनिः = सक्षम, समर्थ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकुनिसादेन = शकु-निसाद द्वारा, शकुनि-साद द्वारा, सक्षम गति द्वारा (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

शकुन्तकः = सक्षम, समर्थ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकुन्तिका - शकुन्तिका = सक्षम, समर्थ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकुलौ = सक्षम, समर्थ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकेम = कर सकूँ, सक्षम बनूँ, समर्थ होऊँ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शकेयम् = कर सकूँ, सक्षम बनूँ, समर्थ होऊँ (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्करयः - शक्करयः = सक्षम, समर्थ करने वाले (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्तम् = शक्ति, सक्षमता, सामर्थ्य को (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्तिः - शक्तिः = शक्ति, सक्षमता, सामर्थ्य (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्तिम् = शक्ति, सक्षमता, सामर्थ्य को (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्तीवन्तः = शक्तिवान्, क्षमयुक्त, सामर्थ्ययुक्त (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्त्या = शक्ति द्वारा, सक्षमता, सामर्थ्य द्वारा (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्ना = शक्ति द्वारा, सक्षमता द्वारा, सामर्थ्य द्वारा (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्मना - शक्मना = शक्तिवान्, क्षमयुक्त, सामर्थ्ययुक्त (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्मभिः = शक्तिवानों क्षमयुक्तों, सामर्थ्ययुक्तों द्वारा (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्रः = शक्तिवान्, समर्थ (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)

शक्रम् = सक्षम को, समर्थ करने वाले को (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्वन = शक्तिवान्, क्षमयुक्त, सामर्थ्ययुक्त (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्वने = बल के लिए (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शक्वरीः = शक्तिवान्, क्षमयुक्त, सामर्थ्ययुक्त (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शग्धि = शक्ति-सामर्थ्य हो (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शग्मम् = सामर्थ्य को (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शग्मा = शक्ति-सामर्थ्य (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

शग्माम् = शक्ति-सामर्थ्य को (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहन करना)।

शङ्कराय = शमन करने वाले के लिए, विचार करने वाले के लिए (शम् - शमन करना, शङ्क् - शंका करना, संशय करना, विचार करना, कृ - करना)।

शङ्काः = शंका, संशय, विचार (शम् - शमन करना, शङ्क् - शंका करना, संशय करना, विचार करना)।

शङ्खध्वम् = सेवा करो, ध्वनि करो, शङ्खध्वम् को (शङ्ख - सेवा करना, ध्वनि करना)।

शङ्गवे - शङ्गवे = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी वाणी में (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शचिष्ठ्या = उत्तम वाणी द्वारा (शच- स्पष्ट बोलना)।

शचीपत = उत्तम वाणी वाला ऐश्वर्यवान्, स्वामी (शच- स्पष्ट बोलना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

शचीपते = हे उत्तम वाणी वाले ऐश्वर्यवान्, स्वामी (शच- स्पष्ट बोलना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

शचीभिः = उत्तम वाणी द्वारा (शच- स्पष्ट बोलना)।

शचीवो = विद्वान्, उत्तम वाणियों वाले (शच- स्पष्ट बोलना)।

शचीवसू = विद्वान्, उत्तम वाणियों में वास करने वाले, (शच- स्पष्ट बोलना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

शच्या = उत्तम वाणी द्वारा (शच- स्पष्ट बोलना)।

शण्डः = दानी, विद्वान् (शण् - देना, दान करना, जाना, शब्द करना, तीक्ष्ण करना)।

शण्डाय = शण्ड के लिए, दानी, विद्वान् के लिए (शण् - देना, दान करना, जाना, शब्द करना, तीक्ष्ण करना)।

शत = सौ (संख्या)।

शतक्रतवा = सैकड़ों कर्म करने वाला (शत - सौ, कृ

- करना)।

शतक्रतुः = सैकड़ों कर्म करने वाला (शत - सौ, कृ - करना)।

शतक्रतुम् = सैकड़ों कर्म करने वाले को (शत - सौ, कृ - करना)।

शतक्रतो - शतक्रतो = सैकड़ों कर्म करने वाला, अत्यन्त कर्मशील (शत - सौ, कृ - करना)।

शतक्रत्वः - शतक्रत्वः = सैकड़ों कर्म करने वाला (शत - सौ, कृ - करना)।

शततेजा = सैकड़ों तेज वाले (शत - सौ, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना)।

शतदा = शतधा दाता, बहुदानी (शत = सौ, दा, दद् = देना)।

शतधन्वने = सैकड़ों गति, शब्द करने वाले के लिए (शत = सौ, धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

शतधारः = सैकड़ों धाराओं वाला (शत = सौ, धाः- धारा होना, धार बाँधना)।

शतधारम् = सैकड़ों धाराओं वाला (शत = सौ, धाः- धारा होना, धार बाँधना)।

शतधारेण = सैकड़ों धाराओं वाले से। (शत = सौ, धाः- धारा होना, धार बाँधना)।

शतपदीम् = शतपदी को, सैकड़ों पद को (शत = सौ, पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

शतपयाः = शतपय (शत = सौ, पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना)।

शतपर्वणा = शत-पर्व द्वारा (शत = सौ, पर्व - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

शतम् = सौ (संख्या, सर्वनाम)।

शतमन्युः = शतमन्यु (शत = सौ, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

शतमूर्धन् = शतमूर्ध (शत = सौ, मूर् - घेरना, लपेटना, मूर्ध - उच्च होना)।

शतयामना = शतयाम द्वारा (शत = सौ, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

शतरुद्रियाणाम् = शत-रुद्रियों का (शतम् = सौ (सर्वनाम), रुद् = रुदन करना, रुलाना)।

शतवल्शा = सौ आच्छादनों से युक्त (शत = सौ, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

शतवल्शो = सौ आच्छादनों से युक्त (शत = सौ, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

शतवाजया = शतवाज द्वारा, शतशः विद्या-गति द्वारा (शत = सौ, वाज् = विद्या को, गति को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

शतविक्षणाः = शतशः विचक्षण, बहुदृष्टि, वाणी वाले (शत = सौ, वि = विशेष, विपरीत, चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

शतव्रजा = शतशः व्रज (शत = सौ, व्रज = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)।

शतशारदाय = शत शरद के लिए (शतम् = सौ, शार - निर्बल होना या करना, आसक्त होना या करना, शृ - सुनना)।

शतस्य = सौ का (सर्वनाम)।

शतस्पृहम् = सौ इच्छाओं को, शत-कामनाओं को (शत = सौ (सर्वनाम), स्पृह - इच्छा करना, चाहना)।

शत-हिमाः = शत-हिम, शतशः प्रगति, शतशः शीतलता (शत = सौ (सर्वनाम), हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)।

शता = सौ (सर्वनाम)।

शतात् = सौ से (सर्वनाम)।

शतानीका = शतायु, शतनायकों वाला (शत = सौ, शी-शद्-शत् - जीर्ण होना। अन - जीना, समर्थ होना, जाना, नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना,

मिलना, ले जाना)।

शतानीकाय = शतानीक के लिए, शतायु, शतनायकों के लिए (शतम् = सौ, अन - जीना, समर्थ होना, जाना)।

शतामघः = अधिक धनवान्, अधिक ऐश्वर्यवान् (शता = सौ, मघ = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

शताय = सौ के लिए (सर्वनाम)।

शतिनम् = शतक को (शतम् = सौ, शी-शद्-शत् - जीर्ण होना)।

शतिनीभिः = शतिनीभि (शतम् = सौ, शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना, नी - ले जाना)।

शतेन = सौ द्वारा।

शतेषुधे = शतेषुध का (शत = सौ, सु - अच्छा, सुन्दर, धा - धारण करना, रक्षण करना, देना)।

शत्रवे = शत्रु के लिए (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रुः = शत्रु (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रून् - शत्रून् = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रुम् = शत्रु को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रूयतः - शत्रूयतः = शत्रुता को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रूयताम् - शत्रूयताम् = शत्रुता करो (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रुयतीम् = शत्रुता को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शत्रोः = शत्रु का (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शदाय = शद के लिए (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शन् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शन्तमः = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शन्तम = हे कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शन्तमया = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी द्वारा (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शन्तमाभिः = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी द्वारा (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शन्तमेन = अत्यन्त कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी द्वारा (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शन्ताता = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शपथ्यात् = शपथ लें (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)।

शपाति = शपथ लेते हैं, शाप देते हैं (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)।

शपामहे = शपथ लेते हैं, शाप देते हैं (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)।

शफम् = एक शफ वाले को (शप् - शाप देना, आक्रोश करना, कोप करना, शब् - जाना, जानना, पाना)।

शफाः = शपथ, गति, ज्ञान (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना। शब् - गति करना, जाना, जानना, पाना)।

शफानाम् = शफों का, शपथ, गति, ज्ञान का (शप् =

कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

शम्यति = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शम्यन्ती = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शम्यन्तु = शमन करे, कल्याण करे, शान्ति करे (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शयनम् = शयन को (शी-शय् = शयन करना, सोना)।

शया = शयन (शी-शय् = शयन करना, सोना)।

शयाण्डकः = शयाण्डक, शयन-आच्छादन वाला, शयन योग्य आच्छादन वाला (शी-शय् = शयन करना, सोना, अण्ड = जाना, चलना। अण्ड = चलना, आच्छादन करना)।

शयानाय = शयन के लिए, सोने वाले के लिए (शी-शय् = शयन करना, सोना)।

शयानेभ्यः = शयन के लिए, सोने वालों के लिए (शी-शय् = शयन करना, सोना)।

शंयुना = कल्याण करने वाले द्वारा (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शंयोः = कल्याण हो (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शँय्युना = कल्याणकारी द्वारा (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शरणा = शरण (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना,

हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरणे = शरण में (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरत् - शरत् = शरत्, शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरदः - शरदः = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरदि = शरद में (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरदे = शरद के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरभम् = सुनने वाला, सुनाने वाला, उपदेशक, मार्गदर्शक (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरव्यया = शरव्य द्वारा, गन्तव्य द्वारा, श्रवणीय द्वारा, हिंसनीय द्वारा (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरव्यायै = शरव्य के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरव्ये = शरव्य के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शरसि = शरः में (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शरसे = शरः के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शराय = शर के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शर्वम् = शर्व को (शर्व - क्षत करना, घाव करना, मार डालना)।

शर्वस्य - शर्वस्य = शर्व का (शर्व - क्षत करना, घाव करना, मार डालना)।

शर्वाः - शर्वाः = शर्व (शर्व - क्षत करना, घाव करना, मार डालना)।

शर्वाय - शर्वाय = शर्व के लिए (शर्व - क्षत करना, घाव करना, मार डालना)।

शल्मलि = गति, स्तुति युक्त (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

शल्मलिः = गति, स्तुति युक्त (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

शल्यकः = शल्यक, गति, स्तुति युक्त (शल - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

शल्यानाम् = शल्यों का, गति, स्तुति युक्त का (शल - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, श्लाघा करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

शवः = शव, गति, ज्ञान (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, विकार होना)।

शवसः = शवस् का, गति, ज्ञान का (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

शवसस्पतिः = विद्वानों के पति, प्रगतिशीलों के अधिपति (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

शवसस्पते = हे विद्वानों के पति, प्रगतिशीलों के अधिपति (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

शवसा = शवस् द्वारा, प्रगति, ज्ञान द्वारा (शव - जाना,

समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

शवसानाय = प्रगति, ज्ञान के लिए (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

शवसे = शवस् के लिए, प्रगति, ज्ञान के लिए (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

शवांसि = प्रगति, ज्ञान, विकार, प्रतिकार (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, विकार होना)।

शविष्ठ = अत्यन्त समीपगामी, प्रगति, ज्ञान (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

शविष्ठा = अत्यन्त समीपगामी, प्रगति, ज्ञान (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

शशः = कूर्दन करने वाला (शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)।

शशमानः = कूर्दन करने वाला (शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)।

शशमानस्य = कूर्दन करने वाले का (शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)।

शशमानाय = शशमान के लिए, कूर्दन करने वाले के लिए (शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)।

शशमे = कूर्दन किया (शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)।

शशयो = कूर्दन करने वाले (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना)।

शश्रथे = प्रयत्न, प्रगति करता है, मुक्त करता है (श्रथ - प्रयत्न करना, जाना, श्रथ - मुक्त करना, छोड़ना, मारना, पीड़ा देना, बन्धन करना, बांधना, जकड़ना, श्रथ - निर्बल होना, शक्तिहीन होना)।

शश्वतः = शश्वत (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वतमम् = अत्यन्त शश्वत (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वता = शश्वत (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वतीः = शश्वत (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वतीनाम् = शाश्वत का (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वते = शश्वत के लिए (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व-शशु - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वत्तमम् - शश्वत्तमम् = अत्यन्त शश्वत (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व-शशु - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वन्त = शश्वन्त (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व - शशु - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शश्वन्तः = शाश्वत, सनातन (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व-शशु - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)।

शष् = सम्यक् (वैदिक उपसर्ग)।

शष्पाणि = हिंसकों से रक्षा करने वाले, हिंसक स्तुति (शष् = सम्यक् (वैदिक उपसर्ग)। शष् - हिंसा करना, पा - रक्षा करना, पन - स्तुति करना)।

शष्पिञ्जरा = शष्पिञ्जर (शष् = सम्यक् (वैदिक उपसर्ग)। शष् - हिंसा करना, पिञ्ज - मार डालना, दुःख देना, बलवान् होना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना, प्रकाशित करना, तपाना, बोलना, रंगना, चमकीला करना)।

शष्पिञ्जराय = शष्पिञ्जर के लिए (शष् = सम्यक् (वैदिक उपसर्ग)। शष् - हिंसा करना, पिङ्क्-पिञ्ज-रंगना, चमकीला करना, शब्द करना)।

शष्पैः = हिंसकों द्वारा (शष् = सम्यक् (वैदिक उपसर्ग)।

शष् - हिंसा करना, पा - रक्षा करना, पन - स्तुति करना)।

शष्प्याय = हिंसनीय के लिए (शष् = सम्यक् (वैदिक उपसर्ग)। शष् - हिंसा करना)।

शंसः = स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसत् = स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसत = स्तुति करो (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसते = प्रशंसा करते हैं (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसन् = स्तुति, प्रशंसा करता हुआ (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शसनम् = स्तुति, प्रशंसा (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसम् = स्तुति, प्रशंसा (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसामि = स्तुति, प्रशंसा करता हूँ (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसिषः = स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसिषम् = स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाले को (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसो = स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शस्त = हिंसित, प्रशंसित (शस् - काटना, हिंसा करना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शस्तम् = शस्त्र, हिंसित, प्रशंसित (शस् - काटना, हिंसा करना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंस्ता = स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला (शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शस्तीः = हिंसक (शस् - काटना, हिंसा करना, शंस = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शस्त्राणाम् = शस्त्रों का (शस् - काटना, हिंसा करना,

शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शस्त्राणि = शस्त्रों को (शस् - काटना, हिंसा करना, शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंस्य = स्तुत्य (शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंस्यते = शंस्य के लिए, स्तुति के लिए (शंस - चाहना, इच्छा करना, स्तुति, प्रशंसा करने वाला, शंस - मारना, दुःख देना, काटना, हिंसा करना)।

शंस्यम् = स्तुत्य को (शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंस्यमानम् = शंस्यमान को, स्तुति, इच्छा करते हुए (शंस - चाहना, इच्छा करना, स्तुति, प्रशंसा करने वाला, शस् - काटना, हिंसा करना)।

शंस्यमाने = स्तुत्यमान में (शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शाकिने = शक्तिदाता के लिए (शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना)।

शाको = शक्तिवान् (शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना)।

शाक्मना = शक्ति द्वारा (शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना)।

शाक्वर = शक्तिदाता के लिए (शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना)।

शाक्वराय = शक्तिदाता के लिए (शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना)।

शाक्वरैवते = शक्तिदाता के लिए (शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना)।

शाखाभ्यः = शाखाओं के लिए (शाख् = व्याप्त होना, फैलना, शाखा निकलना)।

शाचिगो = स्पष्ट वक्ता को (शच = स्पष्ट बोलना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

शाचिपूजन = हे स्पष्टवक्ताओं को पूजने वाले (शच = स्पष्ट बोलना, पूज - पूजा करना, अर्चा करना, सम्मान करना)।

शाचीन् = शाचियों को, स्पष्ट बोलने वालों को (शच =

स्पष्ट बोलना)।

शातग्विनम् = शत वाणी युक्त को (शत = सौ, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

शादम् = शाद को, आसन को (शद-शी = जीर्ण होना, धीरे धीरे कम होना, मुरझाना, गिरना, जाना, नीचे फेंकना, नीचे गिराना)।

शादेषु = शादों में, जीर्णों में, प्रगतिशीलों में (शद-शी - जीर्ण होना, धीरे धीरे कम होना, मुरझाना, गिरना, जाना, नीचे फेंकना, नीचे गिराना)।

शान्तिः - **शान्तिः** = शान्ति (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शान्तिभिः = शान्तियों द्वारा (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शान्त्यै = शान्ति के लिए (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शाबल्याम् = शाबल्या को (शब् - जाना, आगे जाना)।

शाम्बरे = शाम्बर में (शम्ब - मर्दन, ताडन, गर्जन करना)।

शारदी = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना)।

शारदेन = शारद द्वारा, शरद सम्बन्धी द्वारा (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शारदौ = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शारिः = शारि, प्रगतिशील, विद्वान् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शार्गः = शार्ग, प्रगतिशील, विद्वान् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शार्दूलाय = शार्दूल के लिए, प्रगतिशीलों के लिए,

विद्वानों के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शार्दूलो = शार्दूल, प्रगतिशील, विद्वान् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शार्याते - शार्याते = शार्यात में (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शाले = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य (शल - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

शाश्वतीभ्यः = शाश्वतों के लिए, शान्ति के लिए (शश्व - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना, शिव - जाना, वृद्धि होना, श्वस - श्वास लेना)।

शासतु = शासन करो (शास् - शासन करना)।

शासते = शासन करता है (शास् - शासन करना)।

शासतो = शासन करने वाले (शास् - शासन करना)।

शास्ति - शास्ति = शासन करता है (शास् - शासन करना)।

शास्ते = शासन करता है (शास् - शासन करना)।

शास्व = शासन करो (शास् - शासन करना)।

शिक्ष - शिक्ष = शिक्षा दो (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिक्षति = शिक्षित करता है, सीखता है, सिखाता है (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिक्षसि = शिक्षा देते हो, सीखते हो, सिखाते हो (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिक्षा = शिक्षा (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिक्षिते = शिक्षित में (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिक्षितौ = शिक्षित युगल (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिक्षेयम् = सीखूँ, शिक्षा दूँ (शिक्ष - शिक्षा देना)।

शिखा = शिखा (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, पतला करना, सुनना। शी = सोना, शयन करना। शाख = शाखा फैलना, डालें पैदा होना)।

शिङ्गीनि - शिंगीनि = शिंगी को (शि - तीक्ष्ण करना,

पैना करना, पतला करना, सुनना, शिजि = अस्पष्ट ध्वनि करना)।

शितः = शित, तीक्ष्ण, श्रुति (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शितम् = शित को, तीक्ष्ण, श्रुति (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शितिः = शिति (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शितिकण्ठाय = शितिकण्ठ के लिए (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। कण्ठ - निगलना, शब्द करना)।

शितिकक्षो = शिति-कक्ष (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। कक्ष - धारण करना, घर्षण करना)।

शितिपृष्ठा = शिति-पृष्ठ (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। शिजि = अस्पष्ट ध्वनि करना पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

शितिपृष्ठानाम् = शिति-पृष्ठों का (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शिजि = अस्पष्ट ध्वनि करना, पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

शितिपृष्ठो = शिति-पृष्ठ (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शिजि = अस्पष्ट ध्वनि करना, पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)।

शितिबाहुः = शिति-बाहु (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। बाह - प्रयास करना, बह - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

शितिभ्रवो = शिति-भ्रव वाला (शि = तीक्ष्ण करना, पैना

करना, पतला करना, सुनना। शित् = धवल होना। श्री = डरना, भय करना, भरण-पोषण-धारण करना, पालन करना, रक्षा करना, भृ = भरण करना)।

शितिरन्ध्रो = शिति-रन्ध्र (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। शित् = धवल होना। रन्ध्र = पूरा करना, समाप्त करना, अपकार करना, मार डालना या दुःख देना, पक्व होना, पकना, शुद्ध होना, निर्दोष होना, गलती न करना)।

शितो = शित, तीक्ष्ण, श्रुति (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शिपि-विष्टाय = शिपि-विष्ट के लिए, शिपि के विस्तार के लिए (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)।

शिप्रम् = शिप्र को (शिप - क्षरण होना, काटने योग्य होना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शिप्री = शिप्र (शिप - क्षरण होना, काटने योग्य होना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शिमीवतो = शिमीवान् (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)।

शिरः = शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)।

शिरो = शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)।

शिल्प = शिल्प (शिल् - बीनना, उज्ज्छन करना, एक एक करके बीनना)।

शिल्पः = शिल्प (शिल् - बीनना, उज्ज्छन करना, एक एक करके बीनना)।

शिल्पाः = शिल्प (शिल् - बीनना, उज्ज्छन करना, एक एक करके बीनना)।

शिल्पे = शिल्प में (शिल् - बीनना, उज्ज्छन करना, एक एक करके बीनना)।

शिव = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवः = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवतम = अत्यन्त कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवतमः = अत्यन्त कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवतमाः = अत्यन्त कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवतमो = अत्यन्त कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवम् = शिव को, कल्याण को, कल्याणकारी को (शिव् = कल्याण करना)।

शिवा = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवाः = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवान् = कल्याणकारकों को (शिव् = कल्याण करना)।

शिवाभिः = शिवों द्वारा, कल्याणकारियों द्वारा (शिव् - कल्याण करना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना)।

शिवाम् = कल्याणकारी को (शिव् = कल्याण करना)।

शिवाय = कल्याणकारी के लिए (शिव् = कल्याण करना)।

शिवे = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)।

शिवेन = शिव द्वारा, कल्याणकारी द्वारा (शिव् = कल्याण करना)।

शिवेभिः = शिवों द्वारा, कल्याणकारियों द्वारा (शिव् - कल्याण करना)।

शिवो = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)।

शिवो = कल्याण करने वाले (शिव् = कल्याण करना)।

शिशान्ति = तीक्ष्ण करता है (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना, शास् - शासन करना)।

शिशान्ति = तीक्ष्ण करता है (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना, शास् - शासन करना)।

शिशानो = तीक्ष्ण (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन

करना)।

शिषामहे = प्रयोजन, अनुशासन करते हैं (शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

शिशिराय = शिशिर के लिए (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिशीते = कल्याण करता है, तीक्ष्ण करता है (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिशुः = शिशु (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिशुम् = शिशु को (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिशुमती = शिशुमान्, शिशुवती, शिशुयुक्त (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिशुमारान् = शिशुमारों को (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना, मृ = मरना, देहत्याग करना, मा - मान करना, मानना)।

शिशुमारो = शिशुमार (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना, मृ = मरना, देहत्याग करना, मा - मान करना, मानना)।

शिशो = तीक्ष्ण, कल्याण (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिश्रियाणम् = सेवा करने वाले, आश्रय देने वाले को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

शिश्रिये = सेवा करते हैं, आश्रय देते हैं (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

शिश्वरीः = शिशु वाले (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शिषः = शिष, प्रयोजन, अनुशासन (शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

शिषम् = शिष को, प्रयोजन को, अनुशासन को (शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

शिषा = शिष द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

शीकायते = प्रकाश करता है, अभिसिञ्चन करता है (शीक = चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, भाषण करना)। शीक = गीला करना, छीटा मारना, भिगोना, सिंचाई करना)।

शीघ्रम् = शीघ्र (अव्यय)।

शीघ्र्याय = शीघ्रयोग्य के लिए (शीघ्र - शीघ्र होना, क्षिप्र होना)।

शीत-हृदा = शीत-हृद युक्त (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

शीते = शीत में (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना)।

शीनम् = शीन को, शयन को (शी = सोना, शयन करना)।

शीभ्याय = स्तुत्य के लिए, प्रशंसनीय के लिए (शी = सोना, शयन करना, शीभ - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आत्म-स्तुति करना)।

शीर-शोचिषम् = शीर-शोचिष को (शि - तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिर - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शीर्षन् - शीर्षन् = शीर्ष (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्षे - शीर्षे = शीर्ष (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्ष्णः - शीर्ष्णः = शीर्ष (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्ष्ण्या - शीर्ष्ण्या = शीर्ष द्वारा (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्ष्णा - शीर्ष्णा = शीर्ष (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्ष्णी - शीर्ष्णी = शीर्षयुक्त (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्ष्णे - शीर्ष्णे = शीर्ष पर (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीर्ष्णो = शीर्ष (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)।

शीलाय = शील के लिए (शील् - अभ्यास करना, धारण करना)।

शृङ्गवृषो = शृङ्गवृष, विद्वान् पराक्रमी (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

शृङ्गाणि = शृङ्गों को (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शृङ्गेभिः = शृङ्गों द्वारा (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शृङ्गो = शृङ्ग (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

शृणवत् = सुनें (श्रु-शृण् = सुनना, जाना)।

शृणवन् = सुने (श्रु-शृण् = सुनना, जाना)।

शृणाहि = सुनो (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शृणु = सुनो (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृणुतम् = सुनें, शृणुत को (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृणुयाम् = सुनें (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृणुयाम = सुनें (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृणोतु = सुनें (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृण्वते = श्रोता के लिए, शृण्वती (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृण्वन्तु = सुनें (शृ - सुनना)।

शृण्वरे = श्रोता के लिए (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृण्वषे = श्रोता के लिए (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृण्वे = सुनें (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृतपाकम् = शृतपाक को, सुनकर परिवक्व हुए को (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना। पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

शृतासः = श्रोतागण, सुने हुए जन, वाणियाँ (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शृतेन = सुने हुए द्वारा (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शुकः = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, जानना, पाना)।

शुक-बभ्रुः = शुक-बभ्रु, शुक-पोषक (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, भृ = भरण-पोषण, धारण करना)।

शुकरूपा = शुकरूप, शुद्ध, पवित्र, रूप वाले (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुकरूपाः = शुकरूप, शुद्ध, पवित्र, रूप वाले (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक् = शुद्ध, पवित्र, पवित्रकर्ता (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्र - शुक्र = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रः - शुक्रः = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रज्योतिः = शुक्रज्योति, शुद्ध, पवित्र प्रकाशयुक्त (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

शुक्रपाः - शुक्रपाः = शुक्र, विद्वान्, शुद्ध, पवित्र,

पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रपिशम् = शुक्रपिश को, पवित्र प्रकाशक को (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, पिश - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।

शुक्रम् - शुक्रम् = शुक्र को, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता को (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रवर्चाः = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, प्रकाशयुक्त (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)

शुक्रशोचिषा - शुक्र-शोचिषा = शुक्र-शुचि द्वारा, शुद्ध, पवित्र, प्रकाशयुक्त द्वारा (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रशोचिषे = शुक्र-शुचि के लिए, शुद्ध, पवित्र, प्रकाशयुक्त के लिए (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रस्य - शुक्रस्य = शुक्र का, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता का (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रा = शुक्र, विद्वान्, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्राः - शुक्राः = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रात् - शुक्रात् = शुक्र से, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता से (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्राय - शुक्राय = शुक्र के लिए, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता के लिए (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रासः = शुक्रगण, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, जन (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रासो = शुक्रगण, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता,

जन (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रे - शुक्रे = शुक्र में, विद्वान्, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता में (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रेण - शुक्रेण = शुक्र द्वारा, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता द्वारा (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्रो = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुक्लम् - शुक्लम् = शुक्ल को, त्यागी, रचनाशील, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता को (शुक्ल - त्याग करना, रचना करना, शुक् - जाना, शुच् - शुद्ध होना)।

शुक्लाय = शुक्ल के लिए, , त्यागी, रचनाशील, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता के लिए (शुक्ल - त्याग करना, रचना करना, शुक् - जाना, शुच् - शुद्ध होना)।

शुगृच्छतु = पवित्रता को प्राप्त हो (शुक्-ऋच्छतु, शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुच् - दुःख मानना, शोक करना, शुच् = स्नान करना, शुद्ध होना, आर्द्र होना, गीला होना, मर्दन करना, मथना, क्षत करना, घाव करना। ऋच्छ - जाना, जानना, प्राप्त करना)।

शुचयः = पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचये = पवित्र के लिए (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचयो = पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचि = पवित्रता, शुद्धता (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचिः = पवित्रता, शुद्धता (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचिपाः = पवित्रता, शुद्धता के पालक-रक्षक (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

शुचिबन्धुः = पवित्र बन्धु, पवित्र बन्धन करने वाला (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

शुचिभिः = पवित्रताओं द्वारा, शुद्धताओं द्वारा (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचिम् = पवित्रता को (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचिव्रतः = शुचिव्रत, पवित्रता, शुद्धता का व्रत लेने वाला (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

शुचिव्रता = शुचिव्रत, पवित्रता, शुद्धता का व्रत लेने वाला (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

शुचिषत् = शुचिव्रत, पवित्रता, शुद्धता में बैठने वाला, पवित्रता में आसीन (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

शुची = पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुचे = शुच के लिए, शुचिव्रत, पवित्रता, शुद्धता के लिए (शुच् - दुःख मानना, शोक करना, शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना)।

शुण्टाकर्णो = शुण्टा-कर्ण, शुष्क कर्ण वाला (शुण्ट = रोकना, रोक रखना, जाने में विघ्न होना, लंगड़ाना, सूखना, सुखाना। शुण्ट = सूखना, सुखाना, शोषण करना। कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

शुद्ध - शुद्ध = शुद्ध, पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुद्धः = शुद्ध, पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना,

शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुद्धम् - शुद्धम् = शुद्ध, पवित्र को (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुद्धाः - शुद्धाः = शुद्ध, पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुद्धाभिः = शुद्धों द्वारा, पवित्रों द्वारा (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुद्धैः = शुद्धों द्वारा, पवित्रों द्वारा (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुध्यतु = शुद्ध, पवित्र करे (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुनम् = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)।

शुनासीरीयाः = शुनासीरीय, मुक्त गति वाला, मुक्त बल वाला (शून = अलग करना, मिलाना, मुक्त होना, रिक्त होना, शून्य होना, सि = बांधना, गूँथना, फन्दे से पकड़ना। सार = अधिकबल होना, दुर्बल होना। सृ = जाना, सरकना)।

शुन्धध्वम् = शुद्ध बनो, शुद्ध करो (शुच्-शुक्-शुध - शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्धन्ताम् = शुद्ध करे (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्धन्तु = शुद्ध करो (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्धयन्तु = शुद्ध करें (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्धस्व = शुद्ध हो, पवित्र हो, शुद्ध करो, पवित्र करो (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्धामि = शुद्ध करता हूँ (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्ध्यावता = शुद्धता युक्त, पवित्रता युक्त (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुन्ध्युवः = शुद्ध करने वाला, पवित्र करने वाला (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना,

जाना)।

शुन्ध्यः = शुन्ध्य, शुद्धता युक्त, पवित्रता युक्त, शुद्ध करने वाला, पवित्र करने वाला (शुच्-शुक्-शुध-शुन्ध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुभः = शुभ (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभम् = शुभ को (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभानैः = शुभों द्वारा (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभायते = शोभायित होता है, शोभित होता है, प्रकाशित होता है (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभे = शुभ में (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभम् = शुभ को, प्रकाशित को (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभ्रशस्तमः = अत्यन्त प्रकाश वाले (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभाः = शुभ्र, प्रकाशित (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभावता = शुभ्र, प्रकाशित, प्रकाश युक्त (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुभ्रेभिः = शुभ्रों, प्रकाशितों द्वारा (शुभ - दीप्ति-प्रकाश होना, शोभा पाना, मङ्गल होना, बोलना)।

शुम्भ = प्रकाशित करो, सुशोभित करो, प्रकाशित, सुशोभित (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना)।

शुम्भते = प्रकाशित होता है, सुशोभित होता है (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुम्भन्ति = शोभित होते हैं, प्रकाशित होते हैं (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुम्भमानाः = प्रकाशमान, प्रकाशित होते हुए (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुम्भमाना = शुम्भमान, प्रकाशमान, शोभायमान (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना)।

शुम्भसे = शोभित किया जाता है, प्रकाशित किया जाता है (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुम्भस्व = शोभित हो, प्रकाशित हो (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुम्भानः = प्रकाशित, शोभित होता हुआ (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुम्भामि = प्रकाशित, शोभित करता हूँ (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)।

शुरुधः - शुरुधः = शूरतायुक्त (शूर - वीरता दिखाना, वीर होना, धा - धारण करना, धा - धारण करना)।

शुल्काय = शुल्क के लिए (शुल्क - कर लगाना, उत्पत्ति कर देना, उत्पन्न करना, कहना, प्रीति करना, मिलाना, छोड़ देना, मुक्त कर देना)।

शुशुचानो = पवित्र होता हुआ, पवित्र करता हुआ (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

शुश्रवत् = श्रवण करता है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शुश्रुम - शुश्रुम = सुनते हैं (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शुश्रूषमाणाय = सुनने के इच्छुक के लिए (श्रु = सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शुष्ककण्ठेन = शुष्ककण्ठ द्वारा (शुष् - सुखाना, कण्ठ - पीड़ा होना, जाना)।

शुष्कम् = शुष्क, सूखा (शुष् - सुखाना)।

शुष्म = सुखाने वाला (शुष् - सुखाना)।

शुष्मः = सुखाने वाला (शुष् - सुखाना)।

शुष्मम् = शुष्म को, सुखाने वाले को (शुष् - सुखाना)।

शुष्माः = शुष्म, सुखाने वाले (शुष् - सुखाना)।

शुष्मासः = शुष्म, सुखाने वाले (शुष् - सुखाना)।

शुष्मिणः - शुष्मिणः = शुष्मी, सुखाने वाले (शुष् - सुखाना)।

शुष्मिणा = शुष्मी, सुखाने वाले द्वारा (शुष् - सुखाना)।

शुष्मिणी - शुष्मिणी = शुष्मिणी, सुखाने वाली (शुष् -

सुखाना)।

शुष्मिन् - शुष्मिन् = शुष्मी, शुष्म युक्त, सुखाने वाला (शुष् = सूखना, शुष्क होना)।

शुष्मी = शुष्मी, शुष्म युक्त, सुखाने वाला (शुष् = सूखना, शुष्क होना)।

शूकराय = प्रगतिशील के लिए, शूकर के लिए, शीघकारी के लिए (शू- शु- क्षिप्र, शीघ्र (निपात, अव्यय)। कृ - करना। शुक्-शुच् = शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुक = जाना। शूच = स्नान करना, सार निकालना, अर्क खींचना, मथना, छानना, पीड़ा करना, दुःख देना)।

शूकृतस्य = शूकृत का, सुकर्म का, शीघकारी का (शू- शु- क्षिप्र, शीघ्र (निपात, अव्यय)। कृ - करना। शुक्-शुच् = शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुक = जाना। शूच = स्नान करना, सार निकालना, अर्क खींचना, मथना, छानना, पीड़ा करना, दुःख देना)।

शूकृताय = प्रगतिशील के लिए, शूकृत के लिए, शीघकारी के लिए (शू- शु- क्षिप्र, शीघ्र (निपात, अव्यय)। कृ - करना। शुक्-शुच् = शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुक = जाना। शूच = स्नान करना, सार निकालना, अर्क खींचना, मथना, छानना, पीड़ा करना, दुःख देना)।

शूघनासो = , शीघहन्तागण (शू- शु- क्षिप्र, शीघ्र (निपात, अव्यय) घा-घन्-हन = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)।

शूद्रः - शूद्रः = शूद्र, शुद्ध करने वाला (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्रम् - शूद्रम् = शूद्र को, शुद्ध करने वाले को (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्रा - शूद्रा = शूद्र, शुद्ध करने वाला (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्राय - शूद्राय = शूद्र के लिए, शुद्ध करने वाले के लिए (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्रार्यो = शूद्र और आर्य, शुद्धकर्ता और प्रगतिशील (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्रे = शूद्र में (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध

होना)।

शूद्रेषु - शूद्रेषु = शूद्रों में, शुद्ध करने वालों में (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्रो = शूद्र, शुद्ध करने वाला (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूर = वीर, पराक्रमी (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)।

शूरग्रामः = वीरग्राम, पराक्रमी का ग्राम (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना, ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

शूरणासः = वीर, पराक्रमी (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)।

शूरम् = शूर को, वीर को, पराक्रमी को (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)।

शूरवीरः = शूर वीर (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

शूरसाता = वीर, पराक्रमी दानी, दानवीर (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना, सन् - सेवा करना, विभक्त करना, दान करना)।

शूरसातौ = वीर, पराक्रमी दानी, दानवीर (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना, स - सहित, साथ, अत् = सतत् गति करना)।

शूराणाम् = वीरों का, शूरों का (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)।

शूराय = शूर, वीर, पराक्रमी के लिए (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)।

शूरो = शूर, वीर, पराक्रमी (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)।

शूशुचन् = शुद्धि करे, शोक करें (शुच् = शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शोक करना, शोच होना, दुःखी होना)

शूषम् = उत्पन्न करने वाले को (शूष - जनना, उत्पन्न करना, प्रसूत होना)।

शूषस्य = उत्पन्न करने वाले का (शूष - जनना,

उत्पन्न करना, प्रसूत होना)।

शूषाय = उत्पन्न करने वाले के लिए (शूष - जनना, उत्पन्न करना, प्रसूत होना)।

शूषे = उत्पन्न करता है (शूष - जनना, उत्पन्न करना, प्रसूत होना, शूष - शुष्क होना, सूखना)।

शोपेन = शेष द्वारा, क्षरण द्वारा (शिप = क्षरण होना, काटने योग्य होना)।

शोपो = शेष, क्षरण (शिप = क्षरण होना, काटने योग्य होना)।

शोरते = शिर होता है, मुख्य होता है, सुनता है, चलता है, कम्पायमान करता है (शिर् - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, होना, सोना, बैठना, शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शेल = गति करना, कम्पन करना)।

शेवधिपा = शेवधिप, सिञ्चन-सेवा को धारण-पालन करने वाला (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना)।

शेवधिपाः = शेवधिप, सिञ्चन-सेवा को धारण-पालन करने वाला (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना)।

शेव-धिम् = शेवधि को, सिञ्चन-सेवा को धारण-पालन करने वाले को (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना, धा - धारण करना)।

शेषे = शेष में, शयन करता है (शी - शयन करना)।

शैलूषम् = शैलूष को, एकाग्र अभ्यासी को (शील - मनन, एकाग्रता, अभ्यास, स्वभाव होना),

शैशिरेण = शिशिर से उत्पन्न द्वारा (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

शोकः = शोक, दुःख, चिन्ता (शुच् - दुःख मानना, शोक करना)।

शोकात् = पवित्रता से, शोक से (शुक्-शुच् - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुच् - दुःख मानना, शोक करना)।

शोकाय = शोक के लिए (शुक् - जाना, शुच् - पवित्र होना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोकैः = शोक द्वारा (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचते = शोचकर्ता के लिए (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचमानाय = शोचमान के लिए (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचस्व = शोच करो (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचा = शुद्ध करो, पवित्र करो (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचिः = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचिषा = शोचमान द्वारा, शुद्ध, पवित्र द्वारा (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचिषे = शुद्ध, पवित्र के लिए (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचिष्केशम् = शोचिष्केश को, पवित्र गति को (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना, किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)।

शोचिष्ठ = पावनतम ((शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचिष्ठे = शोचिष्ठ में, पावनतम में (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचीः = शोचि, शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोचीषि = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोणा = प्रगतिशील (शोण = लाल होना, रंगना, जाना,

शुन् = जाना)।

शोणो = प्रगतिशील (शोण - लाल होना, रंगना, जाना, शुन् - जाना)।

शोभते = शोभित होता है (शुभ - चमकना, प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना, शोभा पाना, सुन्दर होना, शोभायमान होना, भाषण करना, बोलना, मार डालना या दुःख देना)।

शोभथा = शोभित हो (शुभ - चमकना, प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना, शोभा पाना, सुन्दर होना, शोभायमान होना, भाषण करना, बोलना, मार डालना या दुःख देना)।

शोशुचत् = पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोशुचानो = अत्यन्त प्रकाशमान, अत्यन्त प्रकाशित होते हुए, पवित्र करने वाले (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)।

शोषाय = शुष्कता के लिए (शूष् - उत्पन्न करना, शुष् - सूखना, सुखाना)।

शौचद्रथे = हे पवित्र-आदरणीय, हे पवित्र-रमणीय (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, दृ - हिंसा करना, आदर करना, सत्कार करना, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

शौष्कलम् = शौष्कल को, उत्पन्न करने वाले को, शुष्क करने वाले को, सूखने वाले को, सुखाने वाले को (शूष् - उत्पन्न करना, शुष् - सूखना, सुखाना)।

श्नथयन्त = हिंसक, हिंसा करने वाले (श्नथ - हिंसा करना, मारना)।

श्नथिष्टन = अत्यन्त हिंसक (श्नथ - हिंसा करना, मारना)।

श्नप्त्रे - श्नप्त्रे = वाणी या शुद्धता में स्थित (स्ना - शुद्ध होना)।

श्नुष्टिः = दान, प्राप्त (शण - दान करना, जाना, शब्द करना। शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पैनाना, शान धरना, छील के पैना करना, अश् = व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, तीव्रता से पहुँचना)

श्मशा = शमन द्वारा, विचार द्वारा (श्म = शमन करना, शान्त करना, प्रसिद्ध करना, स्पष्टता से दिखाना, विचार करना, सहन करना, ठण्डा होना, मन स्वाधीन

रखना, स्वस्थ होना, क्षुब्ध नहीं होना)।

श्मश्रुभिः = श्मश्रुओं द्वारा (श्म = शमन करना, शान्त करना, प्रसिद्ध करना, स्पष्टता से दिखाना, विचार करना, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्मश्रूणि = शमनकारी, शान्तिपूर्ण श्रवण करने वाले (श्म = शमन करना, शान्त करना, प्रसिद्ध करना, स्पष्टता से दिखाना, विचार करना, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्यामम् = श्याम को (श्यम = वितर्क करना, विवाद करना, रंगना। श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्यामाः = श्याम (श्यम = वितर्क करना, विवाद करना, रंगना। श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्यामाकाः = श्याम वाला, श्यामल (श्यम = वितर्क करना, विवाद करना, रंगना। श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्यावके = श्यावक, तारण, तरण, प्रगति में (श्यै - जाना, तैरना)।

श्येतः = श्येत, तारण, तरण, प्रगति (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्येताक्षो = श्येताक्ष, तारण, तरण, प्रगति में व्याप्त (श्यै - चलना, जाना, तैरना, अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना)।

श्येनः = श्येन, प्रगतिशील, तीव्रगामी (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्येनम् = श्येन को, प्रगतिशील, तीव्रगामी को (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्येनस्य = श्येन का, प्रगतिशील, तीव्रगामी का (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्येनस्येव = श्येन के समान, प्रगतिशील, तीव्रगामी (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्येनाय = श्येन के लिए (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्येनो = श्येन, प्रगतिशील, तीव्रगामी (श्यै - चलना, जाना, तैरना)।

श्रथाय = मुक्त करो, प्रयत्न करो, प्रगति करो (श्रथ - प्रयत्न करना, जाना, मुक्त करना, छोड़ना, मारना, पीड़ा देना, बन्धन करना, निर्बल होना, शक्तिहीन होना)।

श्रद्धया = श्रद्धा द्वारा, सत्य-धारण द्वारा (श्रत् = सत्य (उपसर्ग), धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

श्रद्धा = श्रद्धा, सत्य-धारण (श्रत् = सत्य (उपसर्ग), धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

श्रद्धाम् = श्रद्धा को, सत्य-धारण को (श्रत् = सत्य (उपसर्ग), धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

श्रद्धम् = परिपक्व करो (श्रत् = सत्य (उपसर्ग), धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

श्रपयतु - श्रपयतु = परिपक्व करो (श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)।

श्रपयन्तु - श्रपयन्तु = परिपक्व करो (श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)।

श्रयतात् - श्रयतात् = आश्रय, प्राप्त करो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रयताम् - श्रयताम् = आश्रय, प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रयतु - श्रयतु = आश्रय, प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रयध्वम् = आश्रय, प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रयन्ताम् - श्रयन्ताम् = प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रयमाणाः - श्रयमाणः = श्रयमाण, आश्रय, प्राप्त (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रयस्व - श्रयस्व = सेवा करो, आश्रय, प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रपयान् = परिपक्व करो (श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)।

श्रमिष्मः = श्रम करते हैं (श्रम - थकना, श्रान्त होना, पीड़ित होना, दुःखित होना, तपश्चर्या करना, व्रत करना)।

श्रवः - श्रवः = श्रवण करने वाले (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवत् = श्रवण करता है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवयतम् - श्रवयतम् = श्रवण करो (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवसा - श्रवसा = श्रवण द्वारा (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवसे = श्रवण के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवस्तमः = उत्तम विद्वान्, उत्तम श्रवणशील, उत्तम प्रगतिशील (सु - अच्छा, सुन्दर, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवस्य = विद्वान्, श्रवणशील, प्रगतिशील का (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवस्यवः = विद्वान्, श्रवणशील, प्रगतिशील (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवस्या = विद्वान्, श्रवणशील, प्रगतिशील (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवस्युः = श्रवण करो, श्रवणशील, प्रगतिशील (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवाय = श्रवण के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवाय्यः = श्रवाय्य, श्रव्य (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवाय्यम् = श्रवाय्य को, श्रव्य को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवाय्यस्य = श्रवाय्य का, श्रव्य का (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रवांसि = श्रवणशील, प्रगतिशील (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रीणीषे = आश्रय करते हो, परिपाक करते हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रीमनाः = श्रीमन युक्त, आश्रय, परिपाक, सेवा भावी मन वाले (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)

श्रीयस्व - श्रीयस्व = आश्रय, परिपाक, सेवा भावी बनो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रुतकक्ष = श्रुतकक्ष, श्रुत को धारण करने वाला (श्रु - सुनना, जाना, कक्ष - धारण करना, घर्षण करना)।

श्रुतम् - श्रुतम् = श्रुत को, सुने हुए को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुतर्वन् = श्रुतर्वन्, बहुश्रुत, विद्वान् (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

श्रुतामघम् = श्रुतामघ को, श्रुतिधनी, श्रुत के धन युक्त (श्रु - सुनना, जाना, मघ = धन होना, ऐश्वर्य होना)।

श्रुताय = श्रुत के लिए, सुने हुए के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुतिः = श्रुति (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुतेन = श्रुत द्वारा (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुतो = श्रुत, सुना हुआ (श्रु - सुनना, जाना)।

श्रुतकर्ण - श्रुत्कर्ण = सुनने वाले कर्ण (श्रु - सुनना, जाना, कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, बेधना, छेदना)

श्रुधि = सुनिये (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुधी - श्रुधी = सुनो, सुनता है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुवत् = सुनता है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुवन्तु = सुनें (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुष्टिः = श्रुष्टि, श्रुति, वाणी (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुष्टे = श्रुष्टि में (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रेणिशो = श्रेणी के अनुसार (श्रि - सेवा करना, चाकरी करना, श्री - सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्रोण - एकत्र करना, सज्जय करना, बटोरना, ढेर करना)।

श्रेयः - श्रेयः = श्रेय (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेयसः - श्रेयसः = श्रेय (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेयसे - श्रेयसे = श्रेयस् के लिए (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेष्ठः = श्रेष्ठ (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेष्ठतमाय - श्रेष्ठतमाय = श्रेष्ठतम के लिए (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेष्ठम् = श्रेष्ठ को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेष्ठशोचिषम् = श्रेष्ठ-पवित्रता को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना, शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना)।

श्रेष्ठे - श्रेष्ठे = श्रेष्ठ में (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रेष्ठो - श्रेष्ठो = श्रेष्ठ (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

श्रोणितः - श्रोणितः = श्रोणित (श्रु - सुनना, श्रवण

करना, जाना)।

श्रोणिभ्याम् - श्रोणिभ्याम् = श्रोणियुगल के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोणी - श्रोणी = श्रोणी (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत - श्रोतम् = कान, श्रोत्र (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोतम् - श्रोतम् = कान, श्रोत्र को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत्रपाः - श्रोत्रपा = श्रोत्र-पालक (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत्रम् - श्रोत्रम् = श्रोत्र, कर्ण, कान को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत्रात् - श्रोत्रात् = श्रोत से, कानों से (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत्राभ्याम् = श्रोत के लिए, कानों के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत्राय = श्रोत्र के लिए, सुनने वाले के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोषन्तु = सुनते हो (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)

श्रोषि - श्रोषि = सुनते हो (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोषट् = श्रवण, श्रोता, सुनने वाले (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्लेषो = श्लेष (श्लिष = आलिङ्गन करना, गले लगाना, सटे रहना, एका करना, मिलाप करना। श्लिष = दग्ध करना, जलाना)।

श्लोकः = श्लोक (श्लोक = साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)।

श्लोकम् = श्लोक को (श्लोक = साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)।

श्लोकय = श्लोक करो (श्लोक = साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)।

श्लोकी = श्लोक वाला (श्लोक = साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)।

श्लोक्याय = श्लोक के लिए (श्लोक = साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)।

श्वः = आगमी कल (अव्यय)।

श्वः = सभी प्रगतिशील (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना)।

श्वनिनम् - श्वनिनम् = श्वनिन को (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वनिभ्यो = श्वनि के लिए (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वपतिभ्यः = श्वपतियों के लिए (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

श्वभ्यः = प्रगतिशीलों के लिए, विद्वानों के लिए (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वा = प्रगतिशील (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना)।

श्वात्रभाजा = प्रगतिशील सेवाभावी, प्रगति सेवी (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)।

श्वात्राः - श्वात्राः = विद्या, वृद्धि, शुभ्रता (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वात्रासः - श्वात्रासः = विद्या, वृद्धि, शुभ्रता (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना)।

श्वात्रासो = द्रुतगामी, विद्या, वृद्धि, शुभ्रता (श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वात्रो - श्वात्रो = श्वात्र, विद्या, वृद्धि, शुभ्रता (श्व-

श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वेत - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वानम् = श्वान को, धावक को (शव-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना)।

श्वावित् = श्वा को जानने वाला, विद्वान्, विद्यावान् (शव-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वेत - श्वेत होना, शुभ्र होना, शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील के पैना करना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना, विद = समझना, जानना)।

श्वासय = जीवन हो, श्वास हो, प्राण हो (श्वस - श्वास लेना, श्वासोच्छ्वास करना, जीना, जीते रहना)।

श्वितीचयः - श्वितीचयः = श्वेत या शुभ्रता का सञ्चय करने वाले (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वित्रः = श्वित्र, शुभ्र, विद्वान् (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वेतः = श्वेत या शुभ्रता (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वेतम् = श्वेत या शुभ्रता को (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वेता = श्वेत या शुभ्रता (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वेताः = श्वेत या शुभ्रता (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वेतान् = श्वेतों को, शुभ्रताओं को (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

श्वेत्या = श्वेत या शुभ्रता (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, शिव = जानना, जाना, बढ़ना)।

ष

षः = वह, उसने (सर्वनाम)।

षट् = छह (संख्या, सर्वनाम)।

षट्त्रिंशः - षट्-त्रिंशः = छत्तीसवाँ (संख्या, सर्वनाम)।

षट्त्रिंशत् - षट्-त्रिंशः = छत्तीस (संख्या, सर्वनाम)।

षट्त्रिंशो = छत्तीस (संख्या, सर्वनाम)।

षष्टिम् = साठ को (संख्या, सर्वनाम)।

षष्टिम् = शक्ति, गणना, षष्टि को (षष - शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, संख्या, सर्वनाम)।

षष्ठी = छठवीं (संख्या, सर्वनाम)।

षष्ठे = छठे में (संख्या, सर्वनाम)।

षस्वजे = घेरता है, लपेटता है, आलिङ्गन करता है (स्वज - घेरना, लपेटना, आलिङ्गन करना, गले लगाना)।

षिच्यते = सिञ्चन करता है, सींचता है (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

षिच्यसे = सिञ्चन करता है (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

षिधे = सिद्ध करो (सिध- पूरा करना, सिद्ध होना, जीत होना, अमानवी पराक्रम की सिद्धि के लिए आरम्भ किये हुए कर्म की समाप्ति करना, पूर्ण होना, समाप्त होना, जाना, पढ़ना, पढ़ाना)।

षीद = बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

षीद = बैठो, संचरण करो, प्रतिष्ठित हो (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

षीदत् = सीद, बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

षीदत = सीद, बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

षीदसि = संचरण करते हो, प्रतिष्ठित करते हो (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

षु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग)।

षू = प्रेरणा (सु = प्रेरणा देना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

षेदथुः = गये, प्राप्त हुए (सिद् - हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना)।

षेदिरे = प्राप्त किया, गये (सिद् = हिंसा करना,

अवसाद होना, जाना, जानना, पाना, सिध् = जाना, जानना, पाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

षोडश = सोलह (संख्या, सर्वनाम)।

षोडशम् = सोलहवाँ (संख्या, सर्वनाम)।

षोडशी = सोलह से युक्त।

ष्टन = स्तन, शब्द, वाणी (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

ष्टवाम = स्तुति करते हैं (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

ष्टवे = स्तुति, प्रशंसा के लिए (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

ष्टुप् = स्तुत्य (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)।

ष्टोभन्तु = स्तुति करें (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना, स्तुच - सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, प्रकाशित होना, चमकना, तेजस्वी होना)।

ष्ठ = स्थित हो (स्था - स्थित होना, प्रतिष्ठित होना)।

ष्ठा = स्थित हो (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

ष्णुभिः = झरने, टपकने द्वारा (स्नु - भाप से टपकना, झरना, चूना)।

ष्णा = थे (अस् - होना)।

ष्या = वह, बन्धन (स्य - वैदिक सर्वनाम्। सि = बाँधना)।

ष्यामि = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (सो-स्य = अन्त करना, नष्ट करना)।

ष्वजामहे = आलिङ्गन करता हूँ, घेरता हूँ (स्वज - घेरना, लपेटना, आलिङ्गन करना, गले लगाना)।

ष्वाणः = शब्द करने वाले (स्वन - शब्द करना)।

स

स = सहित, साथ (उपसर्ग)।

स = वह, उसने (सर्वनाम)।

सः - सः = वह, उसने (सर्वनाम)।

स एव = वही (सर्वनाम)।

सकुला = सकुल, कुल के साथ (स - सहित, साथ

(उपसर्ग), कुल् - आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)।

सक्तवः = सक्तु, सक्तू, भुना-पिसा हुआ (सक्त - भूना, पकाना, पीसना)।

सक्तूनाम् = सक्तुओं का, भुने-पिसे हुए का (सक्त - भूना, पकाना, पीसना)।

सक्थ्या = परिपक्वता के योग्य (सक्त - भूना, पकाना, पीसना)।

सक्थ्ना = परिपक्वता के द्वारा (सक्त - भूना, पकाना, पीसना)।

सक्थ्योः = परिपक्व का, परिपक्वता के योग्य (सक्त - भूना, पकाना, पीसना)।

सक्षणिः = प्रकाश युक्त, शब्द युक्त (स = सहित, साथ (उपसर्ग), क्षण - शब्द करना, दीप्त करना)।

सखा = मित्र (सख् = मित्र होना)।

सखाय = मित्र के लिए (सख् = मित्र होना)।

सखायः = मित्र (सख् = मित्र होना)।

सखायम् = मित्र को (सख् = मित्र होना)।

सखाया = मित्र (सख् = मित्र होना)।

सखित्वम् = मित्रता को (सख् = मित्र होना)।

सखिभ्यः = मित्रों के लिए (सख् = मित्र होना)।

सखीन् = मित्रों को (सख् = मित्र होना)।

सखीनाम् = मित्रों का (सख् = मित्र होना)।

सख्यम् = सखाभाव, मित्रता को (सख् = मित्र होना)।

सख्याय = सखाभाव, मित्रता के लिए, मित्र के लिए, सखा के लिए (सख् = मित्र होना)।

सख्युः = सखाभाव, मित्रभाव (सख् = मित्र होना)।

सख्ये = सखाभाव में, मित्रभाव में (सख् = मित्र होना)।

सगणः = गण सहित (स - सहित, साथ, सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना, गण् - गिनना, समूह बनाना)।

सगणो = गण सहित (स - सहित, साथ, सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना, गण् - गिनना, समूह बनाना)।

सगरेण = सगर द्वारा (सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना, स - सहित, साथ, गृ - गीला करना, समझना, जानना)।

सगराः = सगर (सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना, स - सहित, साथ, गृ - गीला करना, समझना, जानना)।

सगर्भ्यः - सगर्भ्यः = सगर्भ योग्य, साथ ग्रहण योग्य, सगः के लिए (सगः-भ्यः, स-गर्भ-यः, सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना, स - सहित, साथ, गृ-गर्भ - भीतर धारण करना, गर्भ होना, गृह - गृहण करना, गृ - गीला करना, समझना, जानना)।

सग्धिः = सग्धि, आच्छादक (सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना)।

सग्धिम् = सग्धि को, आच्छादक को (सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना)।

सग्मे = आच्छादन में (सग - संवरण करना, आच्छादन करना, ओढ़ना)।

सङ्कल्पम् (संकल्पम्) = संकल्प को (सम् - सम्यक्, कल्प - शक्तिमान होना, समर्थ होना, कल्पना करना, विचार करना)।

सङ्कल्पाः = संकल्प (सम् - सम्यक्, कल्प - शक्तिमान होना, समर्थ होना, कल्पना करना, विचार करना)।

सङ्काः = सङ्का, सम्यक् ध्वनि (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), कु - शब्द करना, कविता करना)।

सङ्क्रमाय = संक्रम के लिए, सम्यक् विक्रमण के लिए, सम्यक् चलन के लिए (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

सङ्क्रमो = संक्रम, सम्यक् विक्रमण, सम्यक् चलन (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)।

सङ्किर = सम्यक् विक्षेप, हिंसा (सम् - सम्यक्, कृ-किर् - फेंक देना, विक्षेप करना, छिड़कना, वयहानि होना, हिंसा करना)।

सङ्क्रोशैः = संक्रोशों द्वारा (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग))। क्रुश् - रोना, पुकारना, शब्द करना)।

सङ्गतेभ्य = योग्यों में, योग्यों द्वारा, योग्यों के लिए

(सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)।

सङ्गतिम् = सङ्गति को, सङ्गति करने वाले को (सम् - सम्यक्, गम् - जाना)।

सङ्गत्याम् = संगति में (सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)।

सङ्गमनः = संगमन (सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)।

सङ्गमे = संगम में (सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)।

सङ्गवे = संगव में, सम्यक् वाणी में (सम् - सम्यक्, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

सङ्गिरम् = सङ्गिर को, प्रबोधयुक्त विद्वान् को (सम् - सम्यक्, गृ - जानना, समझना, बोलना)।

सङ्गे = सम्यक् गति में (सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)।

सङ्ग्रहीतृभ्यः = सङ्ग्रहीत के लिए (सम् - सम्यक्, ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)।

सङ्घातम् (संघातम्) = संघर्षों में (सम् - सम्यक्, घा-हन् = मारना, घात लगाना)।

सङ्घाते (संघाते) = संघात में (सम् - सम्यक्, घा-हन् = मारना, घात लगाना)।

सचताम् = अभिसिञ्चन करें, सींचे (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचते = अभिसिञ्चन करता है (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचथ्यम् = अभिसिञ्चन, सेवा को (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचन्त = अभिसिञ्चन करते हैं (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचन्ताम् = अभिसिञ्चन करें (सच् = सिञ्चन करना,

सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचन्ते = अभिसिञ्चन करते हैं, सेवा करते हैं (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचमानः = अभिसिञ्चित करता हुआ, अभिसिञ्चित होता हुआ (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचसे = अभिसिञ्चन करते हो (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचस्वा = अभिसिञ्चन करो, संयुक्त करो (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, समझना, सम्बन्धी होना)।

सचा = अभिसिञ्चन करो (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचाभुवः = अभिसिञ्चन होने वाला (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचाभुवा = अभिसिञ्चन होने वाला, सहयोगी होने वाला (सच् - पूरा समझना, अच्छी तरह जानना, सम्बन्धी होना, संसर्गी होना)

सचेत = अभिसिञ्चन करे, समान चित्त वाले (स - साथ, सहित। चित् - चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

सचेतसः = समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

सचेतसौ = समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

सचेते = अभिसिञ्चन करते हैं, सेवा करते हैं (सच् - सेवा करना, सन्तुष्ट करना, सींचना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचेमहि = अभिसिञ्चन करते हैं, सेवा करते हैं (सच् = सेवा करना)।

सज्जग्मानः = सम्यक् रूप से, भलीभाँति गतिशील, विद्वान् (सम् - सम्यक्, जग् - गति करना, घर्षण करना, ग्रहण करना, गम् - जाना, जानना)।

सजातवनि = सम्बन्धी की सेवा (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सजाता = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सजाताः = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सजातान् = सम्बन्धियों को (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)

सजातानाम् = सम्बन्धियों का (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)

सजातो = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)

सजात्यानाम् = साथ जन्मे लोगों का, सहजन्माओं का (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सजित्वरी = सम्बन्धी, विजेता (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, जीतना, पराभव करना)।

सजित्वाना = विजयी, विजय के साथ, सम्बन्ध युक्त (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

सजूः = समान प्रीतियुक्त, विचारशील, सेवाभावी (स - साथ, सहित, संज्-सज् = गले लगाना, सम्बन्धी होना, स + जूः, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिसा करना, सेवा करना)।

सजोषसः = विचारवान्, सेवाभावी (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सजोषसा = विचारवान्, सेवाभावी द्वारा (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सजोषसो = विचारवान्, सेवाभावी (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सजोषसौ = विचारवान्, सेवाभावी युगल (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सजोषा = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सजोषाः = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सजोषोभ्याम् = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले के लिए (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)।

सञ्चरन्तम् = सम्यक् विचरण करते हुए को, सम्यक् विचरण करने वाले को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, चर - जाना, खाना, आचरण करना)

सञ्चरा = सञ्चरण करने वाला, सम्यक् प्रगतिशील (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। चर - जाना, खाना, आचरण करना)।

सञ्जग्मानासु = सञ्जग्मानों में, सम्यक् प्रगतिशीलों में (सम् - सम्यक्, भलीभाँति (उपसर्ग)। जग् = गति करना,

लेना, घर्षण करना)।

सञ्ज्ज्ञानम्-सञ्ज्ञानम्-संज्ञानम् = सम्यक् ज्ञान को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, ज्ञा - जानना)।

सञ्जानाथाम् = सम्यक् जानें, भलीभाँति जानते हैं (सम् - सम्यक्, ज्ञा - जानना)।

सञ्ज्ञानाय - संज्ञानाय = सम्यक् ज्ञान के लिए, संज्ञान के लिए (सम् - सम्यक्, ज्ञा - जानना)।

सञ्जितम् = सम्यक् जीतने वाले को (सम् - सम्यक्, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

सत् = सत्य, नित्य (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सतः = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सती = सत्य युक्त (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सतेन = सत्य द्वारा (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सतो = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सतोबृहती = सत्य बृहत्, महान् सत्य (सत् = सत्य होना, अस्तित्व होना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, बढ़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

सत्ता = सत्ता, सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्पतिम् = सत्य के पति, सत्य के पालक, रक्षक को (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

सत्पती = सत्य के पति, सत्य के पालक, रक्षक (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

सत्पते = सत्य के पति, सत्य के पालक, रक्षक (सत्

- होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

सत्य = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यः = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्य-धर्मा = सत्य धर्म वाले (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

सत्यधर्माणम् = सत्य धर्म को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

सत्यम् = सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्ययजम् = सत्य यज को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना। यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

सत्यराजन् = सत्यराजन्, सत्य का प्रकाश, सतत प्रकाशित (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

सत्यराधसम् = सत्य के आराधन को, सत्य की वृद्धि करने वाले को (सत् = सत्य होना, अस्तित्व होना, राध - सिद्ध होना, बढ़ना, निर्णय करना)।

सत्यराधो = सत्य का आराधन करने वाले, सत्य की वृद्धि करने वाले (सत् = सत्य होना, अस्तित्व होना, राध - सिद्ध होना, बढ़ना, निर्णय करना)।

सत्यशवसः = सत्य-शवस वाले, सद्गति वाले, सत्य-ज्ञान वाले (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)।

सत्यसवम् = सत्य को उत्पन्न करने वाला, सत्य ऐश्वर्यवाला (सत् = सदा रहना, चिर अस्तित्व होना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सत्यसवसः = सत्य सृष्टि तथा ऐश्वर्य वाले (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सत्य-सवाम् = सत्य को उत्पन्न करने वाले को, सत्य ऐश्वर्यवान् को (सत् = सदा रहना, चिर अस्तित्व होना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सत्यस्य = सत्य का (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्या = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्याः = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यानृते = सत्य और आनृत, सत्य और अनृत (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)।

सत्याम् = सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्याय = सत्य के लिए (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्ये = सत्य में (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्येन = सत्य द्वारा (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यो = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्र = विस्तार, सम्बन्ध (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना)।

सत्रम् = विस्तार, सम्बन्ध, सम्बन्धी को (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना)।

सत्रराट् = सत्रराट् (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, राज् = चमकना, प्रकाशित, शोभित होना)।

सत्रसदौ = सत्रसद (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना)।

सत्रस्य = सत्र का, विस्तार, सम्बन्ध, सम्बन्धी का (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना)।

सत्रा - सत्रा = विस्तार, सम्बन्ध, सम्बन्धी (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना)।

सत्राजित् = विस्तार, सम्बन्ध, सम्बन्धी जीतना (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

सत्राजितो = विस्तार, सम्बन्ध, सम्बन्धी जीतना (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

सत्रासाहम् = सत्र में समर्थ को, विस्तार, सम्बन्ध बनाने में समर्थ (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सत्राहा = विस्तार, सम्बन्ध को जानने वाला (सत्र - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना, हा - त्याग करना, चलना, जाना)।

सत्त्वनाम् = सत्त्वनाम्, सत्त्वों का (होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्त्वने = सत्त्वन, सत्त्व के लिए (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्त्वभिः = सत्त्वों द्वारा, सत्त्वों द्वारा (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्सि = जाते हो (सद् - बैठना, जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सद् = प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदः = स्थित, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदतन = बैठें, जायें (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदताम् = बैठें, जायें (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदन = सदन, स्थान (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदनम् = सदन को, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदना = सदन, स्थान (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदनानि = सदन, स्थान (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदनी = गमन करने वाली, सदन, स्थान वाली (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदने = सदन में, स्थान में (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदनेषु = सदनों में, स्थानों में (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदन्तु = बैठें, जायें (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदम् = बैठने वाले को, सदन, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदस्थम् = सदन, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदसः = सदन, स्थान (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदसि = सभा में, प्रगतिशील, गन्तव्य में (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदस्य = सभायोग्य, प्रगतिशील, गन्तव्य (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदस्या = सभायोग्य, प्रगतिशील, गन्तव्य (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदस्यैः = सदस्यों द्वारा, सभायोग्य, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य विद्वानों द्वारा (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदा = सदा, सर्व काल में।

सदान्वा = सदान्व (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

सदावृधः = सदस्यों द्वारा, सभायोग्य, प्रतिष्ठित, गतिशील,

गन्तव्य विद्वानों द्वारा वर्धित, बढ़ने वाले (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदावृधम् = सदा बढ़ने वाले को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना। वृध् - वृद्धि होना, बढ़ना)।

सदांसि = सदस्यगण, सभायें (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

स-दृक्षासः = सदृक्ष, समान देखना (स - सहित, साथ, दृक्ष्-दृश् -देखना)।

सदृङ् = सदृङ्, समान देखना (स - सहित, दृक्ष्-दृश् -देखना)।

सदेम = स्थित हों (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सदोभ्यः = प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य, स्थानों के लिए (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सद्म = आसन, उपवेशन, सदन, स्थान (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सद्य - सद्य = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य (सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का (सर्वनाम), सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सद्यः - सद्यः = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य (सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का (सर्वनाम), सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सद्यानि - सद्यानि = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, ताजा, अभी का, गम्य (सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य (सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का (सर्वनाम), सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सध = साथ (अव्यय)।

सधमात् = आनन्द के साथ, सानन्द (सध+मद्, सद्+

मद्, सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, मद्- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

सधमादम् = साथ आनन्द को (सध = साथ (अव्यय), मद्- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

सधमादे = साथ आनन्द करते हैं (सध = साथ (अव्यय), मद्- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

सधमादेषु = सधमादों में (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, मद्- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

सधस्तुतिम् = सध-स्तुति को, साथ स्तुति करने वाले को (सध = साथ (अव्यय), स्तुज् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

सधस्थ = सहस्थ, सहस्थित, साथ स्थित (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्थम् = सहस्थ, सहस्थित, साथ स्थित को (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्था = सहस्थ, सहस्थित, साथ स्थित (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्थात् = सहस्थ, सहस्थित, साथ स्थित से (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्थानि = सहस्थान, सहगामी, साथ-स्थित स्थान (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्थे = सहस्थान, सहगामी, साथ में (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्थेषु = सहस्थानों, सहगामियों में, साथ में (सध = साथ, सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधिषि = सहस्थान, सहगामी, साथ में (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सध्र्यक् - सध्र्यक् = सहस्थान, सहगामी, साथ (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सध्रीचीः - सध्रीचीः = सध्रीची, सहस्थान, सहगामी, साथ (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सन् = ही।

सन् = होते हुए (असन्, अस - होना, रहना, जाना,

लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

सन = सेवा, दान, पूजा करो (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना)।

सनवथ = सेवा करो (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना)।

सनद्वाजः = सेवा का बल, दान का बल (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना। वाज् - बल होना)।

सनश्रुतम् = सनश्रुत को, सेव्य वाणी को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)

सना = सदा (अव्यय)।

सनात् = सेवा से (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना)।

सनातन = सदा, प्राचीन (सना+तन्, अव्यय)।

सनिः = सेवा, दान, सत्कार करने वाले (सन् - सेवा करना, दान करना, सत्कार करना)।

सनि = सेवा, दान, सत्कार (सन् - सेवा करना, दान करना, सत्कार करना)।

सनिता = सेवित (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सनितुः = सेवक का, दानी का (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सनिम् = दानी को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सनिष्यदत् = सेवा करने, स्तुति करने की इच्छा करते हुए (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, स - सहित, निष - प्राप्त करना, ले जाना)।

सनिष्यवः = सेवा करने वाले, स्तुति करने वाले (स - सहित, सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, निष - प्राप्त करना, ले जाना)।

सनुतः = सेवक (सन - देना, दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सनेम = सेवा, दान, पूजा करें (सन - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सनेमि = सेवा करते हैं, दान करते हैं, पूजा करते हैं (सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सनेयम् = सनेय को, पूज्य को, सेव्य को, दानयोग्य को (सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सन्त = सन्त (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सन्तः = सन्त (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सन्तनिः = सेवा, दान, सत्कार, विस्तार (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना। सम् - सम्यक्। तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

सन्तनिम् = सेवा, दान, सत्कार, विस्तार को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना। सम् - सम्यक्। तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

सन्तम् = सन्त को, सेवाभावी को, दानी को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सन्तरणो = सम्यक् पार होने वाला, पार कराने वाला (सम् - सम्यक्, भलीभाँति। तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, पार जाना)

सन्तरन्तः = सम्यक् पार होते हुए (सम् + तरन्तः, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, तृ = तैरना, पार होना)।

सन्तराम् = सम्यक् पार होने वाले, पार कराने वाले को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, पार जाना)।

सन्तायमाने = सम्यक् विस्तार, संरक्षण करते हुए (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, ताय - फैलाना, संरक्षण करना)।

सन्ति - सन्ति = हैं (अस् - होना)।

सन्तु = हों (अस् - होना)।

सन्दानम् = सम्यक् रूप से दान को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति। दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

सन्दाय = सम्यक् रूप से दान के लिए (सम् - सम्यक्,

भलीभाँति। दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

सन्दिताय = सम्यक् दित के लिए (दी = हास (हरास) होना, झरना)।

सन्दृशि = सम्यक् दृष्टि में (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दृश् - देखना)।

सन्धये = सन्धि के लिए (सम्-धि, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, धि - धारण करना)।

संधिना = सन्धि द्वारा (सम्-धि, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, धि - धारण करना)।

सन्धिभ्यः - सन्धिभ्यः = सन्धियों के लिए (सम्-धि, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, धि - धारण करना)।

सन्ध्या = दान, सेवा (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

सन्ध्याम् = दान, सेवा को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

सन्सर्पाय - संसर्पाय = संसर्प के लिए, सम्यक् सर्प के लिए (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सपत्नक्षित - सपत्नक्षित = ऐश्वर्यशाली निवास (पत् = गिरना, शक्तिमान होना, ऐश्वर्य होना, क्षि = निवास करना, जाना, जानना, पाना)।

सपत्नदम्भनम् = सपत्न का दम्भन करने वाला (पत् = ऐश्वर्य होना, निम्नगति करना, गिरना, दम्भ = निन्दा करना, आज्ञा करना, उड़ाना)

सपत्नसाही = सपत्न को सहन करने वाला (सह - सहना, सहन करना, शक्तिमान करना)।

सपत्नहा = सपत्नघाती (सप् = पूर्ण ज्ञान होना, पत् = ऐश्वर्य होना, निम्नगति करना, गिरना, हन - मार डालना, प्राप्त करना)।

सपत्ना = ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

सपत्नाः = ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

सपत्नान् = सपत्नों को, ऐश्वर्यवान् को (स - सहित,

साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

सपत्नो = ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

सपत्ता = संयुक्त करते हुए, पूर्ण करते हुए, मिलाते हुए (सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सपत्ति = संयुक्त करते हैं, पूर्ण करते हैं (सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सपर्यत - सपर्यत = सेवा करो (सपर - पूजा करना, सेवा करना)।

सपर्यतः = पूजते हैं (सपर - पूजा करना, सेवा करना)।

सपर्यति = सेवा, पूजा करता है (सपर - पूजा करना, सेवा करना)।

सपर्यन् = सेवा करते हुए (सपर - पूजा करना, सेवा करना)

सपीतिः = पूर्ण ज्ञान (सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सपीतिम् = पूर्ण ज्ञान को (सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सपेम = पूर्णतः जान सकें, (सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्त = सात (संख्या)।

सप्त = पूर्ण, संलग्न (सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्तजानयः = जनसमूह, जानने वालों का समूह (सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्तदश = सत्रह (सप्त - सात, दश - दस, संख्या)।

सप्तदशः = सत्रह (सप्त = सात, संख्या, दश = दश,

दस, संख्या)।

सप्तदशे = सत्रहवें में (सप्त = सात, संख्या, दश = दश, दस, संख्या)।

सप्तदशेभ्यो = सप्तदश के लिए (सप्त - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना, दश = दश, संख्या)।

सप्तदशो = सत्रह (संख्या)।

सप्तदशात् = सत्रह से (सप्त = सात (संख्या, दश = दश, दस, संख्या)।

सप्तधा = सप्तधा, सात प्रकार से, सामूहिकता से (सप्त - सात, सप्त - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

सप्तभिः = सात द्वारा (संख्या)

सप्तभ्यः = सात के लिए (संख्या)

सप्तमी = सप्तमी, सातवाँ, पूर्ण, संलग्न (सप्त - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्तमे = सातवें।

सप्तविंशतिः = सत्ताइस (सप्त - सात, विंश - बीस, संख्या)।

सप्तसु = सात में (संख्या)

सप्तानाम् = सात का (संख्या)

सप्तिः = पूर्ण ज्ञान युक्त (सप्त = पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्तिम् = सात, पूर्ण, संलग्न को (सप्त - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्तेः = सप्ति का, सर्वज्ञानी का, समूह का (सप्त = पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्रथसम् = सप्रथ को, प्रसिद्ध को, सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (स - सहित, साथ। प्रथ = प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)।

सप्रथस्तमम् = सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (सप्त - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना, प्रथ = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

सप्रथस्तमः = सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (सप्त - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना, प्रथ = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

सप्रथा - सप्रथा = सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (सप्त - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सप्रथाः - सप्रथाः = सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (सप्त - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।

सबन्धुः = बन्धु सहित (स - सहित, बन्ध - बांधना)।

सबलो = सबल (स - सहित, साथ, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

सबाध = सबाधित, सबाध (स - सहित, साथ, बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

सबाधो = सबाधित, सबाध (स - सहित, साथ, बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)।

सभरसो = सभरस (स - सहित, साथ, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

सभरा = समान भरण-पोषण, धारण करने वाले (स - सहित, साथ, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

सभाचरम् = सभाचर को (सभा में विचरने वाले सभापति, सभासद् को)

सभापतिभ्यः = सभापति के लिए (स - सहित, साथ, भा - चमकना, प्रकाशित होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

सभाभ्यः = सभा के लिए (स - सहित, साथ, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

सभाम् = सभा को (स - सहित, साथ, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

सभायाम् = सभा में (स - सहित, साथ, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

सभास्थाणुम् = सभास्थाणु को, सभा-स्थान को (स - सहित, भा - प्रकाश होना, स्था - स्थित होना)।

सभेयम् = सभा के योग्य, प्रकाशमान को (स - सहित, साथ, भा - प्रकाश करना)।

सभेयो = सभा के योग्य, प्रकाशवान् (स - सहित, साथ, भा - प्रकाश करना)।

सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।

समकृण्वन् = सम्यक् किया (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, कृ - करना)।

समवक्त = सम्यक् गति, विद्वान् (सम् = सम्यक् रूप से, भलीभाँति (उपसर्ग), अक् - जाना, जानना पाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)।

समख्ये = सम्यक् कहता हूँ (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, अख् = कहना)।

समज्जते = सम्यक् जाता है, स्वच्छ करता है, सम्यक् प्रकाश करता है (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, अज्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)।

समज्जन् = सम्यक् प्रकाशित होते हुए, प्रकाशित करते हुए (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, अज्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित करना, प्रकाशित होना)।

समज्जाथे = सम्यक् प्रकाशित करता है (सम् अज्जाथे, सम् - सम्यक् रूप से, अज्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)।

समतसि = सम्यक् सतत गति करतें हो (सम् = सम्यक् रूप से, भलीभाँति। सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना। अत् - निरन्तर चलना, सतत गमन करना)।

समत्सु = सम्यक् सतत गतिशीलता में, समानताओं में (सम् = सम्यक् रूप से, भलीभाँति (उपसर्ग), सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना, अत् - निरन्तर चलना, सतत गमन करना)।

समदाम् = मदसहित को, सानन्द को, आनन्दित को, सम्यक् खाने वाले को, समान रूप से देने वाले को (स = सहित, साथ। सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग),

अद् - खाना। सम = समान होना, सम विभाग करना, विकल न होना, परिणाम होना। दा - देना, दान करना। मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

समदो = सानन्द, आनन्द के साथ (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। अद् - खाना। सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना। दा - देना। मद - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

समनसा = समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समनसो = समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समनसौ = समान मन वाले युगल (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समना = समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समने = समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समन्त = समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समन्त-शितिरन्ध्रः = समन्त-शितिरन्ध्र (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना। शित् = धवल होना। रन्ध्र = पूरा करना, समाप्त करना, अपकार करना, मार डालना, दुःख देना, पकना, शुद्ध होना, निर्दोष होना, भूल न करना)।

समन्यवः = साथ मनन करने वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समन्यवो = साथ मनन करने वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना,

मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समन्या = साथ मनन करने वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समपृक्त = भलीभाँति मिला हुआ (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, पृक् - मिलना)।

समया = निकट, साथ (अव्यय)।

समया = प्रगतिशील, विद्वान्, समान द्वारा (सम् - सम्यक् रूप से, भलीभाँति, स - सहित, साथ, अय् = जाना, जानना, पाना, मय् - जाना, जानना, पाना, सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना। सम - विकल न होना, एक समान रहना)।

समराणः = सम्यक् जाने वाले, साथ चलने वाले, समान शब्दकर्ता, समान योद्धा (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना। सम - विकल न होना, एक समान रहना। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, ऋ-अर् - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रण् - शब्द करना, चलना, युद्ध करना)।

समरे = समर में, सम्यक् प्रगति, शब्द, वाणी, हिंसा में (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना। सम - विकल न होना, एक समान रहना। सम् - सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ऋ-अर् - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

समर्धयन्तु = सम्यक् आधा करें, सम्यक् विभाग करें (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, अर्ध - आधा होना, आधा करना, दो भाग करना, अर्द - मारना, बध करना)।

समर्यराज्ये = समतापूर्ण-राज्य में, सम-राज्य में (सम = न घबराना, एक समान रहना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

समवर्तत = सम्यक् रूप से वर्तमान हुआ (सम् अवर्तत, सम् - सम्यक् रूप से। वृत् - वर्तना, वर्तमान होना, होना)।

समवर्तयत् = सम्यक् रूप से वर्तमान हुआ (सम - सब, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना)।

समस्मात् = सबसे, सभी से (सम् - सम्यक् रूप से,

भली भाँति, सम् = न घबराना, परिणाम होना)।

समस्य = सब का (सर्वनाम)।

समस्य = सब का, समान का (सम - सब (सर्वनाम), सम - न घबराना, एक समान रहना)।

समस्वरन् = सम्यक् स्वर किया, सम्यक् स्वर करते हुए (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, स्वर-स्वर = शब्द करना, गम् - जाना)।

समाः = सम विभाग, सम्वत्सर, शरद्, वर्ष, (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

समानः = समान (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति। सम - सब (सर्वनाम)। सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

समानबन्धू = समान-बन्धन, सम्यक्-बन्धन वाले, सम्बन्धी (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना, बध्-बन्धू = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

समानम् = समान (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

समानवर्चसा = समान प्रकाश वाले (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना, वर्च - प्रकाश होना)।

समानाः = समान (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

समानेन = समान द्वारा (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

समानो = समान (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)।

समापः = संव्याप्त, व्यापक (सम् - सम्यक् रूप से,

भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, आप् = व्यापना, पाना)।

समाभ्यः = सम, विभाग के लिए (सम - सब (सर्वनाम)। सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना)।

समाम् = समत्व (सम - सब (सर्वनाम)। सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना)।

समाववर्ति = सम्यक् आवर्तन (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना)।

समहसः = सम्यक् व्याप्त (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अह-अहनु - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, व्याप्त होना, विस्तार करना, अर्पण करना, समर्पण करना, देना, हस्-हंस् = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

समाहृता = समाहित, सम्यक् ग्रहण किया गया (सम - सब, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

समित् = भलीभाँति ही, सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समितौ = भलीभाँति, सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिद्धः - समिद्धः = सम्यक् प्रकाशवान् (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिद्धम् = सम्यक् प्रकाशवान् को (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिद्धस्य = सम्यक् प्रकाशवान् का (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिद्धाः - समिद्धाः = सम्यक् प्रकाशित (सम् - सम्यक्, इन्ध - प्रकाश करना, प्रकाशित होना)।

समिद्धे - समिद्धे = सम्यक् प्रकाशित में (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिद्भिः - समिद्भिः = सम्यक् प्रकाश द्वारा (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधः = सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधम् = सम्यक् प्रकाशित को (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधा = सम्यक् प्रकाशवान् (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधान = सम्यक् प्रकाश, प्रकाशित होता हुआ (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधानः = सम्यक् प्रकाशित होता हुआ (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधानम् = सम्यक् प्रकाशित होते हुए को (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधानस्य = सम्यक् प्रकाशमान का (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधाने = सम्यक् प्रकाशवान् (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधा = सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिधीमहि = सम्यक् प्रकाशित होते हैं (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिध्यते = सम्यक् प्रकाशित करते हैं (सम् = सम्यक्,

भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

समिन्धते = सम्यक् प्रकाशित करते हैं (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

संमिश्रलो = सम्यक् व्यापक (सम् = सम्यक्, भलीभांति, मिश्र - मिश्रित करना, एकत्र करना)।

समिषा = सम्यक् प्रगति, विद्या द्वारा (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इष् = जाना, जानना, पाना, इच्छा करना)।

समिष्ट = सम्यक् प्रगति, विद्या द्वारा (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इष् = जाना, जानना, पाना, इच्छा करना)।

समीके = सम्यक् इच्छा, प्रगति, व्यापक के लिए (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ई - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)।

समीकषन्ताम् - समीक्षन्ताम् = देखें (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ईक्ष - देखना)

समीक्षामहे - समीक्षामहे = देखते हैं (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ईक्ष - देखना)।

समीक्षे - समीक्षे = देखते हैं (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ईक्ष - देखना)।

समीची = सम्यक् (सर्वनाम)।

समीची = सम्यक् (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम् - न घबराना, एक समान रहना)।

समीचीन = सम्यक् (सर्वनाम)।

समीचीनाः = सम्यक् (सम्यक् (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, इज् - पूजना, जाना, जानना)।

समीचीनासः = सम्यक् (सम्यक् (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इज् - पूजना, जाना, जानना)।

समीचीनास = सम्यक् (सम्यक् (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, इज् - पूजना, जाना, जानना)।

समीचीने = पूजक, विद्वान् (सम्यक् (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, इज् - पूजना, जाना, जानना)।

समीयसे = जानते हो, जाते हो, प्राप्त करते हो (सम्

= सम्यक्, भलीभांति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)।

समीहषे - समीहषे = सम्यक् प्रयास करते हो (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ईह - प्रयत्न करना)।

समृतौ = सम्यक्-ऋत (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।

समुद्रः - समुद्रः = समुद्र (सम् = सम्यक्, भलीभांति, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रम् = समुद्र को (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्र्यः = समुद्रीय (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रवाससम् = समुद्र में रहने वाला (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना। वस् = रहना, निवास करना)।

समुद्रव्यचसम् = समुद्र की व्यापकतायुक्त को (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना। व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

समुद्रस्य = समुद्र का (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रात् = समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्राय = समुद्र के लिए (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रियम् = समुद्र के लिए (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रियाः = समुद्रीय (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रे = समुद्र में (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समुद्रो - समुद्रो = समुद्र (सम् = सम्यक्, भलीभांति)। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)।

समूहसि = सम्यक् ऊहन करते हो, सम्यक् तर्क करते हो (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ऊह = परिकल्पना करना,

तर्क करना)।

समेत = भलीभाँति आओ, साथ आओ (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, आ - समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)।
इ - जाना, जानना, पाना)।

समैरयत् = सम्यक् रूप से प्रेरित करता है (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, ईर - जाना, कम्पन करना, प्रेरणा देना, फेंकना)।

सम्पत् = सम्यक् गति (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, पद् - चलना)।

सम्पदे = सम्यक् गति में (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, पद् - चलना)।

सम्पृक्ताः = सम्यक् मिलाने वाले, भलीभाँति मिलने वाले (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, पृक् - मिलना)।

सम्प्रयात = सम्प्रयात, सम्यक् गति (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

सम्प्रियौ = सम्यक् प्रिय (सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग) प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)।

सम्बभूव = सम्यक् हो गया (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। भू = होना, प्राप्त होना)।

सम्भरन्ति = सम्यक् भरते हैं, सम्यक् भरण करते हैं (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, भृ = भरण करना)।

सम्भवात् = सम्यक् रूप से होने से (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भृतः = सम्यक् भरण-पोषण किये हुए (सम् - सम्यक्, भृ - भरण-पोषण करना)।

सम्भृतम् = सम्यक् भरण किये हुए को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, भृ - भरण)।

सम्भृतो = सम्भृत, सम्यक् भरण किया हुआ (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, भृ - धारण करना, भरण-पोषण करना)।

सम्भूः = सम्यक् रूप से उत्पन्न, सम्यक् रूप से हुआ (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भूतिम् = सम्भूति को, सम्यक् रूप से उत्पन्न,

सम्यक् रूप से हुए को (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भूत्या = सम्भूति द्वारा, सम्यक् रूप से उत्पन्न द्वारा (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भूत्याम् = सम्भूति में, सम्यक् रूप से उत्पन्न में (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भ्रियमाणः - सम्भ्रियमाणा = सम्भ्रियमाण, सम्यक् भरण करने वाले, धारण करने वाले (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, भृ = भरण करना, भ्री- डरना, धारण करना, भरण करना, आश्रय देना, पालन करना, रक्षा करना)।

सम्भ्रियासम् = सम्यक् भरण करने वाले, धारण करने वाले को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, भृ = भरण करना, भ्री- डरना, धारण करना, भरण करना, आश्रय देना, पालन करना, रक्षा करना)।

सम्मनसः = समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

सम्माज्जि = सम्यक् वाणी बोलता हूँ, सम्यक् शुद्ध करता हूँ (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, मार्ज् = शब्द करना, मृज् = शुद्ध करना)।

सम्मितासो = सम्मित, सम्यक् मानित, सम्यक्, प्रीति करने वाले, (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आज्ञना, नरम होना, मृदुल होना)।

सम्मिश्रः = सम्यक् वाणी (सम् = सम्यक् रूप से, भलीभाँति (उपसर्ग), मिश - शब्द करना, क्रोध करना)।

सम्यक् = भलीभाँति (अव्यय)।

सम्यङ् = समीचीन, उपयुक्त (सर्वनाम्)।

सम्यञ्च = समीचीन, उपयुक्त (सर्वनाम्)।

सम्यञ्चम् = समीचीन, उपयुक्त (अव्यय)।

सम्यञ्चम् = सम्मानित को, विशेष को (यञ्च्-अञ्च = विशेषित करना, सम्मानित करना, हटाना, पृथक् करना)।

सम्यञ्चौ = समीचीन, उपयुक्त (सर्वनाम्)।

सम्यञ्चौ = सम्मानित युगल, विशेष युगल (यञ्च्-अञ्च = विशेषित करना, सम्मानित करना, हटाना, पृथक्

करना)।

सम्राजन्तम् = सम्यक् प्रकाशमान को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, राज - चमकना, शोभित होना)।

सम्राजम् - सम्राजम् = सम्यक् प्रकाशमान को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, राज - चमकना, शोभित होना)।

सम्राजा = सम्यक् प्रकाशमान (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, राज - चमकना, शोभित होना)।

सम्राट् - सम्राट् = सम्राट्, सम्यक् प्रकाशमान, सम्यक् बोलने वाला, सम्भाषण करने वाला (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, रट् = बोलना, सम्भाषण करना, राज् = शोभित होना, प्रकाशित होना, चमकना)।

सम्बतम् = सम्बत को (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना)

सम्बतो = संवतो (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वृक् - लेना, मान्य करना, स्वीकार करना, वद् - वच् - बोलना)।

सम्बत्सरः = सम्बत्सर (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)।

सम्बत्सरम् = सम्बत्सर को (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)।

सम्बत्सराय = सम्बत्सर के लिए (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)।

सम्बत्सरीणम् = सम्बत्सरीण को (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)।

सम्बत्सरे = सम्बत्सर में (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)।

सम्बत्सरो = सम्बत्सर (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)।

सम्बरणेषु = संवरणीयों में, सम्यक् वरीयों में (सम् -

सम्यक्, भलीभाँति, एक समान रहना, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

संवसानो = सम्यक् वास करता हुआ, सम्यक् धारण करता हुआ, संवसनीय (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

सम्विवथा - सम्विवथा = अलग हो, (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विच्, विज् = अलग होना, टूटना)।

संविदानः = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद् - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

सम्विदाना = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद् - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

सम्विदाने = सम्यक् जानने में (सम् - सम्यक्, विद् = समझना, जानना)।

सम्विदानो = सम्यक् विद्वान्, सम्यक् दानी (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। विद् - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)।

सम्वेशनः = सम्यक् विस्तार (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, विश् - घुसना भीतर जाना, चारो ओर फैलाना)।

सम्वृक् = सम्यक् ग्रहण (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वृक् - लेना, मान्य करना, स्वीकार करना)।

सम्वृक्त-धृष्णुम् = हिंसकों के सम्यक् विजेता (वृक् - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच् - हिंसा करना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)।

सम्वेशपतये = सम्वेश के पति के लिए, सम्यक् विस्तार

के स्वामी के लिए (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, विश् = फैलना, पत् - श्रीमान् होना)।

संयत् = संयत्, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् आदेश, सम्यक् एकत्रीकरण (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यत् = दुःख देना, मारना, ठोकना, चपेटना, आज्ञा करना, एकत्र करना, मना करना, रोकना, यत् = यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

संयतः = संयत, संयमित, सम्यक् यत्नी, सम्यक् यत्न करने वाला (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, यम - स्वाधीन रखना, काबू में रखना, पोषण करना, खाने को देना, नाश करना)।

संयतम् = संयत्न को, संयत को, सम्यक् यत्न को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना)।

संयतम् = संयत, प्रयत्न, सम्यक् यत्न को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यत् - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना, यत्न - उद्धार करना)।

संयाजान् = संयाजों को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)।

संयात् = भली-भाँति प्राप्त करो (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

सयावभिः = साथ चलने वाले (स - सहित, साथ, या - जाना)।

सयावरीः = सहगामी (स - सहित, साथ, या - जाना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना, यु - अपमान करना, दोष लगाना, निन्दा करना, यु - बांधना, बन्धन करना, गूँथना, यव - समाप्त करना, उपसंहार करना)।

संयासाय = संयास के लिए (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यस - यत्न करना)

सयुग्भिः = समान योगों द्वारा (स - सहित, साथ, यू -

मिलाना, यु - मिलाना, अलग करना)।

सयुग्वभिः = समान योगों द्वारा (स - सहित, साथ, यू - मिलाना, यु - मिलाना, अलग करना)।

सयुजा = सहचरों, साथियों सहित, समूह के साथ (स - सहित, साथ, यू - मिलाना, यु - मिलाना, अलग करना)

सयुजा = संयुक्त कीजिए (स - सहित, साथ, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

सयूथ्यः = सहचरों, साथियों सहित, समूह के साथ (स - सहित, साथ, यू - मिलाना, यु - मिलाना, अलग करना)।

सरः = सर, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरत् = सर, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह होता है (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरथम् = सरथ को, ले जाने वाले को, रमने वाले को (स - सहित, साथ, रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरथिना = सरथि द्वारा, सरथि के साथ (स - सहित, साथ, रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरम् = सर को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरसि = सर में, सरोवर में (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरस्याय = सरस्य के लिए (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वति = सरस्वती (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वती = सरस्वती (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वतीम् = सरस्वती को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वते = सरस्वती (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वत्या = सरस्वती द्वारा (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वत्यै = सरस्वती के लिए (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरस्वन्तम् = सरस्वन्त को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरा = सर, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरातयः = समान दान वाले, प्रवाहमान (रा - दान करना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित)।

सरांसि = अनेक सर (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरित् = प्रवाहमान (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित)।

सरित = प्रवाहमान (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित)।

सरितः = प्रवाहमान, नदी (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित)।

सरिरम् = प्रवाहमान को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित)।

सरिरस्थ = प्रवाहमान का (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरिराय = प्रवाहमान के लिए (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरिरे = प्रवाहमान में (सृ - जाना, सरकना, जानना,

पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरिष्यन्तः = प्रवाहमान, ले जाने वाले (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरिष्यन्तम् - सरिष्यन्तम् = ले जाने वाले को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरीसृपेभ्यः = सरीसृपों के लिए (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सरूप = सरूप, रूपसहित, रचनाशील (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

सरूपा = सरूप (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

सरो = सर (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सरोभ्यः = सरों के लिए (सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना)।

सरोभ्यो = सरों के लिए (सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना)।

सर्गाः = सृष्टि, सृजन (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सर्गासः = अनेक सृष्टि, सृजन (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सर्जनाय = सर्जन के लिए (सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना)।

सर्प - सर्प = सर्प (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पतः = चलते हैं (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पति - सर्पति = सरकता है (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्प-देवजनेभ्यो = सर्प देवजनों के लिए (सृप् - चलना, सरकना, दिव् - तेजस्वी होना, जन् - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना)।

सर्पाः - सर्पाः = सर्प (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पाणाम् - सर्पाणाम् = सर्पों का (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पान् - सर्पान् = सर्पों को (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पिः = सर्प, प्रवाह, प्रगति वाले (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पिरासुतिम् = प्रगतिशील ऐश्वर्यवान् को, प्रवाही-आसवन को (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सर्पिषो = प्रगतिशील विद्वान् का (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्पेभ्यो = सर्पों के लिए (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)।

सर्वः - सर्वः = सब, सभी (सर्वनाम)।

सर्वगणम् = सर्वगण को, सभी गणों को (सर्व = सब (सर्वनाम), गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)

सर्वतः = सब ओर से (अव्यय)।

सर्वतोमुखः = सब ओर मुख वाला (सर्वतो - सब ओर (अव्यय), मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)।

सर्वदुघाम् = सर्वदोहन करने वाले (सर्व = सब (सर्वनाम) दुह् - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

सर्वधा = सबका धारण करने वाला, सबका पोषण करने वाला (सर्व = सब, सबने (सर्वनाम), सर्व - जाना, सर्व - जाना, दुःख देना, पीड़ा करना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

सर्वम् - सर्वम् = सब (सर्वनाम)।

सर्वराट् - सर्वराट् = सर्वराट् (सर्व - सभी, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

सर्वस्य - सर्वस्य = सबका।

सर्ववीरः = सर्ववीर (सर्व = सब (सर्वनाम), वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सर्ववीरम् = सर्ववीर को (सर्व = सब (सर्वनाम), वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सर्व-वेदसम् = सर्व-वेद को, सब जानने वाले को (सर्व - सभी, विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

सर्वस्मात् = सबसे (सर्वनाम)।

सर्वहुत = सब दान करने वाले, आह्वान करने वाले (सर्व - सब, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना)।

सर्वहुतः - सर्वहुतः = सब को दान, आह्वान करने वाले (सर्व - सब, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना)।

सर्वाः = सभी (सर्वनाम)।

सर्वाणि - सर्वाणि = सब (सर्वनाम)।

सर्वान् = सभी को (सर्वनाम)।

सर्वाभी = सभी द्वारा (सर्वनाम)।

सर्वायुः - सर्वायुः = सर्वायु, सम्पूर्ण आयु (सर्व - सभी, सर्व - जाना, दुःख देना, पीड़ा करना, अय - जाना, जानना, पाना)।

सर्वे = सब (सर्वनाम)।

सर्वेण = सब द्वारा (सर्वनाम)।

सर्वेभ्यः = सबके लिए (सर्वनाम)।

संवन्नम् = सम्यक् सेवक को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

सलिलस्य = सलिल का (सल् - जाना, सरकना, कांपना, थरथराना)।

सलिलात् = सलिल से (सल् - जाना, सरकना, कांपना, थरथराना)।

सवनम् = सवन को, उत्पन्न करने वाले को (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवना = उत्पन्न करने से (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवने = उत्पन्न करने से (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवर्दुघाम् = सब के लिए दोहन करने वाले (सु = ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना। दुह - दोहना, रिक्त करना, लेना, हिंसा करना)।

सवातरौ = सवात युगल (सु = ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना। स = सहित, साथ (उपसर्ग), वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)।

सवात्यान् = सवात्यों को (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवाय = उत्पन्न के लिए (स = सहित, साथ (उपसर्ग), सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सवितः = ऐश्वर्य युक्त, उत्पन्न करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सविता = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवितारम् = सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवितुः = सविता का, उत्पादक, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवित्त्रा - सवित्रा = सृजनकर्ता ऐश्वर्यवान् द्वारा (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवित्रे = सवित्र में, सवित्र के लिए, सृजनकर्ता ऐश्वर्यवान् के लिए (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना,

यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

संविदाना = विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

सर्विशो = बीस के साथ (विश = बीस)।

सवीमनि = उत्पन्न, ऐश्वर्य में, सृष्टि में (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवीर्यो = वीर्य सहित, वीर्यवान् (स = सहित, साथ, उपसर्ग, वीर - वीर होना, वीरता दिखाना)।

सवृत = वरण, आच्छादन, नियोजन के साथ (स = सहित, साथ (उपसर्ग), वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

सवृते = सवृत में, वरण, आच्छादन, नियोजन में (स = सहित, साथ (उपसर्ग), वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

सवृदिभः = सह-वर्तनियों द्वारा, सवृतों द्वारा (स = सहित, साथ (उपसर्ग), वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

सवृधे = सवृध के लिए (स = सहित, साथ। वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

सवे = उत्पन्न करते हैं, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाले में (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सवेन = ऐश्वर्यवान् द्वारा, उत्पन्न करने वाले द्वारा (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सव्रताः = व्रत वाले (स = वह, उसने। वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना,

आच्छादित करना, वरण करना)।

सव्यात् = बाएं से (सर्वनाम)।

सव्याम् = बाएं को (सर्वनाम)।

सव्वम् = सव्व को (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भोजना, उड़ाना)।

संशाय = संश के लिए, सम्यक् शयन के लिए (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, शी - सोना, शयन करना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना)।

संशिशानो = तीक्ष्ण करने वाले (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)।

सश्चत = जाता है (सश्च् = पाना, जानना, जाना)।

सश्चसि = जाता है (सश्च् = पाना, जानना, जाना)।

सश्चिम - सश्चिम = सश्चिम, ज्ञानी, गतिशील (सश्च् = पाना, जानना, जाना)।

सश्चिरे = गये, प्राप्त किया (सश्च् = पाना, जानना, जाना)।

संसदः = सम्यक् बैठने वाले, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

संसदि = संसद् में (सम्-संस् = सम्यक्, भलीभाँति, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

ससवान् = ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता, शुद्ध किया (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सस् = शुद्ध करना)।

ससस्ति = शुद्ध करता है (सस् = शुद्ध करना)।

ससाहे = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट हुआ (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

ससृग्महे = सृजन करते हैं, सरकते हैं, प्राप्त करते हैं (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

ससृज्महे = सृजन करते हैं, सरकते हैं, प्राप्त करते हैं (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

संसृज्य = सम्यक् सृजन कर (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, सृज् = सृजन करना, उत्पन्न करना)।

संसृजिरे = सृजित किया, सर्जना की (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

संसृवांसः = गतिशील (सृ = गति करना, जानना)।

संसृवासम् = गतिशील (सृ = गति करना, जानना)।

संसृष्टान् = सम्यक् सृष्टिकर्ताओं को (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। सृज् - उत्पन्न करना, रचना करना, त्याग करना)।

संसृष्टाम् = सृजन करो (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

ससूनुः = सृष्टि, सन्तान, उत्पन्न, ऐश्वर्य (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

संस्कृतः = संस्कारित (सम्-संस् = सम्यक्, भलीभाँति, कृ = करना)।

संस्कृतम् = संस्कारित को (सम्-संस् = सम्यक्, भलीभाँति, कृ = करना)।

संस्कृतिः = सम्यक् कृति, संस्कार (सम्-संस् = सम्यक्, भलीभाँति, कृ = करना)।

संस्थाम् = संस्था को, सम्यक् स्थित को, (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), स्था - स्थित होना, ठहरना)।

सस्नि = शुद्ध (सस् = शुद्ध करना)।

सस्निः = शुद्ध (सस् = शुद्ध करना)।

सस्नितमम् = अतिशय शुद्ध (सस् = शुद्ध करना)।

सस्नी = शुद्ध (सस् = शुद्ध करना)।

सस्रोतसः - सस्त्रोतसः = स्रोतों सहित, एक समान प्रवाह वाले (स - साथ, समान, सहित, स्त्रु = झरना, सींचना, टपकना, बहना, जाना, जानना, पाना)

सह = साथ, सहित (सर्वनाम)।

सहः = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

लिए, तृप्त के लिए, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहस्र = हजार (संख्या)।

सहस्रजित् = सहस्रजित, सहस्रों को जीतने वाला (सहस्र = हजार, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

सहस्रणीभिः - सहस्रणीभिः = सहस्रियों द्वारा (सहस्र - हजार)।

सहस्रदा = सहस्र-दाता (सहस्र = हजार, संख्या, दा, दद् = देना)।

सहस्रधारः = सहस्र-धारण करने वाला, हजारों धाराओं वाला (सहस्र = हजार, (संख्या)। धाः - धारण करना, धारा होना, धार बाँधना)।

सहस्रधारम् - सहस्रधारम् = हजारों धाराओं वाला (सहस्र = हजार, (संख्या)। धाः - धारण करना, धारा होना, धार बाँधना)।

सहस्रधारेण = हजार धाराओं द्वारा (सहस्र = हजार, (संख्या)। धाः - धारण करना, धारा होना, धार बाँधना)।

सहस्रनीथः = सहस्रों को ले जाने वाला, हजारों को ले जाने वाला (सहस्र = हजार (संख्या)। नी - ले जाना)।

सहस्रपाजसः = बहुप्रकाशक, पालक, रक्षक (सहस्र = हजार, संख्या, पज्ज - प्रकाश करना। पा - रक्षा करना, पालन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सहस्रपात् - सहस्रपात् = हजारों पाद वाला (सहस्र = हजार, संख्या, पद् - चलना, पत् - चलना, ऐश्वर्य होना)।

सहस्रपोषम् = बहुपोषक को, हजारों का पोषण करने वाले को (सहस्र = हजार, पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना)।

सहस्रपोषिणम् = बहुपोषक को, हजारों का पोषण करने वाले को (सहस्र = हजार, पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना)।

सहस्र-प्रधनेषु = सहस्र-धनों में, बहुशब्दकर्ताओं में (सहस्र = हजार (संख्या), प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), धन् - शब्द करना, गति करना, जानना, पाना,

उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

सहस्र-भर्गसणम् = सहस्र पूर्णकताओं को, अनेक भरण-पोषण-दानी को (सहस्र = हजार, संख्या, भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना। सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सहस्रबाह्वे = सहस्रबाहु के लिए, बहुत बाहु वाले के लिए (सहस्र = हजार, संख्या, बाह्व - प्रयास करना, बह्व - बहना, गति करना, बाहर होना, हिंसा करना)।

सहस्रम् = सहस्र को, बहुतों को (सहस्र = हजार (संख्या))।

सहस्रमन्यो = सहस्रमन्य, बहुमानित (सहस्र = हजार, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

सहस्रमानवो = सहस्र-मानव, बहुविचारवान् (सहस्र = हजार, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

सहस्रभरः = सहस्रभरणकर्ता (सहस्र = हजार। भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

सहस्रयोजने = सहस्रयोजन के लिए (सहस्र = हजार (संख्या), युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, चित्त स्थिर रखना)।

सहस्ररेता = सहस्ररेतयुक्त, अत्यन्त प्रगतिशील, अत्यन्त विद्वान् (सहस्र = हजार, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, शब्द करना, सुनना, झरना-टपकना, लेना)।

सहस्रवर्चसम् = सहस्रधा प्रकाशवान् को, अत्यधिक दीप्त को, प्रकाशित को (सहस्र = हजार, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

सहस्रवल्शा = सहस्र आच्छादनों से (सहस्र = हजार, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

सहस्रवाजया = सहस्रवाज, हजार विद्या, गति (सहस्र = हजार। वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

सहस्रवीर्य = अत्यन्त वीर, सहस्रशः वीरता युक्त (सहस्र

= हजार, वीर - वीर होना, पराक्रम करना)।

सहस्रवीर्या = सहस्रधा वीर्यवान् (सहस्र = हजार, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सहस्रशीर्षा = सहस्रों शीर्षों वाला (सहस्र - हजार, शीर्ष - शीर्ष होना, उच्च होना)।

सहस्रसाम् = हजारों का (सहस्र = हजार, संख्या)।

सहस्रस्थूणे = हजार स्थानों में (सहस्र = हजार (संख्या), स्था - स्थित होना, ठहरना)।

सहस्रा = हजार (संख्या)।

सहस्राक्षः - सहस्राक्षः = सहस्रों नेत्र वाला (सहस्र = हजार, संख्या, अक्ष - देखना, खेलना)।

सहस्राणि = हजारों (संख्या)।

सहस्राप्साः = सहस्र-पालक (सहस्र = हजार, संख्या, अप - जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

सहस्रिणः = सहस्री (संख्या)

सहस्रिणम् = सहस्री को (संख्या)।

सहस्रिणीः = सहस्रिणी, सहस्रयुक्त (संख्या)।

सहस्रिणीभिः - सहस्रिणीभिः = सहस्रियों द्वारा, सहस्रयुक्तों द्वारा (सहस्र - हजार)।

सहस्रियम् = सहस्री को (सहस्र - हजार (संख्या)।

सहस्रेण = हजार द्वारा (संख्या)।

सहस्व = सहनशील, समर्थ बनो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहस्वते = सहनशील, समर्थ के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहस्वन्तः = सहनशील, समर्थ (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहस्वान् = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहाम् = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट को (सह = शक्तिमान् करना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहावान् = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

संहानाय = संहान के लिए, सम्यक् रूप से परित्याग के लिए (सम् - सम्यक्। हा = छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना)।

संहितः = संहित, सम्यक् हित करने वाले (सम् = सम्यक्, भलीभाँति। हि = जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

संहिता = संहिता, सम्यक् हित करने वाले (सम् = सम्यक्, भलीभाँति। हि = जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

संहितो = संहिता, सम्यक् हित करने वाले, सामूहिकता भावना युक्त (सम् = सम्यक्, भलीभाँति। हि = जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भोजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

सहीयसि = अत्यन्त सहनशील, समर्थ हो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सहो = सहनशीलता, सहनशक्ति (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सहोजा = सहनशीलता, सहनशक्ति से उत्पन्न (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

सहोजित् = सहनशीलता से विजय पाने वाला, सहनशक्ति पर विजय पाने वाला (सह - शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

सहोदाम् = सामर्थ्य देने वाले (सह - साथ, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना,

दा - देना)।

सहोभिः = सहनशीलता, सहनशक्ति द्वारा (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सहोवानम् = सहनशीलतायुक्त, सहनशक्तियुक्त (सह = शक्तिमान् करना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सह्याम = सहनकरते हैं, समर्थ होते हैं (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सा = वह (सर्वनाम)।

साकम् = साथ (अव्यय)।

सातये = सतत गतिशीलता के साथ (स - सहित, साथ, अत् = सतत् गति करना)।

साता = सेवाभावी (सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सातौ = सतत गतिशीलता के साथ, दानी, सेवाभावी में (स - सहित, साथ, अत् = सतत् गति करना, सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सादने = सादन में, स्थान में (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादन्यम् = स्थापित करने को (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादय = स्थापित करो (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादयतु = स्थापित करो (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादयात् = स्थापित करो (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादयताम् = स्थापित करो (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादयन्तु = स्थापित करो (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादयामि = स्थापित करता हूँ, बैठाता हूँ (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादने = स्थापन में (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

सादे = साद में (साद् = जाना, ले जाना, स्थापित करना, होना)।

साध = साधना करो, पूर्ण करो, सिद्ध करो (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधथः = सिद्ध करते हो, पूर्ण करते हो (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधनः = साधन (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधनम् = साधन को (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधनो = साधन (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधया = पूर्ण करो (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधवः = साधु गण, साधना करने वाले (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधवे = साधु के लिए (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधारणम् = साधारण को (स - सहित, आ - समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), धृ - धारण करना, रखना, गिर पड़ना, नष्ट होना, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साधिपतिकेभ्यः = साधिपतिकों के लिए, अधिपतियों के साथ वालों के लिए (स - सहित, साथ, अधि - अधिकृत, ऊपर, साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना, पत् - श्रीमान् होना, शक्तिमान् होना)।

साधुकर्मा = साधुकर्म युक्त (साध - पूर्ण करना, सिद्ध

करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना, कृ = करना)।

साधुया = साधु द्वारा (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना)।

साधोः = साधु का (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना)

साध्या = साध्यगण (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना)।

साध्याः = साध्यगण (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना)।

साध्यान् = साध्यों को (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

साध्येभ्यः = साध्यों के लिए (साध् - निर्णय करना, पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

सानवि = सेवाभावी, दानी (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानसि = सेवा करते हो (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानसिः = सेवाभावी, दानी, सेवनीय (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानसिम् = सेवाभावी, दानी, सेवनीय को (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानु = सानु, सेवाभावी, दानी, सेवनीय (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानुभ्यः = सानुओं के लिए, सेवाभावी, दानी, सेवनीयों के लिए (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानुभ्यो = सानुओं के लिए, सेवाभावी, दानी, सेवनीयों के लिए (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानोः = सानु का, सेवाभावी, दानी, सेवनीयों का (सन्

- सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सानो = दानी, सेवक (सन् - सेवा करना, योग्य होना, मिश्रण करना, अलग करना, दान करना, पूजा करना, सत्कार करना)।

सान्तपनेभ्यः = सम्यक् तप करने वालों के लिए (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)।

साम = साम (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

सामन् = साम (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

सामनी = साम (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

सामभिः = सामों द्वारा (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

सामयोः = सामों का (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

सामानि = सामसमूह (साम - सान्त्वना देना, शान्त करना, समाधान करना)।

सामिधेनीः = सम्यक् प्रकाशित, सम्यक् प्रगतिशील (सम्+इध्, सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

साम्ना = साम द्वारा (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

साम्राज्यम् = साम्राज्य को (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

साम्राज्येन = साम्राज्य द्वारा (सम् = सम्यक्, भलीभाँति, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

सायकम् = अन्त करने वाले को, बाँधने वाले को (सय, सो-स्य - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। सि - बांधना, गूँथना, फन्दे से पकड़ना)।

सायम् = सन्ध्या, सायंकाल (अव्यय)।

सारघम् = सारघ को (सार - कृश होना, लघुकाय होना, दुर्बल होना, सृ- जाना, सरकना, घस् = खाना)।

सारघस्य = सारघ का (सार - कृश होना, लघुकाय होना, दुर्बल होना, सृ- जाना, सरकना, घस् = खाना)।

सारघेण = सारघ द्वारा (सार - कृश होना, लघुकाय होना, दुर्बल होना, सृ- जाना, सरकना, घस् = खाना)।

सारस्वतः = सारस्वत, सरस्वती सम्बन्धी (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सारस्वतम् = सारस्वत को, सरस्वती सम्बन्धी को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सारस्वती = सरस्वती सम्बन्धी, सरस्वती से उत्पन्न (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सारस्वतौ = सारस्वत युगल (सार - कृश होना, लघुकाय होना, दुर्बल होना, सृ- जाना, सरकना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सारस्वत्यः = सरस्वती सम्बन्धी (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)।

सावित्रः = सृजनकर्ता ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सावित्राः = सावित्र, सृजन, ऐश्वर्य, सृजनकर्ता ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सावित्रौ = सावित्र युगल, सृजनकर्ता ऐश्वर्यवान् सम्बन्धी सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

साविषत् = साविषत, विषम के लिए सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सावीः = उत्पन्नकर्ता, सृष्टिकर्ता सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

साशनानशने = खाने वाले और न खाने वाले (स- अशन-अन्-अशन्, स - सहित, साथ, अश् - खाना, अन् - नहीं)।

सासहः = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने वाले (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सासहिः = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने वाले (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सासहिम् = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने वाले को (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सासहो = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सासह्याम = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट हों (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सासह्वान् - सासह्वान्, = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

साहस्रम् = सहस्र को, हजार को (सहस्र = हजार (संख्या)।

साहस्रस्य = सहस्र का, हजार का (सहस्र = हजार (संख्या)।

साहस्रीम् = साहस्री को, सहस्रयुक्त को, हजारयुक्त को (सहस्र = हजार (संख्या)।

साह्याम = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, प्रतिरोध करें (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

साह्वान् = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, प्रतिरोध युक्त

(सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

सिकताः = अस्पष्ट शब्द (सिक्-सिङ्क्-सिज-सिज्ज - अस्पष्ट शब्द करना)।

सिक्तः = अस्पष्ट शब्द (सिक्-सिङ्क्-सिज-सिज्ज - अस्पष्ट शब्द करना)।

सिच्यते = सिञ्चन करता है (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

सिञ्चत = सिञ्चन करो (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

सिञ्चध्वम् = सिञ्चन करो (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

सिञ्चन्ति = सिञ्चन करते हैं (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

सिञ्चस्व = सिञ्चन करो (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

सिञ्चामि = सिञ्चन करता हूँ (सिञ्च् - सिञ्चन करना)।

सिधम् = पूर्ण कर्ता को (सिध - पूरा करना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना, समाप्त होना, सिध - जाना, सिध - आज्ञा करना, धर्माधिकार की दीक्षा देना, उपाध्याय करना, मंगल कर्म करना)।

सिनीवालि = बन्धन का आच्छादन, विस्तार करने वाली (सि - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना, वल् - आच्छादन करना, चलना, विस्तार करना, प्रसार करना)।

सिनीवाली = बांधने वाली, बन्धन का आच्छादन, विस्तार करने वाली (सि - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना, वल् - आच्छादन करना, चलना, विस्तार करना, प्रसार करना)।

सिन्धवः = सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धवो = सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धु = सिन्धु (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धुः = सिन्धु (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य

करना, सि-सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धुभिः = सिन्धुओं द्वारा (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धुभ्यो = सिन्धुओं के लिए (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धुमातरम् = सिन्धुमाता को (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

सिन्धुमातरा = सिन्धुमाता (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

सिन्धुवाहसा = सिन्धु-वाहन द्वारा, सिन्धु का वहन करने वाले द्वारा (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना, वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

सिन्धून् = सिन्धुओं को (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धूनाम् = सिन्धुओं का (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिन्धोः = सिन्धु का (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिमरमै = सम्पूर्ण के लिए, सब के लिए (सर्वनाम)।

सिमाः = सम्पूर्ण (सर्वनाम)।

सिलिक = सिलने वाला, बाँधने वाला (सि - बांधना,

गूथना, फन्दे से पकड़ना, सिल - बीनना, एक एक दाना चुगना)।

सिषवित् = अभिसिञ्चित करता है (षच्-सच् = सींचना, सेवा करना, अच्छी तरह जानना, सम्बन्धी होना)।

सिषक्तु = अभिसिञ्चित करें (षच्-सच् = सींचना, सेवा करना, अच्छी तरह जानना, सम्बन्धी होना)।

सिषासति = शुद्ध होता है (सस् - शुद्ध करना)।

सिषासन् = शुद्ध करते हुए (सस् - शुद्ध करना)।

सिषासन्तः = शुद्ध करने वाले (सस् - शुद्ध करना)।

सिषाससि = शुद्ध करते हो (सस् - शुद्ध करना)।

सिष्णो = प्रोक्षण करने वाले, सिञ्चन करने वाले (सिष् - सिञ्च - छिड़कना, प्रोक्षण करना, छींटा देना, सींचना)।

सिसृतम् = प्रसार करो प्रसिसृत को (सृ - जाना, सरकना)।

सिंहः = सिंह (सिंह = हिंसा करना, गति करना)।

सिंहम् = सिंह को (सिंह = हिंसा करना, गति करना)।

सिंहस्य = सिंह का (सिंह = हिंसा करना, गति करना)।

सिंहाय = सिंह के लिए (सिंह = हिंसा करना, गति करना)।

सिंही = सिंहनी (सिंह = हिंसा करना, गति करना)।

सीचापूः = बन्धनों से रक्षा करने वाले (सि = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना। सिञ्च - सिञ्चन करना। चप = जाना, रक्षा करना, सहन करना। चप = शान्त करना, समझाना। चप = पीसना, कूटना, चूर्ण करना, ठगना)।

सीता = सीता (सि = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सीते = सीते (सि = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सीद = बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदत = सीद, बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदतम् = सीद, बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदति = सीदता है, बैठता है, संचरण करता है, प्रतिष्ठित होता है (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदतु = बैठो (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदन् = बैठते हुए, संचरण होते हुए, प्रतिष्ठित होते हुए (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदन्तम् = बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदन्तु = बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदन्तो = बैठते हुए, संचरण करते हुए, प्रतिष्ठित होते हुए (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदम् = सीद को, प्रतिष्ठित को (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदसि = संचरण करते हो, प्रतिष्ठित करते हो (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीदस्व = बैठो, संचरण करो, प्रतिष्ठित हो (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सीम् = बन्धन को (सि = बाँधना, मर्यादा होना, सीमा होना)।

सीमतः = सीमा से, बन्धन से (सि = बाँधना, मर्यादा होना, सीमा होना)।

सीरम् = सीर को, प्रगतिशील को, विद्वान् को (सृ = जाना, सरकना)।

सीरा = प्रगतिशील, विद्वान् (सृ = जाना, सरकना)।

सीराः = प्रगतिशील, विद्वान् (सृ = जाना, सरकना)।

सीषधाति = संसिद्ध करता है (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

सीषधाम = संसिद्ध को (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)।

सीषधेम = संसिद्ध करें (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)

सीसम् = सीस को (शी = सोना, शयन करना। ष = शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, सि = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सीसेन = सीस द्वारा (शी = सोना, शयन करना। ष = शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, सि = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सृकम् = सृक को, प्रगतिशील, विद्वान् को (सृ = जाना, सरकना)।

सृकायिभ्यो = सृकायी के लिए, प्रगतिशील, विद्वानों के लिए (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सृकाहस्ता = सृकाहस्तयुक्त, प्रगति-विद्या ग्रहण करने वाले (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

सृक्षाथाम् = संसर्ग करो, सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)

सृज = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजता = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजते = सृजन करते हैं (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजयः = सृजन करने वाले (सृज - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजा = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजानः = सृजन करने वाले, त्यागा हुआ, उत्पन्न हुआ

(सृज - त्याग करना, उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजानम् = सृजन करने वाले को, त्याग करने वाले को, उत्पन्न करने वाले को (सृज - त्याग करना, उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजामि = त्याग, रचना, उत्पन्न करता हूँ (सृज - त्याग करना, उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृजेथाम् = सृजन करो (सृज - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सृण्यः = प्रगति योग्य (सृ = जाना, सरकना)।

सृधः = प्रगतिशील, रूढ़ने वाला, मर्दन करने वाला (सृध् - रुन्धन करना, सम्पीडन करना, मर्दन करना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

सृधिः = प्रगतिशील, रूढ़ने वाला, मर्दन करने वाला (सृध् - रुन्धन करना, सम्पीडन करना, मर्दन करना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

सृप्रकरस्नम् = गतिशील हाथ (सृप - जाना, सरकना, कृ - करना)।

सृमरो = सृजन करने वाले (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)।

सृष्टो = सृजित (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।

सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग)।

सुकर्मणा = सुकर्म द्वारा (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), कृ - करना)।

सुकृत् = किये गये उत्तम कर्म (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)।

सुकृतम् = सुकृत को, किये गये उत्तम कर्म को (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)।

सुकृते = अच्छा करने वाले, सत्कर्म कर्ता के लिए (कृ - करना)।

सुकृतवः = अच्छा करने वाले (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), कृ - करना)।

सुकृतस्य = सुकृत का (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)।

सुकृता = किये गये (सु = सुन्दर, अच्छा, उपसर्ग, कृ

= करना)।

सुकृताम् = सुकृतों का (सु = अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)।

सुकृतुः = अच्छा करने वाला, सत्कर्म कर्ता (कृ - करना)।

सुकृतो = सुकृत, उत्तम कर्म वाले (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)।

सुकृत्यया = उत्तम कृत्यों द्वारा (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग) कृ = करना)।

सुकृत्रो = उत्तम क्षत्र, उत्तम सुरक्षा (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)।

सुकृषमा - सुक्षमा = उत्तम सक्षम, भलीभाँति धारण करने वाले दानी (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, क्ष्मा, क्षमै = धारण करना, सहन करना, क्ष्मा = दान करना)।

सुक्षितयः = उत्तम निवास वाले (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), क्षि = निवास करना, रहना)।

सुक्षितिम् = उत्तम निवास वाले (सु = अच्छा, उपसर्ग, क्षि = निवास करना, रहना)।

सुक्षितीः = उत्तम निवास वाले (सु = अच्छा, उपसर्ग, क्षि = निवास करना, रहना)।

सुक्षितीनाम् = उत्तम निवास वालों का (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, क्षि = निवास करना, रहना)।

सुक्षित्यै - सुक्षित्यै = सुक्षिति के लिए, उत्तम निवास के लिए (क्षि - जाना, चलना, निवास करना, रहना, बसना)।

सुखतमे = अत्यन्त सुख में (सुख - सुखी होना, सुखी करना, प्रसन्न करना)।

सुखम् = सुख को (सुख - सुखी होना, सुखी करना, प्रसन्न करना)।

सुखादये = उत्तम खाना, भोजन के लिए (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), खद्-खाद् - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना)।

सु-खादितान् = उत्तम भोजन खाये हुआओं को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), खद्-खाद् - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना)।

सुगन्धिम् - सुगन्धिम् = सुगन्धि को (सु - अच्छा, गन्ध - गन्ध होना, शोभित करना)।

सुगम् = सुगामी को, उत्तम प्रगतिशील को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), गम् - जाना, जानना, पाना)।

सुगा = उत्तम प्रगतिशील, सुगामी (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), गम्, गा = जाना, जानना, पाना)।

सुगृहपतिः = श्रेष्ठ गृहपति (गृह - लेना, स्वीकार करना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना, ऐश्वर्य होना)।

सुगेभि = अच्छे जाने योग्य, सुगम (गु = शब्द करना, गम्, गा = जाना, जानना, पाना)।

सुगोपा = उत्तम-रक्षक, उत्तम गो के, उत्तम शब्द करने वालों, उत्तम मननशीलों, उत्तम उपदेशकों के पालक-रक्षक (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग), गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।

सुचरिते = अच्छे आचरण में (सु = उत्तम, अच्छा, चर = आचरण करना, जाना, खाना)।

सुचित्राम् = सुचित्रा को, सुचेतन करने वाले, उत्तम चित्र स्वरूप, आश्चर्यस्वरूप (सु - सुन्दर, अच्छा, चित्र = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

सुचेतुनम् = उत्तम चेतनीय को, श्रेष्ठ चुने गये को, उत्तम विचारक को (सु - उत्तम, अच्छा, चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

सुजागृहि = अच्छी तरह जागते रहो (सु = उत्तम, अच्छा, जागृ - जगना, नींद न लेना)।

सुजातम् = सुजात को, उत्तम जन को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

सुजातासः = उत्तम जन (सु = अच्छा, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

सुजिह्व = उत्तम जिह्वा वाले (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), जिह् = जाना, जानना, पाना)।

सुजुष्टा = सुविचारित, सुसेवित (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)।

सुज्योतिः = अच्छी ज्योति (सु = अच्छा, ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

सुत = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतः = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु = उत्तम, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतपेयाय = उत्पन्न पेय के लिए (सु - उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, पा-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

सुतम् = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए को (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतराः = उत्तम पार कराने वाले, उत्तम पार करने वाले (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

सुतसोमे = सुतसोम में, ऐश्वर्यवान् प्रेरणा में (सु = उत्तम, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सुतस्य = सुत का (सु = उत्तम, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सुता = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु = उत्तम, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना,

अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सुताः = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु = उत्तम, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सुतानाम् = सुतों का, उत्पन्न हुआ का, ऐश्वर्यवानों का (सु = उत्तम, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सुताभ्याम् = द्वय-ऐश्वर्यवान् द्वारा, के लिए (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुताय = सुत के लिए, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए के लिए (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतावतः = सुतावत, सृजनशील (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतावन्तो = सुतावान्, रचनावान् (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतावान् = सुतावान्, रचनाशील (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतासः = सन्तान, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतासुतौ = सुत और असुत दोनों, सन्तान, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए, पुत्र-पुत्री (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतीर्था - सुतीर्था = उत्तम तीर्थ, (सु - उत्तम, अच्छा, तीर् = पूर्ण करना, पार लगाना)

सुतुको = उत्तम प्रगतिशील, उत्तम वृद्धिकर्ता (सु = उत्तम, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना)।

सुते = ऐश्वर्यवान् में, उत्पन्न हुए में (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतेभिः = ऐश्वर्यवानों, उत्पन्न हुआ द्वारा (सु = उत्तम, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुतेषु = ऐश्वर्यवानों में, उत्पन्न हुआ में (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुत्याम् = अभिषेक में (सु - स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना)।

सुत्रात्रा = अच्छी तरह सुरक्षण, सुपालन, सुपोषण करने वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

सुत्रामा = सुत्रामा, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

सुत्रामाणम् = सुत्रामान, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक को (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

सुत्राम्णा = सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक द्वारा (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

सु-त्राम्णे = सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

सुदक्ष = हे सुदक्ष, हे दक्षवान्, हे सुसमृद्ध (सु - उत्तम, अच्छा, दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

सुदक्षस्य = सुदक्ष का, सुसमृद्ध का (सु - सुन्दर, अच्छा, दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर

होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

सुदक्षो = सुदक्ष, सुसमृद्ध (सु - सुन्दर, अच्छा, दक्ष - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

सुदत्तः- सुदत्तः = सुदत्त, अच्छा दानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदत्तो - सुदत्तो = अच्छा दानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदंससम् = डसने, देखने, बोलने को (सु - सुन्दर, अच्छा, दंस् - डसना, काटना, देखना, शब्द करना)।

सुदानव = सुदानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदानवः = सुदानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदानवे = सुदानी के लिए (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदानुम् = उत्तम दानी को (सु - सुन्दर, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदिनम् = सुदिन को (सु - अच्छा, सुन्दर, दी = हास (हरास) होना, झरना, नष्ट होना। दा - यच्छ = देना, सौंपना, लौटाना, रखना। दो - दान करना, दया करना, कतरना, विभाग करना)।

सुदीतयो = सुदीतय, उत्तम क्षय करने वाले, उत्तम दानी (सु - अच्छा, सुन्दर, दी - हास (हरास) होना, झरना, नष्ट होना। दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना। दो - दान करना, दया करना, कतरना, विभाग करना)।

सुदीदितिम् = उत्तम क्षरण को (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, दी - हास (हरास) होना, झरना, नष्ट होना)।

सुदृशीकः = सुदृशीक, उत्तम देखने वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, दृश्-पश्य -देखना)।

सुदृशीको = सुदृशीक, उत्तम देखने वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, दृश्-पश्य -देखना)।

सुदुघा = सुदुघा, दानी (सु - सुन्दर, अच्छा, दा, दद्

= देना)।

सुदुघाम् = उत्तम दोहन वाले को (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, दुह् - दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना, हिंसा करना)।

सुदुघे = दानी (सु - सुन्दर, अच्छा, दा, दद् = देना)।

सुदुघे = सुदुग्ध (सु = अच्छा (उपसर्ग)। दुह् - दोहन करना)।

सुदेवम् = देव-देव को, प्रत्येक देव को (सु = अच्छा (उपसर्ग)। (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

सुद्रुवम् = सुद्रुव को, प्रवाहकामी, ज्ञान को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

सुधन्वने = सुन्दर धारण के लिए (सु - सुन्दर, अच्छा, धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

सुधर्म = सुधर्म (सु - उत्तम, अच्छा, धृ = धारण करना)।

सुधातुम् = भलीभाँति धारण करने वाले को (सु - उत्तम, अच्छा, धा - धारण करना, रक्षण करना, देना)।

सुधिते = सुधित में, सुधित के लिए (सु = अच्छा (उपसर्ग)। धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)।

सुनावम् = सुनाव को (सु = सुन्दर अच्छा (उपसर्ग), नौ - तैरना)।

सुनीती = अच्छी नीति (सु - सुन्दर, अच्छा, नी = ले जाना)।

सुनीथः = उत्तम स्तुति (सु - उत्तम, अच्छा, नी = ले जाना, नीथ = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

सुनीथे = हे उत्तम स्तुति वाले, हे उत्तम प्रगतिशील (सु - उत्तम, अच्छा, नी = ले जाना, नीथ - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

सुनुः = स्नान करने वाला, सवन करने वाला (सु -

उत्तम, अच्छा, नु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

सुनोता = आसवन करो, उत्तम स्तुति वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सु - उत्तम, अच्छा, नु - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

सुन्वतः = स्नान करने वाले, सवन करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वताम् = स्नान करने वाले का, सवन करने वाले का (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वते = स्नान करने वाले, सवन करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वन् = स्नान करने वाले, सवन करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वन्तम् = उत्पन्न करने वाले को (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वन्ति = स्नान करते हैं, सवन करते हैं (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वानाय = सुन्वान के लिए, स्नानवान् के लिए, सवनयुक्त के लिए (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्विरे = सुन्विर, उत्पन्न, ऐश्वर्य किये गये (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वे = आसवन किया जाये (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुपथा = अच्छे मार्गों पर (सु - अच्छा, सुन्दर, पथ - चलना)।

सुपथ्यम् = सुपथ्य को, अच्छे मार्ग को (सु - अच्छा, सुन्दर, पथ - चलना)।

सुपदि = सुन्दर पद में (सु - सुन्दर, अच्छा, पद - चलना, जाना, जानना, पाना)

सुपर्णः = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

सुपर्णचित् = सुन्दर पर्ण वाला, अच्छी तरह हरा करने वाला (सु - सुन्दर, अच्छा, पर्ण - हरा करना, हरा होना)।

सुपर्णम् = सुपर्ण को (सु - सुन्दर, अच्छा, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

सुपर्णान् = सुपर्णों को (सु - सुन्दर, अच्छा, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

सुपर्णो = उत्तम पर्ण वाला, अच्छी तरह हरा करने वाला (सु - सुन्दर, अच्छा, पर्ण - हरा करना, हरा होना)।

सुपर्ण्यः = सुन्दर पर्ण वाला (सु - सुन्दर, अच्छा, पर्ण - हरा करना, हरा होना)।

सुपत्नीः = सुपत्नी, उत्तम ऐश्वर्यवती (सु - अच्छा, सुन्दर, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

सुपाणिः = उत्तम पाणि, उत्तम स्तुति (सु = अच्छा (उपसर्ग))। पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना)।

सुपारः = उत्तम रूप से कार्य पूर्ण करने वाला, उत्तम कार्यकर्ता (सु = अच्छा, उत्तम (उपसर्ग), पार - कार्य पूर्ण करना)।

सुपिप्पला = उत्तम, प्रयाण, प्रेरणा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, शब्द, सेवा करने वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, (पिल् - चलना, प्रयाण करना, प्रेरणा करना)।

सुपिप्पलाः = उत्तम, प्रयाण, प्रेरणा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, शब्द, सेवा करने वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, पेश - जाना, भरना, पिप्पल् = गति करना, जाना, जानना, पाना, सेवा करना, चाकरी करना)।

सुपिप्पलो = उत्तम, प्रयाण, प्रेरणा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, शब्द, सेवा करने वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, पेश - जाना, भरना,

पिप्पल् = गति करना, जाना, जानना, पाना, सेवा करना, चाकरी करना)।

सुपूर्णम् = सुपूर्ण को, अच्छी तरह पूर्ण को (सु - सुन्दर, अच्छा, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

सुपूर्णा - **सुपूर्णा** = अच्छी तरह पूर्ण (सु - सुन्दर, अच्छा, पृ - पूर्ण करना, भरना)।

सुपेशसा = सुन्दर गति वाली, सुपेशसा (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, पेश - जाना, भरना)।

सुपोषः = अच्छा पोषण (सु - सुन्दर, अच्छा, पुष - पोषण करना)।

सुपोषाः = अच्छा पोषण (सु - सुन्दर, अच्छा, पुष - पोषण करना)।

सुप्तस्य = सोते हुए का (सुप् - स्वप् = सोना, नींद लेना, शयन करना)।

सुप्रकेतैः = सर्वोत्तम परमर्श देने वाले द्वारा, महाज्ञानी, उत्तम निवासों द्वारा (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

सुप्रकेतो = सर्वोत्तम परमर्श देने वाला, महाज्ञानी, उत्तम निवास (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)।

सुप्रजाः - **सुप्रजाः** = अच्छे सन्तानवाले (सु - सुन्दर, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)

सुप्रजावनी = सुप्रजासेवी (सु - सुन्दर, अच्छा, जन = उत्पन्न होना, पैदा होना, उत्पन्न करना, पैदा करना)।

सुप्रजास्त्वाय - **सुप्रजास्त्वाय** = सुप्रजा के लिए (सु - सुन्दर, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

सुप्रणीतयः = अच्छी तरह ले जाने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

सुप्रतिचक्षम् = उत्तम वाणी, दृष्टि को (सु - उत्तम, श्रेष्ठ। प्रति = सम्बन्ध में, चक्ष् - स्पष्ट बोलना, देखना)।

सु-प्रतीकम् = उत्तम प्रतीक को (सु - उत्तम, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना। प्र - प्रकृष्ट, अधिक। तिक्-तीक् - जाना)।

सुप्रतीकस्य = सुप्रतीक का (सु - सुन्दर, अच्छा, प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में)।

सुप्रतीकौ = सुप्रतीक (सु - सुन्दर, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना) (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तिक्-तीक् - जाना)।

सुप्रतीची = उत्तम पश्चिम वाला (सु - सुन्दर, अच्छा, प्रतीची - पश्चिम, (अव्यय)।

सुप्रतूर्तिम् = उत्तम तीव्रगति को (सु - सुन्दर, अच्छा, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तु - गति, वृद्धि, पूर्ण, हिंसा करना, तुर - शीघ्र गति करना, शीघ्रता करना)।

सुप्रपाणा = उत्तम अधिक पीने योग्य (सु - सुन्दर, अच्छा, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

सुप्रपाणाः = उत्तम अधिक पीने योग्य (सु - सुन्दर, अच्छा, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

सुप्रपाणे = उत्तम अधिक पान में (सु = उत्तम (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना। पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)।

सुप्रयसः = सुप्रयस (सु - सुन्दर, अच्छा, प्राची, प्र - प्रकृष्ट, अधिक। यस् - प्रयास करना, प्रयत्न करना। या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

सुप्राची = अच्छे पूर्व वाला (सु - उत्तम, श्रेष्ठ। प्राची - पूर्व, अव्यय)।

सुप्रावीः = सर्वोत्तम रक्षक (सु - उत्तम, श्रेष्ठ। प्र - अधिक, प्रकृष्ट। प्रा - पूर्ण करना। अक् - रक्षा करना)।

सुप्राडजः = सुन्दर और अधिक मान करने योग्य-वाला, अच्छा पूर्व अजन्मा (सु+प्राक्+अजः, सु = सुष्ठु, सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग)। प्राड् (प्राक्) = पहले, आगे, पूर्व दिशा (अव्यय)। अजः = अज, अजन्मा (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)।

सुप्रायणा = सुप्रकृष्ट विद्वान् (सु - सुन्दर, अच्छा। प्र = प्रकृष्ट, अधिक (उपसर्ग)। अय् = जाना, जानना, पाना)।

सुप्रीते = सुप्रीति में, सुप्रीति के लिए (सु = अच्छा (उपसर्ग)। प्री = प्रेम करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, कामना करना)।

सुप्वा = अच्छी तरह पवित्र (सु = अच्छा, पू = पवित्र करना)।

सु-बन्धुम् = सुबन्धु को (सु = अच्छा (उपसर्ग)। बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

सुबर्हिः = सुन्दर बढ़ा हुआ, सुन्दर विराट, सुन्दर महान् (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

सुबर्हिषम् = सुबर्हिष को, उत्तम बढ़ा हुआ, महान् को (सु = अच्छा (उपसर्ग), बर्ह - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

सुबाहुः = उत्तम प्रयास करने वाले, उत्तम बाहु वाले (सु = अच्छा (उपसर्ग)। बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

सुब्रह्मा = उत्तम ब्रह्म, महान्, बृहत् (सु - सुन्दर, अच्छा, उत्तम, बृह - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

सुभग = उत्तम सेवित, भजनीय (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

सुभगम् = अच्छी सेवा, भजन को, उत्तम सेवित, भजनीय को (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

सुभगा = सुभगा, सुन्दर गति, ज्ञान वाले, उत्तम सेवित, भजनीय (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

सुभगाम् = सुभगा को, सुन्दर गति, ज्ञान वाले को, उत्तम सेवित, भजनीय को (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।

सुभृतम् = सुभृत को, उत्तम भरण-पोषण, धारण करने वाले को (सु = अच्छा, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

सुभृतो = सुभृत, उत्तम भरण-पोषण, धारण करने वाले (सु = अच्छा, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)।

सुभूः = उत्तम उत्पन्न करने वाला (सु = अच्छा (उपसर्ग))। भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

सुभोजसम् = उत्तम भोजन वाले को (सु - सुन्दर, अच्छा, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना)।

सुभोजसौ = उत्तम भोजन, संरक्षण, पालन करने वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

सुमखम् = सुन्दर मख, गति, ज्ञान को (सु - सुन्दर, अच्छा, मख् - गति करना, जाना, जानना, पाना),

सुमङ्गल = सुमङ्गल, प्रगतिशील (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), मङ्ग - जाना)।

सुमङ्गलः = सुमङ्गल, प्रगतिशील (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), मङ्ग - जाना)।

सुमत् = स्वयम् (अव्यय)।

सुमत्-क्षराणाम् = स्वयं क्षरितों का (सु = उत्तम। सुमत् = स्वयम् (अव्यय), क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)।

सुमतिः = सुमति, सुबुद्धि (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमतिम् = सुमति को, सुबुद्धि को (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमतीनाम् = सुमतियों को, सुबुद्धियों को (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमतीवृधो = सुमति की वृद्धि के लिए, सुबुद्धि की वृद्धि के लिए (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना। वृध् - बढ़ना, वृद्धि होना)।

सुमतौ = सुमति में, सुबुद्धि में (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमद् = सुमति, सुबुद्धि (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमनस्यमानाः = सुमनस्यमान, सुमतिवान्, सुबुमान (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमनस्यमानौ = सुमनस्यमान, सुमतिवान्, सुबुमान (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमना = सुन्दर मन वाले (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमनाः = अच्छे मन वाले (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमन्मा = उत्तम विचार वाले, उत्तम मन वाले (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमित्रध = अच्छे मित्र धारण करने वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, मिद - प्रीति करना, प्यार करना। धा - धारण

करना)।

सुमित्रिया = सुमित्र हों (सु - अच्छा, सुन्दर, मिद - स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, प्रीति करना, प्यार करना)।

सुमित्रियाः = अच्छे मित्र (सु - सुन्दर, अच्छा, मिद - स्नेह करना, प्रीति करना)।

सुमृडीक = उत्तम सुखी (सु - अच्छा, सुन्दर, मृड - सुख होना)।

सुमृडीकः - सुमृडीकः = उत्तम सुख देने वाला (सु - अच्छा, सुन्दर, मृड - सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना)।

सुमृडीकाम् = उत्तम सुखकारी (सु - अच्छा, सुन्दर, मृड - सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना)।

सुमृडीकाम् = उत्तम उत्तम सुखी को (सु - अच्छा, उत्तम। मृड - सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना)।

सुमृडीकायै = उत्तम सुख देने वाले के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, मृड - सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना)।

सुमेके = उत्तम ग्रहण में, सुरक्षा में, उत्तम प्रोक्षण में (सु - अच्छा, उत्तम। मे - लेना, ग्रहण करना। मि - जाना चलना, मि - प्रक्षेपण करना, रक्षा करना, स्थापन करना)।

सुमेधा = उत्तम मेधा वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, मेधा = शीघ्र समझना)।

सुमेधाः = उत्तम मेधा वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, मेधा = शीघ्र समझना)।

सुम्नम् = सुविचार, उत्तम सृजन, रचनाशीलता को (सु - अच्छा, सुन्दर, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुम्नया = सुविचार अथवा सृजन, रचनाशीलता द्वारा (मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुम्नयुः = सुविचार, सृजन, रचनाशील (सु = उत्तम (उपसर्ग), मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुम्नहः = सुविचार अथवा सृजन, रचनाशीलता देने वाले (सु - अच्छा, उत्तम। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-हवे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

सुम्ना = उत्तम विचारयुक्त (सु - अच्छा, उत्तम। सु = उत्पन्न कराना, ऐश्वर्य होना। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुम्नाय = उत्तम विचार के लिए (सु - अच्छा, उत्तम। सु = उत्पन्न कराना, ऐश्वर्य होना। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुम्ने = उत्तम चिन्तन, ऐश्वर्य, सृजन के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, म्ना = अभ्यास करना, विचार करना, मनन करना)।

सुम्नेषु = उत्तम चिन्तनों, ऐश्वर्यों, सृजनों में (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, म्ना = अभ्यास करना, विचार करना, मनन करना)।

सुम्नैः = उत्तम चिन्तन, ऐश्वर्य, सृजन द्वारा (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, म्ना = अभ्यास करना, विचार करना, मनन करना)।

सुयजम् = सुयज को, उत्तम यजन को (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम। यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)।

सुयजा = उत्तम यजनकर्ता (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम। यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगतिकरण करना)।

सुयतो = सुयत्न, उत्तम प्रयत्न करने वाला (सु - अच्छा, उत्तम। यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

सुयमम् - सुयमम् = उत्तम नियमयुक्त (सु - अच्छा, सुन्दर, यम् - आवरण करना, पोषण करना, खिलाना, अधीन रखना, नियमन करना)।

सुयमे = उत्तम पोषण, उत्तम नियमन-नियन्त्रण में (सु

- अच्छा, सुन्दर, यम् = रोकना, पोषण करना)।

सुयशस्तरम् = उत्तम यश, कीर्ति वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

सुरभा = सृजन, ऐश्वर्य का प्रकाश (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, भा - प्रकाश करना)।

सुरभिः = सुरों द्वारा, सुरभि (सुर+भिः, सु+रभ्, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुरभिन्तरः = अतिशय सुरयुक्त, अति सुरभि युक्त (सुर+भिः, सु+रभ्, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुरभीणि = सुरभियों को (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुरया = सुरा द्वारा (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना)।

सुरा = सुरा (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुराधसः = सुन्दर राध, सिद्धि, सुरा को धारण करने वाला (राध् - सिद्ध करना, पूरा करना, बढ़ना, निर्णय करना)।

सुराधसम् = उत्तम राध, उत्तम सिद्धि को, सुरा को धारण करने वाले को (राध् - सिद्ध करना, पूरा करना, बढ़ना, निर्णय करना)।

सुराधानी = सुराधानी, सुरा को धारण करने वाला (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, धा -

धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

सुरामाणः = सुरामाण, प्रकाशमान (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुरायै = सुरा के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुरावन्तम् = सुरावान को (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर - अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।

सुराश्वः = सुव्यापक, सामर्थ्ययुक्त ऐश्वर्यवान् (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर - अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

सुरासोमान् = सुरा-सोमों को (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू = प्रेरणा देना)।

सुरुक्मे = सुरुक में, सुप्रकाशित में (सु - सुन्दर, अच्छा, रुक् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)।

सुरूपः = सुरूप, उत्तम रूप वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

सुरूपकृत्नुम् = सुरूपकृत्नु को, उत्तम रूप करने वाले को (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना, कृ = करना)।

सुरेतसम् = सुरेत के समान (सु = अच्छा (उपसर्ग), रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

सुरेताः = उत्तम विद्या, उत्तम गति (सु - उत्तम, अच्छा, सुन्दर, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।

सुव = उत्पन्न करो, ऐश्वर्य दो, फेंक दो, भेज दो (सु

= उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भेजना, उड़ाना)।

सुवते = उत्पन्न करते हैं, ऐश्वर्य करते हैं (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भेजना, उड़ाना)।

सुवर्चाः - सुवर्चाः = सुन्दर तेजस्वी (सु - अच्छा, सुन्दर, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

सुवसनानि = श्रेष्ठ वास करने वाले (सू- भेजना, उड़ाना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सु - अच्छा, सुन्दर, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

सुवसि = सुन्दर वास में, उत्पन्न करो, फेंक दो, भेज दो (सू- भेजना, उड़ाना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सु - अच्छा, सुन्दर, वस् - वसना, वास करना)।

सुवाचा = सुन्दर वाणी (सु - अच्छा, सुन्दर, वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)

सुवाति = सुवाति, सुगति (सु = अच्छा (उपसर्ग), वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)।

सुवानासः = उत्पन्न कर्ता, उत्तम शब्द कर्ता, श्रेष्ठ सेवा करने वाले (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भेजना, उड़ाना, सु - उत्तम, अच्छा, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)।

सुवितस्य = सुवित का, सुन्दर, विशेष रक्षण-पालन करने वाले का (सु - उत्तम, अच्छा, वि - विशेष, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)।

सुविताय = सुन्दर, विशेष रक्षण-पालन करने वाले के लिए (सु - सुन्दर, अच्छा, वि - विशेष, ताय - रक्षा करना, पालन करना, तानना, फैलाना)।

सुविते = सुवित में, सुन्दर, विशेष रक्षण-पालन करने

वाले में (सु - सुन्दर, अच्छा, वि - विशेष, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)।

सुविदत्रान् = उत्तम विद्वानों को, कल्याणकारी दानियों को (सु = अच्छा (उपसर्ग)। वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। विद् - जानना। दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

सुविद्वांसो = उत्तम विद्वान्, सुविद्वांस (सु = उत्तम (उपसर्ग), विद - समझना, जानना, समझाना, वास करना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)।

सुविप्रः = सुविप्र, अच्छे और विशिष्ट पूर्ण करने वाले (सु = अच्छा (उपसर्ग)। वि = विशेष, विना, विलोम, प्रा - पूर्ण करना)।

सुवीरः = उत्तम वीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीरा = अच्छे वीर, सुवीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीराः = अच्छे वीर, सुवीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीरम् = उत्तम वीर को (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीराभिः = उत्तम वीरों द्वारा (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीरो = अच्छे वीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना)।

सुवीर्यम् - सुवीर्यम् = उत्तम वीरता को (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीर्यस्य-सुवीर्यस्य = उत्तम वीरता का (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीर्याय - सुवीर्याय = उत्तम वीरता के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवीर्यम् = उत्तम वीरता को (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

सुवृक्तिभिः = सुवृक्तियों द्वारा, उत्तम आदानों द्वारा (सु - सुन्दर, अच्छा, वृत् - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना)।

सुवृक्तिम् = उत्तम स्वीकार करने योग्य को (सु - अच्छा, सुन्दर, वृत् - लेना, मान्य करना, स्वीकार करना)।

सुवृजनासु = सुवर्जित करने वाले में, सुवृजन में (सु - अच्छा (उपसर्ग)। वृज् - छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)।

सुवृता = सुव्रती, उत्तम आचरण वाले (सु - अच्छा (उपसर्ग), वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

सुव्रतानाम् = सुव्रतों का (सु = अच्छा (उपसर्ग), वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

सुव्रतो = सुव्रत, उत्तम व्रत वाले (सु = अच्छा (उपसर्ग), वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

सुशक्तिः = सुशक्ति, सु-सक्षमता, सु-सामर्थ्य (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)।

सुशमि = सुशीतल (सु - अच्छा, सुन्दर, शम - शान्त होना, ठण्डा होना)।

सुशमी = सुशीतल (सु - अच्छा, सुन्दर, शम् - शान्त होना, ठण्डा होना)।

सुशर्मणो = उत्तम सुख वाले, उत्तम श्रवण वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, शर्म - सुख होना, शृ - सुनना, श्रवण करना)।

सुशस्ति = उत्तम प्रशंसायुक्त (सु - अच्छा, सुन्दर, शंस = स्तुति, प्रशंसा करने वाला)।

सुशस्तिभिः = उत्तम प्रशंसाओं द्वारा (सु - अच्छा, सुन्दर, शंस = स्तुति, प्रशंसा करने वाला)।

सुशिप्रिन् = हे उत्तम विद्वान् (सु - अच्छा, उत्तम, शिप - क्षरण होना, काटने योग्य होना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना

करना, पतला करना, सुनना)।

सुशिल्पे = सुशिल्प में (सु = अच्छा (उपसर्ग), शिल् - बीनना, उज्छन करना, एक एक करके बीनना)।

सुशीमम् = उत्तम कल्याण, सुख (सु = उत्तम (उपसर्ग), शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना)।

सुशुक्वनिः = उत्तम शुद्धि, सेवा (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना,) (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)।

सुशेवः = उत्तम कल्याण वाला, उत्तम सुख वाला (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)।

सुशेवम् = उत्तम कल्याण, सुख (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)।

सुशेवाः = उत्तम कल्याण, उत्तम सुख (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)।

सुशेवो = उत्तम कल्याण, उत्तम सुख (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)।

सुश्चन्द्र = उत्तम आनन्दप्रद, उत्तम प्रकाशमान (सु - अच्छा, सुन्दर, चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)।

सुश्रवसम् = उत्तम श्रवण वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, शृ - सुनना, श्रवण करना)।

सुश्रवस्तमः = उत्तम विद्वान्, उत्तम श्रवणशील, उत्तम प्रगतिशील (सु - अच्छा, सुन्दर, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

सुश्रियः = उत्तम श्री (सु - अच्छा, सुन्दर, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)।

सुश्लोक = उत्तम श्लोक (सु = अच्छा (उपसर्ग), श्लोक = साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)।

सुषणनानि = उत्तम प्रकाश, उत्तम दान, उत्तम सेवा (सु - उत्तम, अच्छा, सण - प्रकाश करना, शब्द करना, सन्

- दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)।

सुषदः = सद्विद्या, सुपथ (सु - अच्छा, सुन्दर, सद् = जाना, जानना)।

सुषदा = सद्विद्या, सुपथ (सु - अच्छा, सुन्दर, सद् = जाना, जानना)।

सुषहा = उत्तम सहनशील, उत्तम सामर्थ्यवान् (सु - उत्तम, श्रेष्ठ। सह = शक्तिमान् करना, सहना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)।

सुषारथि = सुसारथी, कुशल सारथी, अच्छा सारथी (सु - अच्छा, सुन्दर। रम् = जाना, ले जाना, रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

सुषारथिः = सुसारथी, कुशल सारथी (सु - अच्छा, सुन्दर। रम् = जाना, ले जाना, रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

सुषाव = सृजित करो, आसवन करो (सु - अच्छा, सुन्दर। सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुषिलीका = उत्तम बाँधने वाला, उत्पन्नकर्ता, (सुषिलीक, सुषि-लीक। सु = अच्छा (उपसर्ग)। सि = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना। सिल = बीनना, एक एक दाना चुगना। सुष-सूष-सुस = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना। ली = कष्ट होना। ली = युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना। ली = पतला करना, गलाना)।

सुषुमा = सुसृजन किया, उत्तम उत्पन्न किया (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुषुमान् = उत्तम पराक्रमी, अद्भुत सामर्थ्यवान्, श्रेष्ठ उत्पन्न करने वाला (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुषुम्णस्य - सुषुम्णस्य = सुन्दर सृजन करने वाले का, श्रेष्ठ ऐश्वर्यवान् का (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मण -

अस्पष्ट शब्द करना, कहना)।

सुषुम्णः = सुन्दर सृजन करने वाले, श्रेष्ठ ऐश्वर्यवान् (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मण - अस्पष्ट शब्द करना, कहना)।

सुषुम्णा = सुन्दर सृजन करने वाले, श्रेष्ठ ऐश्वर्यवान् (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मण - अस्पष्ट शब्द करना, कहना)।

सुषुवासम् = सुन्दर सृजन किया, श्रेष्ठ ऐश्वर्यवान् करने वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, शुष - शुष्क होना, सूखना, शूष - जनना, उत्पन्न करना, प्रसूत होना)।

सुषुवुः = सुन्दर सृजन किया, श्रेष्ठ ऐश्वर्यवान् किया (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सुषेणः = सुषेण (सु - अच्छा, सुन्दर, सि-सिन् = बांधना, गूथना, फन्दे से पकड़ना)।

सुष्टरीम् = सुन्दर विस्तार, आच्छादन, पूर्णता को (सु - सुन्दर, अच्छा। सु - उत्पन्न करना, जनना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना। स्तु - फैलाना, वस्त्रादि से आच्छादित करना, ढकना, स्तु - पूर्ण करना)।

सुष्टुतः = उत्तम स्तुति किये हुए (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

सुष्टुतयो = सुन्दर स्तुतियाँ (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)।

सुष्टुतिम् = सुन्दर स्तुति को (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)।

सुष्टुतीः = सुन्दर स्तुति (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

सुष्वयन्ती = सुप्रगतिशील, उत्तम प्रगति वाली (सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सुष्वाणम् = उत्पन्नकर्ता को (सुष-सूष-सुस - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना)।

सुष्वाणासो = उत्पन्नकर्ता (सुष-सूष-सुस - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना)।

सुष्वाणो = उत्पन्नकर्ता (सुष-सूष-सुस - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना)।

सुसन्दृशम् = अच्छी, सम्यक् दृष्टि वाले (सु - अच्छा, दृश् = देखना)।

सुसन्दृशा = सुन्दर सम्यक् दृष्टि वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, सम् - सम्यक्, दृश् - देखना)

सुसमिद्धम् = सुसमिद्ध को, उत्तम प्रकाशमान को (सु - सुन्दर, अच्छा, इन्ध् = प्रकाशित होना)।

सुसमिद्धाः = सम्यक् प्रकाशित (सु - सुन्दर, अच्छा, इन्ध् = प्रकाशित होना)।

सुसमिद्धाय = सम्यक् प्रकाशित होने के लिए (सु - सुन्दर, अच्छा, इन्ध् = प्रकाशित होना)।

सुसमिद्धो = उत्तम सम्यक प्रकाशवान् (सु = उत्तम, श्रेष्ठ (उपसर्ग), सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध् = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)।

सुसस्याः - सुसस्याः = अच्छे स्वप्न, अच्छी नींद (सु - सुन्दर, अच्छा, सस् = स्वप्न, सोना)।

सुहवम् = उत्तम आह्वान को (सु - उत्तम। अच्छा। हु - दान करना, आदान- प्रदान करना। द्वे - आह्वान करना)।

सुहवा = उत्तम आह्वान द्वारा (सु - उत्तम। अच्छा। हु - दान करना, आदान- प्रदान करना। द्वे - आह्वान करना)।

सुहवाः = उत्तम आह्वान करने वाले (सु - उत्तम। अच्छा। हु - दान करना, आदान- प्रदान करना। द्वे - आह्वान करना)।

सुहवो = उत्तम आह्वान करने वाले (सु - उत्तम। अच्छा। हु - दान करना, आदान- प्रदान करना। द्वे - आह्वान करना)।

सुहस्त = सुहस्त (सु - सुन्दर, अच्छा, हस्त - आदान करना, लेना, दान करना, ग्रहण करना)।

सुहस्ताः = सुहस्त (सु - सुन्दर, अच्छा, हस्त - आदान करना, लेना, दान करना, ग्रहण करना)

सुहस्त्या = सुहस्ति द्वारा (सु - सुन्दर, अच्छा, हस्त - आदान करना, लेना दान करना, ग्रहण करना)।

सुहिरण्ये = उत्तम प्रकाश में, उत्तम वाणी में (सु - सुन्दर, अच्छा, हिरण - प्रकाश करना, शब्द करना)।

सुहूः = उत्तम आदान-प्रदान, दान करने वाले (सु - उत्तम। अच्छा। हु - दान करना, आदान- प्रदान करना। द्वे - आह्वान करना)।

सूः = उत्पत्ति-सृजन, ऐश्वर्य (सू - जन्म देना, उत्पन्न करना, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूकरः = उत्पत्ति-सृजन, ऐश्वर्य करने वाला (सू - जन्म देना, उत्पन्न करना, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूकृतस्य = उत्पत्ति-सृजन, ऐश्वर्य करने वाले का (हिरण - प्रकाश करना, शब्द करना, सू - जन्म देना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूक्तम् = सूक्त, उत्तम कथन (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना)।

सूक्त-वाकाय = सूक्तवाणी के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना, वच्, वद् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

सूक्तवाकेन = सूक्तवाणी द्वारा (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना)।

सूक्तस्य = सूक्त का (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना)।

सूक्ता = सूक्त (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना)।

सूक्तेभिः = सूक्तों द्वारा (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना)।

सूक्तोक्तौ = सूक्त (सु - अच्छा, सुन्दर, उक्-वच्-वद् - कहना, बोलना)।

सूचीभिः = सूचियों द्वारा (सूच् - सूचना करना)।

सूताय = सुत के लिए, उत्पन्न करने के लिए, गति करने के लिए, ऐश्वर्यवान के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूत्रेण = सूत द्वारा, ऐश्वर्यवान द्वारा (सु - उत्पन्न

करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूददोहसः = पवित्रता का दोहन करने वाले (सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना, दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)।

सूदयत् = आश्रय करता है, वर्षा करता है, पवित्र करता है (सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना)।

सूदयन्तु = आश्रय करें, पवित्र करें (सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना)।

सूद्याभ्यः = सूद्यों के लिए, वर्षकों के लिए, पवित्रों के लिए (सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना)।

सूनः = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूनरी = प्रेरणा देने वाली (सु - सुन्दर, अच्छा, सू = प्रेरणा देना, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

सूनवे = उत्पन्न करने के लिए, सन्तान के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूनवो = सन्तान (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूनाः = उत्पन्न सन्तान, उत्पन्नकर्ता (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूनृता = सुनृता, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वाली (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)।

सूनृतानाम् = सुनृतों का, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वालों का (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)।

सूनृताम् = सुनृता को, उत्तम ले जाने वाली को, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वाली को (सु = उत्तम (उपसर्ग), सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, नृ = ले जाना)।

सूनृतावतः = सुनृता, उत्पत्ति-सृजन युक्त (सु - अच्छा, सुन्दर, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना,

नृ = ले जाना)।

सूनृतावति = उत्पत्ति-सृजन युक्त (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)।

सूनृतावती = उत्पत्ति-सृजन युक्त (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)।

सूनृतावते = उत्पत्ति-सृजन युक्त के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)।

सूनुः = सृष्टि, सन्तान, उत्पन्न, ऐश्वर्य (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूनुम् = सृष्टि, सन्तान, उत्पन्न, ऐश्वर्य को (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, आसवन करना)।

सूनो = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूनोः = सृष्टि, सन्तान, उत्पन्न, ऐश्वर्य का (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।

सूपस्था = सुसमीपस्थ (सु = अच्छा (उपसर्ग)। उप - समीप, स्था = स्थित होना)।

सूपस्थाभिः = उत्तम समीपस्थों द्वारा (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, उप - समीप, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

सूपायनो = सद्ज्ञान, सद्गुण, सत् मार्ग, (सु - सुन्दर, अच्छा। उप - समीप। सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना। अय = चलना, जाना, ध्वनि करना)।

सूयवसिनी = सृजनशील (सू = गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना)।

सूयवसे = उत्तम मिलन (सू = गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, सु - उत्तम, श्रेष्ठ, यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

सूयसे = उत्पन्न करता है (सू = गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना)।

सूर = सूर्य (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना,

उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सूर्य्य = सूर्य में, उत्पन्न करने वाले में (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सूषा = सूषा, उत्पन्नकर्ता (सूष-सुस = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना)।

सेतुम् = सेतु को (सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सेदथुः = गये, प्राप्त हुए (सिद् - हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना)।

सेदिम् = हिंसा को, प्रगतिशील को (सिद् = हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना, सिध् = जाना, जानना, पाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

सेदिरे = प्राप्त किया, जाना, गये (सिद् = हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना, सिध् = जाना, जानना, पाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

सेदुः = प्राप्त किया, जाना, गये (सिद् - हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना, सिध् - जाना, जानना, पाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

सेध = सिद्ध हो (सिध् = जाना, सिद्ध होना)।

सेधतम् = सिद्ध करे (सिध् = जाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

सेधति = सिद्ध करता है (सिध् = जाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

सेधन् = सिद्ध करते हुए (सिध् = जाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)।

सेनया = सेना द्वारा (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सेना = सेना (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सेनानीः = सेनानी (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सेनानी-ग्रामण्यौ = सेनानी और ग्रामणी (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना, ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

सेनान्ये = सेनानी के लिए (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सेनाभिः = सेनाओं द्वारा (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सेन्यो = सेन्य, बन्धन योग्य (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सैनम् = सैन को, सेना को (सि-सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सैलगम् - सैलगम् = सैलग को (सिल् - चबाना, बीनना, दाना चुगना)।

सो = वह, उसने (सर्वनाम)।

सोता = अभिसुत करने वाला, उत्पन्न होने वाला (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो-स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोतार = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सोतारो = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न होने वाले (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सोतुः = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाले, आसवन करने वाले का (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सोतृभिः = उत्पन्न करने वालों द्वारा (सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सोत्वाः = सृजन करने वाले, सृष्टिकर्ता (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो-स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोभरे = वाणी, बोलने वाले (सुभ = बोलना, दुःख देना, मारना, सुन्दर होना)।

स्वामी शरण

सोमारो = अनेक ऐश्वर्यमय (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोमो = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना,

आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोम्य = सौम्य (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोम्यम् = सौम्य को, ऐश्वर्य को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोम्यानाम् = सौम्यों का, ऐश्वर्यवानों का (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सोम्यासः = ऐश्वर्यवान् (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौत्रामणी = सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

सौभगः = सौभाग्य वाला, सौभग वाला (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)।

सौभगम् = सौभाग्य को, सौभग को (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)।

सौभगस्य = सौभाग्य का (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)।

सौभगा = सुभग (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौभगानि = सुभगों को, सौभाग्यों को (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौभगाय = सौभाग्य के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना, सो-स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौभगेभिः = ऐश्वर्यवान् (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)।

सौभाग्यम् = सौभाग्य को (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् - भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना, सो-स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौमनसः = अच्छा मन, सद्भावना (सु - अच्छा, सुन्दर। मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना)।

सौमनसे = सुमति वाले, सुमति के लिए (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सौमा-पौष्णम् = सोम और पोषण सम्बन्धी को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

सौम्यः = सौम्य (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य,

सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौम्यस्य = सौम्य का (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौम्या = सौम्य (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौम्याः = सौम्य (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो-स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौरभेयम् = सौरभेय को (सु - अच्छा, सुन्दर। सुर - चमकना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)।

सौरी = पराक्रमी (सु - अच्छा, सुन्दर, सुर - चमकना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सौर्ययामौ = सौर्य और याम (सु - अच्छा, सुन्दर, सुर - चमकना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

सौर्याः = सौर्य (सु - अच्छा, सुन्दर, सुर - चमकना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)।

सौव्रत्येन - सौव्रत्येन = सौव्रत्य से {सु - सुन्दर, अच्छा, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

सौश्रवसाय = सौश्रवस के लिए, अच्छे श्रोता के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

सौश्रवसेषु = उत्तम श्रवणकर्ताओं में (सु - सुन्दर, अच्छा, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

स्कन् = तिरस्कार करें, या पाँ (स्कन् = तिरस्कार करना)।

स्कन्दति = तिरस्कार करता है (स्कन् = तिरस्कार

करना)।

स्कन्दम् = स्कन्द को, तिरस्कार करने वाले को (स्कन् = तिरस्कार करना)।

स्कन्धा = स्कन्ध (स्कन्द = जाना, सूखना)।

स्कम्भ = स्थान (स्कम्भ - सक्रिय होना, क्रियाशील होना, रोकना, प्रतिबन्ध करना)।

स्कम्भनी = क्रियाशीलता (स्कम्भ - सक्रिय होना, क्रियाशील होना, रोकना, प्रतिबन्ध करना)।

स्तः = नष्ट करो (स्तृ - फैलाना, वस्त्रादि से आच्छादित करना, ढकना, हिंसा करना)।

स्त = है (अस् - होना)।

स्तनः = स्तन, शब्द, वाणी (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तनम् = स्तन, शब्द, वाणी को (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तनयते = शब्द करता है (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तनयन् = गर्जन करते हुए (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तनयित्वे = हे गर्जनयुक्त (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तनयितुम् = स्तनयितु को, गर्जन करने वाले को (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तनयोः = गर्जन में, ध्वनि में (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

स्तभान = स्तम्भित करो (स्तम्भ - अवरोध करना, दृढ़ होना, खम्भे के समान, स्तब्ध होना)।

स्तभायन् = स्तम्भित करते हुए (स्तम्भ - अवरोध करना, दृढ़ होना, खम्भे के समान, स्तब्ध होना)।

स्तम्नीताम् = स्तम्भीत को (स्तम्भ - अवरोध करना, दृढ़ होना, खम्भे के समान, स्तब्ध होना)।

स्तरीः = आच्छादन, विस्तार (स्तृ = आच्छादित करना, विस्तार करना)।

स्तरीरसि = आच्छादित होते हो (स्तृ - फैलाना, ढकना, पूर्ण करना)।

स्तूयसे = स्तुति करते हो (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तेन = चोर (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तेनम् = चोर को (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तेनस्य = चोर का (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तेना = चोर (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तेनान् = चोरों को (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तेनासः = चोर (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तोकानाम् = स्तुतिकर्ताओं का (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना। स्तुच - सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, प्रकाशित होना, चमकना, तेजस्वी होना)।

स्तोता = स्तुतिकर्ता (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोतारः = स्तुतिकर्ता (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोतृभ्य = स्तुतिकर्ता के लिए (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोतृभ्यः = स्तुतिकर्ता के लिए (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोतुः = स्तुतिकर्ता के लिए (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोत्रम् = स्तोत्र को, स्तुति को (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोत्राय = स्तोत्र के लिए, स्तुति के लिए स्तुतिकर्ता के लिए (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोत्रियाः = स्तुति करने वाले, स्तुति करने योग्य स्तुतिकर्ता के लिए (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोत्रे = स्तोत्र में, स्तुति में (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोभति = अवरोध, स्थिर, स्तुति करता है (स्तुभ - अवरोध करना, रोकना, मूर्ख होना, मन्दमति होना, स्तुभ - स्थित होना, ठहरना, स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोमः = स्तोम, स्तुति (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तोमपृष्ठा = स्तोमपृष्ठ, स्तुतिपालक (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना। पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना। स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना। पृश् = प्रश्न करना, पूछना। पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)।

स्तोमम् = स्तोम को (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमवाहसः = स्तुति वाहक, स्तुतियों का वहन करने वाले (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना। वह = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना)।

स्तोमा = स्तोम (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमाः = स्तोम (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमान् = स्तोमों को, प्रशंसाओं को, स्तुतियों को (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमास = स्तोम, प्रशंसाएँ, स्तुतियाँ (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमे = स्तोम में, स्तुति में, प्रशंसा में (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमेन = स्तुति द्वारा (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमेभिः = प्रशंसाओं, स्तुतियों द्वारा (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमैः = प्रशंसाओं, स्तुतियों द्वारा (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमो = स्तुति (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमौ = स्तोम (स्तोम - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोम्यम् = स्तोम्य को, स्तुत्य को, प्रशंसनीय को (स्तोम - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोम्या = स्तोम्या, स्तुति योग्य, प्रशंसनीय (स्तोम - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोषाम् = प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्त्यायताम् = शब्द करें (स्त्यै - शब्द करना, ध्वनि करना, भीड़ होना, घेरना, फैलना)

स्त्रीणाम् = स्त्रियों का, आच्छादित करने वालों का (स्तृ = आच्छादित करना, ढकना)।

स्थ = स्थित, हो (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थः = हों, स्थित हो (अस् - होना, स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थन = स्थित हैं (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थपतये = स्थपति के लिए, ऐश्वर्य के लिए (स्था - स्थित होना, = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

स्थविरः = स्थिर (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थविरौ = स्थिर (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थातः = स्थित (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थानम् = स्थान (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थाम् = स्थान को (स्था - स्थित होना, ठहरना)

स्थालीः = स्थाली (स्थल - स्थिर होना, थमना, स्तब्ध होना, खड़ा होना)।

स्थालीभिः = स्थालियों द्वारा (स्थल - स्थिर होना, थमना, स्तब्ध होना, खड़ा होना)।

स्थाविरीः = स्थिर (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थिरः = स्थिर (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थिरप्सुम् = स्थिर होकर संरक्षण करने वाले (स्था - ठहरना, स्थिर होना, प्सा - भक्षण करना, संरक्षण करना)।

स्थिरम् = स्थिर को (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थिरा = स्थिर (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थिराय = स्थिर के लिए (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थिरे = स्थिर में (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थिरैः = स्थिरों द्वारा (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थूणाम् = स्थूणों का (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्थूरम् = स्थूर को, स्थूल को (स्था - स्थित होना, ठहरना, स्थूल = मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट

होना)।

स्थूराभ्याम् = स्थूरा द्वारा, स्थूलों द्वारा (स्था - स्थित होना, ठहरना, स्थूल = मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना)।

स्थूल = स्थूल (स्थूल = मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना)।

स्थूलगुदया = स्थूलगुदा द्वारा (स्थूल = मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना)। गुद् - खेलना, क्रीडा करना)।

स्थूलम् = स्थूल को (स्थूल = मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना)।

स्थेमनि = स्थान में, स्थिति में (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्थो = स्थित (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

स्नातः = स्नान किया हुआ (स्ना - स्नान करना, नहाना, शुद्ध होना)।

स्नावभ्यः = स्नायु के लिए (स्ना - स्नान करना, शुद्ध होना)।

स्नीहितम् = स्नेही को (स्निह - प्रीति करना, स्नेह करना, मित्रता करना, स्निग्ध होना)।

स्नीहितीषु = स्नेहियों में (स्निह - प्रीति करना, स्नेह करना, मित्रता करना, स्निग्ध होना)।

स्नुषु = प्रस्रवण में, अभिसिञ्चन में (स्नु - भाप से टपकना, झरना, चूना। स्नुस - खाना, निगलना, ग्रहण करना, लेना, अदृश्य होना, नहीं दिखाई देना, मुख से बाहर फेंकना, थूकना)।

स्नेहयत् = स्नेह किया (स्निह - प्रीति करना, स्नेह करना, मित्रता करना, स्निग्ध होना)।

स्पर्धन्ते = स्पर्धा करते हैं (स्पर्ध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना)।

स्पर्धमानम् = स्पर्धमान को (स्पर्ध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

स्पर्धमाना = स्पर्धमान, स्पर्धा करते हुए (स्पर्ध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना)।

स्पशः = ग्रहण, प्रसिद्ध, स्पर्श (स्पश - गृहण करना,

लेना, छूना, संयुक्त करना, जोड़ना, रोकना, अवरोध करना, प्रसिद्ध करना, एकत्र करना, गुम्फित करना, जोड़ना)।

स्पशम् = स्पश, प्रसिद्ध, स्पर्श को (स्पश - गृहण करना, लेना, छूना, संयुक्त करना, जोड़ना, रोकना, अवरोध करना, प्रसिद्ध करना, एकत्र करना, गुम्फित करना, जोड़ना)।

स्पार्हः = स्पार्ह, पालक, प्रेमी, सेवक (स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

स्पार्हम् = स्पार्ह, पालक, प्रेमी, सेवक को (स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

स्पृत = स्पृत, सन्तुष्ट, प्रसन्न (स्पृ = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, संरक्षण करना, पालना, जाना)।

स्पृतम् = सन्तुष्ट, प्रसन्न को (स्पृ = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, संरक्षण करना, पालना, जाना)।

स्पृताः = स्पृत, सन्तुष्ट, प्रसन्न (स्पृ = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, संरक्षण करना, पालना, जाना)।

स्पृधः = स्पर्धा करने वाले (स्पर्ध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना)।

स्पृश = स्पर्श (स्पृश - स्पर्श करना, छूना, संयोग करना, हाथ से लेना)।

स्पृशः = स्पर्श (स्पृश - स्पर्श करना, छूना, संयोग करना, हाथ से लेना)।

स्पृशम् = स्पर्श को (स्पृश - स्पर्श करना, छूना, संयोग करना हाथ से लेना)।

स्पृहयन्ति = चाहते हैं, इच्छा करते हैं (स्पृह - इच्छा करना, चाहना)।

स्फिग्यम् = स्थूल को (स्फी - मोटा होना, स्थूल होना)।

स्फुरत् = स्फुरण करता है (स्फुर - हिलना, स्फुरित होना, जाना, फैलना, सूझना)।

स्म = था (अस् - होना)।

स्मयमानासो = स्मयमान (स्मि - मुस्कुराना, मन्द हास्य करना। स्मि - अनादर करना, तिरस्कार करना, डराना)।

स्मर = स्मरण करो (स्मृ - स्मरण करना)।

स्मसि = हो (अस् = होना)।

स्य = वह, बन्धन (स्य - वह, वैदिक सर्वनाम्, सि = बाँधना)।

स्यतु = बन्धन करे(सि = बाँधना)।

स्यन्दमानाभ्यः = स्यन्दमानों के लिए (स्यन्द = टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना)।

स्या = वह, बन्धन (स्य - वैदिक सर्वनाम्। सि = बाँधना)।

स्यात = हों (अस् = होना)।

स्याम् = हों (अस् = होना)।

स्याम = हों (अस् - होना)।

स्यामि = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (सो-स्य = अन्त करना, नष्ट करना)।

स्युः = हों (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, बिखेरना)।

स्यूः = बन्धन (सि = बाँधना)।

स्योनः = सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)।

स्योनम् = सुख को (स्योन् = सुख होना, सुख देना)।

स्योना = सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)।

स्योनाम् = सुखों को (स्योन् = सुख होना, सुख देना)।

स्योने = सुख में (स्योन् = सुख होना, सुख देना)।

स्रक्तिः = गतियाँ (सृ - जाना, सरकना)।

स्रक्वेषु = सृजनों में, सृजनकर्ताओं में (सृज - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, बनाना, रचना करना)।

स्रधिः = चलो, जाओ (सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रव = प्रवाह करो, स्रवित हो, स्रवित करें, स्रवित करो (स्रु = जाना, जानना, पाना)।

स्रवन्ति = अभिसिञ्चन करते हैं, स्रवित होते हैं (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रवन्तीः = प्रवाहमान (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रवन्तीभ्यः = अभिसिञ्चकों के लिए (स्रु = जाना,

जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रवन्तु = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रवभागाः = विद्या देने वाले (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना, भज् = दान करना)।

स्रष्ट = सृष्ट, सृजित, सर्जित (सृ = जाना, सरकना, सृज् - सृजन करना)।

स्रष्टा = सृष्टा, सृजनकर्ता (सृ = जाना, सरकना, सृज् - सृजन करना)।

स्रिधः = मर्दन करने वाले, सम्पीडन करने वाले (सृध - मर्दन करना, सम्पीडन करना)।

स्रुग्भ्यः = प्रगतिशीलों के लिए, विद्वानों के लिए (स्रु = जाना, जानना, पाना, बहना)।

स्रुचः = स्रुच (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रुचि = स्रुच में (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रुतः = अभिसिञ्चित, स्रवित (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रुत्याय = अभिसिञ्चित, स्रवित के लिए (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्रेधन्तम् = हिंसा करने वाले को (सृध - मर्दन करना, सम्पीडन करना)।

स्व = अपना, निज (सर्वनाम)।

स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

स्वगाकारः = स्वयम् गति करने वाला, स्वयं ग्रहण करने वाला, स्वगामी, स्वचालित, स्वग्राही (स्व = अपना (सर्वनाम)। सु = अच्छा (उपसर्ग)। अग = जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना। अग = लेना, ग्रहण करना)।

स्वङ्गुरिः = स्वङ्गुरि, अच्छा अंग वाला (सु = अच्छा (उपसर्ग)। अङ्ग = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

स्वजामहे = आलिङ्गन करता हूँ, घेरता हूँ (स्वज - घेरना, लपेटना, आलिङ्गन करना, गले लगाना)।

स्वतवद्भ्यो = अपनी गति-वृद्धि के लिए (स्व = अपना (सर्वनाम), तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

स्वतवसे = अपनी गति-वृद्धि के लिए (स्व = अपना (सर्वनाम), तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)।

स्वदन्ति = स्वाद लेते हैं (स्वद् - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वदन्तु = स्वाद लें, अच्छा खायें (स्वद् - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना। सु - उत्तम, अच्छा। अद् - खाना)।

स्वदयन्त = स्वाद युक्त करो (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वदया = स्वाद द्वारा (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वदाति = स्वाद लेते हैं (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वदितम् = स्वादिष्ट को (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वदितानि = स्वादिष्ट (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वदृशम् = स्वदृश को (स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, दृश-पश्य -देखना)।

स्वधम् = स्वधा को (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधया = स्वधा के साथ, स्वधा द्वारा (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधयोः = स्वधायुगल में, स्वधायुगल का (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पोषण करना, रक्षण करना)।

स्वधा = अपनत्व, आत्मीयता को धारण करना, स्वधा (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त

होना)।

स्वधा: = स्वधा, स्वयम्, धारण करने वाले, आत्मनिर्भर (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - धारण करना, युक्त होना)।

स्वधापते = हे स्वधापति, स्वयम्, अपनत्व, आत्मीयता को धारण करने वाले ऐश्वर्यवान् (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

स्वधाभि: = स्वधाओं द्वारा, स्वयम् धारण करने वालों द्वारा (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधाम् = स्वधा को (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधायिभ्यः = स्वधायीजनों के लिए (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधायै = स्वधा के लिए (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधावः = स्वधावान् का, स्वयम् धारण करने वाला, स्वयम् दौड़ने वाला (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धाव् - दौड़ना, भागना, द्रुत गति से चलना)।

स्वधावन् = स्वधा युक्त (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधावान् = स्वधा युक्त (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधिति: = स्वयम् धारणकर्ता (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधितिम् = स्वयम् धारणकर्ता को (स्व = निज, अपना,

धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधिते = स्वधित (स्व+धिते स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना)।

स्वधितौ = स्वधित, स्वयम् धारित (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वधृति: = स्वधृति, स्वयम् धारित (स्व = निज, अपना, धृ - धारण करना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)।

स्वध्वरः = उत्तम अहिंसक (सु = सुष्ठु, उत्तम, अ = नहीं, ध्वृ - हिंसा करना)।

स्वध्वरम् = उत्तम अहिंसा को (सु = सुष्ठु, उत्तम, अ = नहीं, ध्वृ - हिंसा करना)।

स्वध्वरे = उत्तम अहिंसा में (सु = सुष्ठु, उत्तम, अ = नहीं, ध्वृ - हिंसा करना)।

स्वनः = वाणी, अलंकृत (स्वन - शब्द करना, ध्वनि करना, स्वन - संवारना, सजाना, अलंकृत करना, सुशोभित करना)।

स्वपते = स्वपति के लिए, सुरक्षक के लिए (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वपतो = अपना ऐश्वर्य (सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, स्व = अपना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

स्वपत्यस्य = स्वपत्य का (सु - उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम, स्व = अपना, अप् - पालन करना) पत् - ऐश्वर्य होना)।

स्वपसः = सुपालक (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वपसा = स्वपस के लिए, सुरक्षक के लिए (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वपस्याय = स्वपस्य के लिए, सुपालक के लिए, सुरक्षक के लिए (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना, पष् - पस् = धारण करना, घर्षण करना)।

स्वपा = सुपालक, सुरक्षक (सु - उत्तम, सुन्दर, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वप्न = स्वप्न (स्वप - सोना, निद्रा लेना)।

स्वप्नाय = स्वप्न के लिए (स्वप - सोना, निद्रा लेना)।

स्वब्दीव = सुपालक, सुरक्षक (सु - उत्तम, सुन्दर, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वभानवो = स्वयम् प्रकाशयुक्त (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, भा = प्रकाश होना)।

स्वम् = अपने को, स्वयम् को (सर्वनाम)।

स्वयम् = अपने आप (अव्यय)।

स्वयम्भूः = स्वयम् होने वाले (स्वयम् - अपने आप, भू-होना)।

स्वयशः = स्वयश, स्वकीर्ति (स्वयम् = अपने आप (अव्यय), यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

स्वयशसम् = स्वयश, अपनी कीर्ति को (स्व = अपना, निज (सर्वनाम), यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

स्वयशो = स्वयश, स्वकीर्ति (स्वयम् = अपने आप (अव्यय), यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

स्वयुक्तिभिः = स्वयुक्ति द्वारा (स्व = अपना, निज (सर्वनाम)। युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

स्वरः = शब्द करने वाले, उपदेशक (स्वृ = शब्द करना)।

स्वरणम् = शब्द करने वाले, उपदेशक (स्वृ = शब्द करना)।

स्वरन्ति = स्वर करते हैं, शब्द करते हैं (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्वरम् = स्वर को (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्वराजो = स्वयम् प्रकाशमान (स्व - स्वयम्, अपना, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

स्वराजम् = स्वयं प्रकाशमान को (स्व - स्वयम्, अपना, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

स्वराज्यम् = अपने राज्य को, स्वयम् प्रकाशित को (स्व - स्वयम्, अपना, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

स्वराट् = स्वयम् प्रकाशमान (स्व - स्वयम्, अपना, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

स्वराड् = स्वयम् प्रकाशमान (स्व - स्वयम्, अपना, राज् = चमकना, प्रकाशित शोभित होना)।

स्वरोचिः = स्वयम् प्रकाशित (स्व - स्वयम्, अपना, रुच् - प्रकाश होना)।

स्वरौ = स्वर-द्वय, शब्द द्वय, द्वय-उपदेशक (स्वृ = शब्द करना)।

स्वर्का = सुन्दर स्तुतियों वाले (सु+अर्का, स्वर+का, सु = अच्छा (उपसर्ग), अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

स्वर्काः = सुन्दर स्तुतियों वाले (सु+अर्काः, स्वर+काः, सु = अच्छा (उपसर्ग)। अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

स्वर्गः = स्वर्ग (सु = उत्तम (उपसर्ग), सू - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)।

स्वर्गान् = स्वर्गों को (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)।

स्वर्गाय = स्वर्ग के लिए (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)।

स्वर्गे = स्वर्ग में (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)।

स्वर्गाय = स्वर्ग के लिए, स्वर्ग-योग्य के लिए (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)।

स्वर्जित् = स्वः को जीतने वाला, जगत को जीतने वाला (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)।

स्वर्थे = स्वर्थ में (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्वर्दृशः = स्वर्दृश, सृष्टि दृष्टा (स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, दृश्-पश्य - देखना)।

स्वर्दृशम् = स्वर्दृश को (स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, दृश्-पश्य - देखना)।

स्वर्दृशे = स्वर्दृश में (स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, दृश्-पश्य - देखना)।

स्वर्विदः = शब्द को जानने वाले, शब्दज्ञानी, विद्वान् (स्वर् - शब्द करना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

स्वर्विदम् = शब्द को जानने वाले, शब्दज्ञानी, विद्वान् (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

स्वर्विदा = शब्द को जानने वाले, शब्दज्ञानी, विद्वान् (स्वर् - शब्द करना, दोष लगाना, निन्दा करना)।

स्वर्षत् = उत्तम जानते हैं (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना, सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्वर्षाः = देने वाला, उत्तम ऋषि (सु+अर्षाः, ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना, सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्वर्षाता = उत्तम ऋषि (सु+अर्षाता, ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना, सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्वर्षाम् = देने वाले, उत्तम ऋषि, ऐश्वर्यदाता को (सु+अर्षाः, ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना, सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना)।

स्ववान् - स्ववान् = अपनी सेवा कर्मों से युक्त, अपनत्व, अपनों से युक्त (स्व = अपना, वन् = शब्द करना, सेवा

करना, सहायता करना)।

स्वश्वः = उत्तम व्यापक (सु = उत्तम, अच्छा, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

स्वश्व्यम् = उत्तम व्यापक को (सु = उत्तम, अच्छा, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

स्वसरम् = स्वगति को, उत्तम गति को, उत्तम गृह को (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

स्वसरे = स्वगति में, उत्तम गति में, उत्तम गृह, उत्तम प्रकाश में (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

स्वसरेषु = स्वसरों में, स्वगति में, उत्तम गति में, उत्तम गृह, उत्तम प्रकाश में (सु - अच्छा, सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना (सृ = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

स्वसा = स्वत्व, सृजन, ऐश्वर्य (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना)।

स्वसारम् = स्वगति, उत्तम गति, उत्तम गृह को (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

स्वसारो = स्वगति, उत्तम गति, उत्तम गृह (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

स्वसुः = स्वयं उत्पन्नकर्ता, उत्तम उत्पन्न करने वाला (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

स्वस्तये = कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु -

अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्त्यै = कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्ति = कल्याण (अव्यय)।

स्वस्तिभिः = स्वस्तियों द्वारा (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्तिमत् = स्वस्तिमान, कल्याणयुक्त (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्त्ययनीः = कल्याणकारी, सुखकारी (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्त्या = कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्त्रोः = स्वयं प्रगतिशील, उत्तम उत्पन्न होने वाला (स्व - अपना, सु - अच्छा, सृ - चलना, सरकना)।

स्वाः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

स्वादितानि = स्वादों को (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वादिष्टया = स्वादिष्ट द्वारा (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वादीयः = स्वादीय, स्वाद युक्त (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वादुः = स्वाद युक्त (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वादुना = स्वाद द्वारा (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वादुम् = स्वाद को (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वादुषंसदः = स्वाद-संसद (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना, सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

स्वादोः = स्वाद युक्त का (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वाद्वीम् - स्वाद्वीम् = स्वाद्वी को, स्वाद्वी को, स्वाद लेने वाले को (स्वद्-स्वाद् - स्वाद लेना, प्रसन्न होना)।

स्वाधीः = उत्तम धी, उत्तम बुद्धि, उत्तम धारणा (सु - उत्तम, आ - समन्तात्, सम्यक्, धी - धी - धारण करना, बुद्धि होना)।

स्वाध्यः = उत्तम विचारशील, उत्तम ध्यान करने वाले (सु - उत्तम, अच्छा, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, ध्यै - ध्यान करना, चिन्तन करना, मनन करना, विचार करना)।

स्वान = स्वान, शब्दकर्ता (स्वन - शब्द करना)।

स्वानः = स्वान, शब्द करने वाला (स्वन - शब्द करना)।

स्वानासो = शब्दकर्ता (स्वन - शब्द करना)।

स्वानैः = शब्दों द्वारा (स्वन - शब्द करना)।

स्वानो = स्वान (स्वन - शब्द करना)।

स्वापिभिः = उत्तम पालकों द्वारा (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वापे = उत्तम पालक में (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)।

स्वाभुवम् = स्वयम्भू को (स्व = अपना (सर्वनाम), भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

स्वाम् = अपने को (स्व = अपना (सर्वनाम))।

स्वायुजो = उत्तम सम्बन्धित होने वाले, उत्तम सम्बन्ध युक्त (सु - सुन्दर, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

स्वायुध = उत्तम आयुध (सु+आयुधः, सु - सुन्दर, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, युध - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

स्वायुधः = उत्तम आयुध (सु+आयुधः, सु - सुन्दर, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, युध - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

स्वायुधम् = उत्तम आयुध युक्त को (सु+आयुधः, सु - सुन्दर, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, युध - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

स्वारम् = स्वार को (सु - अच्छा, रम् - रमना, रमण करना, रमणीय होना)।

स्वारात् = स्वार से (सु - अच्छा, रा - देना, मिल जाना)।

स्वासस्थम् = स्वासस्थ को, सम्यक् जीवन को (सु + आसस्थाम्, स्व + आसस्थाम्, सस् = सोना, विश्राम करना, आस् = बैठना, उपस्थित होना, जीवन होना, होना)।

स्वासस्थाम् = स्वासस्थ को, सम्यक् जीवन को (सु + आसस्थाम्, स्व + आसस्थाम्, सस् = सोना, विश्राम करना, आस् = बैठना, उपस्थित होना, जीवन होना, होना)।

स्वासस्थे = स्वासस्थ में, सम्यक् जीवन में (सु + आसस्थाम्, स्व + आसस्थाम्, सस् = सोना, विश्राम करना, आस् = बैठना, उपस्थित होना, जीवन होना, होना)।

स्वारथम् = स्वारथ को, सम्यक् जीवन को (सु + आसस्थाम्, स्व + आसस्थाम्, सस् = सोना, विश्राम करना, आस् = बैठना, उपस्थित होना, जीवन होना, होना)।

स्वाहा = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)।

स्वाहाकृतः = व्याप्त किये हुए (सु = अच्छा, उत्तम, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)।

स्वाहाकृतम् = व्याप्त किये हुए को (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)।

स्वाहाकृता = व्याप्त किये हुए (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना, कृ - करना)।

स्वाहाकृताः = व्याप्त किये हुए (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना, कृ - करना)।

स्वाहाकृतीः = व्याप्त करने वाले (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना, कृ - करना)।

स्वाहाकृतीनाम् = व्याप्त करने वालों का (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना, कृ - करना)।

स्वाहाकृतेन = स्वाहाकृत द्वारा, व्याप्त किये हुए द्वारा (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)।

फैलना, विस्तृत होना)।

स्वाहुतः = अच्छी तरह बुलाया हुआ, सुन्दर दान (स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः, सु - अच्छा, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-हवे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

स्वाहुतम् = अच्छी तरह बुलाये हुए, सुन्दर दान को (स्वः = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः, सु - अच्छा, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-हवे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

स्वित् = ही (इत् = ही (अव्यय))।

स्विदा = स्वेदयुक्त, त्यागी (स्विद - गीला करना, चिकना होना, छोड़ना, त्याग करना, स्विद - अस्पष्ट ध्वनि करना, गुणगुनाना, स्विद - पसीजना, पसीना छूटना)।

स्विन्नः = स्वेदयुक्त, त्यागी (स्विद - गीला करना, चिकना होना, छोड़ना, त्याग करना। स्विद - अस्पष्ट ध्वनि करना, गुणगुनाना। स्विद - पसीजना, पसीना छूटना)।

स्विष्ट = स्विष्ट, अच्छी इच्छा (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना)।

स्विष्टकृत् = अच्छी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना, कृ - करना)।

स्विष्टकृत = अच्छी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना, कृ - करना)।

स्विष्टकृतम् = अच्छी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले को (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना, कृ - करना)।

स्विष्टम् = स्विष्ट को, अच्छी इच्छाओं को (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना, कृ - करना)।

स्विष्टाः = स्विष्ट, अच्छी इच्छाएँ (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना)।

स्विष्टे = स्विष्ट में, अच्छी इच्छाओं में (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना)।

स्विष्टेन = स्विष्ट द्वारा, अच्छी इच्छाओं द्वारा (सु = अच्छा, इष् = पाना, चाहना, इच्छा करना)।

स्वे = अपने लिए, अपने साथ (सर्वनाम)।

स्वेदस्य = स्वेद का, शब्द का (स्विद् = स्वेद होना, शब्द करना)।

स्वेद्याम् = स्वेदन करें (स्विद् = स्वेद होना, शब्द करना)।

स्वेन = अपने द्वारा (सर्वनाम)।

स्वैः = अपने द्वारा, अपने साथ (सर्वनाम)।

स्वौपशा = स्वौपशा (स्व (अव्यय) = निज, अपना। ओ बुलाना, आह्वान करना, उप-वप = बीज बोना, बुनना, उत्पन्न करना, अन्नादि काटना)।

ह

ह = ही, निश्चय ही (अव्यय)।

हतः = मारा गया (हन् - मारना)।

हतम् = मारे गये को (हन् - मारना)।

हताघशंसौ = मारा गया पापी, अपराधी (हतः = मारा गया (हन् - मारना), अघ - पाप करना, अपराध करना, गिरना, शंस् - स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

हते = मारे गये, हत में (हन् - मारना)।

हतेभ्यः = हत के लिए, मारे गये के लिए (हन् - मारना)।

हत्याय = हत्या के लिए (हन् - मारना)।

हत्ये = हत्या में, हननीय में, मारने योग्य में (हन् - मारना)।

हत्यै = हत्या के लिए (हन् - मारना)।

हत्वाय = हत्व के लिए, हनन के लिए (हन् - मारना)।

हन् = मारने वाला (हन् - मारना)।

हनति = मारता है (हन् - मारना)।

हनीयसे = मारते हो (हन् - मारना)।

हनुभ्याम् = हनु द्वारा, हनु के लिए, मारने वाले द्वारा, मारने वाले के लिए (हन् - मारना)।

हनू = हनन करने वाले (हन् - मारना)।

हन्तवे = मारने के लिए (हन् - मारना)।

हन्ता = मारने वाला (हन् - मारना)।

हन्तारम् = मारने वाले को (हन् - मारना)।

हन्ति = मारता है (हन् - मारना)।

हन्तु = हनन करे, मारे (हन् - मारना)।

हन्त्रे = मारने वाले में (हन् - मारना)।

हन्योः = मारने योग्य (हन् - मारना)।

हन्वोः = हनु का, मारने वाले का (हन् - मारना)।

हयः = गतिशील, सेवाभावी (हय् - चलना, कूदना, नृत्य करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, सेवा करना)।

हर = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरन् = हरता हुआ, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरयः = हरिगण, हरने वाले, ले जाने वाले, पहुँचाने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरषा = हर द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरसा = हर द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरसे = हर के लिए (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरासि = ले जाते हो (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिः = हरि, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिकेशः = हरिकेश (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, किश्-केश-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)।

हरिकेशाय = हरिकेश के लिए (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, किश्-केश-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)।

हरिकेशेभ्यः = हरिकेशों के लिए (हृ = प्रसह्य करना,

बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)।

हरिकेशेभ्यो = हरिकेशों के लिए (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना)

हरिणः = हरिण, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिणस्य = हरिण का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिण्या = हरिण्य, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरितः = हरित, हरि से (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरितो = हरित, हरि से (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरित्याय = हरित्य के लिए (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिभिः = हरियों द्वारा, हरि-गण द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिभ्याम् = हरि-युगल द्वारा, हरि-युगल के लिए, हरि-युगल से (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिम् = हरि को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिमा = हरि, हरण (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिह = ले जाने वाले, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)।

हरिवः = हरि गण, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हरिवन् = हरि के समान, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य

करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हरिवान् = हरि युक्त (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिवो = हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हरिशया = हरिशायी द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, शी-शय् - शयन करना)।

हरिश्चन्द्रो = हरिश्चन्द्र, हरण करने वाला चन्द्र, मनोहारी प्रकाश, मनोहारी आनन्द (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, चन्द - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

हरिश्मश्रुम् = हरिश्मश्रु को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, शी-शय् - शयन करना)।

हरिश्रियम् = हरिश्रिय को, ले जाने वाले श्रिय को, हरण करने वाले श्रिय को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना, श्रा = पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)

हरी = हरियुगल, ले जाने वाले, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)।

हरीणाम् = ले जाने वालों का, हरण करने वालों का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)।

हरे = हे हरि! ले जाने वाले, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)।

हरेः = हरि का, हरि से, ले जाने वाले, हरण करने वाले का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)।

हर्य = हर्य, हरण करने योग्य (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना,

चुराना, नष्ट करना)।

हर्यत - हर्यत = हर्यत, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हर्यतम् = हर्य, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य को (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)।

हर्यति - हर्यति = प्रकाश करता है, गति करता है, इच्छा करता है, चाहता है, हरण करता है (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हर्यतो = हर्यत, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हर्यन्ति - हर्यन्ति = प्रकाश करते हैं, गति करते हैं, इच्छा करते हैं, चाहते हैं, हरण करते हैं (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हर्यश्व = हर्यश्व, तीव्र गति से पहुँचने वाला, ले जाने वाला (ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, हर्य - जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, चमकना)।

हर्यश्वाय = हर्यश्व, प्रकाशवान्, गतिवान्, इच्छवान्, के लिए (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, श्व-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना)।

हर्योः - हर्योः = हरि का, प्रकाश का, गतिशील का (हर्य - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, ह = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

हर्षमाणाः = हर्षमान, आनन्दित (हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)।

हर्षयन् = आनन्द देते हुए, आनन्दित होते हुए (हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)।

हलिक्ष्णो = हलिक्ष्ण, कृषक (हल = जोतना, हल चलाना)।

हवते = आह्वान करता है, आदान-प्रदान करता है (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवनस्यदम् = दान, आदान-प्रदान, तृप्ति, आह्वान करने वाले (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवनानि = दान, आदान-प्रदान, तृप्ति (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवनाय = दान, आदान-प्रदान, तृप्ति के लिए (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवनेषु = दान व आदान-प्रदान में (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवन्त = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवन्ते = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवम् = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हव्ये = दान योग्य में (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हव्येन = दान योग्य द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हव्यैः = दान योग्य द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, द्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हंसः = प्रसन्नता दायक (हन् - मारना, हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

हंसाः = प्रसन्नता दायक (हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

हंसान् = हंसों को, प्रसन्नता दायक को (हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

हसाय = प्रसन्नता दायक के लिए (हस्-हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

हंसासः = प्रसन्नता दायक (हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

हंसि = प्रसन्न करते हो, नष्ट करते हो (हन् - मारना, हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)।

हस्त = हस्त (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्तघ्नो = हस्तघ्न, हाथ से मारने वाला (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, हन् - मारना)।

हस्तच्युतम् = हस्तच्युत को (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

हस्तच्युतेभिः = हस्तच्युतों द्वारा (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)।

हस्तयोः = हाथों का (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्ता = हाथ (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्ताभ्य = हाथ के लिए (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्ताभ्याम् = दोनों हस्त द्वारा, के लिए, से (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्तासः = हाथ (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्तिन = हस्ति (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)

हस्तिनः = हस्ति वाले का (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्तिपम् = हस्तिप को, हाथी पालने वाले को (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, पा - रक्षा करना)।

हस्ती = हाथ वाला, हस्ती, दानी, ग्राही (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्ते = हाथ में (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्तेन = हाथ द्वारा (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)

हस्तेषु = हाथों में (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्तौ = हाथों में (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हस्त्य = हाथ (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

हा = ही (निपात, अव्यय)।

हाणाः = शब्द करने वाला, कोलाहल करने वाला (हण् = शब्द करना, कोलाहल करना)।

हानाय = त्याग के लिए (हा = त्याग करना, चलना, जाना)।

हाय = पूजा, सेवा, शब्द, त्याग करने वाला (हय - जाना, पूजा करना, सेवा करना, शब्द करना, हा - त्याग करना, चलना, जाना)।

हारियोजनः = हरि-योजन, हरि-मिलन (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूँथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)।

हार्दि = हृदय में, हार्दिक (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हार्द्वानम् - हार्द्वानम् = हार्दिक (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हासते = छोड़ा जाता है, परित्याग करता है, हंसता है, हंसाता है, (हा - छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना, हस - हंसना, उट्टा करना)।

हि = ही, निश्चय (अव्यय)।

हिङ्काराय = हिङ्कार के लिए, गतिशील करने वाले के लिए, बढ़ाने वाले के लिए, वृद्धि करने वाले के लिए (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिङ्कृताय = हिङ्कृत के लिए, गतिशील करने वाले के लिए, बढ़ाने वाले के लिए, वृद्धि करने वाले के लिए (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, कृ - करना)।

हिणोमि = जाता हूँ, जानता हूँ, वृद्धि करता हूँ (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हितः = हित, गति, वृद्धि (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हितम् = हित, गति, वृद्धि को (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिता = हित, गति, वृद्धि (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिताभिः = हितों द्वारा, गति द्वारा, वृद्धि द्वारा (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिते = हित, गति, वृद्धि में (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हितो = हित, गति, वृद्धि (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हित्वी - हित्वी = बढ़ाकर, हित, गति, वृद्धि कर (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिन = गतिशील करो, बढ़ाओ, वृद्धि करो (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिनु = गतिशील करो, बढ़ाओ, वृद्धि करो (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिन्व = संतृप्त (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वति = संतृप्त करता है (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वतु = संतृप्त, तृप्त करे (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वन् = संतृप्त करता हुआ (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वन्ति = संतृप्त करते हैं (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वन्तु = संतृप्त करें (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वानः = संतृप्त करता हुआ, प्रेरणा देने वाला (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिन्वानासो = संतृप्त करते हुए, प्रेरणा देते हुए, संतृप्त करने वाले, प्रेरणा देने वाले (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिन्वानो = संतृप्त करते हुए, प्रेरणा देते हुए, संतृप्त करने वाले, प्रेरणा देने वाले (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिन्विरे = संतृप्त, तृप्ति करते हैं (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिन्वे = संतृप्त में, तृप्ति में (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)।

हिमवते = हिमवान् के लिए, गतिवान्, गति-वृद्धि युक्त, शीतल के लिए (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)।

हिमवन्तः = हिमवान्, गतिवान्, गति-वृद्धि युक्त, शीतल (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)।

हिमस्य = हिम का, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल का (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)।

हिमा = हिम, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल (हि -

जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)।

हिमाः = हिम, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)।

हियाना = गतिवान्, गति-वृद्धि करते हुए (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिरण्यवी = प्रकाशमान (हिरण् - प्रकाश करना, शब्द करना)।

हिरण्यकारम् = हिरण्यकार को, प्रकाशकर्ता को, शब्दकर्ता को (हिरण - प्रकाश करना, शब्द करना, कृ - करना)।

हिरण्यगर्भः = प्रकाशगर्भ, प्रकाश, शब्द को गर्भ में रखने वाला (हिरण् - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्य-जिह्वः = शब्दयुक्त जिह्वा वाले, प्रकाशयुक्त जिह्वा वाले (हिरण् - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)।

हिरण्यपक्षः = हिरण्यपक्ष, प्रकाशमान पक्ष (हिरण् - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। पक्ष - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)।

हिरण्यपर्णम् = प्रकाश-शब्द को पल्लवित करने वाले को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। पर्ण = हरा होना, हरा करना, पल्लवित होना, ले जाना)।

हिरण्यपर्णो = प्रकाश-शब्द को पल्लवित करने वाले को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। पर्ण = हरा होना, हरा करना, पल्लवित होना, ले जाना)।

हिरण्यपाणिः = प्रकाश की स्तुति करने वाला (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)।

हिरण्यपाणिम् = हिरण्यपाणि को, प्रकाश की स्तुति करने वाले को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)।

हिरण्यपावाः = हिरण्य से पवित्र होते हुए, स्तुति से पवित्र होते हुए (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

हिरण्यमेन = हिरण्यमय द्वारा, प्रकाशमान, चमकीले द्वारा शब्द द्वारा, वाणी द्वारा (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्ययः = प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)।

हिरण्ययम् = प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्यया = प्रकाशमान द्वारा, शब्दमय द्वारा (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)।

हिरण्ययीः = प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्ययीम् = प्रकाशमान, शब्दमय को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्ययुः = प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्यये = प्रकाशमान, शब्दमय में (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्ययेन = हिरण्य द्वारा, प्रकाशमान, शब्दमय द्वारा (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्यरूपम् = हिरण्यरूप को, प्रकाशमान रूप को, शब्दमय रूप को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)।

हिरण्यवत् = हिरण्य के समान, प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्यवर्त्तनी = हिरण्य का वर्तन करने वाला, प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना,

ध्वनि होना। वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

हिरण्यवित् = हिरण्य को जानने वाला (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

हिरण्यशृङ्गो = हिरण्यशृङ्ग, प्रकाशमान, शब्दमय शृङ्ग हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)।

हिरण्यसंदृशः = प्रकाश-संदर्शन वाले, शब्द-संदर्शन वाले (हिरण - प्रकाश करना, शब्द करना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दृश् - देखना)।

हिरण्यस्य = हिरण्य का, प्रकाशमान, शब्दमय का (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)।

हिरण्यहस्तो = हिरण्य के समान हाथो वाला, प्रकाशमान, शब्दमय हाथो वाला (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। हस्त = देना, लेना, ग्रहण करना)।

हिरण्या = हिरण्य, प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्याक्षः = हिरण्य दृष्टि वाला, व्यापक प्रकाशयुक्त (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, अक्ष - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)।

हिरण्यानि = हिरण्य, प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्येन = हिरण्य द्वारा, प्रकाशमान, शब्दमय द्वारा (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)।

हिरण्यैः = हिरण्यों द्वारा, प्रकाशमानों द्वारा, शब्दमानों द्वारा (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिराभिः = प्रकाशमान, शब्दमय द्वारा (हिर - प्रकाश

होना, शब्द करना, गति करना, खोजना)।

हिंसीषम् = हिंसा करें, नष्ट हो (हिंस् = हिंसा करना, मारना)।

हिंसीष्ट = हिंसा करो (हिंस् = हिंसा करना, मारना)।

हिंसीष्टम् = हिंसक को, हिंसा करें (हिंस् = हिंसा करना, मारना)।

हिंसीः = हिंसा करो (हिंस् - हिंसा करना, मारना, बध करना, दुःख देना, सताना)।

हिंसीत् = हिंसा करे (हिंस् = हिंसा करना, मारना, सताना)।

हृणीयथाः = लज्जित (हृणी - लज्जित होना, क्रोध करना)।

हृत् = हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

हृत्-द्योतः = हृदय-प्रकाश (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना, द्युत् - प्रकाशित होना)।

हृत्सु = हृदयों में (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

हृदम् = हृद को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हृदयम् = हृदय को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हृदयस्य = हृदय का। (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हृदयाग्रेण = हृदयाग्र द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, अग् - जाना, आगे जाना, जानना, पाना)।

हृदये = हृदय में (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हृदयेन = हृदय द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हृदयेभ्यो = हृदयों के लिए (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)।

स्वामी शरण

होत्रम् = आदान-प्रदान को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्रादुनीभ्यः - ह्रादुनीभ्यः = ध्वनिमानों के लिए (ह्राद्
= अस्पष्ट ध्वनि होना, मेघ-ध्वनि होना)।

हरियमाण - ह्रियमाण = ह्रियमाण, लज्जा युक्त (ह्री = लज्जा करना, लज्जित होना)।

हरियै - ह्रियै = लज्जा के लिए (ह्री = लज्जा करना, लज्जित होना)।

हुतो = हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)।

ह्वमात = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वयताम् = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वयामहे = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वयामि - ह्वयामि = आह्वान करता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वये - ह्वये = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वरांसि = अनेक वक्र, कुटिल (ह्वे = पुकारना, ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना)।

ह्वरो - ह्वरो = ह्वर, वक्र, कुटिल (ह्वे = पुकारना, ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना)।

ह्वाः = त्याग करो, वक्र हो, कुटिल हो (ह्वे = पुकारना, ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना, ह्वा = त्याग करना)।

ह्वामहे = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वार्मा = त्याग करो, वक्र हो, कुटिल हो (ह्वे = पुकारना, ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना, ह्वा = त्याग करना)।

ह्वार्षीत् - ह्वार्षीत् = त्याग करो, वक्र हो, कुटिल हो (ह्वे = पुकारना, ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना, ह्वा = त्याग करना)।

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार)

रु. 2000.00

2. सामवेद भाष्य :- सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार)

रु. 2000.00

3. अथर्ववेद भाष्य :- अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार)

रु. 2000.00

4. यजुर्वेद भाष्य :- यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार)

रु. 2000.00

5. वेदायन भाष्य :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा

शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण।

रु. 500.00

6. वेदायन प्रवचन :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण।

रु. 500.00

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ।

रु. 100.00

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए।

रु. 100.00

9. वेद सूक्तायन :- चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ (छन्द पाठ), मन्त्रार्थ, विशेष भावार्थ-व्याख्या, व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद।

रु. 100.00

10. यजुर्वेद एकादशी :- यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण।

रु. 500.00

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार)

रु. 2500.00

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(बृहद् आकार)

रु. 900.00

13. सामवेद सरल पाठ :- सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

रु. 500.00

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(बृहद् आकार)

रु. 700.00

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

रु. 700.00

16. वैदिक धात्वादि कोश :- पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है। अत्यन्त उपयोगी संस्करण।

रु. 500.00

17. वैदिक शब्दकोश :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। (बृहद् आकार)

रु. 900.00

18. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित

निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश।

रु. 200.00

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत उपयोगी चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली।

रु. 95.00

20. वैदिक इतिहास :- ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है।

रु. 200.00

21. ओम् साधना :- ओम् साधना, वैदिक संस्कृति, वैदिक आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना।

रु. 200.00

22. चिन्तन प्रवाह :- वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन।

रु. 500.00

23. वैदिक विज्ञान :- वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना।

रु. 50.00

24. युगबोध :- प्रबन्ध काव्य।

रु. 300.00

25. चेतना :- काव्य संकलन।

रु. 100.00

26. नवांकुर :- काव्य संकलन।

रु. 20.00

❖ ❖ ❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

आगामी प्रकाशन योजना

1. वैदिक व्याकरण : पंचपाठी व्याकरण का समयानुकूल प्रस्तुतीकरण। अष्टाध्यायी सूत्रों का अनुवृत्ति सहित प्रस्तुतीकरण, जिससे प्रत्येक सूत्र स्वयम् ही सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर सके। व्यापक प्रभाव वाले सूत्रों को महत्व देते हुए, अपवादों को स्पष्ट करना तथा उनकी सीमाओं का स्पष्टीकरण करना। पंचपाठी की अन्य पुस्तकों का भी इसी भाँति सम्पादन तथा उणादि कोष आदि का अकारादि क्रम से प्रस्तुतीकरण।

2. वैदिक महापुराण : पुराण विद्या का व्यापक शोधपरक अध्ययन कर पंच-लक्षणों के आधार पर सम्पादन।

3. वैदिक जीवन : वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन के साथ ही वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण परिचय।

❖ ❖ ❖

पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02, पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

मो. 9839034844, 9839105629